Gita-Panchasati—500 select songs of Rabindranath Tagore, edited with an Introduction by Indira Devi Chaudhurani Devanagari transliteration with explanatory notes by Ram Pujan Tiwari Frontispiece by Nandalal Bose. Sahitya Akademi, New Delhi (1960). Price: *de luxe* edition, Rs 10, ordinary, Rs. 8

विश्वभारती प्रकाशन विभाग के सौजन्य से
प्रस्तुत सस्करण का प्रकाशन
प्राप्तिस्थान ·
पब्लिकेशन्स डिवीजन
ओल्ड सेक्रेटरियेट, दिल्ली-८
मुद्रक ·
श्री शैलेन्द्रनाथ गुहराय,
श्री सरस्वती प्रेस लि०, कलकत्ता ९
मूल्य
विशेष सस्करण १० रुपया
सामान्य सस्करण ८ रुपया

भूमिका

इस पुस्तक मे रवीन्द्रनाथ के पाँच-सौ गीतो का संकलन किया गया है। कुछ वर्ष हुए बँगला मासिक पत्र 'प्रवासी' के तीन अको मे रवीन्द्र-सगीत के अनुरागियों द्वारा चुने हुए तीन सौ गीत 'रवीन्द्र-सगीत-सार' नाम से प्रकाशित हुए थे। उन्हीको आधार मानकर उनमे दो सौ गीत और जोड देना बहुत कठिन नही था। तिस पर श्री शान्तिदेव घोष के सौजन्य से स्वय कविगुरु द्वारा निर्वाचित तीन सौ गीतो की एक अप्रकाशित तालिका मिल गई, जिसे पाकर मैंने अपने को कृतार्थ अनुभव किया। अन्यान्य विषयो मे भी यदि श्री शान्तिदेव की सङ्कोचहीन सहायता न मिलती तो पाँच सौ गीतो की वर्तमान चयनिका तैयार करना मुझ अकेली के लिए सम्भव न होता। 'सचयिता' के गीताश से भी कुछ गीत उद्धृत किये गए है। साथ ही श्री सौम्येन्द्रनाथ ठाकुर और श्रीमती नन्दिता कृपालानी के द्वारा भेजी हुई दो तालिकाओ ने भी गीतो के चयन मे हमारी सहायता की है।

इन गीतो का नागरी लिपि मे लिप्यन्तर किया गया है और भारत मे प्रचलित प्रधान-प्रधान भाषाओ मे इन्हे अनूदित भी किया गया है। स्वर-लिपि के बिना गीत का परिपूर्ण रस ग्रहण करना तो असम्भव ही जान पडता है, आशा है शीघ्र ही यह अभाव भी दूर किया जा सकेगा। अवश्य ही कवि के गीतो को स्वर के बिना केवल कविता के रूप में ही पढ़कर आनन्द प्राप्त करने वाले रसिक भी मुझे मिले है। यूरोप मे यह समस्या ही नही उठती, कारण वहाँ गीतकार आम तौर पर स्वर-लिपि के साथ ही अपने गीत प्रकाशित किया करते हैं। इसमे एक और बड़ी सुविधा यह होती है कि स्वर के सम्वन्ध मे किसी प्रकार के मतभेद की कोई गुंजाइश नही रह जाती। गायक का अपना कृतित्व केवल सामान्य गायकी के तारतम्य मे ही प्रकट होता है। पश्चिमी देशो मे रचयिता प्रधान होता है, पूर्व मे गायक।

इस संकलन मे हमने कविगुरु के अपने श्रेणी-विभाजन की ही रक्षा की है। वैसे सम्भव है, कई बार हमे ऐसा लगे कि एक ही गीत अन्य श्रेणी मे भी पड़ सकता है। और फिर भगवत्-प्रेम तथा मानवीय प्रेम के बीच सीमा-रेखा खीचना कठिन भी है।

नीचे दी हुई सूची से प्रत्येक श्रेणी के गीतों की सख्या और उनका रचना-काल स्पष्ट समझ मे आ जायगा। जिन गीतो का रचना-काल निश्चित रूप से ज्ञात है, उन्हीकी तारीखें दी गई है, वाकी अधिकांश गीतों की तारीखे प्रथम प्रकाशित पुस्तक के अनुसार रखी गई है।

विपय	सख्या	रचना-काल (ईसवी सन् के अनुसार)
१ पूजा	१५७	१८९३ से १९३२ तक
२ प्रेम	१२७	१८८१ से १९३९ तक
३ प्रकृति	१०९	१८७७ से १९३९ तक
४ स्वदेशी	२९	१८७७ से १९३८ तक
५ विचित्र	६९	१८९५ से १९४१ तक
६ आनुष्ठानिक	९	१९३६ से १९४० तक

कवि की जीवनी से जिनका तनिक भी परिचय है, उन्हे मालूम होगा कि कवि के प्रथम सगीत-जीवन पर उनके वड़े भाई—'नतुन दादा' या नये भैया—ज्योतिरिन्द्रनाथ का प्रभाव कितनी दूर तक पहुँचा था। पियानो के सामने वैठकर ज्योतिरिन्द्रनाथ हल्की गतें रच रहे हैं और एक ओर रवीन्द्रनाथ तथा दूसरी ओर ठाकुर-परिवार के सहृदय मित्र अक्षय चौधुरी सुर पर शव्द विठाते जा रहे है, यह चित्र भी रवीन्द्र-भक्तों के निकट सुपरिचित है। इन्हीं हल्की गतों का स्वर रवीन्द्रनाथ ने 'भानुसिहेर पदावली' आदि प्रारम्भिक रचनाओ मे विठाया है और हम लोगो ने भी वही सीखा है।

इससे भी पहले अपने ही परिवार के सदस्यों के बीच जो नाट्य-सगीत रचित और अभिनीत होता था, उसकी रचना में भी रवीन्द्रनाथ का हाथ अवश्य था; अलवत्ता वह कुछ इस प्रकार मिल-जुलकर तैयार किया जाता था कि उसमें कौन-सी रचना विशेषतया कविगुरु की थी, आज यह कह सकना हमारे लिए कठिन हो पड़ा है।

कलकत्ता के जोड़ासाँको मुहल्ले मे स्थित कवि के पैतृक आवास मे उन दिनो और भी एक स्थायी सागीतिक आवहवा वहती थी, जिसे याद रखना जरूरी है। यह था शास्त्रीय हिन्दुस्तानी संगीत का वातावरण, जिसे आजकल बंगाल मे उच्चांग सगीत कहा जाता है। कवि के पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ शास्त्रीय सगीत के वड़े भक्त थे। उनके यहाँ संगीत के वड़े-वड़े उस्तादो का आना-जाना और ठहरना वरावर लगा ही रहता था। रवीन्द्रनाथ के अग्रजगण किस प्रकार कन्धे पर तम्बूरा साघ कर इन सव उस्तादो के निकट वाकायदा रियाज़ किया करते थे, यह वे स्वयं ही लिख गए है। यद्यपि रवीन्द्रनाथ ने, जिसे बँगला मे 'नाड़ा बेंधे' (गण्डा-ताबीज वाँध कर) सीखना कहते है, उस प्रकार नियमित रूप से किसीकी शागिर्दी अख्तियार नही की, फिर भी स्वाभाविक रूप से आस-पास के वातावरण से शास्त्रीय संगीत का रस अवश्य ग्रहण किया, जैसे पेड़ एक जगह खड़ा रहकर भी आकाश-वातास और धरती से अपने प्राणों के उपकरण संग्रह कर लेता है। उस्तादों मे यदु भट्ट, मौलावख्श और वाद में राधिका गोसाई का नाम लिया जा सकता है। उनके प्रारम्भिक दिनों मे विष्णुराम चक्रवर्ती का नाम भी उल्लेखनीय है। वचपन मे राइपुर के श्रीकण्ठ सिंह के पास भी उन्होंने कुछ संगीत सीखा था। श्रीकण्ठ वावू गायन के पीछे पागल थे।

कवि की संगीत-कुशलता का इतना इतिहास देना शायद जरूरी है, कारण प्रतिभाशाली व्यक्ति भी अचानक आकाश से नही

टपकते और न धरती को भेदकर अकस्मात् बाहर आ निकलते है। वास्तव में जिस वृक्ष की जड़ें दूर-दूर तक फैली थी, रवीन्द्रनाथ उसीकी उच्चतम शाखा मे खिले हुए सर्वोत्तम फूल थे।

एक वार कवि ने बहुत बचपन मे अपने मँझले भाई—मेरे पितृदेव—सत्येन्द्रनाथ के साथ कुछ दिन अहमदावाद मे विताए। वही उन्होने पहली वार स्वतन्त्र रूप से अपने गीतों मे आप ही स्वर भरे। जैसे, 'क्षुधित पाषाण' कहानी के विख्यात शाहीवाग के प्रासाद की छत पर चाँदनी मे टहलते-टहलते रचा हुआ गीत 'नीरव रजनी देखो मग्न जोछनाय' . देखो, नीरव रात चाँदनी मे डूबी है——इत्यादि। वाद मे सत्रह वर्ष की उम्र मे मँझले भैया के साथ ही रवीन्द्रनाथ वैरिस्टरी पढने के लिए विलायत गए। इसे देश का परम सौभाग्य ही कहना चाहिए कि इस उद्देश्य की साधना के पथ पर वे अधिक दूर अग्रसर नही हुए। वैसे अग्रेजी सगीत सीखने का उन्हे वहाँ एक नया सुयोग मिला और अपने मधुर कण्ठ के वल पर उन्होनें काफी प्रसिद्धि भी पाई। किन्तु आश्चर्य की वात है कि इसके वावजूद उनके सुरों मे विलायती संगीत का कुछ खास प्रभाव देखने मे नही आता। यों विलायत से लौटने पर उन्होंनें पहले-पहल जिन दो गीति-नाटिकाओं ('काल मृगया' और 'वाल्मीकि-प्रतिभा') की रचना की उनमे अवश्य कुछ-एक विलायती सुर बिलकुल सदेह उठाकर बिठा दिए गए है। पीछे भी उद्दीपना और उल्लास के कई सुरों पर विलायती सगीत का थोड़ा-वहुत प्रभाव देखने मे आता है।

कवीन्द्र के लगभग दो हजार गीतो के सम्वन्ध में जव भी किसी प्रकार की कोई आलोचना की जाती है, तव यह जरूरी हो जाता है कि उन्हे अलग-अलग भागों मे वाँट लिया जाय। इस तरह का विभाजन वहुत लोगों ने वहुत प्रकार से किया है। एक विभाजन मेरा अपना भी है, जिसका एक साधारण नक़्शा यहाँ दिया जाता है। मेरा विनम्र विश्वास है कि इसमे सभी पहलुओं की रक्षा की गई है और शायद कुछ अधिक संहत रूप मे :

उक्ति और स्वर की दृष्टि से रवीन्द्र-संगीत का श्रेणी-विभाजन

१	२	३
सुर और शब्द दोनों अपने	शब्द अपने सुर दूसरे का	सुर अपना शब्द दूसरे के

शब्द अथवा उक्ति को भी अलग-अलग भाषा और भाव-प्रकाशन के अनुसार विभिन्न भागो मे बाँटा जा सकता है। इसी प्रकार समस्त गीतों को शास्त्रीय हिन्दुस्तानी सगीत की विभिन्न श्रेणियो के अनुसार विभाजित किया जा सकता है। रचना-काल की दृष्टि से भी रवीन्द्र-संगीत का विभाजन वहुतो ने किया है, जैसे प्रारम्भिक काल, मध्य-काल और परवर्ती काल। इससे कवि के क्रमिक सगीत-विकास को समझने मे भी सुविधा होती है। रवीन्द्रनाथ स्वय ही कहते थे कि उनके शुरू के गीत 'ऍमोशनल' है, उनमे भाव-तत्त्व मुख्य है, उत्तरकालीन गीत 'ईस्थेटिकल' है, उनमे सौन्दर्य-बोध का तत्त्व प्रधान है। उनके प्रथम वयस के गीतो के अधिक लोकप्रिय होने का एक कारण शायद यह भी हो सकता है। यहाँ यदि मै अपना एक विचार निवेदन करूँ तो आशा है उसे एकदम अप्रासगिक न माना जायगा। मुझे लगता है कि उपनिषदो का ब्राह्म धर्म कुछ इतने उँचे स्तर पर अवस्थित है कि साधारण मनुष्य वहाँ तक पहुँचने अथवा वहाँ श्वास-प्रश्वास ग्रहण करने मे कठिनाई अनुभव करता है; जीवन के दु ख-शोक के प्रसंगों मे सहज शान्ति, विराम अथवा सान्त्वना नही पाता। इसी नेतिवाचक शून्यता मे रवीन्द्रनाथ के धर्म-सगीत ने मानवीय प्रेम की उष्णता और मधुरता ला दी है। मानवीय स्नेह-प्रेम-प्रीति-भक्ति से उसने भगवान् को मानव का सुगोचर संगी वना दिया है। रवीन्द्र-संगीत मे इसके अनेक उदाहरण मिलते हैं।

शुरू की उम्र के गीतो मे कविगुरु ने स्वभावतः शास्त्र-सम्मत राग-ताल का ही अधिक प्रयोग किया है। विशेष रूप से ध्रुपद के सरल-गम्भीर आडम्वर-हीन चार अगो की गति के प्रति रवीन्द्रनाथ खास तौर पर अनुरक्त थे और उसी ढाँचे का प्रयोग करना उन्हे प्रिय

था। कुछ आगे चल कर मध्य वयस मे अपने पितृदेव के आदेश से वे पद्मा नदी के तीर शिलाइदह मे ज़मीदारी की देख-भाल करने गए। वहाँ वे एक हाउसवोट मे रहते थे। इन दिनों उन्हे वंगाल के वाउल-कीर्तन आदि प्रचलित लोक-संगीत का घनिष्ठ परिचय पाने का सुयोग मिला। वाद में अपनी गीत-रचना में उन्होने कई प्रकार से इस लोक-सगीत के कला-कौशल का उपयोग किया। उनका प्रसिद्ध स्वदेशी गीत 'आमार सोनार वाँगला'—अथवा मेरा सोने का वंगदेश—इसीका एक उदाहरण है।

अपने जीवन के उत्तर-काल मे वे स्थायी रूप से शान्तिनिकेतन मे ही रहे और वहाँ उन्होने विद्यालय के उत्सव-आयोजन के लिए वहुत से ऋतु-सम्वन्धी गीतों की रचना की। कई प्रकार के नये मिश्र-स्वरो का भी उन्होंने प्रवर्त्तन किया, जैसे, वाउल साधुओं के स्वरों के साथ शास्त्रीय रागों का मिश्रण अथवा ऐसे रागो का मेल; जो पहले कभी मिश्रण के लिए उपयोग में नही लाए गए। कुछ नये प्रकार के ताल भी उन्होंने निकाले, जैसे, षष्ठी या २।४ मात्रा का ताल, नवमी या ५।४ मात्रा का ताल (नौ मात्रा के ताल का और भी कई प्रकार से विभाजन किया है); झम्पक या उल्टा झपताल, जैसे ३।२।३।२; रूपकड़ा या ३।२।३ मात्रा का ताल, एकादशी अथवा ११ मात्रा का ताल, जैसे ३।२।२।४, इत्यादि।

शास्त्रीय सगीत के स्वर और छन्द को ज्यों-का-त्यों रखते हुए वँगला शब्द-प्रयोग से रचे हुए गीतों को छोड़कर रवीन्द्र-संगीत में खयाल गायकी का प्रयोग वहुत कम ही मिलता है। इसका कारण यह है कि खयाल में तानों का प्रयोग अधिक होता है और अपने संगीत मे तानो का वहुल प्रयोग उनकी रुचि के विशेष अनुकूल न था। उनके ध्रुपदाग अथवा उच्चांग संगीत को छोड़ दे तो हल्के-फुल्के ताल मे रचे हुए गीतो को आम तौर पर ठुमरी की श्रेणी मे डाला जा सकता है। रवीन्द्र-संगीत में टप्पे का प्रयोग कम ही देखने मे आता है; वैसे हिन्दुस्तानी टप्प की गायकी के आधार पर उन्होने

धर्म-संगीत के अन्तर्गत कुछ सुन्दर गीत रचे है। उनके अपने कण्ठ से शास्त्रीय हिन्दी-सगीत के सभी अलकार कितने सहज और स्वाभाविक रूप से प्रकाशित हुआ करते थे, सो उनके इने-गिने रेकर्डो को सुनकर आज के श्रोता भी समझ जायँगे।

मुझे लगता है, रवीन्द्रनाथ के रचे हुए सगीत में गायक द्वारा अपनी ओर से तानो का प्रयोग करने के विषय में आपत्ति का प्रधान कारण यह है कि उनके गीतो मे शव्द अथवा उक्ति का महत्त्व सुर के महत्त्व से किसी तरह कम नही।

स्वतन्त्र ताने न होने पर भी उनके कुछ गीतों मे सुर के साथ ही छोटी-छोटी ताने जुड़ी हुई है और विभिन्न गीतो मे मीड, आस, गिटकडी या खोच आदि अलंकार अथवा कला-कौशल भी पर्याप्त है। अभ्यस्त अलकारो के यत्किंचित् अभाव के कारण कुछ लोग रवीन्द्र-संगीत को एकधृष्ट या नीरस कहने लगते है, किन्तु तान के बिना भी रवीन्द्रनाथ ने दूसरे कितने ही उपायो से सुर मे वैचित्र्य लाने का इतना प्रयास किया है और सफलता भी पाई है कि तनिक गहराई से विवेचना करने पर चकित होना पडता है। इस प्रसग मे उनकी कुछ विशेषताओ का यहाँ उल्लेख किया जाता है .

क—भारतवर्ष भर में जहाँ जिस कोटि का भी स्वर उन्होने सुना या पाया, उसमे उपयुक्त शव्द-योजना की अथवा उसके आधार पर गीत रचे।

ख—अनेक नये तालो और मिश्र-सुरो का प्रवर्त्तन किया, जिसकी चर्चा हम पहले ही कर आए है।

ग—ताल का आडा या तिरछा प्रयोग अथवा एक ही गान मे ताल का फेर वहुत वार देखने मे आता है। यहाँ तक कि एक ही गान को वारी-वारी से अलग-अलग तालो मे गाकर उन्होने इस क्षेत्र मे भी मौलिकता का परिचय दिया।

घ—केवल भिन्न ताल ही नही, किसी-किसी गीत को एक-के-वाद-एक भिन्न स्वर मे गाकर भी उन्होंने वैचित्र्य की सृष्टि की।

ङ—पाश्चात्य सुर-सन्धि या हार्मनी की प्रथा को यद्यपि रवीन्द्रनाथ ने शास्त्रीय ढग से पूरी तरह ग्रहण नही किया, तथापि परीक्षण के रूप में उसका भी कुछ आभास उनके दो-एक गानो में मिलता है। अन्यान्य क्षेत्रो के समान सगीत के क्षेत्र में भी उनके प्रदीप्त सक्रिय मन ने प्रयोग-परीक्षा करने मे सकोच का अनुभव नही किया। अवश्य ही इस प्रयोग-परीक्षण का मूल सदा देश की मिट्टी में ही समाया हुआ था।

च—जव स्वदेशवासियो के पुराने सस्कार विपरीत थे, तव भी उन्होने समाज मे नृत्य का प्रचार किया। इस नृत्य-आन्दोलन के प्रसग मे उन्होने जिन नृत्य-नाट्यो की रचना की थी, उनके गीतों में भी कई प्रकार की अपनी विशेषताएँ मिलती है।

छ—कविगुरु का सगीत-जीवन जिस तरह गीति-नाट्य से शुरू होता है, उसी प्रकार कहा जा सकता है कि नृत्य-नाट्य से उसकी परिसमाप्ति होती है। उनके लम्वे जीवन के इन दोनो छोरो के वीच जो योग-सूत्र था, उसे हम नाट्य-रस कह सकते है। इसी नाट्य-रस को उन्होंने नये-नये रूपो मे संगीत मे प्रकट किया था। उन्होने स्वय ही अपने किसी गीति-नाट्य को यदि गीत के सूत्र मे गुँथी हुई नाटक की माला कहा है, तो किसी दूसरे को कहा है नाटक के सूत्र मे गीतो की माला। वास्तव मे मूल वात यह है कि दोनो मे नाट्य-रस वर्तमान है और यही रस रवीन्द्र-संगीत मे वैचित्र्य लाने का एक उत्तम साधन रहा है।

इसी जगह उनके सगीत की एक मुख्य विशेषता पकड मे आती है; वह है सुर के साथ शव्द या उक्ति का अपूर्व शुभ-योग। शव्द स्वर मे कहे गए है अथवा स्वर स्वय ही वोल रहा है, कहना कठिन है: जान पड़ता है जैसे शव्द ही स्वर वन गए है अथवा स्वर ने आप ही शव्दों का वाना पहन लिया है। इसकी सर्वोत्तम अभिव्यक्ति अवश्य ही गीति-नाट्य मे हुई है और स्वर मे उत्तर-प्रत्युत्तर उसका प्रधान वाहन है।

अभी हमने रवीन्द्र-सगीत की जिन विशेपताओ का क्रम से उल्लेख किया है, उनमे उनके गीतो की प्रचुरता को भी जोडा जा सकता है। हमारा आशय केवल संख्या की ही अधिकता से नही है—वैसे यह सख्या भी अपने-आपमे कुछ कम नही—किन्तु मनुष्य के हर प्रकार के व्यष्टिगत मनोभाव और समष्टिगत समारोह की दृप्टि से इतने तरह के इतने अधिक गीत अन्य किसी देश के किसी गीतकार ने लिखे होंगे, इसमे सन्देह है।

सगीत-क्षेत्र मे रवीन्द्रनाथ के अनेक कृतित्वों के विषय में मेरा यह विनम्र विचार है कि उनका एक प्रधान कृतित्व यह कहा जायगा कि उन्होने हमारे देश के शास्त्रीय सगीत की जटिल, दीर्घ, कष्टकर साधना को किसी हद तक सहज और सरस वनाकर उसे देशवासियो के हाथो सौप दिया है। शास्त्र-सम्मत राग और ताल सभी को यथा-स्थान रख छोड़ा है, फिर भी थोडे-से लोगो की जीवन-भर की कठोर साधना के स्थान पर थोड़े-से वर्षो के मनोयोग से ही सगीत के सौन्दर्य और माधुर्य का आस्वाद पाने का पथ सर्वसाधारण को दिखा दिया है।

सगीत-रवीन्द्रनाथ की विराट् प्रतिभा का एक अश-मात्र है किन्तु वह उनकी बडी साध का—बहुत अन्तरग—अश है। उन्हीके शब्दो मे : "मै निश्चित जानता हूँ कि भविष्य के दरवार मे मेरे कविता-कहानी-नाटक के साथ चाहे जो बीते, मेरे गीतो को वगाली समाज को ग्रहण करना ही होगा, मेरे गीत सबको गाने ही होगे—वगाल के घर-घर मे, तरुहीन सुदूर पथ पर, मैदानो मे, नदी के तीर-तीर। मैने देखा है. . . . मेरे गीत जैसे मेरे अचेतन मन से वरवस निकले है। इसीलिए उनमे एक सम्पूर्णता है।"

रवीन्द्रनाथ की इस प्रियतम वस्तु का समग्र भारत मे प्रचार करने का भार लेकर साहित्य अकादेमी हमारी कृतज्ञता-भाजन वनी है। मेरा आन्तरिक आवेदन है कि इसी प्रकार रवीन्द्र-संगीत की स्वर-लिपि के प्रचार का प्रशसनीय कार्य भी अकादेमी द्वारा ही

सम्पन्न हो। मैं प्रार्थना करती हूँ कि इस सुमधुर गीति-मालिका के आकर्षण से भारत के सभी प्रदेश एकता के और भी घनिष्ठ सूत्र में आवद्ध हो।

शान्तिनिकेतन **इन्दिरा देवी चौधुराणी**
१४ अप्रैल, १९५९

सूचीपत्र

पूजा

१

आमारे के निबि भाइ, सँपिते चाइ आपनारे।
आमार एइ मन गलिये काज भुलिये सङ्गे तोदेर निये या रे॥
तोरा कोन् रूपेर हाटे चलेछिस भवेर वाटे,
पिछिये आछि आमि आपन भारे,
तोदेर ओइ हासिखुशि दिवानिशि देखे मन केमन करे॥
आमार एइ बाँधा टुटे निये या लुटेपुटे,
पड़े थाक् मनेर बोझा घरेर द्वारे—
येमन ओइ एक निमिषे वन्या एसे भासिये ने याय पारावारे॥
एत ये आनागोना के आछे जानाशोना,
के आछे नाम ध'रे मोर डाकते पारे।
यदि से बारेक एसे दाँडाय हेसे
चिनते पारि देखे तारे॥

१८९०

---

१ आमारे. ... आपनारे—मुझे कौन लेगा (ग्रहण करेगा) भाई, (मैं) अपने (आप) को सौंपना चाहता हूँ; आमार रे—मेरे इस मन को विगलित कर, काम-काज (को) भुला कर अपने साथ तुमलोग ले जाओ; तोरा. . चलेछिस —तुम सब किस रूप की हाट में चले हो, भवेर वाटे—संसार के रास्ते पर; पिछिये . . .भारे—अपने (ही) बोझ से मैं पीछे रह गया हूँ, तोदेर करे—रातदिन तुम सबो की वह हँसी खुशी देख मन (न-जाने) कैसा करता है; आमार . पुटे—मेरे इस बन्धन को छिन्न-भिन्न कर (मुझे धूल में) लूटाते-पुटाते ले जाओ; पड़े द्वारे—गृह के दरवाजे पर मन का बोझा पडा रहे; येमन . पारावारे—जैसे उस एक क्षण मे वाढ आ कर समुद्र में वहा ले जाती है; एत... आनागोना—इतनी जो आवाजाही है; के जानाशोना—जाना -पहचाना (परिचित) कौन है; के पारे—कौन है जो मेरा नाम ले कर पुकार सकता है, यदि ..तारे—यदि वह एकवार आ हँस कर खड़ा हो (तो) उसे देख कर पहचान सकता हूँ।

२

आनन्दलोके मङ्गलालोके विराज' सत्यसुन्दर ।।
महिमा तव उद्भासित महागगनमाझे,
विश्वजगत मणिभूषण वेष्टित चरणे ।।
ग्रहतारक चन्द्रतपन व्याकुल द्रुत वेगे
करिछे पान, करिछे स्नान, अक्षय किरणे ।।
धरणी- 'पर झरे निर्झर, मोहन मधु शोभा
फुलपल्लव-गीतगन्ध-सुन्दर-बरने ।।
वहे जीवन रजनीदिन चिरनूतन धारा,
करुणा तव अविश्राम जनमे मरणे ।।
स्नेह प्रेम दया भक्ति कोमल करे प्राण;
कत सान्त्वन कर वर्षण सन्तापहरणे ।।
जगते तव की महोत्सव, वन्दन करे विश्व
श्रीसम्पद भूमास्पद निर्भयशरणे ।।

१८९३

३

आमारे करो तोमार वीणा, लहो गो लहो तुले ।
उठिबे वाजि तन्त्रीराजि मोहन अङ्गुले ।।
कोमल तव कमलकरे परश करो परान- 'परे,
उठिबे हिया गुञ्जरिया तव श्रवणमूले ।।

---

२. विराज—विराजते हो; माझे—मध्य मे; तपन—सूर्य, करिछे—कर रहे है; धरणी- 'पर—धरणी के ऊपर; झरे—झरता है; बरने—वर्णों मे, रगों में; करे—करते है; कत—कितनी; सान्त्वन—सान्त्वना, कर वर्षण—वर्षा करते हो, की—क्या, कैसा; भूमा—सर्वव्यापी पुरुष, विराट्; आस्पद—आधार; वन्दन. .शरणे—(तुम्हारी) श्री-सम्पद-भूमास्पद निर्भय शरण मे विश्व वन्दना करता है।

३. आमारे वीणा—मुझे अपनी वीणा बना लो; लहो .तुले—लो, मुझे उठा लो; 'गो'=आदर सम्बोधनवाचक शब्द; उठिबे वाजि—बज उठेगी, परश करो—स्पर्श करो; परान—प्राण; उठिबे . गुञ्जरिया—हृदय गूंज उठेगा;

कखनो सुखे कखनो दुखे   काँदिबे चाहि तोमार मुखे,
चरणे पड़ि रबे नीरबे रहिबे यबे भुले।
केह ना जाने की नव ताने   उठिवे गीत शून्य-पाने,
आनन्देर बारता याबे अनन्तेर कूले।।

१८९५

४

अन्धजने देहो आलो, मृतजने देहो प्राण—
तुमि करुणामृतसिन्धु करो करुणाकणा दान।।
शुष्क हृदय मम   कठिन पाषाणसम,
प्रेमसलिलधारे सिञ्चह शुष्क नयान।।
ये तोमारे डाके ना हे, तारे तुमि डाको डाको।
तोमा हते दूरे ये याय तारे तुमि राखो राखो।।
तृषित ये जन फिरे   तव सुधासागरतीरे।
जुड़ाओ ताहारे स्नेहनीरे, सुधा कराओ हे पान।।

१८९६

५

आनन्दधारा बहिछे भुवने,
दिनरजनी कत अमृतरस उथलि याय अनन्त गगने।।

कखनो—कभी, काँदिबे   मुखे—तुम्हारे मुख की ओर देख कर क्रन्दन करेगी; चरणे—चरणो में, पड़ि रबे—पडी रहेगी; रहिबे   भुले—जब भूले रहेंगो; केह . जाने—कोई नही जानता, की—किस, शून्य-पाने—शून्य (आकाश) को ओर; बारता—वार्ता, संवाद, सन्देश, याबे—जायगी।

४ अन्धजने—अन्धे को, देहो—दो, आलो—आलोक, तुमि—तुम, सिञ्चह—सीचो; नयान—नयन, ये   हे—जो तुम्हे नही पुकारता; तारे—उसे; डाको—पुकारो, तोमा   याय—तुमसे जो दूर जाय; राखो—रखो; जाने न दो, ये—जो; फिरे—भटकता फिरता है; जुड़ाओ—शीतल करो, ताहारे—उसे।

५. बहिछे—बह रही है, कत—कितना; उथलि—उफन कर, उत्तो-

पान करे रवि शशी अञ्जलि भरिया,
सदा दीप्त रहे अक्षय ज्योति,
नित्य पूर्ण धरा जीवने किरणे ।।
वसिया आछ केन आपन-मने,
स्वार्थनिमगन की कारणे ।
चारि दिके देखो चाहि हृदय प्रसारि,
क्षुद्र दुःख सब तुच्छ मानि,
प्रेम भरिया लहो शून्य जीवने ।।

१८९६

६

ओहे जीवनवल्लभ, ओहे साधन दुर्लभ,
आमि मर्मेर कथा अन्तर व्यथा किछुइ नाहि कव—
शुधु जीवन मन चरणे दिनु, बुझिया लहो सब ।
आमि की आर कव ।।
एइ संसारपथसंकट अति कंटकमय हे,
आमि नीरवे याव हृदये लये प्रेममुरति तव ।
आमि की आर कव ।।
सुख दुख सब तुच्छ करिनु, प्रिय अप्रिय हे—
तुमि निज हाते याहा सँपिबे ताहा माथाय तुलिया लव
आमि की आर कव ।।

लिप्त हो कर; याय—जाता है; भरिया—भर कर; वसिया मने—अपने आप में (रत) क्यों बैठे हुए हो; निमगन—निमग्न; की—किस; चारि दिके—चारो ओर; प्रसारि—पसार कर; मानि—मान कर; भरिया लहो—भर लो ।

६ आमि—मैं; किछुइ. .कव—कुछ भी नहीं कहूँगा; शुधु—केवल; चरणे दिनु—चरणों में दिया, बुझिया लहो—समझ लो; आमि . . . कव—मैं और क्या कहूँगा; एइ—यह; आमि . तव—मैं तुम्हारी प्रेममूर्ति (प्रतिमा) को हृदय में ले कर चुपचाप जाऊँगा; करिनु—किया; हाते—हाथ में; याहा .....लव—जो सौंपोगे उसे सिर पर चढा लूंगा;

अपराध यदि करे थाकि पदे, ना कर यदि क्षमा,
तबे परानप्रिय, दियो हे दियो वेदना नव नव।
तबु फेलो ना दूरे, दिवसशेषे डेके नियो चरणे—
तुमि छाडा आर की आछे आमार, मृत्यु-आँधार भव।
आमि की आर कव ।।

१८९६

७

के याय अमृतधामयात्री!
आजि ए गहन तिमिररात्रि,
काँपे नभ जयगाने ।।
आनन्दरव श्रवणे लागे, सुप्त हृदय चमकि जागे,
चाहि देखे पथपाने ।।
ओगो रहो रहो, मोरे डाकि लहो, कहो आश्वासवाणी।
यावो अहरह साथे
सुखे दुखे शोके दिवसे राते
अपराजित प्राणे ।।

१८९६

अपराध. .पदे—चरणो मे यदि अपराध करूँ; ना क्षमा—यदि (तुम) क्षमा न करो; तबे—तव; परानप्रिय—प्राणप्रिय; दियो—देना; तबु . दूरे—तो भी दूर न फेक देना; डेके चरणे—चरणो मे वुला लेना, तुमि आमार—तुम्हे छोड़ कर और मेरा क्या है; आंधार—अंधकार।

७ के याय—कौन जाता है, आजि—आज; ए—इस, श्रवणे लागे—सुनाई देता है; चमकि जागे—चौंक कर जागता है; चाहि .पाने—रास्ते की ओर ताकता है; ओगो—अजी; मोरे . .लहो—मुझे वुला लो; यावो—जाऊँगा।

८

तोमारि इच्छा हउक पूर्ण, करुणामय स्वामी।
तोमारि प्रेम स्मरणे राखि, चरणे राखि आशा—
दाओ दुःख, दाओ ताप, सकलि सहिव आमि ॥
तव प्रेम-आँखि सतत जागे, जेनेओ ना जानि,
ओइ मङ्गलरूप भुलि, ताइ शोक-सागरे नामि ॥
आनन्दमय तोमार विश्व शोभासुखपूर्ण;
आमि आपन दोषे दुःख पाइ, वासना-अनुगामी ॥
मोहबन्ध छिन्न करो कठिन आघाते;
अश्रुसलिलधौत हृदये थाको दिवसयामी ॥

१८९६

९

तांहारे आरति करे चन्द्र तपन, देव मानव वन्दे चरण—
आसीन सेइ विश्वशरण तार जगत-मन्दिरे ॥
अनादिकाल अनन्तगगन सेइ असीम-महिमा-मगन—
ताहे तरङ्ग उठे सघन आनन्द-नन्द-नन्द रे ॥
हाते लये छय ऋतुर डालि पाये देय धरा कुसुम ढालि—
कतइ वरन, कतइ गन्ध, कत गीत, कत छन्द रे ॥

---

८. तोमारि—तुम्हारी ही; हउक—हो, राखि—रखूं; दाओ—दो; सकलि—सकल ही, सभी, सहिव—सहूँगा; आमि—मैं; जेनेओ..... जानि—जान कर भी नहीं जानता, ओइ—वह; भुलि—भूल जाता हूँ, नामि—उतरता हूँ, भीतर प्रवेश करता हूँ, आपन दोषे—अपने दोष से, पाइ—पाता हूँ; थाको—रहो।

९. तांहारे तपन—चन्द्र सूर्य उनकी आरती करते हैं; वन्दे—वन्दना करते हैं; सेइ—वह; तांर—अपने; सेइ—उसी, ताहे—इसीलिये; हाते ....डालि—हाथों में छः ऋतुओं की डलिया ले कर; पाये—पैरों में; देय ढालि—ढाल देती है; कतइ—कितने ही; वरन—वर्ण, रंग; कत—कितने;

विहगगीत गगन छाय— जलद गाय, जलधि गाय—
महापवन हरषे धाय, गाहे गिरिकन्दरे।
कत कत शत भकतप्राण हेरिछे पुलके, गाहिछे गान—
पुण्य किरणे फुटिछे प्रेम, टुटिछे मोहवन्ध रे।।

१८९६

१०

नयन तोमारे पाय ना देखिते, रयेछ नयने नयने।
हृदय तोमारे पाय ना जानिते, हृदये रयेछ गोपने।।
वासनार वशे मन अविरत धाय दश दिशे पागलेर मतो,
स्थिर-आँखि तुमि मरमे सतत जागिछ शयने स्वपने।।
सबाइ छेड़ेछे, नाइ यार केह, तुमि आछ तार, आछे तव स्नेह,
निराश्रय जन, पथ यार गेह, सेओ आछे तव भवने।
तुमि छाड़ा केह साथि नाइ आर, समुखे अनन्त जीवनविस्तार—
कालपारावार करितेछ पार केह नाहि जाने केमने।।

गाय—गाता है, हरषे धाय—हर्ष से दौडता है, गाहे—गाते है, भकत—भक्त, हेरिछे—निहार रहे हैं, गाहिछे—गा रहे हैं, फुटिछे—प्रस्फुटित हो रहा है; टुटिछे—टूट रहा है, बन्ध—बन्धन।

१० नयन देखिते—नयन तुम्हे देख नही पाते, रयेछ नयने—प्रति नयन मे तुम निवास करते हो; हृदय गोपने—हृदय तुम्हे जान नही पाता, तुम गोपन भाव से हृदय मे (ही) मौजूद हो, वासनार वशे—वासना के वश में, धाय—दौडता है, दिशे—दिशाओ में, पागलेर मतो—पागल के समान, मरमे—मर्म (अन्तर) मे, जागिछ—जाग रहे हो, स्वपने—स्वप्न में, सबाइ छेड़ेछे—सभी ने छोड दिया है, नाइ केह—जिसका कोई नही है, तुमि स्नेह—उसके तुम हो, (उसके लिये) तुम्हारा स्नेह है, पथ गेह—पथ ही जिसका घर है, सेओ भवने—वह भी तुम्हारे भवन में है, तुमि आर—तुम्हे छोड और कोई साथी नही है, करितेछ—कर रहे हो, केह केमने—कोई नही जानता किस प्रकार;

जानि शुधु तुमि आछ ताइ आछि, तुमि प्राणमय ताइ आमि बाँचि,
यत पाइ तोमाय आरो तत याचि, यत जानि तत जानि ने।
जानि आमि तोमाय पाव निरन्तर लोकलोकान्तरे युगयुगान्तर—
तुमि आर आमि, माझे केह नाइ, कोनो बाधा नाइ भुवने।।

१८९६

११

प्रभाते विमल आनन्दे विकशित कुसुमगन्धे
विहङ्गमगीतछन्दे तोमार आभास पाइ।।
जागे विश्व तव भवने प्रतिदिन नव जीवने,
अगाध शून्य पूरे किरणे,
खचित निखिल विचित्र वरने—
विरल आसने वसि तुमि सब देखिछ चाहि।।
चारि दिके करे खेला वरन-किरण-जीवन-मेला,
कोथा तुमि अन्तराले।
अन्त कोथाय, अन्त कोथाय—अन्त तोमार नाहि नाहि।।

१८९६

जानि . आछि—केवल (इतना ही) जानता हूँ (कि) तुम हो इसीलिये (मैं) हूँ; तुमि. बाँचि—तुम प्राणमय हो इसीलिये जीता हूँ; यत . याचि—जितना तुम्हें पाता हूँ उतना ही और याचना करता हूँ; यत . ने—जितना जानता हूँ उतना (ही लगता है कि तुम्हें) नहीं जानता; पाव—पाऊँगा, तोमाय—तुम्हें; माझे . नाइ—बीच में कोई नहीं, कोनो—कोई।

११ तोमार . पाइ—तुम्हारा आभास पाता हूँ, पूरे—परिपूर्ण होता है; वरने—वर्ण (रंग) में, वसि—बैठ कर; तुमि . चाहि—तुम सब कुछ दृष्टि डालकर देख रहे हो; चारि दिके—चारों ओर, करे खेला—खेल (क्रीड़ा) कर रहे हैं, कोथा—कहाँ तुमि—तुम; कोथाय—कहाँ, तोमार—तुम्हारा; नाहि—नहीं है।

१२

सुधासागरतीर हे, एसेछे नरनारी सुधारस-पियासे।
शुभ विभावरी, शोभामयी धरणी,
निखिल गाहे आजि आकुल आश्वासे।।
गगने विकाशे तव प्रेमपूर्णिमा,
मधुर वहे तव कृपासमीरण।
आनन्दरङ्ग उठे दश दिके,
मग्न मन प्राण अमृत-उच्छ्वासे।।

१८९६

१३

हृदय वेदना बहिया प्रभु, एसेछि तव द्वारे।।
तुमि अन्तर्यामी हृदयस्वामी, सकलइ जानिछ हे—
यत दुःख लाज दारिद्रय सकट आर जानाइव कारे।।
अपराध कत करेछि नाथ, मोहपाशे प'ड़े;
तुमि छाड़ा प्रभु, मार्जना केह करिबेना संसारे।।
सब वासना दिब विसर्जन तोमार प्रेमपाथारे;
सव विरह विच्छेद भुलिब तव मिलन-अमृतधारे।।
आर आपन भावना पारि ना भाविते, तुमि लहो मोर भार;
परिश्रान्त जने प्रभु, लये याओ ससारसागर पारे।।

१८९६

---

१२. एसेछे—आए हैं, पियासे—प्यास से, गाहे—गाता है; आजि—आज।

१३. बहिया—वहन कर; एसेछि—आया हूँ; सकलइ—सभी कुछ; जानिछ—जानते हो; यत—जितना; आर कारे—और किसे वताऊँगा, कत—कितना; करेछि—किया है; प'ड़े—पड कर, तुमि छाड़ा—तुम्हे छोड; मार्जना .. संसारे—संसार मे कोई क्षमा नही करेगा, विसर्जन दिव—विसर्जन कर दूगा; तोमार—तुम्हारे; पाथारे—समुद्र में, भुलिव—भूल जाऊँगा; आर—और; पारि .. भाविते—नही सोच पाता, तुमि. भार—तुम मेरा भार ले लो, जने—व्यक्ति को; लये याओ—ले जाओ।

१४

आमि संसारे मन दियेछिनु, तुमि आपनि से मन नियेछ।
आमि सुख ब'ले दुख चेयेछिनु, तुमि दुख ब'ले सुख दियेछ॥
हृदय याहार शतखाने छिल शत स्वार्थेर साधने
ताहारे केमने कुड़ाये आनिले, बाँधिले भक्तिबाँधने॥
सुख सुख करे द्वारे द्वारे मोरे कत दिके कत खोँजाले,
तुमि ये आमार कत आपनार एबार से कथा बोझाले॥
करुणा तोमार कोन् पथ दिये कोथा निये याय काहारे—
सहसा देखिनु नयन मेलिये, एनेछ तोमारि दुयारे॥

१९००

१५

जानि हे यबे प्रभात हबे तोमार कृपा-तरणी
लइबे मोरे भवसागर-किनारे।
करि ना भय, तोमारि जय गाहिया याब चलिया,
दाँड़ाब आसि तब अमृतदुयारे॥

---

१४ आमि.. दियेछिनु—मैं संसार की ओर मन लगाए हुए था; तुमि नियेछ—तुमने स्वयं ही वह मन ले लिया है; आमि . चेयेछिनु—सुख के रूप में मैंने दुःख चाहा था, तुमि... दियेछ—तुमने दुःख के रूप में सुख दिया है; हृदय ... साधने—सैकड़ो स्वार्थों की साधना में जिसका हृदय सैकड़ो जगह था; ताहारे ....बाँधने—उसे किस प्रकार उठा लाए और भक्ति के बंधन में बाँधा; कुड़ाये—फेंकी हुई परित्यक्त वस्तु को उठा कर; सुख खोँजाले—सुख सुख करते हुए द्वार-द्वार कितनी दिशाओं में मुझसे कितनी खोज कराई; तुमि. .. बोझाले—तुम जो मेरे कितने अपने हो उस बार यह बात समझा दी, करुणा ... काहारे—तुम्हारी करुणा किस पथ से किसे कहाँ ले जाती है; सहसा दुयारे—सहसा आँखें खोल कर देखा, अपने ही दरवाजे ले आए हो।

१५. जानि—जानता हूँ, यबे—जब; हबे—होगा; तोमार—तुम्हारी; लइबे—पहुँचा देगी, मोरे—मुझे, करि ना—नहीं करना, तोमारि. . चलिया—तुम्हारी ही जय गा कर चला जाऊँगा, दाँड़ाब आसि—आ कर खड़ा हूँगा; दुयारे—द्वार पर, तुमि—तुमने, घेरिया—घेर कर, रेखेछ मोरे—मुझे

जानि हे तुमि युगे युगे तोमार वाहु घेरिया
रेखेछ मोरे तव असीम भुवने,
जनम मोरे दियेछ तुमि आलोक हते आलोके,
जीवन हते नियेछ नव जीवने।
जानि हे नाथ, पुण्यपापे हृदय मोर सतत
शयान आछे तव नयनसमुखे।
आमार हाते तोमार हात रयेछे दिनरजनी,
सकल पथे-विपथे सुखे-असुखे।
जानि हे जानि, जीवन मम विफल कभु हवे ना,
दिबे ना फेलि विनाश-भय-पाथारे—
एमन दिन आसिबे यबे करुणा भरे आपनि
फुलेर मतो तुलिया लबे ताहारे।।

१९००

१६

अल्प लइया थाकि, ताइ मोर याहा याय ताहा याय।
कणाटुकु यदि हाराय ता लये प्राण करे 'हाय हाय'।।
नदीतटसम केवलइ वृथाइ प्रवाह आँकड़ि राखिवारे चाइ,
एके एके वुके आघात करिया ढेउगुलि कोथा याय।।

रखा है, दियेछ—दिया है, हते—से, नियेछ—ले गए हो, शयान—सोया हुआ, आछे—है, नयनसमुखे—आँखो के सम्मुख, आमार रयेछे—मेरे हाथो मे तुम्हारे हाथ पडे हुए है; कभु .ना—कभी नही होगा; दिबे पाथारे—विनाश-भय के सागर मे फेंक नही दोगे; एमन ताहारे—ऐसा दिन आएगा जब दया से भर अपने आप ही फूल के समान उसे (मेरे जीवन को) उठा लोगे।

१६ अल्प थाकि—स्वल्प को ले कर रहता हूँ, ताइ याय—इसीलिये मेरा जो कुछ जाता है वह चला ही जाता है, कणाटुकु—कण भर, हाराय—खो जाता है, ता लये—उसे ले कर, करे—करता है, केवलइ—केवल ही; वृथाइ—व्यर्थ ही; आँकड़ि चाइ—जकड कर रखना चाहता हूँ, एके . याय—एक एक कर छाती पर आघात कर लहरे कहाँ चली जाती है;

याहा याय आर याहा किछु थाके सव यदि दिइ सँपिया तोमाके
तवे नाहि क्षय, सवइ जेगे रय तव महा महिमाय ।।
तोमाते रयेछे कत शशी भानु, हाराय ना कभु अणु परमाणु,
आमारइ क्षुद्र हाराधनगुलि रवे ना कि तव पाय ।।

१३०१

१७

तोमार असीमे प्राणमन लये यत दूरे आमि धाइ—
कोयाओ दु:ख, कोथाओ मृत्यु, कोथा विच्छेद नाइ ।।
मृत्यु से धरे मृत्युर रूप, दु:ख हय हे दु:खेर कूप,
तोमा हते यबे हइये विमुख आपनार पाने चाइ ।।
हे पूर्ण, तव चरणेर काछे याहा-किछु सव आछे आछे आछे—
नाइ नाइ भय, से शुधु आमारइ, निशिदिन काँदि ताइ ।
अन्तरग्लानि संसारभार पलक फेलिते कोथा एकाकार
जीवनेर माझे स्वरूप तोमार राखिवारे यदि पाइ ।।

१९०१

याहा .थाके—जो जाता है और जो-कुछ रह जाता है; दिइ. .. तोमाके—तुम्हें सौंप दूं; तवे—तव; नाहि—नही है; सवइ—सभी; जेगे रय—जगा (वना) रहता है; महिमाय—महिमा में; तोमाते .भानु—तुम मे कितने चन्द्र-सूर्य हैं, हाराय . ..कभु—कभी नहीं खोते; आमार. ..पाय—मेरी ही खोई हुई क्षुद्र धनराशि क्या तुम्हारे चरणों में नही रहेगी ?

१७ तोमार असीमे—तुम्हारे असीम में; लये—ले कर; यत दूरे—जितने दूर दूर तक भी; आमि धाइ—मैं दौड़ पाता हूँ; कोयाओ—कही भी; विच्छेद—वियोग; नाइ—नही (दिखाई देना); से—वह; हय—हो जाता है; तोमा..... धाइ—तुमसे जब विमुख हो कर अपनी (ही) ओर देखता हूँ; चरणेर काछे—चरणों के निकट; याहा किछु—जो कुछ, आछे—है; नाइ—नही है; से . आमारइ—वह केवल मेरे ही है; काँदि ताइ—इसीलिये क्रन्दन करता हूँ; पलक फेलिते—पल भर में, कोथा—कहाँ; जीवनेर माझे—जीवन में; राखिवारे . पाइ—यदि (सहेजकर) रख पाऊँ ।

१८

तोमार पताका यारे दाओ तारे बहिवारे दाओ शकति।
तोमार सेवार महान दु.ख सहिवारे दाओ भकति ।।
आमि ताइ चाइ भरिया परान   दु.खेर साथे दु.खेर त्राण,
तोमार हातेर वेदनार दान एड़ाये चाहि ना मुकति।
दुख हबे मम माथार भूषण साथे यदि दाओ भकति ।।
यत दिते चाओ काज दियो यदि तोमारे ना दाओ भुलिते,
अन्तर यदि जड़ाते ना दाओ जालजञ्जालगुलिते।
बाँधियो आमाय यत खुशि डोरे   मुक्त राखियो तोमा-पाने मोरे
धुलाय राखियो पवित्र क'रे तोमार चरणधूलिते;
भुलाये राखियो संसारतले, तोमारे दियो ना भुलिते ।।
ये पथे घुरिते दियेछ घुरिब, याइ येन तव चरणे;
सब श्रम येन बहि लय मोरे सकलश्रान्तिहरणे।
दुर्गम पथ ए भवगहन—   कत त्याग शोके विरहदहन—

---

१८. तोमार.. शकति—जिसे (तुम) अपनी पताका देते हो उसे (उसको) वहन करने की शक्ति (भी) देते हो; सेवार—सेवा का, सहिवारे भकति—सहन करने के लिये भक्ति देते हो; आमि परान—इसीलिये मै प्राण भर कर चाहता हूँ; दुःखेर .त्राण—दुःख के साथ दु.ख का त्राण, हातेर—हाथ का; दान एड़ाये . मुकति—दान से कतरा (वच निकल) कर मुक्ति नही चाहता; हबे—होगा; यत भुलिते—जितना काम (करने के लिये) देना चाहो देना, यदि (उसे करने में) तुम अपने को भूल न जाने दो; जड़ाते दाओ—लिप्त न होने दो; बाँधियो. डोरे—जितनी (तुम्हारी) खुशी हो मुझे बन्धन में बाँधना; मुक्त ... मोरे—(लेकिन) अपनी ओर मुझे मुक्त रखना; धुलाय धूलिते—अपनी चरण-धूलि से पवित्र कर धूल में रखना; भुलाये .भुलिते—ससार (के नाना काजो) में भुलाए रखना (लेकिन) अपने को न भूलने देना, ये घुरिब—जिस पथ पर (मुझे) भटकने को भेजा है (उसी में) भटकूंगा, याइ चरणे—(लेकिन) ऐसा हो कि (भटकते हुए) तुम्हारे चरणो में पहुँच जाऊँ; सब श्रान्तिहरणे—सब श्रम जिससे मुझे वहन कर सकल श्रान्तिहरण (अर्थात् तुम) तक ले जाय; ए—यह; कत—कितना;

जीवने मृत्यु करिया वहन प्राण पाइ येन मरणे—
सन्ध्यावेलाय लभि गो कुलाय निखिलशरण चरणे ।।

१९०१

१९

प्रतिदिन तव गाथा गाव आमि सुमधुर—
तुमि देहो मोरे कथा, तुमि देहो मोरे सुर ।।
तुमि यदि थाको मने   विकच कमलासने,
तुमि यदि कर प्राण तव प्रेमे परिपूर
प्रतिदिन तव गाथा गाव आमि सुमधुर ।।
तुमि शोन यदि गान आमार समुखे थाकि,
सुधा यदि करे दान तोमार उदार आँखि,
तुमि यदि दुख'परे   राख कर स्नेहभरे,
तुमि यदि सुख हते दम्भ करह दूर
प्रतिदिन तव गाथा गाव आमि सुमधुर ।।

१९०१

२०

आछे दुःख, आछे मृत्यु, विरहदहन लागे ।
तबुओ शान्ति, तबु आनन्द, तबु अनन्त जागे ।।

करिया—कर; पाइ—पाऊँ; लभि—प्राप्त करूँ; कुलाय—नीड; सन्ध्या ... चरणे—सन्ध्या के समय समस्त को शरण देने वाले (तुम्हारे) चरण रूपी नीड को प्राप्त करूँ।

१९. गाव—गाऊँगा; देहो—दो; कथा—शब्द, उक्ति, थाको मने—मन में रहो; परिपूर—परिपूर्ण; शोन—सुनो, आमार.. थाकि—मेरे सम्मुख रह कर; आँखि—आँखें; दुख'परे—दुख पर; राख—रखो; हते—से; करह—करो।

२०. आछे—है; दहन—दाह, यन्त्रणा; लागे—(विरहदाह का क्लेश) बोध होता है, तबुओ—तो भी, हासे—हँसते हैं; आसे—आता है;

तबु प्राण नित्यधारा, हासे सूर्य चन्द्र तारा,
वसन्त निकुञ्जे आसे विचित्र रागे ।।
तरङ्ग मिलाये याय, तरङ्ग उठे;
कुसुम झरिया पडे, कुसुम फुटे ।
नाहि क्षय, नाहि शेष नाहि नाहि दैन्यलेश—
सेइ पूर्णतार पाये मन स्थान मागे ।।

१९०३

२१

आजि प्रणमि तोमारे चलिब, नाथ, ससारकाजे ।
तुमि आमार नयने नयन रेखो अन्तरमाझे ।।
हृदयदेवता रयेछ प्राणे मन येन ताहा नियत जाने,
पापेर चिन्ता मरे येन दहि दु सह लाजे ।।
सब कलरवे सारा दिनमान शुनि अनादि संगीतगान,
सवार सङ्गे येन अविरत तोमार सङ्ग राजे ।
निमेषे निमेषे नयने वचने, सकल कर्मे, सकल मनने,
सकल हृदयतन्त्रे येन मङ्गल बाजे ।।

१९०३

२२

आनन्द तुमि स्वामी, मङ्गल तुमि,
तुमि हे महासुन्दर, जीवननाथ ।।

रागे—रंग मे; मिलाये याय—मिट जाती हैं; झरिया पड़े—झड़ पड़ते हैं; फुटे—खिलते हैं; नाहि—नही है; सेइ—उसी; पूर्णतार पाये—पूर्णता के चरणो मे, मागे—माँगता है, याचना करता है ।

२१. तोमारे—तुम्हे; चलिब—चलूँगा; रेखो—रखो; रयेछ—विद्यमान हो, ताहा—उसे; नियत—स्थिर, येन—जिससे; शुनि—सुनूँ; सवार सङ्गे—सभी के साथ, राजे—विराजित हो ।

शोके दुखे तोमारि वाणी जागरण दिबे आनि,
नाशिबे दारुण अवसाद ।।
चित मन अर्पिनु तव पद प्रान्ते,
शुभ्र शान्तिशतदल-पुण्यमधु-पाने
चाहि आछे सेवक, तव सुदृष्टिपाते
कबे हबे ए दुखरात प्रभात ।।

१९०३

२३

आजि मम मन चाहे जीवनबन्धुरे,
सेइ जनमे मरणे नित्यसङ्गी
निशिदिन सुखे शोके—
सेइ चिर-आनन्द, विमल चिरसुधा,
युगे युगे कत नव नव लोके नियतशरण ।
पराशान्ति, परमप्रेम, परामुक्ति, परमक्षेम,
सेइ अन्तरतम चिरसुन्दर प्रभु, चित्तसखा,
धर्म-अर्थ-काम-भरण राजा हृदयहरण ।।

१९०३

२४

तोमारि नामे नयन मेलिनु पुण्यप्रभाते आजि,
तोमारि नामे खुलिल हृदयशतदलदलराजि ।
तोमारि नामे निविड़ तिमिरे फुटिल कनकलेखा,
तोमारि नामे उठिल गगने किरणवीणा वाजि ।।

---

२२. तोमारि—तुम्हारी ही; दिबे आनि—ला देगी; नाशिबे—नष्ट कर देगी; चाहि आछे—देख रहा है, टकटकी लगाए हुए है; कबे हबे—कब होगा ।

२३. जीवनबन्धुरे—जीवनबन्धु को; सेइ—उसी ।

२४. तोमारि नामे—तुम्हारे ही नाम के साथ; मेलिनु—खोले; खुलिल—खुली; फुटिल—खिली, प्रस्फुटित हुई; उठिल वाजि—बज उठी;

तोमारि नामे पूर्वतोरणे खुलिल सिहद्वार,
बाहिरिल रवि नवीन आलोके दीप्त मुकुट माजि ।।
तोमारि नामे जीवनसागरे जागिल लहरीलीला,
तोमारि नामे निखिल भुवन बाहिरे आसिल साजि ।।

१९०३

२५

दुयारे दाओ मोरे राखिया नित्य कल्याण-काजे हे ।
फिरिब आह्वान मानिया तोमारि राज्येर माझे हे ।।
मजिया अनुखन लालसे रब ना पड़िया आलसे,
हयेछे जर्जर जीवन व्यर्थ दिवसेर लाजे हे ।।
आमारे रहे येन ना घिरि सतत बहुतर संशये,
विविध पथे येन ना फिरि बहुल-सग्रह-आशये ।
अनेक नृपतिर शासने ना रहि शंकित आसने,
फिरिब निर्भयगौरवे तोमारि भृत्येर साजे हे ।।

१९०३

२६

दाँडाओ आमार आँखिर आगे ।
येन तोमार दृष्टि हृदये लागे ।।

बाहिरिल—बाहर हुआ; माजि—माँज कर, परिष्कृत कर, जागिल—जागी; आसिल—आया; साजि—सज कर ।

२५. दुयारे—द्वार पर, दरवाजे पर, दाओ—दो, मोरे—मुझे; राखिया—रख; फिरिब—घूमूगा, मानिया—मान कर, स्वीकार कर; मजिया—विभोर हो कर, डूब कर; अनुखन—निरन्तर, सर्वदा, लालसे—लालसा में, लिप्सा मे, रब आलसे—आलस्य मे पड़ा नही रहूँगा, हयेछे—हो गया है, व्यर्थ हे—व्यर्थ दिवसो (के विताने) की लज्जा से, घिरि—घेर कर, आशये—अभिप्राय से, रहि—रहूँ, साजे—साज-सज्जा मे ।

२६ दाँडाओ—खड़े होओ, आमार आगे—मेरी आँखो के सामने;

समुख-आकाशे चराचरलोके एइ अपरूप आलोके दाँड़ाओ हे,
आमार परान पलके पलके चोखे चोखे तव दरश मागे ॥
एइ-ये धरणी चेये व'से आछे इहार माधुरी बाड़ाओ हे ।
धुलाय-बिछानो श्याम अञ्चले दाँड़ाओ हे नाथ, दाँडाओ हे ॥
याहा-किछु आछे सकलइ झाँपिया, भुवन छापिया, जीवन व्यापिया
दाँडाओ हे ।
दाँड़ाओ येखाने विरही ए हिया तोमारि लागिया एकेला जागे ॥
१९०३

२७

निविड़ घन आँधारे ज्वलिछे ध्रुवतारा ।
मन रे मोर, पाथारे होस ने दिशेहारा ॥
विषादे हये म्रियमाण बन्ध ना करियो गान,
सफल करि तोलो प्राण टुटिया मोहकारा ॥
राखियो बल जीवने, राखियो चिर-आशा,
शोभन एइ भुवने राखियो भालोवासा ।
संसारेर सुखे दुखे चलिया येयो हासिमुखे,
भरिया सदा रेखो बुके ताँहारि सुधाधारा ॥
१९०३

समुखे—सम्मुख, प्रत्यक्ष; एइ—इस; परान—प्राण; पलके पलके—क्षण क्षण; एइ-ये—यह जो, चेये . आछे—(आशा में) ताकती बैठी है; इहार—इसकी; बाड़ाओ—बढ़ाओ, धुलाय-बिछानो—धूलि में बिछे हुए; याहा . झाँपिया—जो कुछ है सब को आच्छादित कर; छापिया—ढक कर, येखाने—जहाँ; तोमारि लागिया—तुम्हारे ही लिये; एकेला—अकेला ।

२७. आँधारे—अंधकार में; ज्वलिछे—प्रज्वलित हो रहा है, चमक रहा है; पाथारे—सागर में; होस ने—मत हो; दिशेहारा—दिग्भ्रान्त, हये—होकर; बन्ध. गान—गान बन्द न करना; करि तोलो—कर लो; टुटिया—तोड़ कर; शोभन—शोभायुक्त, सुन्दर, भालोवासा—प्यार, चलिया येयो—चले जाना, भरिया . बुके—हृदय में सदा भर रखो; ताँहारि—उन्हीं की ।

२८

बाजाओ तुमि कवि, तोमार संगीत सुमधुर
गम्भीरतर ताने प्राणे मम,
द्रव जीवन झरिबे झर झर निर्झर तव पाये ।।
विसरिबे सब सुख-दुख, चिन्ता, अतृप्त वासना—
विचरिबे विमुक्त हृदय विपुल विश्व-माझे
अनुखन आनन्दबाये ।।

१९०३

२९

विमल आनन्दे जागो रे।
मगन हओ सुधासागरे ।।
हृदय-उदयाचले देखो रे चाहि
प्रथम परम ज्योतिराग रे ।।

१९०३

३०

सबार माझारे तोमारे स्वीकार करिब हे।
सबार माझारे तोमारे हृदये बरिब हे ।।
शुधु आपनार मने नय, आपन घरेर कोणे नय,
शुधु आपनार रचनार माझे नहे; तोमार महिमा येथा उज्ज्वल रहे

---

२८. पाये—पैरों मे; बिसरिबे—विसर जाएगे, भूल जाएगे, विचरिबे—विचरण करेगा, अनुखन—निरन्तर, बाये—वायु मे।

२९ हओ—होओ; चाहि—ताककर।

३०. सबार... ..करिब—सबके बीच तुम्हे स्वीकार करूँगा, बरिब—वरण करूँगा; शुधु. नय—केवल अपने मन में नही, (केवल) अपने घर के कोने मे नही; नहे—नही; येथा—जहाँ; सेइ सबा-माझे—उसी सब के बीच,

सेइ सभा-माझे तोमारे स्वीकार करिब हे ।
द्युलोके भूलोके तोमारे हृदये वरिब हे ।।
सकलि तेयागि तोमारे स्वीकार करिब हे ।
सकलि ग्रहण करिया तोमारे वरिब हे ।।
केवलि तोमार स्तवे नय, शुधु संगीतरवे नय,
शुधु निर्जने ध्यानेर आसने नहे: तव संसार येथा जाग्रत रहे
कर्मे सेथाय तोमारे स्वीकार करिब हे ।
प्रिये अप्रिये तोमारे हृदये वरिब हे ।।
जानि ना बलिया तोमारे स्वीकार करिब हे ।
जानि ब'ले नाथ, तोमारे हृदये वरिब हे ।।
शुधु जीवनेर सुखे नय, शुधु प्रफुल्लमुखे नय,
शुधु सुदिनेर सहज सुयोगे नहे; दुखशोक येथा आँधार करिया रहे
नत ह्ये सेथा तोमारे स्वीकार करिब हे ।
नयनेर जले तोमारे हृदये वरिब हे ।।

१९०३

३१

स्वपन यदि भाङिले रजनीप्रभाते
पूर्ण करो हिया मङ्गल किरणे ।
राखो मोरे तव काजे,
नवीन करो ए जीवन हे ।
खुलि मोर गृहद्वार डाको तोमारि भवने हे ।।

१९०३

तेयागि—त्याग कर; सेथाय—वहाँ, जानि बलिया—जानता नहीं हूँ इसलिये; जानि ब'ले—जानता हूँ इसलिये; ह्ये—हो कर।

३१. स्वपन—स्वप्न; भाङिले—तोड़ दिया; खुलि—खोल कर।

३२

हृदय वासना पूर्ण हल आजि मम पूर्ण हल, शुन सव जगतजने ।।
की हेरिनु शोभा, निखिल भुवननाथ
चित्त-माझे वसि स्थिर आसने ।।

१९०३

३३

ये-केह मोरे दियेछ सुख दियेछ ताँरि परिचय,
सवारे आमि नमि ।
ये-केह मोरे दियेछ दुख दियेछ ताँरि परिचय,
सबारे आमि नमि ।।
ये-केह मोरे बेसेछ भालो ज्वेलेछ घरे ताँहारि आलो,
ताँहारि माझे सबारइ आजि पेयेछि आमि परिचय,
सबारे आमि नमि ।।
या-किछु काछे एसेछे, आछे, एनेछे ताँरे प्राणे,
सवारे आमि नमि ।
या-किछु दूरे गियेछे छेडे टेनेछे ताँरि पाने,
सबारे आमि नमि ।
जानि वा आमि नाहि वा जानि, मानि वा आमि नाहि वा मानि,

---

३२. हल—हुई, आजि—आज; शुन ....जने—जगत के सब लोग सुनो, की शोभा—कैसी शोभा देखी; बसि—बैठे हुए हैं।

३३ ये नमि—तुम-जिस-किसीने मुझे सुख दिया है, उन्हीका परिचय दिया है, मैं सबको नमस्कार करता हूँ, बेसेछ भालो—प्यार किया है, ज्वेलेछ—जलाया है, प्रज्वलित किया है, ताँहारि—उन्हीका, आलो—आलोक, प्रदीप, पेयेछि—पाया है, काछे—निकट, एसेछे—आया है, आछे—विद्यमान है; एनेछे—ले आया है; गियेछे छेड़े—छोड कर गया है; टेनेछे पाने—उन्हीकी ओर खीचा है; जानि. मानि—मैं जानू या न जानू, मानू या न मानू;

नयन मेल्लि निखिले आमि पेयेछि ताँरि परिचय,
सबारे आमि नमि ॥

१९०३

३४

आमि की ब'ले करिब निवेदन
आमार हृदय प्राण मन ॥
चित्ते आसि दया करि निजे लहो अपहरि
करो तारे आपनारि धन— आमार हृदय प्राण मन ॥
शुधु धूलि, शुधु छाइ, मूल्य यार किछु नाइ,
मूल्य तारे करो समर्पण स्पर्शे तव परशरतन !
तोमारि गौरवे यबे आमार गौरव हबे
सब तबे दिब विसर्जन—
आमार हृदय प्राण मन ॥

१९०३

३५

आमार गोधूलिलगन एल बुझि काछे गोधूलिलगन रे ।
विवाहेर रङे राङा हये आसे सोनार गगन रे ॥

मेलि—खोल कर; निखिले—जगत् में; ताँरि—उन्हीका ।

३४ ब'ले—कह कर; करिब—करूँगा; निवेदन—अर्पित; चित्ते.....करि—दया करके चित्त में आ; निजे अपहरि—स्वय अपहरण करो, करो. . धन—उसे अपना ही धन बना लो; शुधु—केवल; छाइ—राख; यार—जिसका; तारे—उसे; स्पर्शे—छूकर; परशरतन—पारस, स्पर्शमणि; यबे—जब; हबे—होगा; तबे—तब; दिब—दूगा ।

३५ आमार—मेरा, लगन—लग्न, शुभ समय, एल—आ गया है; बुझि—लगता है, सम्भवत , काछे—पास, निकट ; विवाहेर.....गगन—विवाह के रंग से रंजित हो कर सुनहला आकाश आता है;

शेष क'रे दिल पाखि गान-गाओया, नदीर उपरे पड़े एल हाओया ;
ओ पारेर तीर, भाङा मन्दिर आँधारे मगन रे।
आसिछे मधुर झिल्लिनूपुरे गोधूलिलगन रे ॥
आमार दिन केटे गेछे कखनो खेलाय, कखनो कत की काजे।
एखन की शुनि पुरबीर सुरे कोन् दूरे बाँशि बाजे।
बुझि देरि नाइ, आसे बुझि आसे, आलोकेर आभा लेगेछे आकाशे—
वेलाशेषे मोरे के साजाबे ओरे, नवमिलनेर साजे!
सारा हल काज, मिछे केन आज डाक मोरे आर काजे ॥
आमि जानि ये आमार हये गेछे गना गोधूलिलगन रे।
धूसर आलोके मुदिबे नयन अस्तगगन रे।
तखन ए घरे के खुलिबे द्वार, के लइबे टानि बाहुटि आमार,
आमाय के जाने की मन्त्रे गाने करिबे मगन रे—
सब गान सेरे आसिबे यखन गोधूलिलगन रे ॥
१९०६

शेष .. हाओया—पक्षियो ने गीत गाना समाप्त कर दिया, नदी के ऊपर हवा धीमी हो आई, ओ—उस, पारेर—पार का, भाङा—टूटा हुआ; आँधारे—अन्धकार में, मगन—मग्न, निमज्जित, आसिछे—आ रहा है;. झिल्लि—झीगुर, केटे गेछे—बीत गया है, कखनो खेलाय—कभी खेल में, कत काजे—कितने कामो मे, एखन—इस समय; शुनि—सुनता हूँ, पुरबीर—पूरवी (रागिनी), कोन्—कही; आसे—आ रहा है, लेगेछे—छू गई हैं; सारा हल—पूर्ण हुआ, समाप्त हुआ, मिछे . काजे—आज काम (करने) के लिये व्यर्थ (झूठ मूठ) अब मेरी पुकार क्यो ?; आमि. गना—मैं जानती हूँ कि मेरी गोधूलि-लग्न की गणना (मिलन की गणना) पूरी हो गई है, ए—इस; के—कौन, के आमार—कौन मेरी बाँहो को खीच लेगा, आमाय—मुझे, के जाने—कौन जानता है, की—किस, सेरे आसिबे—समाप्त कर आएगा; यखन—जब।

३६

तुमि यत भार दियेछ से भार करिया दियेछ सोजा।
आमि यत भार जमिये तुलेछि सकलइ हयेछे बोझा।
ए बोझा आमार नामाओ वन्धु, नामाओ—
भारेर वेगेते चलेछि कोथाय, ए यात्रा तुमि थामाओ।।
आपनि ये दुख डेके आनि से-ये ज्वालाय वज्रानले—
अङ्गार क'रे रेखे याय, सेथा कोनो फल नाहि फले।।
तुमि याहा दाओ से-ये दुःखेर दान
श्रावणधाराय वेदनार रसे सार्थक करे प्राण।
येखाने या-किछु पेयेछि केवलइ सकलइ करेछि जमा;
ये देखे से आज मागे-ये हिसाव, केह नाहि करे क्षमा।।
ए बोझा आमार नामाओ वन्धु, नामाओ—
भारेर वेगेते ठेलिया चलेछि, ए यात्रा मोर थामाओ।।

१९०६

३७

अन्तर मम विकशित करो, अन्तरतर हे—
निर्मल करो, उज्ज्वल करो, सुन्दर करो हे।।

---

३६. तुमि . सोजा—तुमने जितना भार (दायित्व) दिया है उस भ
(दायित्व) को सहज कर दिया है; आमि ... बोझा—मैंने (स्वय) जित
भार उठा कर लिया है (वह) सभी बोझ हो गया है; ए . नामाओ—ब
मेरे इस बोझ को उतारो, उतारो; भार ... थामाओ—भार के वेग से (न जा
कहाँ चला हूँ, तुम इस यात्रा को रोको; आपनि ... फले—स्वयं जिन दुःखों
बुला लाता हूँ वे वज्रानल में जलते हैं और कोयला बना कर छोड़ जाते हैं, व
कोई फल नहीं फलता, तुमि ... प्राण—तुम जो देते हो वह तो दुःख का दान
(जो) श्रावण की वर्षा में वेदना के रस से प्राणों को सार्थक बना जाता
ये ... क्षमा—जो देखता है वही आज हिसाब माँगता है, क्षमा कोई नहीं कर
भारेर . चलेछि—भार के वेग से ठेलता चल रहा हूँ।

जाग्रत करो, उद्यत करो, निर्भय करो हे ।
मङ्गल करो, निरलस नि सशय करो हे ।।
युक्त करो हे सबार सङ्गे, मुक्त करो हे वन्ध ।
सञ्चार करो सकल कर्मे शान्त तोमार छन्द ।
चरणपद्मे मम चित निस्पन्दित करो हे ।
नन्दित करो, नन्दित करो, नन्दित करो हे ।।

१९०८

३८

कत अजानारे जानाइले तुमि, कत घरे दिले ठाँइ—
दूरके करिले निकट, वन्धु, परके करिले भाइ ।।
पुरानो आवास छेडे याइ यबे मने भेबे मरि की जानि की हबे—
नूतनेर माझे तुमि पुरातन से कथा ये भुले याइ ।।
जीवने मरणे निखिल भुवने यखनि येखाने लबे
चिरजनमेर परिचित ओहे तुमिइ चिनाबे सबे ।।
तोमारे जानिले नाहि केह पर, नाहि कोनो माना, नाइ कोनो डर—
सबारे मिलाये तुमि जागितेछ देखा येन सदा पाइ ।।

१९०८

---

३७ उद्यत—प्रवृत्त, सबार सङ्गे—सभी के साथ, वन्ध—वन्धन; नन्दित—आनन्दित ।

३८ कत ठाँइ—कितने अपरिचितो से तुमने परिचय कराया, कितने गृहो में आश्रय दिया, करिले—किया, छेडे—छोड कर; याइ यबे—जव जाता हूँ, मने हबे—मन मे सोच सोच कर मरता हूँ कि जाने-क्या होगा, माझे—मध्य में, से . याइ—यह वात भूल जो जाता हूँ, यखनि—जव भी, येखाने—जहाँ, लबे—ग्रहण करोगे, चिनाबे—पहचनवाओगे, तोमारे पर—तुम्हे जानने पर कोई पराया नही, नाहि माना—कोई निपेध नही रहता, सबारे पाइ—सव को मिलित कर (युक्त कर) तुम जाग रहे हो, देखा . पाइ—ऐसा हो कि सर्वदा तुम्हारे दर्शन पाऊँ ।

३९

तुमि केमन करे गान करो हे गुणी,
आमि अवाक् हये शुनि, केवल शुनि ।।
सुरेर आलो भुवन फेले छेये,
सुरेर हाओया चले गगन वेये,
पाषण टुटे व्याकुल वेगे धेये
वहिया याय सुरेर सुरधुनी ।।
मने करि अमनि सुरे गाइ,
कण्ठे आमार सुर खुंजे ना पाइ ।
कइते की चाइ, कइते कथा बाधे,
हार मेने ये परान आमार काँदे,
आमाय तुमि फेलेछ कोन् फाँदे
चौदिके मोर सुरेर जाल बुनि ।।

१९०८

४०

तुमि नव नव रूपे एसो प्राणे ।
एसो गन्धे वरने एसो गाने ।।
एसो अङ्गे पुलकमय परशे,

---

३९. केमन करे—किस तरह, कैसे, करो—करते हो, हये—हो कर; शुनि—सुनता हूँ, सुर . छेये—(संगीत के) स्वर का आलोक (समस्त) भुवन को छा देता है; हाओया—हवा; वेये—हो कर, पार कर; टुटे—दौड़ता है; वेगे—वेग से; धेये—दौड़ कर; वहिया सुरधुनी—सुर (स्वर) की गंगा बह जाती है; मने. .गाइ—सोचता हूँ वैसे ही सुर में गाऊँ; खुंजे पाइ—खोज नहीं पाता; कइते. बाधे—क्या कहना चाहता हूँ, बात कहते अटक जाता है; हार .काँदे—हार मान कर मेरे प्राण क्रन्दन कर उठते हैं; आमाय . .फाँदे—मुझे किस फन्दे में तुमने डाला है, चौदिके बुनि—मेरे चारों ओर स्वर का जाल बुन कर।

४० एसो—आओ; वरने—रंगों में; दुई नयाने—दो नयनों में।

एसो चित्ते सुधामय हरखे,
एसो मुग्ध मुदित दु'नयाने ।।
एसो निर्मल उज्ज्वल कान्त,
एसो सुन्दर स्निग्ध प्रशान्त,
एसो एसो हे विचित्र विधाने ।।
एसो दु खे सुखे, एसो मर्मे,
एसो नित्य नित्य सब कर्मे,
एसो सकल कर्म-अवसाने ।।

१९०८

४१

तिमिरदुयार खोलो—एसो, एसो नीरवचरणे ।
जननी आमार, दाँड़ाओ एइ नवीन अरुणकिरणे ।।
पुण्यपरशपुलके सब आलस याक दूरे ।
गगने बाजुक वीणा जगत-जागानो सुरे ।
जननी, जीवन जुड़ाओ तव प्रसादसुधासमीरणे ।
जननी आमार, दाँड़ाओ मम ज्योतिविभासित नयने ।।

१९०८

४२

आजि ए आनन्दसन्ध्या सुन्दर विकाशे, आहा—
मन्द पवने आजि भासे आकाशे
विधुर व्याकुल मधुमाधुरी, आहा ।।

---

४१ दुयार—द्वार, दरवाज़ा, एसो—आओ, एइ—इस, पुण्य—पवित्र, परश—स्पर्श, याक—जाय, बाजुक—बजे, जगत-जागानो—जगत् को जगाने वाले; जुड़ाओ—शीतल करो, तृप्त करो ।

४२ आजि—आज, ए—यह; विकाशे—विकसती है, भासे—बहती है, विधुर—विकल, कातर, बरषे—बरसती है, प्रसाद—आनन्द;

स्तब्ध गगने ग्रहतारा नीरवे
किरणसंगीते सुधा वरषे, आहा।
प्राण मन मम धीरे धीरे प्रसादरसे आसे भरि,
देह पुलकित उदार हरषे, आहा॥

१९०८

४३

विपदे मोरे रक्षा करो ए नहे मोर प्रार्थना—
विपदे आमि ना येन करि भय।
दुःखतापे व्यथित चित्ते नाइ वा दिले सान्त्वना,
दुःखे येन करिते पारि जय॥
सहाय मोर ना यदि जुटे निजेर वल ना येन टुटे—
संसारेते घटिले क्षति, लभिले शुधु वञ्चना,
निजेर मने ना येन मानि क्षय॥
आमारे तुमि करिबे त्राण ए नहे मोर प्रार्थना—
तरिते पारि शकति येन रय।
आमार भार लाघव करि नाइ वा दिले सान्त्वना,
वहिते पारि एमनि येन हय॥
नम्रशिरे सुखेर दिने तोमारि मुख लइब चिने—
दुखेर राते निखिल धरा ये दिन करे वञ्चना
तोमारे येन ना करि संशय॥

१९०८

आसे भरि—भर आते हैं।

४३ ए—यह; नहे—नहीं है, येन—ऐसा हो कि, नाइ दिले—भले ही सान्त्वना नहीं दो; करिते पारि—कर सकूँ; जुटे—मिले, घटिले—होने पर; लभिले—पाने पर, शुधु—केवल, मानि—मानूँ; क्षय—हानि; तरिते पारि—पार हो सकूँ; एमनि ...रय—शक्ति [illegible] रहे, लाघव करि—हलका करके, वहिते ... हय—ऐसा हो कि (उसे) वहन कर सकूँ; लइव चिने—पहचान लूँगा।

४४

बल दाओ मोरे बल दाओ, प्राणे दाओ मोर शकति
सकल हृदय लुटाये तोमारे करिते प्रणति—
सरल सुपथे भ्रमिते, सब अपकार क्षमिते,
सकल गर्व दमिते, खर्व करिते कुमति ।।
हृदये तोमारे बुझिते, जीवने तोमारे पूजिते,
तोमार माझारे खुँजिते चित्तेर चिर-वसति ।
तव काज शिरे वहिते, ससारताप सहिते,
भवकोलाहले रहिते, नीरवे करिते भकति ।।
तोमार विश्वछविते तव प्रेमरूप लभिते,
ग्रह-तारा-शशी-रविते हेरिते तोमार आरति ।
वचनमनेर अतीते डुविते तोमार ज्योतिते,
सुखे दुखे लाभे क्षतिते शुनिते तोमार भारती ।।

१९०८

४५

विपुल तरङ्ग रे, विपुल तरङ्ग रे ।
सब गगन उद्वेलिया, मगन करि अतीत अनागत
आलोके-उज्ज्वल जीवने चञ्चल एकि आनन्द-तरङ्ग ।।
ताइ, दुलिछे दिनकर चन्द्र तारा,
चमकि कम्पिछे चेतनाधारा,
आकुल चञ्चल नाचे ससार, कुहरे हृदयविहङ्ग।।

१९०८

---

४४. दाओ—दो; मोरे—मुझे, शकति—शक्ति, लुटाये—लुटा कर, लुण्ठित कर; वसति—वस्ती, भारती—वाणी, भाषा ।

४५ उद्वेलिया—उद्वेलित करती हुई, मगन . अनागत—भूत और भविष्य को निमज्जित करती हुई, ताइ—इसीलिये, दुलिछे—दोलायित हो रहे है, कम्पिछे—काँप रही है, कुहरे—कूजता है, चहकता है ।

४६

भुवनेश्वर हे,
मोचन कर' बन्धन सब मोचन कर' हे ॥
प्रभु मोचन कर' भय,
सब दैन्य करह लय,
नित्य चकित चञ्चल चित कर' निःसंशय।
तिमिररात्रि, अन्ध यात्री,
समुखे तव दीप्त दीप तुलिया धर' हे ॥
भुवनेश्वर हे,
मोचन कर' जड़विषाद मोचन कर' हे।
प्रभु, तव प्रसन्न मुख
सब दुःख करुक सुख,
धूलिपतित दुर्बल चित करह जागरूक।
तिमिररात्रि, अन्ध यात्री,
समुखे तव दीप्त दीप तुलिया धर' हे ॥
भुवनेश्वर हे,
मोचन कर' स्वार्थपाश मोचन कर' हे।
प्रभु विरस विकल प्राण,
कर' प्रेमसलिल दान,
क्षतिपीड़ित शंकित चित कर' सम्पदवान।
तिमिररात्रि, अन्ध यात्री,
समुखे तव दीप्त दीप तुलिया धर' हे ॥

१९०८

४६. करह—करो; करुक—करे; तुलिया धर'—उठा कर रखो।

४७

यदि तोमार देखा ना पाइ प्रभु, एवार ए जीवने,
तबे तोमाय आमि पाइ नि येन से कथा रय मने।
येन भुले ना याइ, वेदना पाइ शयने स्वपने॥
ए ससारेर हाटे
आमार यतइ दिवस काटे,
आमार यतइ दु हात भरे उठे धने
तबु किछुइ आमि पाइ नि येन से कथा रय मने।
येन भुले ना याइ, वेदना पाइ शयने स्वपने॥
यदि आलसभरे
आमि बसि पथेर 'परे,
यदि धुलाय शयन पाति सयतने
येन सकल पथइ बाकि आछे से कथा रय मने।
येन भुले ना याइ, वेदना पाइ शयने स्वपने॥
यतइ उठे हासि,
घरे यतइ बाजे बाँशि,
ओगो यतइ गृह साजाइ आयोजने
येन तोमाय घरे हय नि आना ' से कथा रय मने।
येन भुले ना याइ, वेदना पाइ शयने स्वपने॥

१९०८

---

४७. देखा... पाइ—दर्शन न पाऊँ; एवार—इस वार, ए जीवने—इस जीवन में, तबे . मने—तब इतना हो कि यह बात मन में बनी रहे कि मैंने तुम्हें पाया नही, भुले . याइ—भूल न जाऊँ, यतइ—जितने भी; दु हात—दोनो हाथ; आमि परे—मै रास्ते में बैठू, धुलाय—धूल मे; शयन पाति—सेज बिछाऊँ, सयतने—यत्न पूर्वक, पथइ—पथ ही, बाकि आछे—बाकी है, साजाइ—सजाऊँ; तोमाय आना—तुम्हें घर मे लाना जो नहीं हुआ।

४८

हेरि अहरह तोमारि विरह भुवने भुवने राजे हे,

कत रूप धरे कानने भूधरे आकाशे सागरे साजे हे ॥

सारा निशि धरि ताराय ताराय अनिमेष चोखे नीरवे दाँड़ाय,

पल्लवदले श्रावणधाराय तोमारि विरह बाजे हे ॥

घरे घरे आजि कत वेदनाय तोमारि गभीर विरह घनाय

कत प्रेमे हाय, कत वासनाय, कत सुखे दुखे काजे हे।

सकल जीवन उदास करिया कत गाने सुरे गलिया झरिया

तोमार विरह उठिछे भरिया आमार हियार माझे हे ॥

१९०८

४९

आमार माथा नत करे दाओ हे तोमार चरणधुलार तले।

सकल अहंकार हे आमार डुबाओ चोखेर जले ॥

निजेरे करिते गौरव दान निजेरे केवलइ करि अपमान,

आपनारे शुधु घेरिया घेरिया घुरे मरि पले पले।

सकल अहंकार हे आमार डुबाओ चोखेर जले ॥

आमारे ना येन करि प्रचार आमार आपन काजे,

तोमारि इच्छा करो हे पूर्ण आमार जीवनमाझे ॥

याचि हे तोमार चरम शान्ति, पराने तोमार परम कान्ति—

---

४८. हेरि—देखता हूँ; अहरह—सर्वदा; तोमारि—तुम्हारा ही; राजे—विराजता है; कत—कितने; चोखे—दृष्टि से; घनाय—घनीभूत होना है।

४९. निजेरे—अपने को, केवलइ—केवल ही; करि—करता हूँ; आपनारे ... पले—अपने आपको ही घेर घेर कर चारों ओर काटता हुआ क्षण-क्षण मरता हूँ; आमारे ... काजे—ऐसा हो कि अपने कार्यों में (कार्यों के द्वारा) अपना ही प्रचार न करूँ, तोमारि इच्छा—तुम्हारी ही इच्छा; याचि—याचना करता हूँ; पराने—प्राणों में; आमारे ... करिया—मुझे ओट में करके।

आमारे आड़ाल करिया दाँड़ाओ हृदयपद्मदले।
सकल अहंकार हे आमार डुवाओ चोखेर जले ।।

१९०९

५०

आमि बहु वासनाय प्राणपणे चाइ, वञ्चित करे वाँचाले मोरे।
ए कृपा कठोर सञ्चित मोर जीवन भ'रे ।।
ना चाहिते मोरे या करेछ दान— आकाश आलोक तनु मन प्राण,
दिने दिने तुमि नितेछ आमाय से महा दानेरइ योग्य क'रे
अति-इच्छार संकट हते बाँचाये मोरे ।।
आमि कखनो वा भुलि, कखनो वा चलि, तोमार पथेर लक्ष्य ध'रे;
तुमि निष्ठुर सम्मुख हते याओ ये सरे।
ए ये तव दया, जानि जानि हाय, निते चाओ व'ले फिराओ आमाय—
पूर्ण करिया लबे ए जीवन तव मिलनेरइ योग्य क'रे
आधा-इच्छार सकट हते बाँचाये मोरे ।।

१९०९

---

५०. वासनाय—कामनाओ को, चाइ—चाहता हूँ, वाँचाले मोरे—मुझे वचाया; ना . दान—विना माँगे जो दान (तुमने) दिया है; दिने क'रे—दिन-दिन तुम मुझे उसी महादान के योग्य वना ले रहे हो, अति मोरे—अति-इच्छा (इच्छाओ की अतिशयता) के सकट से मुझे वचा कर; कखनो भुलि—कभी या तो भूल जाता हूँ; चलि—चलता हूँ; सम्मुख हते—सामने से; याओ सरे—हट जो जाते हो; ए ये—यह जो; निते चाओ व'ले—लेना चाहते हो (ग्रहण करना चाहते हो) इसलिये, फिराओ आमाय—मुझे लौटा देते हो; करिया लवे—कर लोगे; आधा-इच्छार संकट हते—अधूरी इच्छाओ के सकट से।

५१

आमार मिलन लागि तुमि आसछ कबे थेके ।
तोमार चन्द्र सूर्य तोमाय राखबे कोथाय ढेके ?।
कत कालेर सकाल-सांझे तोमार चरणध्वनि बाजे,
गोपने दूत हृदय-माझे गेछे आमाय डेके ।।
ओगो पथिक, आजके आमार सकल परान व्येपे
थेके थेके हरष येन उठछे केंपे केंपे ।
येन समय एसेछे आज, फुरालो मोर या छिल काज—
बातास आसे, हे महाराज, तोमार गन्ध मेखे ।।

१९१०

५२

एबार नीरव करे दाओ हे तोमार मुखर कविरे ।
तार हृदयबाँशि आपनि केड़े बाजाओ गभीरे ।।
निशीथरातेर निबिड सुरे बाँशिते तान दाओ हे पूरे,
ये तान दिये अवाक् कर ग्रहशशीरे ।।

---

५१. आमार.. लागि—मेरे (और अपने) मिलन के लिये; आसछ ... थेके—कब (किस काल) से आ रहे हो; तोमाय—तुम्हें; राखबे ..... ढेके—कहाँ ढँक कर रखोगे, सकाल-सांझे—प्रातः सन्ध्या; गोपने—गुप्त रूप से; गेछे . डेके—मुझे पुकार (बुला) गया है; ओगो—अजी ओ, परान व्येपे—प्राणों को व्याप्त कर; थेके....केंपे—हर्ष (आनन्द) जैसे रह रह कर कांप-कांप उठता है; येन. .आज—जैसे आज समय आया है; फुरालो काज—मेरा जो काम था (सो) चुक गया, बातास आसे—हवा आती है; मेखे—लेप कर।

५२. एबार—अब, करे दाओ—कर दो, तोमार. कविरे—अपने (इस) मुखर कवि को, आपनि—अपनेआप, स्वयं; केड़े—निकाल कर; बाँशिते—बाँसुरी में, दाओ हे पूरे—भर दो, ये दिये—जिस तान से;

या-किछु मोर छड़िये आछे जीवन-मरणे
गानेर टाने मिलुक एसे तोमार चरणे।
बहुदिनेर वाक्यराशि   एक निमेषे यावे भासि—
एकला वसे शुनव बाँशि अकूल तिमिरे ।।
१९१०

५३

एइ करेछ भालो निठुर, एइ करेछ भालो।
एमनि क'रे हृदये मोर तीव्र दहन ज्वालो ।।
आमार ए धूप ना पोड़ाले   गन्ध किछुइ नाहि ढाले,
आमार ए दीप ना ज्वालाले देय ना किछुइ आलो ।।
यखन थाके अचेतने ए चित्त आमार
आघात से ये परश तव, सेइ तो पुरस्कार।
अन्धकारे मोहे लाजे   चोखे तोमाय देखि ना ये,
वज्रे तोलो आगुन क'रे आमार यत कालो ।।
१९१०

५४

ओइ   आसनतलेर माटिर 'परे लुटिये रव,
तोमार चरण-धुलाय धुलाय धूसर हव ।।

या-किछु मोर—मेरा जो कुछ; छड़िये आछे—विखरा हुआ है, मिलुक एसे—आ कर मिले, बहुदिनेर भासि—बहुत दिनो के (सचित) वाक्यो (शब्दो आदि) का समूह एक क्षण मे वह जायगा; एकला बाँशि—अकेला बैठ कर बाँसुरी सुनूँगा।

५३. एइ—यही, करेछ—किया है, एमनि क'रे—इसी तरह से; ए—यह; ना पोड़ाले—विना जलाए; यखन थाके—जव रहता है; आघात .तव—वह आघात (ही तो) तुम्हारा स्पर्श है; चोखे ये—आँखो से तुम्हे देख जो नही पाता, तोलो .. क'रे—आग (जैसा) कर दो।

५४. ओइ—उस; आसनतलेर रव—आसन के नीचे की मिट्टी के ऊपर लोट रहूँगा; तोमार—तुम्हारे; धुलाय—धूल में, हव—होऊँगा;

केन आमाय मान दिये आर दूरे राख ?
चिरजनम एमन क'रे भुलियो नाको।
असम्माने आनो टेने पाये तव।
तोमार चरण-धुलाय धुलाय धूसर हव ॥
आमि तोमार यात्रीदलेर रब पिछे,
स्थान दियो हे आमाय तुमि सबार नीचे।
प्रसाद लागि कत लोके आसे धेये,
आमि किछुइ चाइब ना तो, रइब चेये—
सबार शेषे या बाकि रय ताहाइ लब।
तोमार चरण-धुलाय धुलाय धूसर हव ॥

१९१०

५५

कोन् आलोते प्राणेर प्रदीप ज्वालिये तुमि धराय आस—
साधक ओगो, प्रेमिक ओगो, पागल ओगो, धराय आस ॥
एइ अकूल संसारे,
दु:ख आघात तोमार प्राणे वीणा झंकारे।
घोर विपद-माझे
कोन जननीर मुखेर हासि देखिया हास ॥

केन ..राख—क्यों मुझे सम्मान दे कर (अपने से) और दूर रखते हो; चिरजनम—चिर जन्म; एमन क'रे—इस प्रकार, भुलियो नाको—भूलना नहीं; आनो.... तव—अपने चरणों में खींच लाओ; पिछे—पीछे, सबार—सब के; लागि—के लिये, निमित्त; कत ...धेये—कितने लोग दौड़े आते हैं; किछुइ तो—मैं तो कुछ भी नहीं चाहूँगा; रइब चेये—(केवल) देखता रहूँगा; बाकि—बाकी, या. लब—जो बच रहता है वही लूँगा।

५५. कोन् आलोते—किस आलोक में; ज्वालिये—जला कर; धराय—पृथ्वी पर; आस—आते हो; ओगो—अजी ओ; एइ—इस; देखिया—देख कर; हास—हँसते हो; तुमि.. जाने—कौन जानता है तुम किसकी

तुमि काहार सन्धाने
सकल सुखे आगुन ज्वेले बेड़ाओ के जाने !
एमन व्याकुल क'रे
के तोमारे काँदाय यारे भालोवास ।।
तोमार भावना किछु नाइ—
के ये तोमार साथेर साथि भावि मने ताइ ।
तुमि मरण भुले
कोन् अनन्त प्राणसागरे आनन्दे भास ।।

१९१०

५६

गाये आमार पुलक लागे, चोखे घनाय घोर—
हृदये मोर के बेँधेछे राङा राखीर डोर ? ।
आजिके एइ आकाशतले जले स्थले फुले फले
केमन करे मनोहरण, छड़ाले मन मोर ? ।
केमन खेला हल आमार आजि तोमार सने !
पेयेछि कि खुंजे बेडाइ भेबे ना पाइ मने ।

खोजमें सभी सुखो को आग लगा कर भटकते फिरते हो; एमन. .क'रे—ऐसा व्याकुल वना कर; के . भालोवास—कौन तुम्हें रुलाता है—जिसे तुम प्यार करते हो, तोमार. नाइ—तुम्हें कोई चिन्ता नही; के ताइ—कौन है तुम्हारा संग-साथी यही मन मे सोचता हूँ; भुले—भूल कर; आनन्दे भास—आनन्द से वहते हो ।

५६. गाये—शरीर मे; पुलक—आनन्द, चोखे. घोर—आँखो में मोह घनीभूत हो रहा है, के—कौन, किसने; के डोर—लाल राखी की डोर किसने बाँधी है, आजिके—आज, . फुले—फूलो में; केमन करे—किस प्रकार से, कैसे; छड़ाले—वखेर दिया, हल—हुआ, तोमार सने—तुम्हारे साथ; पेयेछि—पाया है; कि—क्या; खुंजे वेड़ाइ—ढूंढता फिरता हूँ, भेवे . मने—मन में सोच नही पाता; किसेर छले—किस मिस से; काँदिते चाय—रोना

आनन्द आज किसेर छले कांदिते चाय नयनजले,
विरह आज मधुर हये करेछे प्राण भोर ॥

१९१०

५७

जीवन यखन शुकाये याय करुणाधाराय एसो।
सकल माधुरी लुकाये याय, गीतसुधारसे एसो ॥
कर्म यखन प्रबल-आकार गरजि उठिया ढाके चारि धार
हृदयप्रान्ते हे जीवननाथ, शान्त चरणे एसो ॥
आपनारे यबे करिया कृपण कोणे पड़े थाके दीनहीन मन
दुयार खुलिया हे उदार नाथ, राजसमारोहे एसो।
वासना यखन विपुल धुलाय अन्ध करिया अबोधे भुलाय
ओहे पवित्र, ओहे अनिद्र, रुद्र आलोके एसो

१९१०

५८

जीवने यत पूजा हल ना सारा
जानि हे जानि ताओ हय नि हारा।
ये फुल ना फुटिते झरेछे धरणीते
ये नदी मरुपथे हारालो धारा
जानि हे जानि ताओ हय नि हारा ॥

चाहता है, हये—हो कर, करेछे—किया है; भोर—विभोर।

५७. यखन—जब, शुकाये याय—सूख जाय; एसो—आओ; लुकाये याय—छिप जाय, ढाके—ढक दे, चारि धार—चारों ओर, आपनारे... कृपण—अपने को कृपण बना; कोणे—कोने में; पड़े थाके—पड़ा रहे; दुयार खुलिया—द्वार खोल कर, धुलाय—धूल में।

५८ यत—जितनी; हल ना सारा—समाप्त नहीं हुई, पूरी नहीं हुई, जानि—जानता हूँ, ताओ हारा—वह भी खो नहीं गई, ये धरणीते—

जीवने आजो याहा रयेछे पिछे
जानि हे जानि ताओ हय नि मिछे ।
आमार अनागत आमार अनाहत
तोमार वीणातारे बाजिछे तारा—
जानि हे जानि ताओ हय नि हारा ।।

१९१०

५९

जानि जानि कोन् आदि काल हते
भासाले आमारे जीवनेर स्रोते—
सहसा हे प्रिय, कत गृहे पथे
रेखे गेछ प्राणे कत हरषन ।।
कतबार तुमि मेघेर आडाले
एमनि मधुर हासिया दाँडाले,
अरुणकिरणे चरण बाड़ाले,
ललाटे राखिले शुभ परशन ।।
सञ्चित हये आछे एइ चोखे
कत काले काले कत लोके लोके
कत नव नव आलोके आलोके
अरूपेर कत रूपदरशन ।।

जो फूल विना खिले पृथ्वी पर झर पडा; आजो—आज भी, याहा पिछे—जो पीछे रह गया है, मिछे—निष्फल, व्यर्थ; अनाहत—जो वजाया नही गया है; तोमार तारा—तुम्हारी वीणा के तार में वे वज रहे हैं।

५९ जानि—जानता हूँ, कोन्—किस, हते—से, भासाले—वहा दिया, आमारे—मुझे, रेखे गेछ—रख गए हो, हरषन—हर्ष, कत—कितनी, आड़ाले—ओट मे, अन्तराल में, एमनि—इस प्रकार, हासिया दाँड़ाले—हँसते हुए खडे हुए, बाड़ाले—वढाया; राखिले—रखा, परशन—स्पर्श, हये आछे—हो कर (रखा) है; केह जाने—कोई नही जानता।

कत युगे युगे केह् नाहि जाने
भरिया भरिया उठेछे पराने
कत सुखे दुखे कत प्रेम गाने
अमृतेर कत रसवरपन ।।

१३१०

६०

तोरा शुनिस नि कि शुनिस नि तार पायेर ध्वनि,
ओइ ये आसे, आसे, आसे ।
युगे युगे पले पले दिनरजनी
से ये आसे, आसे, आसे ।।
गेयेछि गान यखन यत आपन मने ख्यापार मतो
सकल सुरे वेजेछे तार आगमनी—
से ये आसे, आसे, आसे ।।
कत कालेर फागुनदिने वनेर पथे
से ये आसे, आसे, आसे ।
कत श्रावण-अन्धकारे मेघेर रथे
से ये आसे आसे, आसे ।।
दुखेर परे परम दुखे तारि चरण बाजे बुके ।
सुखे कखन बुलिये ये देय परशमणि ।
से ये आसे, आसे, आसे ।।

१३१०

६०. तोरा ...नि—तुम लोगों ने क्या नहीं सुनी, तार—उसके; पायेर—पैरों की; ओइ ... आसे—वह जो आ रहा है, गेयेछि—गाया है; यखन—जब, यत—जितना, ख्यापार मतो—पागलों की तरह; तारि .. बुके—उसके ही चरण, हृदय (के भीतर) कसकते हैं, कखन—कभी; बुलिये .. परशमणि—स्पर्शमणि (पारस) से स्पर्श कर देता है (छुला देता है)।

६१

तव सिंहासनेर आसन हते एले तुमि नेमे—
मोर विजन घरेर द्वारेर काछे दाँड़ाले नाथ, थेमे ।।
एकला वसे आपन-मने गाइतेछिलेम गान,
तोमार काने गेल से सुर, एले तुमि नेमे—
मोर विजन घरेर द्वारेर काछे दाँड़ाले नाथ, थेमे ।।
तोमार सभाय कत-ना गान, कतइ आछेन गुणी;
गुनहीनेर गानखानि आज बाजल तोमार प्रेमे ।
लागल तानेर माझे एकटि करुण सुर;
हाते लये वरणमाला एले तुमि नेमे—
मोर विजन घरेर द्वारेर काछे दाँड़ाले नाथ, थेमे ।।

१९१०

६२

ताइ तोमार आनन्द आमार 'पर,
तुमि ताइ एसेछ नीचे ।
आमाय नइले त्रिभुवनेश्वर,
तोमार प्रेम हत ये मिछे ।।
आमाय निये मेलेछ एइ मेला,
आमार हियाय चलछे रसेर खेला,

---

६१ हते—से; एले नेमे—तुम (नीचे) उतर आए; काछे—पास, निकट, दाँड़ाले—खडे हुए, थेमे—रुक कर, एकला. गान—अकेली बैठ कर अपने आप गान गा रहा था, गेल—गया, से—वह, कतइ गुणी—कितने ही गुणी हैं, गानखानि—गान; बाजल—बजा, एकटि—एक, हाते—हाथ मे, लये—ले कर।

६२ ताइ—इसीलिये, आमार 'पर—मुझ पर; एसेछ—आए हो; आमाय नइले—मेरे नही होने (रहने) से, तोमार मिछे—तुम्हारा प्रेम निष्फल जो होता; आमाय निये—मुझे ले कर, मेलेछ—विस्तारित, प्रसारित किया है; एइ—यह; हियाय—हृदय में; चलछे—चल रहा है;

मोर जीवने विचित्ररूप धरे
तोमार इच्छा तरङ्गिछे ।।
ताइ तो तुमि राजार राजा हये
तबु आमार हृदय लागि
फिरछ कत मनोहरण वेशे,
प्रभु, नित्य आछ जागि ।
ताइ तो प्रभु, येथाय एल नेमे
तोमारि प्रेम भक्तप्राणेर प्रेमे
मूर्ति तोमार युगलसम्मिलने
सेथाय पूर्ण प्रकाशिछे ।।

१९१०

६३

धाय येन मोर सकल भालोबासा
प्रभु, तोमार पाने, तोमार पाने, तोमार पाने ।।
याय येन मोर सकल गभीर आशा
प्रभु, तोमार काने, तोमार काने, तोमार काने ।।
चित्त मम यखन येथा थाके
साड़ा येन देय से तव डाके,
यत बाँधन सब टूटे गो येन
प्रभु, तोमार टाने, तोमार टाने, तोमार टाने ।।
बाहिरेर एइ भिक्षा-भरा थालि एबार येन निःशेषे हय खालि,

हये—हो कर, तबु—तो भी, लागि—के लिये; फिरछ—घूम रहे हो; आछ जागि—जगे हुए हो, येथाय—जहाँ; तोमारि—तुम्हारा ही, सेथाय—वहाँ ।

६३ धाय. भालोबासा—ऐसा हो कि मेरा संपूर्ण प्रेम प्रधावित हो; तोमार पाने—तुम्हारी ओर; याय—जाय; यखन—जिस समय, येथा—जहाँ; थाके—रहे, साड़ा डाके—ऐसा हो कि तुम्हारे आह्वान का वह प्रत्युत्तर दे, यत...येन—सब बन्धन टूट जाएँ, टाने—खिंचाव में आकर्षण में; बाहिरेर .. खालि—बाहर की यह भिक्षापूर्ण थाली, ऐसा हो कि इस बार सम्पूर्ण

अन्तर मोर गोपने याय भरे
प्रभु, तोमार दाने, तोमार दाने, तोमार दाने ।
हे बन्धु मोर, हे अन्तरतर, ए जीवने या-किछु सुन्दर
सकलइ आज वेजे उठुक सुरे
प्रभु, तोमार गाने, तोमार गाने, तोमार गाने ।।
१९१०

६४

निशार स्वपन छुटल रे एइ छुटल रे,
टुटल बाँधन टुटल रे ।।
रइल ना आर आड़ाल प्राणे, वेरिये एलेम जगत्-पाने—
हृदयशतदलेर सकल दलगुलि एइ फुटल रे एइ फुटल रे ।।
दुयार आमार भेङ्गे शेषे दाँडाले येइ आपनि एसे
नयनजले भेसे हृदय चरणतले लुटल रे ।।
आकाश हते प्रभात-आलो आमार पाने हात वाडालो,
भाडा कारार द्वारे आमार जयध्वनि उठल रे एइ उठल रे ।।
१९१०

रूप से खाली हो जाय, अन्तर . दाने—प्रभु, तुम्हारे ही दान से मेरा अन्तर गोपन रूप से भर जाय; ए सुरे—इस जीवन में जो कुछ सुन्दर है, सभी आज सुर में वज उठे ।

६४ छुटल—छूटा, टुटल बाँधन—वधन टूटा, रइल पाने—प्राण और ओट मे नही रहे, (मैं) जगत् की ओर वाहर निकल आया, फुटल—प्रस्फुटित हुए, दुयार रे—मेरे द्वार को तोड कर अन्त में जैसे ही अपने आप आ कर खडे हुए, आँखो के जल में वह कर (मेरा) हृदय (तुम्हारे) चरणो में लोट गया; आकाश वाड़ालो—आकाश से प्रभात-कालीन प्रकाश ने मेरी ओर हाथ वढाया; भाडा रे—टूटे हुए कारागार के द्वार पर मेरी जयध्वनि गूँज उठी ।

६५

प्रभु, आजि तोमार दक्षिण हात रेखो ना ढाकि।
एसेछि तोमारे हे नाथ, पराते राखी॥
यदि बाँधि तोमार हाते पड़ब बाँधा सबार साथे,
येखाने ये आछे केहइ रबे ना बाकि।
आजि येन भेद नाहि रय आपना परे,
तोमाय येन एक देखि हे बाहिरे घरे।
तोमार साथे ये विच्छेदे घुरे बेड़ाइ केँदे केँदे
क्षणेकतरे घुचाते ताइ तोमारे डाकि॥

१९१०

६६

वज्रे तोमार बाजे बाँशि, से कि सहज गान!
सेइ सुरेते जागबो आमि, दाओ मोरे सेइ कान॥
भुलब ना आर सहजेते, सेइ प्राणे मन उठबे मेते
मृत्यु-माझे ढाका आछे ये अन्तहीन प्राण॥
से झड येन सइ आनन्दे चित्तवीणार तारे
सप्तसिन्धु दशदिगन्त नाचाओ ये झंकारे।

---

६५ प्रभु . ढाकि—प्रभु, आज अपना दाहिना हाथ ढक (छुपा) कर न रखना, एसेछि . राखी—हे नाथ, तुम्हें राखी पहनाने आया हूं; यदि . . साथे—अगर तुम्हारे हाथ में बाँधूं तो सब के साथ बंध जाऊँगा; येखाने . बाकि—जो जहाँ है कोई भी बाकी नहीं रहेगा; आजि ...परे—आज ऐसा हो कि अपने-पराये में भेद नहीं रहे; तोमाय... घरे—तुम्हें घर और बाहर एक देखूं; तोमार . केँदे—तुम्हारे साथ जो विच्छेद है (इसीलिये) रोता-रोता भटकता फिरता हूं; क्षणेक . डाकि—इसीलिये क्षण भर के लिये उस (वियोग) को दूर करने के लिये, तुम्हें पुकारता हूं।

६६ सेइ . आमि—उसी सुर सुन कर मैं जागूंगा; दाओ . कान—मुझे वैसे ही कान दो; भुलब . सहजेते—सहज ही और नहीं भूलूंगा; सेइ... प्राण—मृत्यु के बीच छिपा हुआ जो अन्तहीन प्राण है उसी प्राण में (मेरा) मन मत्त हो उठेगा, उठबे मेते—मत्त हो उठेगा; ढाका आछे—ढका हुआ है; से . आनन्दे—ऐसा हो कि आनन्दपूर्वक उस आंधी को सहन करूं; तारे—तार में;

आराम हते छिन्न क'रे सेइ गभीरे लओ गो मोर
अशान्तिर अन्तरे येथाय शान्ति सुमहान ।।

१९१०

६७

भोर हल विभावरी, पथ हल अवसान—
शुन ओइ लोके लोके उठे आलोकेरि गान ।।
धन्य हलि ओरे पान्थ, रजनीजागरक्लान्त,
धन्य हल मरि मरि धुलाय धूसर प्राण ।।
वनेर कोलेर काछे समीरण जागियाछे,
मधुभिक्षु सारे सारे आगत कुञ्जेर द्वारे ।
हल तव यात्रा सारा, मोछो मोछो अश्रुधारा—
लज्जा भय गेल झरि, घुचिल रे अभिमान ।।

१९१०

६८

येथाय थाके सबार अधम दीनेर हते दीन
सेइखाने ये चरण तोमार राजे
सबार पिछे, सबार नीचे, सबहारादेर माझे ।।

आराम.. मोरे—आराम (की ज़िन्दगी) से विच्छिन्न कर मुझे उसी गभीर में ग्रहण करो, अशान्तिर सुमहान—जहाँ अशान्ति के अन्तर में सुमहान् शान्ति है ।

६७ हल—हुई, शुन . गान—वह सुनो, लोक-लोक में आलोक का ही गान उठ रहा है, हलि—हुआ, रजनीजागरक्लान्त—रात्रि के जागरण से क्लान्त; मरि मरि—सौन्दर्य आदि के दर्शन से विस्मय, प्रशंसा आदि को सूचित करने के लिये इसका प्रयोग होता है; वलि जाऊँ ! धुलाय—धूल से, वनेर . जागियाछे—वन के क्रोड (गोद) के पास समीरण जाग उठा है, मधुभिक्षु.. द्वारे—झुंडके झुंड मधुभिक्षुक (भौंरे) कुंजो के द्वार पर आए हैं; हल . सारा—तुम्हारी यात्रा पूरी हुई, मोछो—पोछो; गेल झरि—झड़ गए; घुचिल—दूर हुआ ।

६८ येथाय राजे—जहाँ सबसे अधम, दीनातिदीन (व्यक्ति) रहते हैं वहीं तो तुम्हारे चरण विराजते हैं, सबार. माझे—सबके पीछे, सब के

यखन तोमाय प्रणाम करि आमि   प्रणाम आमार कोन्‌खाने याय थामि,
तोमार चरण येथाय नामे अपमानेर तले
सेथाय आमार प्रणाम नामे ना ये
सबार पिछे, सबार नीचे, सबहारादेर माझे ॥
अहंकार तो पाय ना नागाल येथाय तुमि फेर
रिक्तभूषण दीन दरिद्र साजे
सबार पिछे, सबार नीचे, सबहारादेर माझे ।
धने माने येथाय आछे भरि   सेथाय तोमार सङ्ग आशा करि,
सङ्गी हये आछ येथाय सङ्गीहीनेर घरे
सेथाय आमार हृदय नामे ना ये
सबार पिछे, सबार नीचे, सबहारादेर माझे ॥

१९१०

६१

रूपसागरे डुब दियेछि अरूपरतन आशा करि,
घाटे घाटे घुरब ना आर भासिये आमार जीर्ण तरी ॥
समय येन हय रे एबार   ढेउ-खाओया सब चुकिये देबार,
सुधाय एबार तलिये गिये अमर हये रब मरि ॥

नीचे, सर्वहारा (लोगों) के बीच में; यखन . आमि—जब मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ; प्रणाम . थामि—मेरे प्रणाम कहाँ रुक जाते हैं; नामे—अवतीर्ण होते हैं; अपमानेर तले—अपमान के तल में; सेथाय . ये—वहाँ मेरे प्रणाम नहीं पहुँचते; अहंकार ..साजे—जहाँ तुम आभूषणहीन, दीन दरिद्र वेश में फिरते हो, वहाँ तो अहंकार की पहुँच नहीं होती; धने . भरि—जहाँ धन-मान से (सब कुछ) भरपूर है; सेथाय ... करि—वहाँ तुम्हारे संग (साथ) की आशा रखता हूँ, सङ्गी . घरे—जहाँ संगीहीनों के घर में संगी हो कर (रहते) हो।

६१. डुब दियेछि—डुबकी लगाई है; अरूपरतन . करि—अरूपरत्न की आशा से, घाटे . तरी—अपनी जीर्ण तरी को बहाते हुए अब और घाट-घाट नहीं फिरूँगा, समय.... देबार—इसबार ऐसा हो कि लहरों के थपेड़े खाने को चुका देने (समाप्त करने) का समय (अवसर) आ जाय; सुधाय .. मरि—इसबार अमृत में डूब, मर कर अमर हो रहूँगा, ये . माझे—जो गान

ये गान काने याय ना शोना से गान येथाय नित्य बाजे
प्राणेर वीणा निये याव सेइ अतलेर सभा-माझे ।
चिरदिनेर सुरटि बेँधे शेष गाने तार कान्ना केँदे
नीरव यिनि ताँहार पाये नीरव वीणा दिब धरि ।।

१९१०

७०

सीमार माझे, असीम, तुमि बाजाओ आपन सुर—
आमार मध्ये तोमार प्रकाश ताइ एत मधुर ।।
कत वर्णे कत गन्धे कत गाने कत छन्दे
अरूप, तोमार रूपेर लीलाय जागे हृदयपुर ।
आमार मध्ये तोमार शोभा एमन सुमधुर ।।
तोमाय आमाय मिलन ह्ले सकलइ याय खुले,
विश्वसागर ढेउ खेलाये उठे तखन दुले ।
तोमार आलोय नाइ तो छाया, आमार माझे पाय से काया,
हय से आमार अश्रुजले सुन्दर विधुर ।
आमार मध्ये तोमार शोभा एमन सुमधुर ।।

१९१०

कानो से नही सुना जाता वह गान जहाँ नित्य बजता है उसी अतल की सभा के बीच प्राणो की वीणा ले जाऊँगा; चिरदिनेर बेँधे—चिरदिन के सुर (स्वर) को बाँध कर, मिला कर, शेष केँदे—अन्तिम गान में उसकी रुलाई रो कर; कान्ना—क्रन्दन; केँदे—रो कर; नीरव धरि—जो नीरव है उनके चरणो में नीरव वीणा रख दूगा ।

७० बाजाओ—बजाते हो, आपन—अपना; ताइ—इसीलिये; एत—इतना; कत—कितने; वर्णे—रगो में, लीलाय—लीला से, पुर—निकेतन, आवास; एमन—ऐसी, तोमाय. खुले—तुम्हारा और मेरा मिलन होने मे सब खुल जाता है, विश्वसागर . दुले—विश्वसागर उस समय लहरे उठा कर दोलायमान हो जाता है, तोमार छाया—तुम्हारे आलोक में तो छाया नही है; आमार.... काया—मेरे भीतर वह काया पाता है; हय...विधुर—वह मेरे अश्रुजल से सुन्दर तथा कातर होता है ।

७१

कार मिलन चाओ, विरही—
तांहारे कोथा खुंजिछ भव-अरण्ये
कुटिल जटिल गहने शान्तिसुखहीन ओरे मन ।।
देखो देखो रे चित्तकमले चरणपद्म राजे, हाय !
अमृतज्योति किबा सुन्दर ओरे मन ।।

१९१२

७२

जय तव विचित्र आनन्द हे कवि,
जय तोमार करुणा ।
जय तव भीषण सब्र-कलुष-नाशन रुद्रता ।
जय अमृत तव, जय मृत्यु तव,
जय शोक तव, जय सान्त्वना ।।
जय पूर्णजाग्रत ज्योति तव,
जय तिमिरनिविड निशीथिनी भयदायिनी ।
जय प्रेममधुमय मिलन तव, जय असह विच्छेदवेदना ।।

१९१३

७३

जागो निर्मल नेत्रे रात्रिर परपारे,
जागो अन्तरक्षेत्रे मुक्तिर अधिकारे ।।
जागो भक्तिर तीर्थे पूजापुष्पेर घ्राणे,
जागो उन्मुखचित्ते, जागो अम्लानप्राणे,

७१. कार—किस का; चाओ—चाहते हो; तांहारे—उन्हें; कोथा—कहाँ; खुंजिछ—खोज रहे हो; राजे—शोभित होता है; किबा—क्या ही।
७३. परपारे—दूसरे पार; सुधासिन्धुर—अमृतसागर के; धारे—किनारे;

जागो नन्दननृत्ये सुधासिन्धुर धारे,
जागो स्वार्थेर प्रान्ते प्रेममन्दिरद्वारे ।।
जागो उज्ज्वल पुण्ये, जागो निश्चल आशे,
जागो नि.सीम शून्ये पूर्णेर बाहुपाशे ।
जागो निर्भयधामे जागो संग्रामसाजे,
जागो ब्रह्मेर नामे, जागो कल्याणकाजे,
जागो दुर्गमयात्री दुःखेर अभिसारे,
जागो,स्वार्थेर प्रान्ते प्रेममन्दिरद्वारे ।।

१९१३

७४

प्रभु आमार, प्रिय आमार, परम धन हे ।
चिरपथेर सङ्गी आमार चिरजीवन हे ।।
तृप्ति आमार, अतृप्ति मोर, मुक्ति आमार, बन्धनडोर,
दु.खसुखेर चरम आमार जीवन मरण हे ।।
आमार सकल गतिर माझे परम गति हे,
नित्य प्रेमेर धामे आमार परम पति हे ।
ओगो सबार, ओगो आमार, विश्व हते चित्ते विहार—
अन्तविहीन लीला तोमार नूतन नूतन हे ।।

१९१३

७५

अग्निवीणा बाजाओ तुमि केमन क'रे !
आकाश काँपे तारार आलोर गानेर घोरे ।।

आशे—आशा में, पूर्णेर बाहुपाशे—पूर्ण के बाहुपाश में ।

७४ प्रभु आमार—मेरे प्रभु, आमार . गति—मेरी समस्त गति के बीच परम गति, सबार—सब के; हते—से, चित्ते—चित्त में ।

७५ बाजाओ .क'रे—तुम किस प्रकार बजाते हो; आकाश . . . . घोरे—तारागण के आलोक के गान के नशे से आकाश कांपता है;

तेमनि क'रे आपन हाते   छुंले आमार वेदनाते,
नूतन सृष्टि जागल बुझि जीवन-'परे ॥
बाजे ब'लेइ बाजाओ तुमि सेइ गरबे
ओगो प्रभु, आमार प्राणे सकल सबे।
विषम तोमार वह्निघाते   बारे बारे आमार राते
ज्वालिये दिले नूतन तारा व्यथाय भ'रे ॥

१९१४

७६

आगुनेर   परशमणि छोँयाओ प्राणे।
ए जीवन   पुण्य करो दहन-दाने ॥
आमार एइ   देहखानि तुले धरो,
तोमार ओइ   देवालयेर प्रदीप करो—
निशिदिन   आलोक-शिखा ज्वलुक गाने ॥
आँधारेर   गाये गाये परश तव
सारा रात   फोटाक तारा नव नव।
नयनेर   दृष्टि हते घुचबे कालो,

तेमनि . . वेदनाते—वैसे ही अपने हाथों मेरी वेदना का स्पर्श किया; नूतन . . . 'परे—लगा जैसे जीवन के ऊपर (जीवन में) नवीन सृष्टि जाग उठी; बाजे . . सबे—बज उठता है उसी गर्व से हे प्रभु, तुम मेरे समस्त प्राणों में सब कुछ बजाते हो, विषम . . भ'रे—बार बार अपने कठिन वह्नि-प्रहार से मेरी रात में व्यथा से भरकर नवीन तारे को (तुमने) प्रज्वलित कर दिया।

७६. आगुनेर . . . . प्राणे—अग्नि का स्पर्शमणि (पारस) प्राणों में छुआओ; ए—यह; पुण्य—पवित्र; दहन-दाने—जलन का दान देकर (यन्त्रणा देकर); आमार . . . . धरो—मेरी इस देह को उठा लो, तोमार . . . . करो—अपने उस देवालय का (उसे) प्रदीप बना लो; ज्वलुक गाने—गानों में जले; आँधारेर . . . . गाये—अंधकार के अंग-अंग में; परश—स्पर्श, फोटाक—प्रस्फुटित करे, उदित करे, नयनेर . . कालो—आँखों की दृष्टि से कालिमा मिट जाएगी,

येखाने पड़बे सेथाय देखबे आलो—
व्यथा मोर उठबे ज्वले ऊर्ध्व-पाने ।।

१९१४

७७

आबार यदि इच्छा कर आबार आसि फिरे
दु:खसुखेर ढेउ-खेलानो एइ सागरेर तीरे ।
आबार जले भासाइ भेला, धुलार 'परे करि खेला,
हासिर मायामृगीर पिछे भासि नयननीरे ।
काँटार पथे आँधार राते आबार यात्रा करि,
आघात खेये बाँचि नाहय आघात खेये मरि ।
आबार तुमि छद्मवेशे आमार साथे खेलाओ हेसे,
नूतन प्रेमे भालोबासि आबार धरणीरे ।

१९१४

७८

एइ लभिनु सङ्ग तव, सुन्दर हे सुन्दर !
पुण्य हल अङ्ग मम, धन्य हल अन्तर, सुन्दर हे सुन्दर ।।

येखाने आलो—जहाँ पडेगी वहाँ आलोक (ही) देखेगी, व्यथा ....पाने—मेरी व्यथा ऊर्ध्वमुखीन हो जल उठेगी ।

७७ आबार . तीरे—फिर (तुम्हारी) यदि इच्छा हो (चाहो) तो दु:ख-सुख की लहरो वाले इस सागर के तीर फिर लौट आऊँ, आबार .भेला—फिर जल मे वेडा वहाऊँ, धुलार खेला—धूल पर खेल करूँ; हासिर. नीरे—हँसी की मायामृगी के पीछे आँखो के पानी मे वहता रहूँ, काँटार करि—कँटीले रास्ते पर अँधेरी रात में फिर-से यात्रा करूँ; आघात मरि—आघात खा कर बचूँ अथवा आघात खा कर मरूँ, आबार . हेसे—फिर-से तुम छद्मवेश में मेरे साथ हँसते हुए खेलो; भालोबासि—प्यार करूँ; धरणीरे—पृथ्वी को ।

७८. एइ तव—यह तुम्हारा सग पा लिया; पुण्य . अन्तर—

आलोके मोर चक्षुदुटि मुग्ध हये उठल फुटि,
हृद्गगने पवन हल सौरभेते मन्थर, सुन्दर हे सुन्दर ।।
एइ तोमारि परशरागे चित्त हल रञ्जित,
एइ तोमारि मिलनसुधा रइल प्राणे सञ्चित ।
तोमार माझे एमनि क'रे नवीन करि लओ ये मोरे,
एइ जनमे घटाले मोर जन्म-जन्मान्तर, सुन्दर हे सुन्दर ।।

१९१४

७९

केन चोखेर जले भिजिये दिलेम ना शुकनो धुलो यत !
के जानित आसबे तुमि गो अनाहूतेर मतो ।।
पार हये एसेछ मरु, नाइ ये सेथाय छायातरु—
पथेर दुःख दिलेम तोमाय गो, एमन भाग्यहत ।।
आलसेते वसेछिलेम आमि आपन घरेर छाये,
जानि नाइ ये तोमाय कत व्यथा वाजवे पाये पाये ।

मेरा शरीर पवित्र हुआ, अन्तर (हृदय) धन्य हुआ; आलोके . . . फुटि—आलोक में मेरे दोनों नेत्र मुग्ध हो कर खिल उठे; हृद्गगने—हृदय रूपी आकाश में; हल—हुआ; सौरभेते—सौरभ से, सुगन्ध से; एइ .. रञ्जित—यह तुम्हारे स्पर्श के रंग से (मेरा) चित्त रञ्जित हुआ; एइ . . सञ्चित—यह तुम्हारी मिलन-सुधा प्राणों में सञ्चित रही; तोमार . मोरे—अपने भीतर इसी प्रकार (तुम) जो मुझे नूतन बना लेते हो।

७९. केन ... यत—जितनी सूखी धूल है (उसे) आँखों के जल से (मैंने) भिगो क्यों नहीं दिया; के. .मतो—अजी कौन जानता था कि अनिमन्त्रित के समान तुम आओगे; पार. .मरु—(तुम) मरु प्रदेश (मरुभूमि) पार हो कर आए हो; नाइ. . तरु—वहाँ वृक्षों की छाया जो नहीं है; दिलेम तोमाय—तुम्हें (मैंने) दिया, एमन—ऐसी; भाग्यहत—भाग्यहीन; आलसेते ..छाये—(उस समय) आलस्य से अपने घर की छाया में मैं बैठी थी; जानि ...पाये—नहीं जानती थी

ओइ वेदना आमार बुके वेजेछिल गोपन दुखे—
दाग दियेछे मर्मे आमार गो, गभीर हृदयक्षत ।।

१९१४

८० –

गाब तोमार सुरे दाओ से वीणायन्त्र,
शुनब तोमार वाणी दाओ से अमर मन्त्र ।
करब तोमार सेवा दाओ से परम शक्ति,
चाइब तोमार मुखे दाओ से अचल भक्ति ।।
सइब तोमार आघात दाओ से विपुल धैर्य,
बइब तोमार ध्वजा दाओ से अटल स्थैर्य ।।
नेब सकल विश्व दाओ से प्रबल प्राण,
करब आमाय नि.स्व दाओ से प्रेमेर दान ।।
याब तोमार साथे दाओ से दखिन हस्त,
लड़ब तोमार रणे दाओ से तोमार अस्त्र ।।
जागब तोमार सत्ये दाओ सेइ आह्वान ।
छाड़ब सुखेर दास्य, दाओ दाओ कल्याण ।।

१९१४

कि पद-पद पर तुम्हे कितनी पीड़ा होगी; ओइ.. दुखे—वही वेदना गोपन दु:ख से मेरी छाती में कसक उठी थी; दाग—परिचय-चिह्न; दियेछे—दिया है; मर्मे आमार—मेरे मर्म मे; क्षत—घाव, व्रण ।

८०. गाव यन्त्र—तुम्हारे सुर में गाऊँगा, वह वीणा यन्त्र दो; शुनव—सुनूंगा, तोमार—तुम्हारी; दाओ—दो; से—वह; करव—करूँगा, चाइव .. मुखे—तुम्हारे मुख को देखता रहूँगा; सइव—सहूँगा; वइव—वहन करूँगा, स्थैर्य—स्थिरता, नेब—लूंगा, ग्रहण करूँगा, करव ..नि:स्व— अपने को नि स्व (निर्धन) कर दूंगा; याव—जाऊँगा; दखिन—दाहिना; जागव—जागूंगा, छाड़व—छोड़ूंगा ।

८१

चरण धरिते दियो गो आमारे, नियो ना, नियो ना सराये—
जीवन मरण सुख दुख दिये वक्षे धरिब जड़ाये ॥
स्खलित शिथिल कामनार भार वहिया वहिया फिरि कत आर—
निज हाते तुमि गेँथे नियो हार, फेलो ना आमारे छड़ाये ॥
चिरपिपासित वासना वेदना बाँचाओ ताहारे मारिया ।
शेष जये येन हय से विजयी तोमारि काछेते हारिया ।
विकाये विकाये दीन आपनारे पारि ना फिरिते दुयारे दुयारे—
तोमारि करिया नियो गो आमारे वरणेर माला पराये ॥

१९१४

८२

जानि गो, दिन यावे ए दिन यावे ।
एकदा कोन् वेलाशेषे मलिन रवि करुण हेसे
शेष विदायेर चाओया आमार मुखेर पाने चावे ॥

---

८१. चरण.. आमारे—मुझे (अपने) चरण पकड़ने देना; नियो.... सराये—हटा नहीं लेना, हटा नहीं लेना; दिये—द्वारा; वक्षे... जड़ाये—छाती में लगा रखूँगा; वहिया—ढोता हुआ; वहिया .. आर—और कितना ढोए डोलूँ फिरूँ; निज .. हार—अपने ही हाथों तुम हार गूँथ लेना; फेलो ... छड़ाये—मुझे बिखेर न फेंकना; बाँचाओ—बचाओ; ताहारे—उसे; मारिया—मार कर; येन.. .विजयी—जिस से वह विजयी हो; तोमारि.. . हारिया—तुम्हारे ही निकट हार कर; बिकाये .. दुयारे—दीन बन कर अपने को बेचता हुआ द्वार-द्वार नहीं फिर पाता; तोमारि.. .पराये—वरमाल्य पहना कर मुझे अपना ही बना लेना।

८२. जानि .यावे—जानता हूँ, दिन (बीत) जाएंगे, ये दिन बीत जाएँगे; एकदा—किसी समय; कोन्—किस; वेलाशेषे—दिन के अन्त में; करुण हेसे—करुण (हँसी) हँस कर; शेष. .चावे—अन्तिम विदाई की दृष्टि से मेरे मुँह की ओर देखेगा; पथेर देनु—रास्ते के किनारे

पथेर धारे बाजबे वेणु, नदीर कूले चरबे धेनु,
आङिनाते खेलबे शिशु, पाखिरा गान गावे—
तबुओ दिन याबे ए दिन याबे ।।
तोमार काछे आमार ए मिनति,
याबार आगे जानि येन आमाय डेकेछिल केन
आकाश-पाने नयन तुले श्यामल वसुमती ।।
केन निशार नीरवता शुनियेछिल तारार कथा,
पराने ढेउ तुलेछिल केन दिनेर ज्योति—
तोमार काछे आमार एइ मिनति ।।
साङ्ग यबे हबे धरार पाला
येन आमार गानेर शेषे थामते पारि शमे एसे,
छयटि ऋतुर फुले फले भरते पारि डाला ।
एइ जीवनेर आलोकेते पारि तोमाय देखे येते,
परिये येते पारि तोमाय आमार गलार माला—
साङ्ग यबे हबे धरार पाला ।।

१९१४

बाँसुरी बजेगी; नदीर .धेनु—नदी के किनारे गायें चरेगी; आङिनाते—आँगन में, पाखिरा—पक्षीगण, गावे—गाएंगे; तबुओ—तो भी; तोमार मिनति—तुम्हारे निकट मेरी यह प्रार्थना है; याबार .येन—ऐसा हो कि जाने के पहले जान लूँ; आमाय केन—मुझे क्यो बुलाया था, आकाश. तुले—आकाश की ओर आँखे उठा कर; केन कथा—रात्रि की नीरवता ने क्यो ताराओ की बात सुनाई थी, पराने . ज्योति—दिन की ज्योति ने प्राणो में क्यो लहरे उठाई थी; साङ्ग पाला—पृथ्वी पर का मेरे गीत-अभिनय का विषय जब समाप्त होगा (पृथ्वी पर मेरी जीवन लीला जब समाप्त होगी); पाला—गीत या नाटक का विषय; येन .एसे—ऐसा हो कि अपने गान की समाप्ति पर सम पर आ कर रुक सकूँ, छयटि—छः; भरते डाला—डलिया भर सकूँ; एइ येते—इसी जीवन के प्रकाश मे तुम्हे देख जा सकूँ; परिये माला—अपने गले की माला तुम्हे पहना कर जा सकूँ ।

८३

तुमि ये सुरेर आगुन लागिये दिले मोर प्राणे,
से आगुन छड़िये गेल सब खाने ।।
यत सब मरा गाछेर डाले डाले
नाचे आगुन ताले ताले,
आकाशे हात तोले से कार पाने ।।
आंधारेर तारा यत अवाक हये रय चेये,
कोथाकार पागल हाओया वय धेये ।
निशीथेर बुकेर माझे एइ-ये अमल
उठल फुटे स्वर्णकमल,
आगुनेर की गुण आछे के जाने ।।

१९१४

८४

तुमि ये एसेछ मोर भवने रव उठेछे भुवने ।।
नहिले फुले किसेर रङ लेगेछे, गगने कोन् गान जेगेछे,
कोन् परिमल पवने ।।

---

८३. तुमि . प्राणे—तुमने मेरे प्राणों मे सुर की जो आग लगा दी; से. खाने—वह आग सब जगह फैल गई; यत. ..डाले—जितने सब सूखे पेड़ों की डाल-डाल पर; ताले-ताले—ताल-ताल पर; आकाशे....पाने—आकाश में वह किसकी ओर हाथ उठाती है; आंधारेर ..चेये—अंधकार के सब तारे अवाक् हो देख रहे हैं; कोथाकार. धेये—जाने कहाँ की पागल हवा दौड़ती चलती है; निशीथेर. कमल—निशीथ के हृदय के बीच यह जो स्वर्णकमल प्रस्फुटित हो उठा; आगुनेर. जाने—(इस) आग के क्या गुण हैं कौन जाने।

८४ तुमि....भुवने—तुम जो मेरे गृह आए हो, यह संवाद संसार भर में फैल गया है, नहिले—नहीं तो; फुले ..लेगेछे—फूलों में किसका रंग लगा है, कोन्—कौन; जेगेछे—जगा है, दिये—दे कर,

दिये दुःखसुखेर वेदना आमाय तोमार साधना।
आमार व्यथाय व्यथाय पा फेलिया एले तोमार सुर मेलिया,
एले आमार जीवने ।।

१९१४

८५

तोमार आनन्द ओइ एल द्वारे एल एल एल गो। ओगो पुरवासी!
बुकेर आँचलखानि धुलाय पेते आङिनाते मेलो गो ।।
पथे सेचन कोरो गन्धवारि मलिन ना हय चरण तारि,
तोमार सुन्दर ओइ एल द्वारे एल एल एल गो।
आकुल हृदयखानि सम्मुखे तार छड़िये फेलो फेलो गो ।।
तोमार सकल धन ये धन्य हल हल गो ।।
विश्वजनेर कल्याणे आज घरेर दुयार खोलो गो।
हेरो राङा हल सकल गगन, चित्त हल पुलकमगन,
तोमार नित्य आलो एल द्वारे एल एल एल गो।
तोमार परानप्रदीप तुले धोरो, ओइ आलोते ज्वेलो गो ।।

१९१४

आमाय—मुझमें; तोमार—तुम्हारी, आमार मेलिया—मेरी हर व्यथा पर चरण रखते हुए अपना सुर फैला कर तुम आए, एले जीवने—मेरे जीवन मे आए।

८५. ओइ—वह, एल—आया, पुरवासी—नगर के रहने वाले; बुकेर . मेलो गो—छाती के आँचल को धूल में फैला आँगन मे विछा दो, पथे . वारि—रास्ते में सुगन्धित जल छिडको, मलिन तारि—(जिससे) उसके चरण मैले न हो, तोमार सुन्दर—तुम्हारा (वह) सुन्दर; आकुल गो—(अपने) आकुल हृदय को उसके सम्मुख फैला दो; हल—हुआ; ज्वेलो—प्रज्वलित करो।

८६

तोमार एइ माधुरी छापिये आकाश झरबे,
आमार प्राणे नइले से कि कोथाओ धरबे ? ।
एइ-ये आलो सूर्ये ग्रहे ताराय झरे पड़े शतलक्ष धाराय,
पूर्ण हबे ए प्राण यखन भरबे ।।
तोमार फुले ये रङ घुमेर मतो लागल
आमार मने लेगे तबे से ये जागल ।
ये प्रेम काँपाय विश्ववीणाय पुलके संगीते से उठबे भेसे पलके
ये दिन आमार सकल हृदय हरबे ।।

१९१४

८७

दाँड़िये आछ तुमि आमार गानेर ओ पारे ।
आमार सुरगुलि पाय चरण, आमि पाइ ने तोमारे ।।
वातास बहे मरि मरि आर बेँधे रेखो ना तरी,
एसो एसो पार हये मोर हृदयमाझारे ।।

---

८६. तोमार ...झरबे—तुम्हारी यह माधुरी आकाश को आच्छादित कर झरेगी; आमार....धरबे—मेरे प्राणों के सिवा वह क्या कहीं अँट सकेगी; एइ.. .धाराय—यह जो आलोक सूर्य, ग्रहों और ताराओं से करोड़ों धाराओं में झर पड़ता है; पूर्ण... भरबे—(वह) पूर्ण होगा जब ये प्राण भरेंगे; तोमार . जागल—तुम्हारे फूलों में नींद की तरह जो रंग लगे हैं वे मेरे मन में लगने पर ही तो जागे; ये प्रेम .हरबे—जो प्रेम विश्व वीणा को पुलक से कंपित कर देता है वह जिस दिन मेरे सम्पूर्ण हृदय का हरण करेगा (उस दिन) क्षण भर में ही (वह) संगीत में बह चलेगा।

८७. दाँड़िये.... ओ पारे—मेरे गान के उस पार तुम खड़े हो; आमार ... तोमारे—मेरे सुर (तुम्हारे) चरणों को पाते हैं (लेकिन) मैं तुम्हें नहीं पा रहा, वातास बहे—हवा बह रही है; मरि मरि—बलि जाऊँ; सौन्दर्य आदि को देख कर विस्मय अथवा प्रशंसा सूचक अव्यय; आर . तरी—और नौका बाँध न रखो; एसो ..माझारे—पार हो कर मेरे हृदय के बीच आओ, आओ;

तोमार साथे गानेर खेला दूरेर खेला ये,
वेदनाते बाँशि बाजाय सकल वेला ये।
कबे निये आमार बाँशि बाजावे गो आपनि आसि
आनन्दमय नीरव रातेर निविड़ आँधारे।।

१९१४

८८

दुःखेर वरषाय चक्षेर जल येइ नामल
वक्षेर दरजाय वन्धुर रथ सेइ थामल।।
मिलनेर पात्रटि पूर्ण ये विच्छेदे वेदनाय;
अर्पिनु हाते ताँर खेद नाइ, आर मोर खेद नाइ।।
बहुदिन-वञ्चित अन्तरे सञ्चित की आशा,
चक्षेर निमेषेइ मिटल से परशेर तियाषा।
एत दिने जानलेम ये काँदन काँदलेम से काहार जन्य।
धन्य ए जागरण, धन्य ए क्रन्दन, धन्य रे धन्य।।

१९१४

तोमार . ये—तुम्हारे साथ गान का खेल दूर का खेल है; वेदनाते . ये—सब समय बाँसुरी वेदना के सुर में बजती है; कबे बाँशि—कब मेरी बाँसुरी ले कर; बाजावे.. .आसि—आप ही आ कर बजाओगे; आँधारे—अंधकार में।

८८. दुःखेर थामल—दुःख की वर्षा में जैसे ही आँखो का जल नीचे आया वैसे ही हृदय के दरवाज़े वन्धु का रथ आ कर रुका; मिलनेर . वेदनाय—मिलन का पात्र विरह और वेदना से भरा हुआ है, अर्पिनु . . . नाइ—उनके हाथो अर्पित कर दिया, (अब मुझे) खेद नही, अब और मुझे खेद नही; चक्षेर निमिषेइ—पल भर मे ही, मिटल तियाषा—वह स्पर्श की तृष्णा मिट गई; एत .जानलेम—इतने दिनो बाद जाना; ये—जो, काँदन—क्रदन; काँदलेम—रोया, से जन्य—वह किनके लिये; ए—यह।

८९

प्रभु, तोमार वीणा येमनि वाजे
आंधार-माझे
अमनि फोटे तारा।
येन सेइ वीणाटि गभीर ताने
आमार प्राणे
वाजे तेमनिधारा।।
तखन नूतन सृष्टि प्रकाश हवे
की गौरवे
हृदय-अन्धकारे।
तखन स्तरे स्तरे आलोकराशि
उठवे भासि
चित्तगगनपारे।।
तखन तोमारि सौन्दर्यछवि,
ओगो कवि,
आमाय पड़वे आंका—
तखन विस्मयेर रवे ना सीमा
ऐ महिमा
आर यावे ना ढाका।।

---

८९. येमनि बाजे—जैसे ही बजती है; आंधार-माझे—अन्धकार के बीच; अमनि—वैसे ही; फोटे—प्रस्फुटित होता है, उदित होता है; येन—ऐसा हो कि; सेइ—वही; तेमनिधारा—उसी प्रकार, उसी ढंग से; तखन—उस समय; हवे—होगी; येन ...धारा—ऐसा हो कि वह वीणा गभीर तान से उसी प्रकार मेरे प्राणों में बजे; तखन. अन्धकारे—उस समय (मेरे) हृदय के अन्धकार में कितने गौरव के साथ नवीन सृष्टि प्रकाशित होगी; छवि—चित्र, तस्वीर; तखन.....आंका—हे कवि, उस समय तुम्हारे ही सौन्दर्य की तस्वीर मुझ में अंकित हो जाएगी, रवे ना—नहीं रहेगी; ऐ—वह; आर......ढाका—और ढकी नहीं जा सकेगी; तोमारि—तुम्हारी ही; हासि—हँसी;

तखन तोमारि प्रसन्न हासि
पड़बे आसि
नवजीवन-'परे।
तखन आनन्द-अमृते तव
धन्य हव
चिरदिनेर तरे ॥

१९१४

९०

ओगो पथेर साथि, नमि वारम्बार।
पथिकजनेर लहो लहो नमस्कार ॥
ओगो विदाय, ओगो क्षति, ओगो दिनशेषेर पति,
भाङा बासार लहो नमस्कार ॥
ओगो नव प्रभातज्योति, ओगो चिरदिनेर गति,
नव आशार लहो नमस्कार।
जीवनरथेर हे सारथि, आमि नित्य पथेर पथी,
पथे चलार लहो लहो लहो नमस्कार।

१९१४

९१

भोरेर वेला कखन एसे
परश करे गेछ हेसे।

पड़बे आसि—आ कर पडेगी; 'परे—पर, ऊपर, हव—होऊँगा; चिरदिनेर तरे—चिरदिन के लिये।

९० साथि—साथी; नमि—नमस्कार करता हूँ; लहो—लो, भाङा बासार—टूटे वासस्थान का, पथे चलार—पथ पर चलने वाले का, पथिक का।

९१ भोरेर हेसे—भोर-वेला में जाने किस समय आ कर हँसते हुए स्पर्श कर गए हो, आमार .ठेले—मेरी निद्रा के दरवाज़े को ठेल कर,

आमार घुमेर दुयार ठेले के सइ खबर दिल मेले—
जेगे देखि, आमार आँखि आँखिर जले गेछे भेसे ।।
मने हल, आकाश येन कइल कथा काने काने ।
मने हल, सकल देह पूर्ण हल गाने गाने ।
हृदय येन शिशिरनत फुटल पूजार फुलेर मतो ;
जीवननदी कूल छापिये छड़िये गेल असीमदेशे ।।

१९१४

९२

भेङेछ दुयार, एसेछ ज्योतिर्मय, तोमारि हउक जय ।
तिमिरविदार उदार अभ्युदय, तोमारि हउक जय ।।
हे विजयी वीर, नव जीवनेर प्राते
नवीन आशार खड़्ग तोमार हाते—
जीर्ण आवेश काटो सुकठोर घाते, बन्धन होक क्षय ।।
एसो दु:सह, एसो एसो निर्दय, तोमारि हउक जय ।
एसो निर्मल, एसो एसो निर्भय, तोमारि हउक जय ।
प्रभातसूर्य, एसेछ रुद्रसाजे,
दु:खेर पथे तोमार तूर्य बाजे—
अरुणवह्नि ज्वालाओ चित्तमाझे, मृत्युर होक लय ।।

१९१४

के .. मेले—किसने यह खबर फैला दी; जेगे देखि—जग कर देखती हूँ; आमार .. भेसे—मेरी आँखें आँखों के जल मे प्लावित हो गई है; मने हल—मन में हुआ, लगा; आकाश .. काने—जैसे आकाश ने कानों-कान बात कही; हल—हुई; येन—जैसे, फुटल मतो—पूजा के फूल के समान प्रस्फुटित हुआ; जीवननदी देशे—जीवन-नदी किनारे का अतिक्रमण कर असीम देश में फैल गई ।

९२. भेङेछ दुयार—दरवाजे को तोड़ा है; एसेछ—आए हो; तोमारि .... जय—तुम्हारी ही जय हो; विदार—विदारण करने वाले, चीरने वाले; हाते—हाथ में; आवेश—मोह; होक—हो; एसो—आओ; ज्वालाओ—जलाओ ।

९३

ये राते मोर दुयारगुलि भाङ्ल झड़े
जानि नाइ तो तुमि एले आमार घरे।
सब ये हये गेल कालो, निवे गेल दीपेर आलो,
आकाश-पाने हात वाड़ालेम काहार तरे ?
अन्धकारे रइनु पड़े स्वपन मानि।
झड़ ये तोमार जयध्वजा ताइ कि जानि !
सकालवेलाय चेये देखि, दाँड़िये आछ तुमि ए कि
घर-भरा मोर शून्यतारइ वुकेर 'परे।।

१९१४

९४

यदि प्रेम दिले ना प्राणे
केन भोरेर आकाश भरे दिले एमन गाने गाने ?
केन तारार माला गाँथा,
केन फुलेर शयन पाता,
केन दखिन-हाओया गोपन कथा जानाय काने काने ?

---

९३. ये राते ...घरे—जिस रात आँधी में मेरे दरवाज़े टूट पडे (तव) जान न पायी कि तुम मेरे घर आए हो, सव कालो—सव काला (अन्वकार) हो गया; निवे. आलो—दीपक का प्रकाश वुझ गया; आकाश तरे—आकाश की ओर (मैंने) किसके लिये हाय वढाये, अन्वकारे .मानि—स्वप्न समझ कर अन्वकार में पड़ी रही, झड़ जानि—आँधी जो तुम्हारी जयध्वजा है सो क्या जानती थी; सकाल वेलाय—सवेरे, चेये देखि—आँखें खोल कर देखती हूँ; दाँड़िये तुमि—तुम खडे हो, एकि—यह क्या! घर ..'परे—घर को भरने वाली मेरी शून्यता की ही छाती के ऊपर।

९४. दिले ना—नही दिया; केन—क्यो, एमन—इस प्रकार; गाने गाने—गानो से; तारार . गाँथा—ताराओ की माला गूथना; फुलेर . पाता—फूलो की सेज विछाना, हाओया—हवा, जानाय—वतलाती है;

हृदय आमार चाय ये दिते, केवल निते नय,
वये वये वेड़ाय से तार या-किछु सञ्चय।
हातखानि ओइ वाड़िये आनो, दाओ गो आमार हाते—
धरव तारे, भरव तारे, राखवो तारे साथे,
एकला पथेर चला आमार करव रमणीय॥

१९१४

९८

श्रावणेर धारार मतो पडुक झरे, पड़ुक झरे
तोमारि सुरटि आमार मुखेर 'परे, बुकेर 'परे॥
पुरवेर आलोर साथे पड़ुक प्राते दुइ नयाने—
निशीथेर अन्धकारे गभीर धारे पडुक प्राणे।
निशिदिन एइ जीवनेर सुखेर 'परे, दुखेर 'परे
श्रावणेर धारार मतो पड़ुक झरे, पड़ुक झरे॥
ये शाखाय फुल फोटे ना, फल धरे ना एकेबारे,
तोमार ओइ वादल-वाये दिक जागाये सेइ शाखारे।

चाय.. दिते—देना जो चाहता है; केवल .. नय—केवल लेना नहीं, वये. ... सञ्चय—जो-कुछ उसका सञ्चय है उसे ढोते हुए (वहन करते हुए) वह भटकता फिरता है, हातखानि—हाथ; ओइ—वह; वाड़िये आनो—बढ़ा कर लाओ, बढ़ाओ; दाओ....हाते—मेरे हाथों में दो; धरव तारे—उसे पकड़ूँगी; भरव—भरूँगी; राखबो...साथे—उसे साथ रखूँगी; एकला रमणीय—सूने पथ पर अपने गमन को रमणीय बनाऊँगी।

९८ श्रावणेर . मतो—श्रावण की धारा (झड़ी) के समान; पड़ुक झरे—झड़ पड़े; तोमारि—तुम्हारा ही; सुरटि—सुर, स्वर; बुकेर 'परे—छाती पर, पुरवेर ... साथे—पूर्व (दिशा) के आलोक के साथ; प्राते—प्रातःकाल; दुइ नयाने—दोनों आँखों पर; ये. .एकेबारे—जिस शाखा पर फूल नहीं खिलते, फल बिल्कुल ही नहीं लगते; तोमार ओइ—तुम्हारी वह; वादल वाये—बरसाती हवा; दिक जागाये—जगा दे; सेइ—उस; शाखारे—शाखा को;

या-किछु   जीर्ण आमार, दीर्ण आमार, जीवनहारा,
ताहारि   स्तरे स्तरे पड़ुक झरे सुरेर धारा।
निशिदिन   एइ जीवनेर तृषार 'परे, भुखेर 'परे
श्रावणेर   धारार मतो पड़ुक झरे, पड़ुक झरे॥

१९१४

९९

शेष नाहि ये, शेष कथा के बलवे?
आघात हये देखा दिल, आगुन हये ज्वलवे॥
साङ्ग हले मेघेर पाला शुरु हवे वृष्टि-ढाला
बरफ जमा सारा हले नदी हये गलवे॥
फुराय या ता फुराय शुधु चोखे,
अन्धकारेर पेरिये दुयार याय चले आलोके।
पुरातनेर हृदय टुटे   आपनि नूतन उठवे फुटे,
जीवने फुल फोटा हले मरणे फल फलवे॥

१९१४

या-किछु—जो कुछ; दीर्ण—विदीर्ण, फटा; जीवनहारा—प्राणहीन; ताहारि—उसीके; भुख—भूख।

९९ शेष. बलवे—अन्त जो नही है, अन्तिम बात कहेगा कौन; हये—बन कर, देखा दिल—दिखाई दिया; आघात ज्वलवे—आघात के रूप में दिखाई दिया, अग्नि हो कर जलेगा, आगुन—आग, अग्नि, ज्वलवे—जलेगा, साङ्ग पाला—मेघो का प्रकरण समाप्त होने पर; हवे—होगा; ढाला—ढालना, सारा हले—समाप्त होने पर; फुराय .चोखे—जो नि शेष होता है सो केवल आँखो (से देखने भर) के लिये नि शेष होता है; अन्धकारेर. . आलोके—अन्धकार के दरवाज़े को पार कर (वह) आलोक में चला जाता है; पुरातनेर टुटे—पुरातन (प्राचीन) का हृदय टूटने पर; आपनि फुटे—नवीन आप ही खिल उठेगा; जीवने फलबे—जीवन में फूल खिलने पर मरण में फल फलेगा।

१००

तोमार खोला हाओया लागिये पाले टुकरो करे काछि
डुबते राजि आछि आमि डुबते राजि आछि ॥
सकाल आमार गेल मिछे, विकेल ये याय तारि पिछे गो—
रेखो ना आर, बेँधो ना आर कूलेर काछाकाछि ॥
माझिर लागि आछि जागि सकल रात्रिवेला,
ढेउगुलो ये आमाय निये करे केवल खेला ।
झड़के आमि करव मिते, डरव ना तार भ्रूकुटिते—
दाओ छेड़े दाओ, ओगो, आमि तुफान पेले बाँचि ॥

१९१४

१०१

आज आलोकेर एइ झर्नाधाराय धुइये दाओ ।
आपनाके एइ लुकिये-राखा धुलार ढाका धुइये दाओ ॥
ये जन आमार माझे जड़िये आछे घुमेर जाले
आज एइ सकाले धीरे धीरे तार कपाले
एइ अरुण-आलोर सोनार-काठि छुंइये दाओ ।

---

१००. तोमार ..काछि—तुम्हारी खुली हुई (मुक्त) हवा पाल में भर कर मोटे रस्सों के टुकडे टुकडे कर के; आमि ...आछि—मैं डूबने को राज़ी (तैयार) हूँ; सकाल ...मिछे—मेरा प्रातःकाल व्यर्थ गया (बीता); विकेल पिछे—तीसरा पहर उसीके पीछे जाता है; बिकेल—विकाल, अपराह्ण; रेखो .काछाकाछि—किनारे के आसपास और न रखो, और न बाँधो; माझिर . जागि—माँझी के लिये जाग रहा हूँ; ढेउ. .खेला—लहरें मुझे ले कर केवल खेल किए जाती हैं; झड़के ... मिते—आँधी को मैं मीत बनाऊँगा; डरव ....भ्रूकुटिते—उसकी भ्रूकुटि से डरूँगा नहीं; दाओ ... ओगो—अजी, छोड़ दो; आमि ... बाँचि—मैं तूफान पा कर बच जाऊँ (मरूँ नहीं)।

१०१. एइ—इस; धाराय—धारा में; धुइये दाओ—धो दो; आपनाके ....दाओ—अपने को इस तरह छिपा रखने वाली धूलि के आच्छादन को धो दो; ये. ....जाले—जो व्यक्ति मेरे भीतर निद्रा के जाल में जड़ित है; आज ... दाओ —आज इस प्रभात में धीरे धीरे उसके कपाल में इस अरुण प्रकाश की

विश्वहृदय-हते-धाओया आलोय-पागल प्रभात-हाओया,
सेइ हाओयाते हृदय आमार नुइये दाओ ।।
आज निखिलेर आनन्दधाराय धुइये दाओ,
मनेर कोणेर सब दीनता मलिनता धुइये दाओ ।।
आमार परान-वीणाय घुमिये आछे अमृतगान—
तार नाइको वाणी, नाइको छन्द, नाइको तान ।
तारे आनन्देर एइ-जागरणी छुँइये दाओ ।
विश्वहृदय-हते-धाओया प्राणे-पागल गानेर हाओया,
सेइ हाओयाते हृदय आमार नुइये दाओ ।।
१९१५

१०२

तोमाय नतुन करेइ पाब ब'ले हाराइ क्षणे-क्षणे
ओ मोर भालोबासार धन ।।
देखा देबे ब'ले तुमि हओ ये अदर्शन
ओ गो भालोबासार धन ।।
ओगो, तुमि आमार नओ आड़ालेर, तुमि आमार चिरकालेर—

सोने की (जादूभरी) लकडी का स्पर्श करा दो, विश्व. हाओया—विश्व-हृदय से (निकल कर) दौडती हुई प्रकाश से पागल प्रभात की हवा; सेइ . दाओ—उसी हवा से मेरे हृदय को झुका दो, मनेर कोणेर—मन के कोने की; आमार . अमृतगान—मेरी प्राण-वीणा में अमर गान सोया हुआ है; तार तान—उसके न वाणी है, न छन्द है, न तान; तारे दाओ—उसे इस आनन्द की प्रभाती का स्पर्श करा दो ।

१०२ तोमाय—तुम्हें; नतुन . क्षणे—नये सिरे से पाऊँगा इसलिये क्षण-क्षण (तुम्हें) खोता हूँ; ओ. धन—हे मेरे प्यार के धन; देखा अदर्शन —दर्शन दोगे इसलिये तुम अदृश्य (अदर्शन) हो जाते हो; आमार—मेरे; नओ —नही हो; आड़ालेर—अन्तराल के; क्षणकालेर .निमगन—क्षणकाल की

क्षणकालेर लीलार स्रोते हओ ये निमगन
ओ मोर भालोबासार धन ।।
आमि तोमाय यखन खुंजे फिरि भये कांपे मन—
प्रेमे आमार ढेउ लागे तखन ।
तोमार शेष नाहि, ताइ शून्य सेजे शेष करे दाओ आपनाके ये—
ओइ हासिरे देय धुये मोर विरहेर रोदन
ओ मोर भालोबासार धन ।।

१९१५

१०३

धीरे बन्धु, धीरे धीरे
चलो तोमार विजन मन्दिरे ।
जानि ने पथ, नाइ ये आलो, भितर बाहिर कालोय कालो,
तोमार चरणशब्द वरण करेछि
आज एइ अरण्यगभीरे ।।
धीरे बन्धु, धीरे धीरे
चलो अन्धकारेर तीरे तीरे ।
चलब आमि निशीथराते तोमार हाओयार इशाराते,
तोमार वसनगन्ध वरण करेछि
आज एइ वसन्तसमीरे ।।

१९१५

लीला के स्रोत में निमग्न जो हो जाते हो; आमि मन—मैं तुम्हें जब खोजता फिरता हूँ, (मेरा) मन भय से कांपता रहता है; प्रेमे तखन—उस समय मेरे प्रेम में लहरें उठती हैं; तोमार नाहि—तुम्हारी समाप्ति नहीं है; ताइ ये—इसीलिये शून्य का वेश धर कर अपने को समाप्त कर देते हो, ओइ रोदन—मेरे विरह का रोदन उस हँसी को धो देता है ।

१०३ जानि ने—नहीं जानता; नाइ आलो—प्रकाश जो नहीं है; भितर—भीतर; कालोय कालो—काला ही काला, करेछि—किया है; चलब—चलूंगा; हाओयार इशाराते—हवा के इशारे से ।

१०४

सवाइ यारे सब दितेछे तार काछे सब दिये फेलि।
क'बार आगे चावार आगे आपनि आमाय देव मेलि।।
नेवार वेला हलेम ऋणी, भिड़ करेछि भय करि नि—
एखनो भय करबो ना रे, देवार खेला एवार खेलि।।
प्रभात तारि सोना निये वेरिये पड़े नेचेकुँदे।
सन्ध्या तारे प्रणाम क'रे सब सोना तार देय रे शुधे।
फोटा फुलेर आनन्द रे झरा फुलेइ फले धरे—
आपनाके भाइ, फुरिये-देओया चुकिये दे तुइ वेलावेलि।।
१९१५

१०५

चलि गो, चलि गो, याइ गो चले।
पथेर प्रदीप ज्वले गो गगनतले।।
वाजिये चलि पथेर वाँशि, छड़िये चलि चलार हासि,
रङिन वसन उड़िये चलि जले स्थले।।

---

१०४. सबाइ फेलि—सभी जिसे सब (कुछ) दे रहे हैं उसके निकट सब कुछ दे डालूं; क'बार मेलि—कहने के पहले, चाहने के पहले स्वयं ही अपने आप को (उसके निकट) फैला (विखरा) दूंगा, नेवार ऋणी—लेने के समय ऋणी हुआ, भिड़ नि—भीड की है लेकिन भय नही किया, एखनो खेलि—अब इस समय भी भय नही करूँगा, इसवार देने का खेल खेलूं; प्रभात कुँदे—प्रभात उसी का सोना ले कर नाचता-कूदता निकल पडता है, सन्ध्या शुधे—सन्ध्या उसे प्रणाम करके उसका सब सोना परिशोध कर देती है, फोटा . रे—खिले हुए फूल का आनन्द, झरा धरे—झडे हुए फूल में ही फल वनता है, आपनाके वेलि—अपने को, भाई, समय रहते-रहते सम्पूर्ण रूप में नि शेष करने (का ऋण) चुका दे।

१०५. चलि—चलूं, याइ चले—चला जाऊँ; ज्वले—जलता है, गो—मधुर सबोधन के लिये प्रयुक्त होता है; वाजिये वाँशि—पथ की वाँसुरी वजा कर चलूं; छड़िये हासि—चलने की हँसी (आनद) को विखेरता चलूं, रङिन स्थले—जल-स्थल पर रंगीन वस्त्र उड़ाता हुआ चलूं;

पथिक भुवन भालोवासे पथिकजने रे।
एमन सुरे ताइ से डाके क्षणे क्षणे रे॥
चलार पथेर आगे आगे   ऋतुर ऋतुर सोहाग जागे,
चरणघाये मरण मरे पले पले॥

१९१५

१०६

आमार   सकल दुखेर प्रदीप ज्वेले दिवस गेले करब निवेदन—
आमार   व्यथार पूजा हय नि समापन।
यखन वेला-शेषेर छायाय पाखिरा याय आपन कुलाय-माझे,
सन्ध्यापूजार घण्टा यखन बाजे,
तखन आपन शेष शिखाटि ज्वालबे ए जीवन—
आमार   व्यथार पूजा हबे समापन॥
अनेक दिनेर अनेक कथा, व्याकुलता, बाँधा वेदन-डोरे,
मनेर माझे उठेछे आज भ'रे।

पथिक ... पथिकजने रे—भुवन रूपी पथिक पथिकों को प्यार करता है; एमन...... क्षणे रे—इसीलिये ऐसे सुर में वह क्षण-क्षण पुकारता है; चलार ..जागे—चलने की राह के आगे-आगे ऋतु-ऋतु का दुलार जागता है (अर्थात् गमन पथ पर पहले से ही विभिन्न ऋतुओं की श्री पथिक के स्वागत के लिये अपने को बिखेरे हुए रहती है); चरणघाये . पले—चरणों के आघात से प्रत्येक क्षण मरण की मृत्यु होती रहती है।

१०६ ज्वेले—जला कर, दिवस गेले—दिन बीतने पर, करब—करूँगा; आमार. समापन—मेरी व्यथा की पूजा समाप्त नहीं हुई है; यखन . माझे—जब दिनान्त की छाया में पक्षी अपने नीड़ में चले जाते हैं; बाजे—बजता है; तखन .. जीवन—तब यह जीवन अपनी अन्तिम लौ जलाएगा; व्यथार पूजा—व्यथा की पूजा; हबे—होगी; अनेक भ'रे—वेदना की डोर से बँधी हुई अनेक दिनों की अनेक बातें तथा व्याकुलता आज मन के भीतर भर उठी हैं; यखन ... हारा—जब पूजा की होमाग्नि में वे एक-एक कर जल

यखन पूजार होमानले उठबे ज्वले एके एके तारा,
आकाश-पाने छुटबे बाँधन-हारा,
अस्तरविर छबिर साथे मिलबे आयोजन—
आमार व्यथार पूजा हबे समापन ।।

१९१६

१०७

निशिदिन मोर पराने प्रियतम मम
कत-ना वेदना दिये बारता पाठाले ।
भरिले चित्त मम नित्य तुमि प्रेमे प्राणे गाने हाय
थाकि आडाले ।।

१९१६

१०८

कान्नाहासिर दोल-दोलानो पौष-फागुनेर पाला,
तारि मध्ये चिरजीवन वइब गानेर डाला—
एइ कि तोमार खुशि, आमाय ताइ पराले माला
सुरेर-गन्ध-ढाला ?

उठेंगी, बंधन-मुक्त हो आकाश की ओर दौड़ पड़ेंगी, अस्तरविर आयोजन—डूबे हुए सूर्य के सौन्दर्य के साथ (यह) आयोजन मिल जायगा।

१०७. मोर पराने—मेरे प्राणो मे, कत . पाठाले—(न जाने) कितनी ममता के साथ सन्देसा भेजा; भरिले—भर दिया, थाकि आड़ाले—अन्तराल (ओट) मे रह कर।

१०८ कान्ना दोलानो—क्रन्दन और हँसी के झूले पर झुलाए हुए, पाला—प्रसंग, गीत या नाटक का विषय; तारि डाला—उसीके बीच चिर-जीवन गान की डलिया वहन करूँ; एइ खुशि—यही क्या तुम्हारी इच्छा है; आमाय . ढाला—इसीलिये तुमने मुझे सुर-सौरभ से भीनी माला पहनाई;

ताइ कि आमार घुम छुटेछे, बाँध टुटेछे मने,
खेपा हाओयार ढेउ उठेछे चिरव्यथार वने,
काँपे आमार दिवानिशार सकल आँधार आला !
एइ कि तोमार खुशि, आमाय ताइ पराले माला
सुरेर-गन्ध-ढाला ?
रातेर वासा हय नि बाँधा, दिनेर काजे त्रुटि,
बिना काजेर सेवार माझे पाइ ने आमि छुटि।
शान्ति कोथाय मोर तरे हाय विश्वभुवन-माझे,
अशान्ति ये आघात करे ताइ तो वीणा वाजे।
नित्य रवे प्राण-पोड़ानो गानेर आगुन ज्वाला—
एइ कि तोमार खुशि, आमाय ताइ पराले माला
सुरेर-गन्ध-ढाला ?

१९१६

१०९

केन रे एइ दुयारटुकु पार हते संशय ?
जय अजानार जय ॥
एइ दिके तोर भरसा यत, ओइ दिके तोर भय !
जय अजानार जय ॥

ताइ....मने—इसीलिये क्या मेरी निद्रा लुप्त हो गई है, मन का बाँध टूट गया है; खेपा...वने—चिर व्यथा के वन में पागल हवा की लहरें उठी हैं; काँपे—काँपता है; आँधार—अन्धकार; आला—आलोक; रातेर...बाँधा—रात्रि में निवास स्थान का निर्माण नहीं हुआ है; दिनेर...त्रुटि—दिन के कार्य में त्रुटि रह गई है; बिना...छुटि—बिना काम की सेवा के बीच मैंने छुट्टी नहीं पाई; शान्ति...माझे—हाय इस विश्व-भुवन में मेरे लिये शान्ति कहाँ है, अशान्ति...बाजे—अशान्ति जो आघात करती है इसीलिये तो वीणा बजती है; नित्य...ज्वाला—प्राणों को जलाने वाली गानों की आग नित्य जलती रहेगी, रवे—रहेगी; पोड़ानो—जलाने वाली।

१०९. केन...संशय—क्यों रे इस द्वार भर को पार करने में संशय है? अजाना—अज्ञात; एइ...भय—तेरा सारा विश्वास इसी ओर है, इस

जानाशोनार वासा बेँधे काटल तो दिन हेसे केँदे,
एइ कोणेतेइ आनागोना नय किछुतेइ नय।
जय अजानार जय ॥
मरणके तुइ पर करेछिस भाइ,
जीवन ये तोर तुच्छ हल ताइ।
दु दिन दिये घेरा घरे ताइते यदि एतइ धरे
चिरदिनेर आवासखाना सेइ कि शून्यमय ?
ज़य अजानार जय ॥

१९१८

११०

गानेर सुरेर आसनखानि पाति पथेर धारे।
ओगो पथिक, तुमि एसे वसवे वारे वारे ॥
ऐ ये तोमार भोरेर पाखि नित्य करे डाकाडाकि,
अरुण-आलोर खेयाय यखन एस घाटेर पारे,
मोर प्रभातीर गानखानिते दाँड़ाओ आमार द्वारे ॥

मोर केवल तुझे भय है, जानाशोनार—जाने-पहचाने का, वासा बेँधे—आवास निर्माण कर; काटल . केँदे—हँस रो कर दिन तो कट गए; एइ नय—इसी कोने में ही (तुम्हारी) आवाजाही नही है, किसी भी तरह नही, मरण भाइ—भाई, तूने मरण को पराया वना रखा है, जीवन . ताइ—इसीलिये तो तेरा जीवन तुच्छ हो गया, दु घरे—दो दिनो के घेरे (वनाये) हुए (इस) घर में, ताइते धरे—उसीमें यदि इतना अँटता है, चिरदिनेर . शून्यमय—(तो) चिरदिन का जो आवास (निवासस्थान) है क्या वही शून्य ने भरा है ?

११०. गानेर धारे—गान के सुर का आसन रास्ते के किनारे विछाता हूँ, तुमि . वारे—तुम आ कर वार-वार वैठोगे; ऐ ये डाकाडाकि—तुम्हारे भोर के वे पक्षी जो नित्य टेर-पुकार करते हैं; अरुण पारे—सूर्य के आलोक की खेवेवाली नाव पर जव तुम घाट के पार आते हो; मोर . द्वारे—मेरे प्रभाती-गान मे मेरे दरवाज़े पर खडे होते हो; सकाले—भोर में;

आज सकाले मेघेर छाया लुटिये पड़े वने,
जल भरेछे ऐ गगनेर नील नयनेर कोणे।
आजके एले नतुन वेशे   तालेर वने माठेर शेषे,
अमनि चले येयो नाको गोपन सञ्चारे।
दाँड़ियो आमार मेघला गानेर वादल-अन्धकारे ॥

१९१८

१११

तुमि   एकला घरे वसे वसे की सुर वाजाले
प्रभु, आमार जीवने !
तोमार   परशरतन गेँथे गेँथे आमाय साजाले
प्रभु, गभीर गोपने ॥
दिनेर आलोर आड़ाल टानि   कोथाय छिले नाहि जानि,
अस्तरविर तोरण हते चरण वाड़ाले
आमार रातेर स्वपने ॥
आमार   हियाय हियाय वाजे आकुल आँधार यामिनी,
से ये   तोमार वाँशरि।

लुटिये पड़े—लोट पड़ती है, भरेछे—भरा है; ऐ—वह; कोणे—कोने में; आजके.... वेशे—आज नवीन वेश में आए; तालेर वने—ताड़ के वन में; माठेर शेषे—फैले हुए मैदान के अन्त में (सीमा पर); अमनि—वैसे ही; चले. .नाको—चले नहीं जाना; दाँड़ियो—खड़े रहना; मेघला. . अन्धकारे—मेघाच्छन्न गान के बरसाती अन्धकार में।

१११. तुमि.. जीवने—प्रभु, सूने घर में बैठे-बैठे मेरे जीवन में तुमने कौन-सा सुर बजाया; तोमार ...साजाले—अपने पारसमणि को गूँथ-गूँथ मुझे सजाया; दिनेर... जानि—दिन के आलोक का पर्दा खींच कर (तुम) कहाँ थे, नहीं जानती; अस्तरविर. ..स्वपने—अस्त रवि के तोरण से रात के मेरे स्वप्नों में (तुमने) चरण बढ़ाए; हियाय—हृदय में; बाजे—बजती है; से .. बाँशरि—वह तो तुम्हारी बाँसुरी है; आमि.....रागिणी—

आमि शुनि तोमार आकाशपारेर तारार रागिणी,
आमार सकल पाशरि।
काने आसे आशार वाणी— खोला पाव दुयारखानि
रातेर शेषे शिशिर-धोओया प्रथम सकाले
तोमार करुण किरणे॥

१९१८

११२

तोमार भुवनजोड़ा आसनखानि
हृदय-माझे बिछाओ आनि॥
रातेर तारा, दिनेर रवि, आँधार-आलोर सकल छवि,
तोमार आकाश-भरा सकल वाणी हृदय-माझे बिछाओ आनि॥
तोमार भुवनवीणार सकल सुरे
हृदय परान दाओ-ना पुरे।
दु.खसुखेर सकल हरष, फुलेर परश, झड़ेर परश
तोमार करुण शुभ उदार पाणि हृदय-माझे दिक्-ना आनि॥

१९१८

आकाश पार के ताराओ की तुम्हारी रागिणी को सुनती हूँ, आमार पाशरि—अपने सब कुछ को भूल कर, काने वाणी—कानो में आशा की वाणी आती है; खोला दुयारखानि—द्वार खुला पाऊँगी, शिशिर-धोओया—ओसकणो से धुले हुए।

११२. तोमार . आनि—(समस्त) भुवन को परिव्याप्त किए हुए अपने आसन को ला कर (मेरे) हृदय में बिछाओ; आकाश-भरा—आकाश को पूर्ण करती हुई, सकल सुरे—सभी सुरो से; हृदय पुरे—हृदय, प्राण को भर दो ना; हरष—हर्ष; फुलेर परश—फूलो का स्पर्श; झड़ेर परश—आँधी का स्पर्श; तोमार. . आनि—तुम्हारे करुण, मंगलमय और उदार हाथ (मेरे) हृदय के भीतर ला दें ना।

११३

भेडे मोर घरेर चावि निये यावि के आमारे,
बन्धु आमार !
ना पेये तोमार देखा, एका एका दिन ये आमार काटे ना रे ॥
बुझि गो रात पोहालो,
बुझि ओइ रविर आलो
आभासे देखा दिल गगन-पारे,
समुखे ओइ हेरि पथ, तोमार कि रथ पौँछबे ना मोर दुयारे ॥
आकाशेर यत तारा
चेये रय निमेषहारा,
बसे रय रात-प्रभातेर पथेर धारे ।
तोमारि देखा पेले सकल फेले डुबबे आलोक-पारावारे ।
प्रभातेर पथिक सबे
एल कि कलरवे—
गेल कि गान गेये ओइ सारे सारे !
बुझि-वा फुल फुटेछे, सुर उठेछे अरुणवीणार तारे तारे ॥
१९१८

---

११३. भेडे . . . आमारे—मेरे घर की चाबी (ताली) को तोड़ कर मुझे कौन ले जायगा; ना .. ना रे—तुम्हारे दर्शन बिना अकेले-अकेले मेरे दिन जो नहीं कटते; बुझि . . .पोहालो—लगता है रात बीत गई, बुझि ओइ—लगता है वह, रविर आलो—सूर्य का आलोक; देखा . .पारे—आकाश के (उस) पार दिखाई पड़ रहा है; समुखे—सामने; ओइ—वह; हेरि—निहारती हूँ; तोमार. .दुयारे—क्या तुम्हारा रथ मेरे दरवाजे तक नहीं पहुँचेगा; यत—समस्त, चेये .हारा—निष्पलक देखते रहते हैं; बसे . . .धारे—रात्रि और प्रभात के रास्ते के किनारे बैठे रहते हैं; तोमारि.... पारावारे—तुम्हारे दर्शन पाते ही सब कुछ फेंक ज्योति-समुद्र में डूब जाएंगे; एल—आए; गेल .. .सारे —झुंड के झुंड वह कैसा गान गाते हुए चले गए; फुल फुटेछे—फूल खिले हैं; सुर उठेछे—स्वर उठ रहे हैं; तारे तारे—तार-तार से ।

११४

आमि ज्वालव ना मोर वातायने प्रदीप आनि,
आमि शुनब वसे आँधार-भरा गभीर वाणी ।।
आमार ए देह मन मिलाये याक निशीथराते,
आमार लुकिये-फोटा एइ हृदयेर पुष्पपाते
थाक्‌ना ढाका मोर वेदनार गन्धखानि ।।
आमार सकल हृदय उधाओ हवे तारार माझे
येखाने ओइ आँधारवीणाय आलो वाजे ।
आमार सकल दिनेर पथ-खोँजा एइ हल सारा,
एखन दिक्‌-विदिकेर शेषे एसे दिशाहारा
किसेर आशाय वसे आछि अभय मानि ।।

१९१९

११५

एखनो गेल ना आँधार, एखनो रहिल वाधा ।
एखनो मरणव्रत जीवने हल ना साधा ।।
कबे ये दु खज्वाला हवे रे विजयमाला,
झलिवे अरुणरागे निशीथरातेर काँदा ।।

---

११४. आमि .आनि—प्रदीप ला कर मैं अपने वातायन पर नहीं जलाऊँगी, शुनब बसे—बैठ कर सुनूंगी, आँधार-भरा—अधकार को पूर्ण करती हुई; आमार .राते—मेरी यह देह और मन अर्धरात्रि मे लीन हो जांय, आमार ... खानि—मेरे छिप कर प्रस्फुटित होने वाले इस हृदय के पुष्प की पँखुडियों में मेरी वेदना की सुरभि ढकी रहे ना, उधाओ माझे—ताराओ के वीच ऊपर को ओर धावित होगा (ताराओ के वीच खो जाएगा), येखाने वाजे—जहाँ उस अधकार-वीणा मे आलोक वजता है; आमार सारा—मेरे समस्त दिन का पथ खोजना यह समाप्त हुआ; एखन मानि—अव दिक्‌-विदिक् के अन्त में आ कर मैं –दिग्भ्रान्त– किस आशा से निर्भय बैठी हूँ ।

११५. एखनो. वाधा—अभी भी अधकार नहीं गया (दूर नहीं हुआ), अभी भी वाधा रह गई है; एखनो .साधा—अभी भी जीवन मे मरणव्रत को साधना नहीं हुई; कबे—कब, हबे—होगी, झलिवे ..काँदा—गभीर रात्रि

एखनो निजेरइ छाया रचिछे कत ये माया ।
एखनो मन ये मिछे चाहिछे केवलइ पिछे,
चकिते बिजलि-आलो चोखेते लागालो धाँदा ।।

१९१९

११६

एवार रङिये गेल हृदयगगन साँझेर रङे ।
आमार सकल वाणी हल मगन साँझेर रङे ।।
मने लागे दिनेर परे पथिक एवार आसवे घरे,
  आमार पूर्ण हवे पुण्य लगन साँझेर रङे ।।
अस्ताचलेर सागरकूलेर एइ वातासे
क्षणे क्षणे चक्षे आमार तन्द्रा आसे ।
सन्ध्यायूथीर गन्धभारे पान्थ यखन आसवे द्वारे
  आमार आपनि हवे निद्राभगन साँझेर रङे ।।

१९१९

११७

जीवनमरणेर सीमाना छाड़ाये
वन्धु हे आमार, रयेछ दाँड़ाये ।।

का क्रन्दन सूर्य की अरुणिमा में झलमल करेगा; एखनो . . . माया—अभी भी अपनी ही छाया (न-जाने) कितनी माया की सृष्टि कर रही है; एखनो. . . पिछे—अब भी मन व्यर्थ ही केवल पीछे की ओर ताक रहा है; चकिते . . धांदा—क्षण मात्र में बिजली के प्रकाश ने आंखों में चकाचौंध लगा दी ।

११६. एवार . . रङे—इस बार संध्या के रंग में हृदय-गगन रंग गया; हल—हुई, मगन—मग्न, निमज्जित, मने . घरे—मन को लगता है कि दिन के बाद अब पथिक घर आएगा; हवे—होगा; पुण्य लगन—पवित्र लग्न; एइ वातासे—इस हवा में; क्षणे.. आसे—पल-पल मेरी आंखों में तन्द्रा आती है; पान्थ . . द्वारे—पथिक जब दरवाज़े पर आएगा; आमार. . . .रङे—(तब) सन्ध्या के रंग में अपने आप ही मेरी निद्रा भंग होगी ।

११७ जीवन . . . . .दाँड़ाये—जीवन-मरण की सीमा से परे, हे मेरे बन्धु,

ए मोर हृदयेर विजन आकाशे
तोमार महासन आलोतें ढाका से,
गभीर की आशाय निविड़ पुलके
ताहार पाने चाइ दु वाहु वाड़ाये ।।
नीरव निशि तव चरण निछाये
आँधार-केशभार दियेछे विछाये ।
आजि ए कोन् गान निखिल प्लाविया
तोमार वीणा हतें आसिल नाविया ।
भुवन मिले याय सुरेर रणने,
गानेर वेदनाय याइ ये हाराये ।।

१९१९

११८

तोमाय किछु देव व'ले चाय ये आमार मन,
नाइवा तोमार थाकल प्रयोजन ।।
यखन तोमार पेलेम देखा, अन्धकारे एका एका
फिरतेछिले विजन गभीर वन ।

तुम खड़े हो, ए.... हृदयेर—इस मेरे हृदय के; तोमार ... से—तुम्हारा महा-आसन प्रकाश से ढँका हुआ है, गभीर... बाड़ाये—किस गभीर आशा से निविड पुलक से (भर) दोनो वाँहें वढा कर (फैलाए हुए) उसकी ओर देखता हूँ; निछाये—ढँक कर; आँधार . विछाये—अधकार रूपी केशराशि को विछा दिया है; आजि . ...नाविया—आज यह कौनसा गान समस्त विश्व को प्लावित कर तुम्हारी वीणा से उतर आया (नि सृत हो रहा) है; भुवन . ..हाराये—सुर (स्वर) की झकार में भुवन विलीन हो जाता है (और मैं) गान की वेदना में खो जाता हूँ।

११८ तोमाय. मन—मेरा मन चाहता है कि तुम्हे कुछ दूँ, नाइ. .प्रयोजन—भले ही, तुम्हें कोई प्रयोजन न हो, यखन. ..देखा—जव तुम्हारे दर्शन पाए, अन्धकारे. वन—(तुम) अंधकार में अकेले-अकेले निर्जन गभीर वन में घूम रहे थे; इच्छा पथ—इच्छा थी,

इच्छा छिल एकटि वाति ज्वालाइ तोमार पथे,
नाइ-वा तोमार थाकल प्रयोजन ।।
देखेछिलेम हाटेर लोके तोमारे देय गालि,
गाये तोमार छड़ाय धुलावालि ।
अपमानेर पथेर माझे तोमार वीणा नित्य वाजे
आपन-सुरे-आपनि-निमगन ।
इच्छा छिल वरणमाला पराइ तोमार गले,
नाइवा तोमार थाकल प्रयोजन ।।
दले दले आसे लोके, रचे तोमार स्तव—
नाना भाषाय नानान कलरव ।
भिक्षा लागि तोमार द्वारे आघात करे वारे वारे
कत-ये शाप, कत-ये क्रन्दन ।
इच्छा छिल विना पणे आपनाके दिइ पाये
नाइ-वा तोमार थाकल प्रयोजन ।।

१९१९

तुम्हारे पथ में एक दीप जलाऊँ; देखेछिलेम .धुला-वालि—देखा था हाट (वाजार) के लोग तुम्हें गाली दे रहे हैं (और) तुम्हारे शरीर पर धूल-वालू फेंक रहे हैं; अपमानेर. .निमगन—अपमान के पथ के बीच तुम्हारी वीणा अपने सुर में आपन ही निमग्न नित्य वज रही है; वरणमाला. ... गले—तुम्हारे गले मे वरण माला पहनाऊँ; दले ...कलरव—दल के दल लोग आते हैं (और) नाना भाषाओं मे नाना प्रकार की कलध्वनि मे तुम्हारे स्तव की रचना (तुम्हारा गुणानुवाद) करते हैं, लागि—के लिये; भिक्षा ...क्रन्दन—भिक्षा के लिये तुम्हारे दरवाजे पर कितने अभिशाप और कितने क्रन्दन वार वार प्रहार करते हैं; इच्छा . पाये—इच्छा थी, विना (किसी) शर्त के (विना मूल्य) अपने को (तुम्हारे) चरणों में दे दूँ ।

११९

बाहिरे भुल हानबे यखन अन्तरे भुल भाङबे कि ?
विषादविषे ज्वले शेषे तोमार प्रसाद माङबे कि ?
रौद्रदाह हले सारा नामबे कि ओर वर्षाधारा ?
लाजेर राङा मिटले हृदय प्रेमेर रङे राङबे कि ?
यतइ यावे दूरेर पाने
बाँधन ततइ कठिन हये टानबे ना कि व्यथार टाने !
अभिमानेर कालो मेघे वादल-हाओया लागबे वेगे,
नयनजलेर आवेग तखन कोनोइ बाधा मानबे कि ?

१९१९

१२०

दुःख ये तोर नय रे चिरन्तन—
पार आछे रे एइ सागरेर विपुल क्रन्दन ।।
एइ जीवनेर व्यथा यत एइखाने सब हबे गत,
चिरप्राणेर आलय-माझे अनन्त सान्त्वन ।।
मरण ये तोर नय रे चिरन्तन—

---

११९ बाहिरे ..भाङबे कि—बाहर जब भूल प्रहार करेगी (तब) अन्तर की भूल दूर होगी क्या? विषाद.. .कि—विषाद के विष मे जल कर अन्त में तुम्हारा अनुग्रह माँगेगा क्या? रौद्रदाह . धारा—सूर्य के ताप से झुलसना समाप्त होने पर क्या उसकी वर्षा-धारा उतरेगी (वर्षा होगी)? लाजेर ...कि—लज्जा की अरुणिमा मिटने पर हृदय प्रेम के रंग मे रगेगा (रग जाएगा) क्या? यतइ .. टाने—जितना ही दूर की ओर जाएगा बन्धन उतना ही कठिन हो कर व्यथा के खिचाव (पीड़ादायक खिचाव) से खिचेगा नही क्या? अभिमानेर .मानबे कि—अभिमान (प्रियजन के त्रुटिपूर्ण व्यवहार से होनेवाली मनोव्यथा) के काले मेघ मे वर्षावाली हवा वेग से लगेगी, उस समय आँखों के आँसुओ का आवेग क्या कोई भी बाधा मानेगा?

१२० दुःख .. चिरन्तन—तेरा दुःख चिरन्तन जो नही है; एइ गत—इस जीवन की जितनी भी व्यथाएँ है वे सभी यही समाप्त हो जाएँगी; सान्त्वन—सान्त्वना; दुयार . बन्धन—(तू) उसका द्वार पार कर जाएगा, बधन

दुयार ताहार पेरिये यावि, छिँड़वे रे वन्धन।
ए वेला तोर यदि झड़े पूजार कुसुम झ'रे पड़े,
यावार वेलाय भरवे थालाय माला ओ चन्दन॥

१९१९

१२१

आमार अभिमानेर वदले आज नेव तोमार माला।
आज निशिशेषे शेष करे दिइ चोखेर जलेर पाला॥
आमार कठिन हृदयटारे फेले दिलेम पथेर धारे,
तोमार चरण देवे तारे मधुर परश पाषाण-गाला॥
छिल आमार आँधारखानि, तारे तुमिइ निले टानि,
तोमार प्रेम एल ये आगुन हये— करल तारे आला।
सेइ ये आमार काछे आमि छिल सवार चेये दामि,
तारे उजाड़ करे साजिये दिलेम तोमार वरणडाला॥

१९१९

टूट जाएँगे; ए .... चन्दन—इस समय अगर आँधी में तेरी पूजा के कुसुम झड़ पड़ें तो जाने के समय (तुम्हारी पूजा की) थाली माला और चंदन से भर जाएगी।

१२१. आमार......माला—अपने मान के वदले आज (मैं) तुम्हारी माला लूँगी; आज.... .पाला—आज रात्रि के अन्त में आँखों के आँसुओं का अध्याय समाप्त कर दूँ; पाला—गान या नाटक का विषय; हृदयटारे—हृदय को; फेले .....धारे—रास्ते के किनारे फेंक दिया; तोमार .....गाला—तुम्हारे चरण उसे पाषाण पिघलाने वाला मधुर स्पर्श देंगे (अर्थात् पाषाण को भी पिघला देने वाला तुम्हारे चरणों का जो मधुर स्पर्श है वह हृदय की कठिनता को दूर कर देगा); छिल... टानि—मेरा (जो) अन्धकार था उसे तुमने ही खींच लिया (दूर कर दिया); तोमार.. ..आला—तुम्हारा प्रेम आग बन कर जो आया, उसे आलोकित कर गया; सेइ-ये—वह जो; आमार.. .. दामि—मेरे निकट 'मैं' (मेरा अहं भाव) सबसे अधिक मूल्यवान था; तारे.....करे—उसे निःशेष कर; साजिये दिलेम—सजा दी; तोमार—तुम्हारी; वरण डाला—वह डाली जिसमें कन्यादान के समय वर की अभ्यर्थना के लिये विविध सामग्रियाँ रखी जाती हैं।

१२२

आजि विजन घरे निशीथराते आसवे यदि शून्य हाते
आमि ताइते कि भय मानि!
जानि जानि, वन्धु, जानि—
तोमार आछे तो हातखानि।।
चाओया-पाओयार पथे पथे दिन केटेछे कोनोमते,
एखन समय हल तोमार काछे आपनाके दिइ आनि।।
आँधार थाकुक दिके दिके आकाश-अन्ध-करा,
तोमार परश थाकुक आमार-हृदय-भरा।
जीवनदोलाय दुले दुले आपनारे छिलेम भुले,
एखन जीवन मरण दु दिक दिये नेवे आमाय टानि।।

१९२२

१२३

आमार वेला ये याय साँझ-वेलाते
तोमार सुरे सुरे सुर मेलाते।।
एकताराटिर एकटि तारे गानेर वेदन वइते नारे,

---

१२२. आजि. ...मानि—आज निर्जन घर में अर्धरात्रि को अगर (तुम) खाली हाथ आओगे तो क्या मैं उसके लिये भय करूँ; जानि—जानती हूँ; तोमार ... हातखानि—तुम्हारे हाथ तो हैं; चाओया .. कोनोमते—चाहने और पाने के रास्ते-रास्ते किसी प्रकार दिन कटे हैं, एखन . आनि—अब समय हुआ कि अपने को तुम्हारे निकट ला दूँ; आँधार . .भरा—दिशाओ-दिशाओ में आकाश को अन्ध करनेवाला अन्धकार वना रहे, (लेकिन) तुम्हारा स्पर्श मेरे हृदय को पूर्ण किए रहे; जीवन भुले—जीवन के झूले पर झूलता हुआ मैं अपने को भूला हुआ था; एखन. टानि—अब जीवन-मरण दोनो ओर ने तुम मुझे खींच लोगे।

१२३. आमार .मेलाते—साँझ की वेला मे तुम्हारे सुर में सुर मिलाते मेरी वेला बीत जाती है; एकतारा . नारे—एकतारे का एक तार गान को

तोमार साथे वारे वारे   हार मेनेछि एइ खेलाते,
तोमार   सुरे सुरे सुर मेलाते ।।
आमार   ए तार वाँधा काछेर सुरे,
ए वाँशि ये वाजे दूरे ।
गानेर लीलार सेइ किनारे   योग दिते कि सवाइ पारे,
विश्वहृदयपारावारे   रागरागिनीर जाल फेलाते,
तोमार   सुरे सुरे सुर मेलाते ?

१९२२

१२४

आमि   कान पेते रइ आमार आपन हृदय गहन-द्वारे
कोन्   गोपनवासीर कान्नाहासिर गोपन कथा शुनिवारे ।।
भ्रमर सेथा हय विवागि   निभृत नील पद्म लागि रे,
कोन्   रातेर पाखि गाय एकाकी सङ्गीविहीन अन्धकारे ।।
के से मोर   केइ वा जाने,   किछु तार देखि आभा ।
किछु पाइ अनुमाने,   किछु तार   वुझि ना वा ।

अनुभूति को वहन नहीं कर पा रहा; तोमार....खेलाते—इस खेल में तुम्हारे साथ (मैंने) बार-बार हार मानी है; आमार....दूरे—मेरा यह तार निकट के सुर में बंधा हुआ है (और) वह बाँसुरी दूर बजती है; गानेर......पारे—गान की लीला के उस किनारे क्या सभी योग दे सकते हैं; राग......फेलाते—रागरागिनी का जाल फेंकने में।

१२४. आमि   द्वारे—मैं अपने हृदय की गहराई के दरवाजे पर कान लगाए रहता हूँ; कोन्.....शुनिवारे—किस गोपन में रहने वाले के क्रन्दन और हास्य की गोपन बात सुनने के लिये; भ्रमर.....लागिरे—भ्रमर अन्तरालवर्ती नील पद्म के लिये वहाँ प्रवासी बन हो जाता है; रातेर पाखि—रात का पक्षी; गाय—गाता है; के.....जाने—वह मेरा कौन है (यह) कौन जानता है; किछु.....वा—कुछ उसकी आभा देखता हूँ, कुछ अनुमान से (ग्रहण कर) पाता हूँ अथवा कुछ उसका समझ ही नहीं पाता; माझे...बारता—बीच-

माझे माझे तार वारता आमार भाषाय पाय की कथा रे,
ओ से आमाय जानि पाठाय वाणी गानेर ताने लुकिये तारे ।।
१९२२

१२५

आमि तारेइ खुंजे वेड़ाइ ये रय मने आमार मने ।
से आछे व'ले
आमार आकाश जुड़े फोटे तारा राते,
प्राते फुल फुटे रय वने आमार वने ।।
से आछे व'ले चोखेर तारार आलोय
एत रूपेर खेला रङ्गेर मेला असीम सादाय कालोय ।
से मोर सङ्गे थाके व'ले
आमार अङ्गे अङ्गे हरख जागाय दखिन-समीरणे ।।
तारि वाणी हठात् उठे पूरे
आन्मना कोन् तानेर माझे आमार गानेर सुरे ।
दुखेर दोले हठात् मोरे दोलाय,
काजेर माझे लुकिये थेके आमारे काज भोलाय ।

बीच में उसका संदेसा, आमार .कथा रे—मेरी भाषा में कैसी वाणी पाता है, ओ से. वाणी—जानता हूँ वह मुझे सन्देश भेजता है, गानेर.. तारे—गान की तान में उसे छिपा कर ।

१२५ आमि.. .मने—मैं उसे ही खोजता फिरता हूँ जो मन में, मेरे मन में रहता है, से...राते—वह है इसलिये मेरे आकाश को व्याप्त कर रात में तारे प्रस्फुटित होते हैं; प्राते वने—भोर में फूल खिलते हैं, वन में—मेरे वन में; से .कालोय—वह है इसलिये आँखो की पुतलियों के प्रकाश में इतने रूपो का खेल, असीम उजले और काले रंगो का मेला (लगा रहता) है; से . समीरणे—वह मेरे साथ रहता है इसलिये दक्षिण पवन मेरे अंग-प्रत्यग में हर्ष जगाता है, तारि पूरे—उसीकी वाणी हठात् भर उठती है, आन्मना—अन्य-मनस्क; कोन् माझे—किस तान के बीच; दुखेर दोलाय—दुःख के झूले में हठात् मुझे झुलाता है, काजेर . भोलाय—काम-काज के बीच छिप कर मेरे काम-काज को भुला देता है;

से मोर चिरदिनेर व'ले
तारि पुलके मोर पलकगुलि भरे क्षणे क्षणे ।।

१९२२

१२६

आमि तोमाय यत शुनियेछिलेम गान
तार वदले आमि चाइ ने कोनो दान ।।
भुलवे से गान यदि ना हय येयो भुले
उठवे यखन तारा सन्ध्यासागरकूले,
तोमार सभाय यवे करव अवसान
एइ क'दिनेर शुधु एइ क'टि मोर तान ।।
तोमार गान ये कत शुनियेछिले मोरे
सेइ कथाटि तुमि भुलवे केमन करे ?
सेइ कथाटि कवि, पड़वे तोमार मने
वर्षामुखर राते, फागुनसमीरणे—
एइटुकु मोर शुधु रइल अभिमान,
भुलते से कि पार भुलियेछ मोर प्राण ।।

१९२२

से .... क्षणे—वह मेरा चिरदिन का है इसलिये उसीके पुलक में मेरे पल (क्षण) क्षण-क्षण भरते रहते हैं ।

१२६. आमि .. दान—मैंने तुम्हें जितने गान सुनाए थे उसके बदले में कोई दान नहीं चाहता; भुलवे. . यदि—अगर (तुम) उस गान को भूल जाओ; ना ....भुले—तो भले ही भूल जाना; उठवे—उदय होगा; यखन—जब; तोमार सभाय—तुम्हारी सभा में; यवे—जब; एइ .. शुधु—यही केवल कुछ-एक दिनों की; एइ.. . तान—यही मेरी कुछ-एक तानें; तोमार .....मोरे—अपने कितने गान (सुनने) मुझे सुनाए थे; सेइ... .करे—वह बात तुम क्योंकर भूलोगे? पड़वे . .मने—तुम्हें याद आएगी; एइटुकु अभिमान—बस केवल इतना ही मेरा अभिमान रहा; भुलते .पार—उसे क्या भूल सकते हो, भुलियेछ—भुलाया है ।

१२७

आसा-याओयार माझखाने
एकला आछ चेये काहार पथ-पाने।
आकाशे ओइ कालोय सोनाय श्रावणमेघेर कोणाय कोणाय
आँधार-आलोय कोन् खेला ये के जाने
आसा-याओयार माझखाने॥
शुकनो पाता धुलाय झरे, नवीन पाताय शाखा भरे।
माझे तुमि आपनहारा, पायेर काछे जलेर धारा
याय चले ओइ अश्रु-भरा कोन् गाने
आसा-याओयार माझखाने॥

१९२२

१२८

तोमार सुरेर धारा झरे येथाय तारि पारे
देबे कि गो बासा आमाय एकटि धारे?
आमि शुनब ध्वनि काने,
आमि भरब ध्वनि प्राणे,
सेइ ध्वनिते चित्तवीणाय तार बाँधिब बारे बारे॥

---

१२७. आसा .. .पाने—आने-जाने (के क्रम) के बीच अकेले किसका पंथ निहार रहे हो; आकाशे.. .जाने—आकाश में वह काले और सुनहले (रंग) में, सावन के मेघो के कोने-कोने में, अधकार और आलोक मे कौन-सा खेल चल रहा है यह कौन जानता है, शुकनो . भरे—सूखे पत्ते धूल में झडते हैं, नये पत्तो से शाखाएँ भर उठती हैं; माझे... हारा—बीच मे तुम अपने को खोए हो, पायेर. ... धारा—पैरो के पास जलकी धारा; याय चले—चली जाती है, ओइ—वह, अश्रुभरा—आँसुओ से भरे; कोन्—किस।

१२८. तोमार . धारे—तुम्हारे सुर की धारा जहाँ झडती (बहती) है उसीके पार एक किनारे क्या मुझे वास करने दोगे? बासा—निवास स्थान; शुनब—सुनूंगा; सेइ . बारे—उसी ध्वनि से चित्तकी वीणा के तार बार-बार (स्वर में) बाँधूंगा; आमार.. .पूरे—मेरी नीरव

आमार नीरव वेला सेइ तोमारि सुरे सुरे
फुलेर भितर मधुर मतो उठबे पूरे।
आमार दिन फुराबे यबे,
यखन रात्रि आँधार हबे,
हृदये मोर गानेर तारा उठबे फुटे सारे सारे॥

१९२२

१२९

बारे बारे पेयेछि ये तारे
चेनाय चेनाय अचेनारे॥
यारे देखा गेल तारि माझे ना-देखारइ कोन् बाँशि बाजे,
ये आछे बुकेर काछे काछे चलेछि ताहारि अभिसारे॥
अपरूप से ये रूपे रूपे की खेला खेलिछे चुपे चुपे।
काने काने कथा उठे पूरे कोन् सुदूरेर सुरे सुरे,
चोखे-चोखे-चाओया निये चले कोन् अजानारइ पथपारे॥

१९२२

वेला तुम्हारे उन्हीं सुरों से फूल के भीतर मधु के समान भर उठेगी; आमार.....यबे—मेरा समय जब चुक जायगा; यखन....हबे—जब रात्रि अन्धकार पूर्ण होगी; हृदये.....सारे—मेरे हृदय में गानों के तारे राशि-राशि खिल उठेंगे।

१२९. बारे....तारे—उसे बार-बार पाया है; चेनाय... अचेनारे—जो पहचाना-पहचाना है, उसीमें उस अपरिचित को; यारे.....बाजे—जिसके दर्शन हुए उसीके बीच अनदेखे की ही कोई बाँसुरी बजती है; ये.. .अभिसारे—जो हृदय के पास-पास है उसीके अभिसार के लिये चला हूँ; की... खेलिछे—कैसा खेल खेल रहा है; काने...सुरे—किस सुदूर के सुरों से कानों-कान बातें भर उठती हैं; चोखे.. पारे—आँखों-आँखों का देखना किस अज्ञान के पथ-पार लिये जाता है।

१३०

जय होक, जय होक नव अरुणोदय।
पूर्वदिगञ्चल होक ज्योतिर्मय।
एसो अपराजित वाणी, असत्य हानि—
अपहृत शंका, अपगत संशय।
एसो नव जाग्रत प्राण, चिरयौवनजयगान।
एसो मृत्युञ्जय आशा जड़त्वनाशा—
क्रन्दन दूर होक, वन्धन होक क्षय॥

१९२२

१३१

एखन आमार समय हल,
यावार दुयार खोलो खोलो॥
हल देखा, हल मेला, आलोछायाय हल खेला—
स्वपन ये से भोलो भोलो॥
आकाश भरे दूरेर गाने,
अलख देशे हृदय टाने।
ओगो सुदूर, ओगो मधुर, पथ वले दाओ परानवँधुर—
सव आवरण तोलो तोलो॥

१९२३

---

१३०. होक—हो, एसो—आओ; हानि—विनष्ट कर; अपहृत—विनष्ट; अपगत—विगत, जड़त्वनाशा—जड़ता का नाश करने वाली।

१३१. एखन खोलो—अव मेरा समय हुआ, जाने का द्वार खोलो; हल... खेला—दर्शन हुए, मिलन हुआ, प्रकाश और छाया में खेलना हुआ; स्वपन भोलो—वह स्वप्न है (उसे) भूलो, भूलो, आकाश . गाने—आकाश सुदूर के गान से भरता है, अलख . .टाने—अलख देश की ओर हृदय को खीचता है; पथ. वँधुर—प्राणवन्धु का रास्ता वतला दो; सब . तोलो—सव आवरण उठा दो, उठा दो।

१३२

अरूप, तोमार वाणी
अङ्गे आमार चित्ते आमार मुक्ति दिक् से आनि ।।
नित्यकालेर उत्सव तव विश्वेर दीपालिका—
आमि शुधु तारि माटिर प्रदीप, ज्वालाओ ताहार शिखा
निर्वाणहीन आलोकदीप्त तोमार इच्छाखानि ।।
येमन तोमार वसन्तवाय गीतलेखा याय लिखे
वर्णे वर्णे पुष्पे पर्णे वने वने दिके दिके
तेमनि आमार प्राणेर केन्द्रे निश्वास दाओ पूरे,
शून्य ताहार पूर्ण करिया धन्य करुक सुरे,
विघ्न ताहार पुण्य करुक तव दक्षिणपाणि ।।

१९२४

१३३

आजि मर्मरध्वनि केन जागिल रे !
मम पल्लवे पल्लवे हिल्लोले हिल्लोले
थरथर कम्पन लागिल रे ।।
कोन् भिखारि हाय रे एल आमारि ए अङ्गनद्वारे,
बुझि सब मन धन मम मागिल रे ।।

---

१३२. मुक्ति ... आनि—वह मुक्ति ला दे; आमि.. प्रदीप—मैं केवल उस (दीपावली) का मिट्टी का प्रदीप हूँ; ज्वालाओ . ...शिखा—उसकी शिखा को जलाओ; तोमार इच्छाखानि—तुम्हारी इच्छा; येमन ...पूरे—जिस प्रकार तुम्हारा वसन्त-पवन वर्णों-वर्णों में, पुष्पों में, पत्तियों में, वनों में तथा दिशाओंमें गीत-लिपि अंकित कर जाता है उसी प्रकार मेरे प्राणों के केन्द्र में साँस भर दो; शून्य .....सुरे—उनके (प्राणों के) शून्य को पूर्ण कर सुर से (उसे) धन्य करे; विघ्न .....पाणि—तुम्हारा दाहिना हाथ उनके विघ्न को पवित्र करे।

१३३. आजि—आज; केन—क्यों; जागिल—जगी; लागिल—लगा; कोन्—कौन ; भिखारि—भिखारी ; एल ...द्वारे—मेरे ही इस आँगन के द्वार पर आया; बुझि—लगता है; मागिल—माँगा ; तारे जाने—उसे

हृदय बुझि तारे जाने,
कुसुम फोटाय तारि गाने।
आजि मम अन्तरमाझे सेइ पथिकेरइ पदध्वनि वाजे,
ताइ चकिते चकिते घुम भाङिल रे।।

१९२५-२६

१३४

आमार प्राणे गभीर गोपन महा-आपन से कि,
अन्धकारे हठात् तारे देखि।।
यबे दुर्दम झड़े आगल खुले पड़े,
कार से नयन-'परे नयन याय गो ठेकि।।
यखन आसे परम लगन तखन गगन-माझे
ताहारि भेरी वाजे।।
विद्युत-उद्भासे वेदनारइ दूत आसे,
आमन्त्रणेर वाणी याय हृदये लेखि।।

१९२५-२६

जानता है; कुसुम गाने—उमीके गान से फूल खिलाता है; आजि.. वाजे—आज मेरे अन्तर में उसी पथिक की ही पदध्वनि वजती है; ताइ रे—इसीलिये चौंककर नीद खुल गई।

१३४. आमार.. कि—मेरे प्राणो में गभीर गोपन (मेरा) अत्यन्त अपना वह कौन है; अन्धकारे देखि—अन्धकार में हठात् उसे देखता हूँ; यबे पड़े—जब दुर्दमनीय आँधी में अर्गला खुल पडती है; कार .ठेकि—किनकी आँखो पर आँखें जा कर अटक जाती है, यखन .वाजे—जब परम लग्न (का मुहूर्त) आता है तब गगन के मध्य उसीकी भेरी वजती है; विद्युत. ..आसे—बिजली की कौंध में वेदना का ही दूत आता है; आमन्त्रणेर. .लेखि—आमन्त्रण का सँदेसा हृदय में अकित कर जाता है।

१३५

तोर भितरे जागिया के ये,
तारे बाँधने राखिलि बाँधि।
हाय आलोर पियासि से ये
ताइ गुमरि उठिछे काँदि॥
यदि वातासे वहिल प्राण
केन वीणाय वाजे ना गान,
यदि गगने जागिल आलो
केन नयने लागिल आँधि?
पाखि नव प्रभातेर वाणी
दिल कानने कानने आनि,
फुले नवजीवनेर आशा
कत रङे रङे पाय भाषा।
होथा फुराये गियेछे राति
हेथा ज्वले निशीथेर वाति,
तोर भवने भुवने केन
हेन हये गेल आधा-आधि?

१९२५-२६

१३५. तोर.....ये—तेरे भीतर जगा हुआ कौन (है); तारे . बाँधि—उसे बन्धन में (तूने) बाँध रखा (है); हाय.... काँदि—हाय, वह आलोक का प्यासा है इसीलिये घुमड़ कर क्रन्दन कर उठता है; यदि.... गान—अगर हवा में प्राण का सचार हुआ (तो) वीणा में गान क्यों नहीं बजता, जागिल आलो—प्रकाश जगा; केन.. आँधि—(तब) आँखो में आँधी क्यो? पाखि—पक्षी; दिल..... आनि—वन-वन में ला दी; फुले—फूलों में; कत ....भाषा—कितने रंगो में भाषा पानी है; होथा.. ...राति—वहाँ रात समाप्त हो गई है; हेथा ... वाति—यहाँ अर्धरात्रि की बत्ती जल रही है; तोर ...आधि—तेरे भवन में, भुवन में क्यों ऐसा बँटवारा हो गया?

१३६

दिनेर वेलाय वाँशि तोमार वाजियेछिले अनेक सुरे—
गानेर परश प्राणे एल, आपनि तुमि रइले दूरे ।।
शुधाइ यत पथेर लोके 'एइ वाँशिटि वाजालो के'—
नानान नामे भोलाय तारा, नानान द्वारे वेड़ाइ घुरे ।।
एखन आकाश म्लान हल, क्लान्त दिवा चक्षु वोजे—
पथे पथे फेराओ यदि मरव तवे मिथ्या खोँजे ।
वाहिर छेड़े भितरेते आपनि लहो आसन पेते—
तोमार वाँशि वाजाओ आसि ।
आमार प्राणेर अन्त.पुरे ।।

१९२५-२६

१३७

लहो लहो, तुले लहो नीरव वीणाखानि ।
तोमार नन्दननिकुञ्ज हते सुर देहो ताय आनि,
ओहे सुन्दर हे सुन्दर ।।
आमि आँधार विछाये आछि रातेर आकाशे
तोमारि आश्वासे ।

---

१३६ दिनेर . सुरे—दिन के समय (तुमने) अपनी वाँसुरी अनेक सुरो में वजाई थी; गानेर.. . दूरे—प्राणो में गान का स्पर्श आया (लेकिन) स्वय (तुम) दूर रहे; शुधाइ के—रास्ते के सभी लोगो से पूछता हूँ, 'यह वाँसुरी वजाई किसने'; नानान घुरे—नाना नामो से वे भुलाते है, नाना द्वारो पर भटकता फिरता हूँ; एखन—इस समय, हल—हुआ, क्लान्त . वोजे—क्लान्त दिवा (थका हुआ दिवस) आँखे वन्द करता है, पथे . . खोँजे—रास्ते-रास्ते यदि भटकाओ तव व्यर्थ की खोज मे मरूँगा; वाहिर पेते—वाहर को छोड़ कर भीतर आप ही आसन विछा लो; तोमार. अन्तःपुरे—मेरे प्राणों के अन्त पुर में आकर अपनी वाँसुरी वजाओ ।

१३७. लहो ... वीणाखानि—नीरव वीणा को उठा लो, उठा लो; तोमार . आनि—अपने नन्दन निकुञ्ज से उसमे सुर ला दो; आनि . आश्वासे—तुम्हारे ही भरोसे रात्रि के आकाश में मै अंधकार विछाए हुए हूँ;

तारायं ताराय जागाओ तोमार आलोक-भरा वाणी,
ओहे सुन्दर हे सुन्दर ।।
पापाण आमार कठिन दु.खे तोमाय केँदे वले,
'परश दिये सरस करो, भासाओ अश्रुजले,
ओहे सुन्दर हे सुन्दर ।'
शुष्क ये एइ नग्न मरु नित्य मरे लाजे
आमार चित्त माझे,
श्यामल रसेर आँचल ताहार वक्षे देहो टानि,
ओहे सुन्दर हे सुन्दर ।।

१९२५-२६

१३८

प्रथम आलोर चरणध्वनि उठल वेजे येइ
नीड़विरागी हृदय आमार उधाओ हल सेइ ।
नील अतलेर कोथा थेके उदास तारे करल ये के !
गोपनवासी सेइ उदासीर ठिक-ठिकाना नेइ ।।
'सुप्तिशयन आय छेड़े आय' जागे ये तार भापा,
से वले 'चल् आछे येथाय सागरपारेर वासा' ।

तारायं....वाणी—प्रकाश से भरी अपनी वाणी ताराओं-ताराओं मे जगाओ; पाषाण.... बले—मेरा पापाण (हृदय) कठिन दुःख से रो कर तुम से कहता है; परश. ..करो—(अपने) स्पर्श से सरस करो; भासाओ—बहाओ; शुष्क... माझे—मेरे चित्त के भीतर यह जो शुष्क नग्न मरुभूमि नित्य लज्जा से मरती है; श्यामल.... टानि—श्यामल रस का अंचल उसके वक्ष पर खींच दो।

१३८. आलोर—आलोक की; उठल....येइ—जैसे ही बज उठी; उधाओ....सेइ—वैसे ही ऊपर की ओर उड़ा; नील.....के—नील अतल के (न-जाने) कहाँ से (पता नहीं) किसने उसे उदास कर दिया; गोपन...नेइ—गोपन में रहने वाले उस उदासी का पता-ठिकाना नही है; सुप्ति....आय—सुप्ति का शयन छोड़ कर आ, से.....वासा—वह कहता है (वहाँ) चल जहाँ सागर पार का निवास-स्थान है;

देश-विदेशेर सकल धारा सेइखाने हय बाँधनहारा,
कोणेर प्रदीप मिलाय शिखा ज्योतिसमुद्रेइ ।।

१९२५-२६

१३९

हे चिरनूतन, आजि ए दिनेर प्रथम गाने
जीवन आमार उठुक विकाशि तोमारि पाने ।।
तोमार वाणीते सीमाहीन आशा, चिरदिवसेर प्राणमयी भाषा—
क्षयहीन धन भरि देय मन तोमार हातेर दाने ।।
ए शुभलगने जागुक गगने अमृतवायु,
आनुक जीवने नवजनमेर अमल आयु ।
जीर्ण या-किछु, याहा-किछु क्षीण नवीनेर माझे होक ता विलीन
धुये याक यत पुरानो मलिन नव-आलोकेर स्नाने ।।

१९२५-२६

१४०

हार मानाले, भाङिले अभिमान ।
क्षीण हाते ज्वाला म्लान दीपेर थाला
हल खान्खान् ।

देश... ..बाँधनहारा—देश-विदेशकी सभी धाराएँ वही बंधनविहीन होती हैं; कोणेर..... समुद्रेइ—कोनेका प्रदीप ज्योति-समुद्र में ही (अपनी) शिखा को विलीन कर देता है ।

१३९ आजि .. पाने—आज इस दिन के प्रथम गान में मेरा जीवन तुम्हारी ओर ही विकसित हो उठे; तोमार वाणीते—तुम्हारी वाणी में; दाय दाने—तुम्हारे हाथो के दान से मन को अक्षय धन से भर देती है; ए .जागुक —इस शुभ लग्न में जागे; आनुक—लाए; या-किछु—जो कुछ; याहा-किछु—जो कुछ; नवीनेर. विलीन—नवीन के भीतर वह विलीन हो; धुये . स्नाने —जो कुछ पुराना (और) मलिन (है), नव-आलोक के स्नान से धुल जाय ।

१४०. हार अभिमान—(तुमने) हार मनवायी, अभिमान चूर कर दिया; क्षीण खान्-खान्—दुर्बल हाथों से जलाए हुए म्लान दीप का थाल

एवार तवे ज्वालो आपन तारार आलो,
रङिन छायार एइ गोधूलि होक अवसान ॥
एसो पारेर साथि—
वइल पथेर हाओया, निवल घरेर वाति ।
आजि विजन वाटे अन्धकारेर घाटे
सब-हारानो नाटे एनेछि एइ गान ॥

१९२५-२६

१४१

हे महाजीवन, हे महामरण, लइनु शरण, लइनु शरण ॥
आँधार प्रदीपे ज्वालाओ शिखा,
पराओ पराओ ज्योतिर टिका—करो हे आमार लज्जाहरण ।
परशरतन तोमारि चरण—लइनु शरण, लइनु शरण ।
या-किछु मलिन, या-किछु कालो,
या-किछु विरूप होक ता भालो—घुचाओ घुचाओ सब आवरण ॥

१९२५-२६

टुकड़े-टुकड़े हो गया; खान्-खान्—खण्ड-खण्ड; एवार. . आलो—अब इस बार अपने तारों के दीप जलाओ; रङिन... .अवसान—रंगीन छायावाली इस गोधूलि का अवसान हो; एसो. ..साथि—(उस) पार के साथी आओ; वइल..... हाओया—पथ की हवा बही; निवल . .. वाति—घर की बत्ती (दीप) बुझ गई; आजि .....गान—आज निर्जन रास्ते में, अंधकार के घाट पर सब-कुछ खो देने वाले अभिनय में यह गान ले आयी हूँ ।

१४१. लइनु शरण—शरण ली, शरण में आई हूँ; आँधार ... शिखा—अँधियारे प्रदीप की शिखा को प्रज्वलित करो, पराओ. टिका—ज्योति का टीका लगाओ; करो.....हरण—मेरी लज्जा हरण करो, परश .....चरण—तुम्हारे चरण ही पारस-मणि हैं; या-किछु—जो कुछ, कालो—काला; होक—हो; ता—वह; घुचाओ—नष्ट करो।

१४२

गानेर झरनातलाय तुमि साँझेर वेलाय एले।
दाओ आमारे सोनार-वरन सुरेर धारा ढेले॥
ये सुर गोपन गुहा हते छुटे आसे आकुल स्रोते,
कान्नासागर-पाने ये याय बुकेर पाथर ठेले॥
ये सुर उषार वाणी बये आकाशे,याय भेसे,
रातेर कोले याय गो चले सोनार हासि हेसे।
ये सुर चाँपार पेयाला भ'रे देय आपनाय उजाड़ क'रे,
याय चले याय चैत्रदिनेर मधुर खेला खेले॥

१९२५-२६

१४३

आर रेखो ना आँधारे, आमाय देखते दाओ।
तोमार माझे आमार आपनारे देखते दाओ॥
काँदाओ यदि काँदाओ एवार, सुखेर ग्लानि सय ना ये आर,
नयन आमार याक-ना धुये अश्रुधारे—
आमाय देखते दाओ॥

---

१४२. गानेर एले—गीति-निर्झर के तले तुम सध्या के समय आए; दाओ .ढेले—मेरे लिये सुर की स्वर्ण-रगी धारा ढाल दो; ये. .स्रोते—जो सुर गोपन गुहा से आकुल स्रोत में दौडा आता है; कान्ना ठेले—जो हृदय के पत्थर को ठेल कर क्रन्दन के सागर की ओर जाता है; ये भेसे—जो सुर उषा की वाणी को वहन कर आकाश मे बह जाता है; रातेर .हेसे—अजी, सुनहली हँसी हँस कर जो रात की गोद में चला जाता है; ये . .क'रे—जो सुर अपने (आप) को रीता करके चम्पा के प्याले को भर देता है; याय खेले—चैत्र के दिनो का मधु का खेल खेल कर चला जाता है।

१४३. आर दाओ—और अन्धकार मे न रखो, मुझे देखने दो, तोमार आपनारे—तुम अपने भीतर मुझे अपने आप को; कांदाओ. एवार—यदि रुलाते हो तो इसवार रुलाओ; सुखेर. . आर—सुख का अवसाद (सुख-जनित अवसाद) अब और सहन नही होता, नयन धारे—मेरी आँखें

जानि ना तो कोन् कालो एइ छाया,
आपन वले भुलाय यखन घनाय विषम माया।
स्वप्नभारे जमल वोझा, चिरजीवन शून्य खोँजा—
ये मोर आलो लुकिये आछे रातेर पारे
आमाय देखते दाओ॥

१९२५-२६

१४४

अनेक दिनेर शून्यता मोर भरते हवे—
मौन वीणार तन्त्र आमार जागाओ सुधारवे॥
वसन्त समीरे तोमार फुल-फोटानो वाणी
दिक पराने आनि—
डाको तोमार निखिल-उत्सवे॥
मिलनशतदले
तोमार प्रेमेर अरूप मूर्ति देखाओ भुवनतले।
सवार साथे मिलाओ आमाय, भुलाओ अहंकार,
खुलाओ रुद्धद्वार—
पूर्ण करो प्रणतिगौरवे॥

१९२७

आँसुओं की धारा से धुल जायें ना; जानि.... .छाया—नही जानती यह कैसी काली छाया; आपन... माया—अपनी शक्ति से जब भुलाती है तब कठिन माया घनीभूत हो उठती है; जमल—इकट्ठा हुआ, संचित हुआ; खोँजा—खोज, खोजना; ये.... दाओ—रात्रि के पार मेरा जो आलोक छिपा हुआ है (उसे) मुझे देखने दो।

१४४. अनेक..... हवे—अनेक दिनो की मेरी शून्यता को भरना होगा; आमार—मेरी; जागाओ—जगाओ; वसन्त ....आनि—वसन्त समीर तुम्हारी फूल खिलाने वाली वाणी प्राणों में ला दे; डाको—पुकारो; देखाओ—दिखाओ; सबार... आमाय—सबके साथ मुझे मिलाओ; भुलाओ अहंकार—(मेरा) अहंकार भुला दो; खुलाओ—खुलवाओ; पूर्ण. . गौरवे—प्रणति के गौरव से पूर्ण करो।

१४५

आमार ना-बला वाणीर घन यामिनीर माझे
तोमार भावना तारार मतन राजे ॥
निभृत मनेर वनेर छायाटि घिरे
ना-देखा फुलेर गोपन गन्ध फिरे,
लुकाय वेदना अझरा अश्रुनीरे—
अश्रुत बाँशि हृदयगहने बाजे ॥
खने खने आमि ना जेने करेछि दान
तोमाय आमार गान ।
परानेर साजि साजाइ खेलार फुले,
जानि ना कखन निजे बेछे लओ तुले—
अलख आलोके नीरवे दुयार खुले
प्राणेर परश दिये याओ मोर काजे ॥

१९२७

१४६

तोमार आमार एइ विरहेर अन्तराले
कत आर सेतु बाँधि सुरे सुरे ताले ताले ॥

---

१४५ आमार .राजे—मेरी अन-बोली वाणी की सघन रात्रि के बीच तुम्हारी भावना (चिन्तन) ताराओ के समान विराजती है; छायाटि घिरे—छाया को घेर कर, ना-देखा. .फिरे—अन-देखे फूल का गोपन गन्ध घूमता फिरता है; लुकाय—छिपती है; अझरा—अन-बहे; बाँशि—बाँसुरी, बाजे—बजती है, खने .. गान—क्षण-क्षण बिना जाने ही मैने तुम्हे अपने गीत भेंट किए है; परानेर. फुले—प्राणो की फूल चुनने की डलिया खेल-खेल के फूलो से सजाता हूँ, जानि .तुले—नही जानता कब तुम स्वयं चुनकर उठा लेते हो, दुयार खुले—द्वार खोल, प्राणेर काजे—मेरे कामो मे (तुम) प्राणो का स्पर्श दे जाते हो ।

१४६ तोमार .ताले—तुम्हारे और मेरे इस विरह के अन्तराल (व्यवधान) में सुर-सुर मे, ताल-ताल में कितने और सेतु बाँधूं;

तबु ये परानमाझे गोपने वेदना वाजे—
एवार सेवार काजे डेके लओ सन्ध्याकाले ॥
विश्व हते थाकि दूरे अन्तरेर अन्त:पुरे,
चेतना जड़ाये रहे भावनार स्वप्नजाले।
दु:ख सुख आपनारइ से बोझा हयेछे भारी,
येन से सँपिते पारि चरम पूजार थाले ॥

१९२७

१४७

तोमार प्रेमे धन्य कर यारे
सत्य क'रे पाय से आपनारे ॥
दु:खे शोके निन्दा-परिवादे
चित्त तार डोबे ना अवसादे,
टुटे ना बल संसारेर भारे ॥
पथे ये तार गृहेर वाणी वाजे,
विराम जागे कठिन तार काजे

तबु....बाजे—तो भी प्राणों के भीतर वेदना कसकती है; एवार . सन्ध्या-काले—अब सन्ध्या समय सेवा-कार्य के लिये बुला लो; विश्व .. अन्त:पुरे—संसार से दूर अन्तर के अन्त:पुर में रहती हूँ; चेतना . स्वप्नजाले—भावनाओं (चिन्ताओं) के स्वप्न-जाल में चेतना उलझी हुई रहती है; आपनारइ—अपना ही; से....भारी—वह भारी बोझ बन गया है, येन .....थाले—ऐसा हो कि उसे चरम पूजा की थाली में अर्पित कर सकूँ।

१४७ तोमार... आपनारे—जिसे तुम अपने प्रेम से धन्य करते हो वह अपने आपको सचमुच ही पाता है; परिवादे—अपवाद में; कुत्सा में; चित्त .. अवसादे—उसका चित्त अवसाद (चरम क्लान्ति) में नहीं डूबता; टुटे. ..भारे—संसार के भार से (उसका) बल नहीं टूटता, पथे. . .बाजे—उसके पथ में गृह की वाणी बजती है (अर्थात् पथ भी उसके लिये गृह है और) उसके कठिन काम-

निजेरे से ये तोमारि माझे देखे,
जीवन तार वाधाय नाहि ठेके,
दृष्टि तार आँधार-परपारे ।।

१९२७

१४८

दिन यदि हल अवसान
निखिलेर अन्तरमन्दिरप्राङ्गणे
ओइ तव एल आह्वान ।।
चेये देखो मङ्गलराति ज्वालि दिल उत्सव-बाति,
स्तब्ध ए ससारप्रान्ते धरो तव वन्दनगान ।।
कर्मेर-कलरव-क्लान्त,
करो तव अन्तर शान्त ।
चित्त-आसन दाओ मेले, नाइ यदि दर्शन पेले
आँधारे मिलिवे ताँर स्पर्श—
हर्षे जागाये दिबे प्राण ।।

१९२७

काज में ही (उसे) विराम है; निजेरे. . देखे—अपने को वह तुममें ही देखता है; जीवन ठेके—उसका जीवन बाधाओ से रुद्ध नही होता; दृष्टि. . परपारे—उसकी दृष्टि अधकार के उस पार रहती है।

१४८. हल—हुआ, निखिलेर—समस्त जगत् के; ओइ .आह्वान—वह तुम्हारा आह्वान आया; चेये . बाति—देखो, मंगलमयी रात्रि ने उत्सव के दीप जला दिए, ए—इस; धरो—शुरू करो; चित्त . मेले—चित्त रूपी आसन को बिछा दो; नाइ. पेले—भले ही दर्शन नही पाया, आँधारे. स्पर्श—अन्धकार में उनका स्पर्श मिलेगा; हर्षे प्राण—हर्ष से (उनका स्पर्श) प्राणो को जगा देगा।

१४९

ये ध्रुवपद दियेछ बाँधि विश्वताने
मिलाब ताइ जीवनगाने।
गगने तव विमल नीलहृदये लव ताहारि मिल—
शान्तिमयी गभीर वाणी नीरव प्राणे ।।
बाजाय उषा निशीथकूले ये गीतभाषा
से ध्वनि निये जागिबे मोर नवीन आशा।
फुलेर मतो सहज सुरे प्रभात मम उठिबे पूरे,
सन्ध्या मम से सुरे येन भरिते जाने ।।

१९२७

१५०

हिंसाय उन्मत्त पृथ्वि, नित्य निठुर द्वन्द्व;
घोर कुटिल पन्थ तार, लोभजटिल बन्ध ।।
नूतन तव जन्म लागि कातर यत प्राणी;
कर' त्राण महाप्राण, आन' अमृतवाणी,
विकशित कर' प्रेमपद्म चिरमधुनिष्यन्द।
शान्त हे, मुक्त हे, हे अनन्तपुण्य,
करुणाघन, धरणीतल कर' कलङ्कशून्य ।।

---

१४९. ध्रुवपद—ध्रुपद, स्थिर पद; ये . गाने—जो ध्रुपद (तुमने) विश्व की तान में गूंथ दिया है उसे ही जीवन के गान में मिलाऊँगा; हृदये—हृदय में; लव—पाऊँगा, ताहारि—उसीका; मिल—सादृश्य, सगति; बाजाय—ध्वनित करती है; से—उस; निये—ले कर; जागिबे—जागेगी; फुलेर मतो—फूल के समान; उठिबे पूरे—पूर्ण हो उठेगा; सन्ध्या ..जाने—ऐसा हो कि मेरी सन्ध्या उस सुर से अपने को भरना जाने।

१५०. हिंसाय . पृथ्वि—हिंसा से पृथ्वी उन्मत्त (है); तार—उसका; बन्ध—बन्धन; नूतन प्राणी—जितने प्राणी हैं सब तुम्हारे नवीन जन्म के लिये कातर हैं; कर'—करो; आन'—लाओ; निष्यन्द—क्षरण; स्राव; चिरमधु निष्यन्द—चिरन्तन मधुका झरना; एस'—आओ;

एस' दानवीर, दाओ त्यागकठिन दीक्षा।
महाभिक्षु, लओ सवार अहंकारभिक्षा।
लोक लोक भुलुक शोक, खण्डन कर' मोह,
उज्ज्वल होक ज्ञानसूर्य-उदयसमारोह—
प्राण लभुक सकल भुवन, नयन लभुक अन्ध।
शान्त हे, मुक्त हे, हे अनन्तपुण्य,
करुणाघन, धरणीतल कर' कलङ्कशून्य ।।
क्रन्दनमय निखिलहृदय तापदहनदीप्त
विषयविषविकारजीर्ण खिन्न अपरितृप्त।
देश देश परिल तिलक रक्तकलुषग्लानि,
तव मङ्गलशङ्ख आन' तव दक्षिणपाणि—
तव शुभसंगीतराग, तव सुन्दर छन्द।
शान्त हे, मुक्त हे, हे अनन्तपुण्य,
करुणाघन, धरणीतल कर' कलङ्कशून्य ।।

१९२७

१५१

छिन्न पातार साजाइ तरणी, एका एका करि खेला—
आन्मना येन दिक्‌बालिकार भासानो मेघेर भेला ।।

दाओ—दो; लओ . भिक्षा—सबके अहकार को भिक्षा-स्वरूप ग्रहण करो; लोक..... शोक—सभी लोग (अथवा समस्त लोक) शोक भूल जायें; खण्डन . मोह—मोह को तोड़ो; होक—हो, लभुक—लाभ करे, प्राप्त करे; परिल तिलक—तिलक लगाया।

१५१. छिन्न खेला—टूटे हुए पत्तो की नौका बनाकर अकेले अकेले खेलता हूँ; आन्मना भेला—जैसे दिक्‌बालिका का अनमने भाव से बहाया हुआ मेघो का बेडा हो; भेला—केले के थभ, बास आदि से बनाया हुआ पानी पर बहने वाला पदार्थ, बेडा, येमन . छन्दे—जैसे अलग

येमन हेलाय अलस छन्दे कोन् खेयालीर कोन् आनन्दे
सकाले-धरानो आमेर मुकुल झरानो विकालवेला ॥
ये वातास नेय फुलेर गन्ध, भुले याय दिनशेषे,
तार हाते दिइ आमार छन्द—कोथा याय के जाने से ।
लक्ष्यविहीन स्रोतेर धाराय जेनो जेनो मोर सकलइ हाराय,
चिरदिन आमि पथेर नेशाय पाथेय करेछि हेला ॥
१९२७

१५२

तोमार सुर शुनाये ये घुम भाङाओ से घुम आमार रमणीय—
जागरणेर सङ्गिनी से, तारे तोमार परश दियो ॥
अन्तरे तार गभीर क्षुधा, गोपने चाय आलोकसुधा,
आमार रातेर बुके से ये तोमार प्रातेर आपन प्रिय ॥
तारि लागि आकाश राङा आँधार-भाङा अरुणरागे,
तारि लागि पाखिर गाने नवीन आशार आलाप जागे ।

छन्द में अवहेला के साथ; कोन्....आनन्दे—किसी मनमौजी के किसी आनन्द से; सकाले ....वेला—आम वृक्ष की भोर में लगी मंजरियों को तीसरे पहर झरा देना है; ये.....से—जो हवा फूलों का गन्ध लेती है और दिनके अन्त में (उसे) भूल जाती है, उसके हाथों (में) अपना छन्द सौंपता हूँ, वह कहाँ जाती है कौन जानता है; जेनो—जानो; मोर .. हाराय—मेरा सभी कुछ खो जाता है; चिरदिन ...हेला—मैंने पथ के नशे में सदा ही पाथेय की अवहेलना की है।

१५२. तोमार. ...रमणीय—अपना सुर सुनाकर जिस निद्रा को भंग करते हो, वह मेरी रमणीय निद्रा है; जागरणेर.. .दियो—वह जागरण की संगिनी है, उसे अपना स्पर्श देना (उसे स्पर्श करना); अन्तरे तार—उसके अन्तर में; चाय—चाहती है; आमार.. ..प्रिय—मेरी रात्रि के हृदय में वह है तुम्हारे प्रभात की अपनी, प्रिय; तारि लागि—उसीके लिये; राङा—लाल होना; आँधार-भाङा—अंधकार का दूर होना; पाखिर .जागे—पक्षियों के गान में नवीन आशा का आलाप जाग उठना है; शुनाय .आगमनी—उसे

नीरव तोमार चरणध्वनि शुनाय तारे आगमनी,
सन्ध्यावेलार कुँडि तारे सकालवेलाय तुले नियो ।।

१९२९

१५३

आमार मुक्ति आलोय आलोय एइ आकाशे,
आमार मुक्ति धुलाय धुलाय घासे घासे ।।
देहमनेर सुदूर पारे हारिये फेलि आपनारे,
गानेर सुरे आमार मुक्ति ऊर्ध्वे भासे ।।
आमार मुक्ति सर्वजनेर मनेर माझे,
दुःखविपद-तुच्छ-करा कठिन काजे ।
विश्वधातार यज्ञशाला, आत्महोमेर वह्नि ज्वाला—
जीवन येन दिइ आहुति मुक्ति-आशे ।।

१९३२

१५४

मधुर, तोमार शेष ये ना पाइ, प्रहर हल शेष—
भुवन जुड़े रइल लेगे आनन्द-आवेश ।।

आगमन संवंधी गान सुनाता है, आगमनी—शिव की पत्नी उमा के पितृगृह में आगमन संवंधी गान; कुँड़ि—कली, तारे—उसे; सकाल वेलाय नियो—भोर के समय चुन लेना।

१५३ आमार—मेरी; आलोय आलोय—आलोक-आलोक में; एइ—इसी, धुलाय धुलाय—धूलि में (धूलि के प्रत्येक कण मे), घासे घासे—तृण-तृण में; हारिये आपनारे—अपने आप को खो देता हूँ; भासे—बहती है, माझे—वीच मे; तुच्छ-करा—तुच्छ करने वाले; धातार—विधाता, निर्माता की, येन—ऐसा हो कि; दिइ—दूँ; आशे—आशा में।

१५४ तोमार पाइ—तुम्हारा अन्त जो नहीं पाता; हल—हुआ; भुवन जुड़े—विश्व-भर में; रइल लेगे—व्याप्त रहा; आवेश—विह्वलता, मोह;

दिनान्तेर एइ एक कोणाते सन्ध्यामेघेर शेष सोनाते
मन ये आमार गुञ्जरिछे कोथाय निरुद्देश ।।
सायन्तनेर क्लान्त फुलेर गन्ध हाओयार 'परे
अङ्गविहीन आलिङ्गने सकल अङ्ग भरे ।।
एइ गोधूलिर धूसरिमाय श्यामल धरार सीमाय सीमाय
शुनि वने वनान्तरे असीम गानेर रेश ।।

१९३२

१५५

सकल-कलुष-तामस-हर, जय होक तव जय—
अमृतवारि सिञ्चन कर' निखिल भुवनमय ।
महाशान्ति, महाक्षेम, महापुण्य, महाप्रेम ।।
ज्ञानसूर्य-उदय-भाति ध्वंस करुक तिमिरराति ।
दुःसह दुःस्वप्न घाति अपगत कर' भय ।।
मोहमलिन अति-दुर्दिन-शंकित-चित पान्थ
जटिल-गहन-पथसंकट-संशय-उद्भ्रान्त ।
करुणामय, मागि शरण—दुर्गतिभय करह हरण,
दाओ दुःखबन्धतरण मुक्तिर परिचय ।।

१९३२

एइ—इस; कोणाते—कोने में; सोनाते—सोने मे; गुञ्जरिछे—गुञ्जार कर रहा है; सायन्तनेर—सन्ध्याकालीन; हाओयार 'परे—हवा के ऊपर; भरे—ओतप्रोत करता है; धूसरिमाय—धूसर वर्ण में; शुनि—सुनता हूँ; रेश—शब्द या सुर समाप्त होने पर भी मन के भीतर जो अनुरण (गूँज) बना रहता है।

१५५ हर—हरण करनेवाले; होक—हो; कर'—करो; भुवनमय—भुवन-भर में; भाति—दीप्ति, आलोक; करुक—करे; राति—रात्रि; घाति—विनष्ट करके; अपगत कर'—दूर करो; मागि—माँगता हूँ; याचना करता हूँ; करह—करो; दाओ—दो।

१५६

आमि यखन छिलेम अन्ध,
सुखेर खेलाय वेला गेछे, पाइ नि तो आनन्द।
खेलाघरेर देयाल गेँथे खेयाल निये छिलेम मेते,
भित भेङे येइ एले घरे घुचल आमार वन्ध।
सुखेर खेला आर रोचे ना, पेयेछि आनन्द॥
भीषण आमार, रुद्र आमार, निद्रा गेल क्षुद्र आमार—
उग्र व्यथाय नूतन करे वाँधले आमार छन्द।
ये दिन तुमि अग्निवेशे सव-किछु मोर निले एसे
से दिन आमि पूर्ण हलेम, घुचल आमार द्वन्द्व।
दु:खसुखेर पारे तोमाय पेयेछि आनन्द।

१९३३

१५७

दु खेर तिमिरे यदि ज्वले तव मङ्गल-आलोक
तवे ताइ होक।
मृत्यु यदि काछे आने तोमार अमृतमय लोक
तवे ताइ होक॥

---

१५६ आमि . अन्ध—मै जव अन्ध था; सुखेर आनन्द—सुख के खेल में समय वीत गया (लेकिन मैंने) आनन्द तो नही पाया; खेला .गेँथे—खेल-घर की दीवारे चुन कर; खेयाल मेते—सपने लेकर मै मत्त था; भित .. वन्ध—दीवार तोड कर जैसे ही तुम घर में आए, मेरा वन्धन दूर हो गया; आमार—मेरे; गेल—चली गई; उग्र . छन्द—तीव्र व्यथा द्वारा नये सिरे से मेरे छन्द की रचना की; ये ..एसे—जिस दिन अग्निवेश में आ कर तुमने मेरा सव कुछ ग्रहण कर लिया, से हलेम—उस दिन मै पूर्ण हुआ, घुचल . द्वन्द्व—मेरा द्वन्द्व मिट गया; दु:ख .आनन्द—हे आनन्द, दु खसुख के पार तुम्हें पाया है।

१५७ दु:खेर होक—दु:ख के अंधकार में ही अगर तुम्हारी मंगल-ज्योति जलती है, तव वही हो, मृत्यु लोक—मृत्यु अगर तुम्हारे अमृतपूर्ण

पूजार प्रदीपे तव ज्वले यदि मम दीप्त शोक
तबे ताइ होक।
अश्रु-आँखि-'परे यदि फुटे ओठे तव स्नेहचोख
तबे ताइ होक॥

१०.३६

शोक को पात्र मानी है; ज्वले—जलना हो; अश्रु ....चोख—आंसू भरी आंखों पर अगर तुम्हारी स्नेह से भरी आंखें (दृष्टि) खिल उठती है।

प्रेम

१

मरण रे, तुँहुँ मम श्यामसमान।
मेघवरण तुझ मेघजटाजुट,
रक्तकमलकर, रक्त-अधरपुट,
तापविमोचन करुण कोर तव
मृत्यु-अमृत करे दान॥
आकुल राधा-रिझ अति जरजर,
झरइ नयनदउ अनुखन झरझर—
तुँहुँ मम माधव, तुँहुँ मम दोसर,
तुँहुँ मम ताप घुचाओ।
मरण तु आओ रे आओ॥
भुजपाशे तव लह सम्वोधयि,
आँखिपात मझु देह तु रोधयि,
कोर-उपर तुझ रोदयि रोदयि
नीद भरब सव देह॥
तुँहुँ नहि विसरवि, तुँहुँ नहि छोडवि,
राधाहृदय तु कवहुँ न तोड़वि,

---

१. यह गान 'भानुसिंहेर पदावली' से लिया गया है। रवीन्द्रनाथ ने 'भानुसिंह' के नाम से पदावलियो की रचना की थी। वगाल के मध्ययुगीन वैष्णव भक्त कवियो की नाईं इन पदावलियो की रचना 'व्रजवुलि' में हुई है।

तुँहुँ—तुम; तुझ—तुम्हारा; जटाजुट—जटाजूट, जटाजाल; कोर—क्रोड, गोद, मृत्यु दान—मृत्यु रूपी अमृत का दान करती है; जरजर—जर्जर; झरइ . झरझर—दोनो आँखे सव समय झरझर वरसती रहती है, दोसर—सहाय, घुचाओ—दूर करो, तु—तू, भुजपाशे सम्वोधयि—अपने भुज पाश में मुझे वाँध कर सान्त्वना, चैतन्य दो; आँखिपात रोधयि—मेरे नेत्रपात (दृष्टि विक्षेप) को तुम अवरुद्ध कर दो; कोर .देह—तुम्हारी गोद मे रोते-रोते समस्त शरीर में नीद भर लूगी; तुँहुँ तोड़वि—तुम

हिय-हिय राखबि अनुदिन अनुखन—
अतुलन तोँहार लेह ।।
गगन सघन अब, तिमिरमगन भव,
तड़ितचकित अति, घोर, मेघरव,
शालतालतरु सभय-तवध सब—
पन्थ विजन अति घोर ।।
एकलि याओब तुझ अभिसारे,
तुँहुँ मम प्रियतम, कि फल विचारे—
भय-बाधा सब अभय मूर्ति धरि
पन्थ देखायब मोर ।।
भानु भने, 'अयि राधा, छिये छिये
चञ्चल चित्त तोहारि।
जीवनवल्लभ मरण-अधिक सो,
अब तुँहुँ देख विचारि।'

१८८१

२

आमार प्राणेर 'परे चले गेल के
वसन्तेर बातासटुकुर मतो।

नहीं भूलना, तुम नहीं छोड़ना, राधा के हृदय को तुम कभी न तोड़ना; हिय...लेह—सब दिन सब समय हृदय में रखना अपना अतुलनीय स्नेह; तिमिर मगन—अंधकार में लीन; सभय-तवध—भय-भीत और स्तब्ध; एकलि....अभिसारे—तुम्हारे अभिसार के लिये अकेली जाऊँगी; तुहुँ...... विचारे—तुम मेरे प्रियतम हो, (मुझे) फल का क्या विचार करना है; भय......मोर—भय, बाधा सभी अभय मूर्ति धारण कर मुझे रास्ता दिखाएँगे; भानु......तोहारि—भानु (सिंह) कहते हैं, अयि राधे, छि: छि: तुम्हारा चित्त बहुत चञ्चल है; जीवन वल्लभ. विचारि—जीवन वल्लभ, मरण से भी अधिक है, अब तू विचार कर देख।

२ आमार.....मतो—वसन्त की (हल्की सी) हवा के समान मेरे प्राणों

से ये छुँये गेल, नुये गेल रे—
फुल फुटिये गेल शत शत ।।
से चले गेल वले गेल ना—से कोथाय गेल फिरे एल ना।
से येते येते चेये गेल, की येन गेये गेल—
ताइ आपन-मने वसे आछि कुसुमवनेते ।।
से ढेउयेर मतो भेसे गेछे, चाँदेर आलोर देशे गेछे,
येखान दिये हेसे गेछे हासि तार रेखे गेछे रे—
मने हल, आँखिर कोणे आमाय येन डेके गेछे से।
आमि कोथाय याव, कोथाय याव, भावतेछि ताइ एकला वसे ।।
से चाँदेर चोखे वुलिये गेल घुमेर घोर।
से प्राणेर कोथाय दुलिये गेल फुलेर डोर।
कुसुमवनेर उपर दिये की कथा से वले गेल,
फुलेर गन्ध पागल हये सङ्गे तारि चले गेल।

के ऊपर से कौन चला गया, से.. रे—वह छू गया, झुका गया, फुल .. शत—सैकडो फूल प्रस्फुटित कर गया; से ना—वह चला गया, (कुछ) कह नही गया, से .एल ना—वह कहाँ चला गया, लौट कर नही आया, से गेल—वह जाते-जाते (मेरी ओर) ताक गया, क्या-कुछ गा गया, ताइ कुसुमवनेते—इसीलिये अपने आप में खोई कुसुमवन मे वैठी हूँ; से गेछे—वह लहरो के समान वह गया है, (वह) चाँद की चाँदनी के देश में चला गया है, येखान .गेछे रे—जहाँ से होकर वह हँसता (हुआ) गया है (वहीं) अपनी हँसी रखता गया है;
मने गेछे से—ऐसा लगा जैसे आंखो के कोने मे (वह) मुझे बुला गया है, आमि बसे—इसीलिये अकेली वैठी सोच रही हूँ, मैं कहाँ जाऊँ. कहाँ जाऊँ, से घोर—वह चाँद की आँखो पर नीद का नशा सहला गया, से डोर—वह कही प्राणो की फूल की डोर झुला गया; फुसुम गेल—कुसुमवन के ऊपर से हो कर जाने क्या-कुछ वह कह गया, फुलेर गेल—फूलो की सुगन्ध पागल हो कर उसीके साथ चली गयी, हृदय . हल—मेरा हृदय व्याकुल हुआ,

हृदय आमार आकुल हल, नयन आमार मुदे एल रे—
कोथा दिये कोथाय गेल से ।।

१८८३

३

मरि लो मरि, आमाय बाँशिते डेकेछे के ।
भेबेछिलेम घरे रब, कोथाओ याब ना—
ओइ-ये बाहिरे बाजिल बाँशि, बलो की करि ।।
शुनेछि कोन् कुञ्जवने यमुनातीरे
साँझेर बेला बाजे बाँशि धीर समीरे—
ओगो तोरा जानिस यदि आमाय पथ बले दे ।।
देखि गो तार मुखेर हासि,
तारे फुलेर माला परिये आसि,
तारे बले आसि, 'तोमार बाँशि,
आमार प्राणे बेजेछे' ।।

१८८४

नयन एल—मेरी आँखें मुँद आईं; कोथा से—कहाँ से हो कर वह कहाँ चला गया।

३ मरि.. के—बलि जाऊँ (मरि) बलि जाऊँ, मुझे बाँसुरी (के सुर) में किसने पुकारा है, भेबेछिलेम. ना—सोचा था घर में रहूँगी, कहीं भी नहीं जाऊँगी; ओइ... करि—वह लो, बाहर बाँसुरी बजी, बोलो क्या करूँ, शुनेछि . समीरे—सुना है यमुना किनारे जाने-किस कुञ्जवन में धीर समीर वाली संध्यावेला में बाँसुरी बजती है; ओगो ..बले दे—अजी, तुमलोग अगर जानती हो तो मुझे रास्ता बतला दो; देखिगो...हासि—(जाकर) उसके मुख की हँसी देखूँ; तारे. . आसि—उसे फूलों की माला पहना आऊँ; तारे ..बेजेछे—उससे कह आऊँ 'तुम्हारी बाँसुरी मेरे प्राणों में बजी है' (अथवा कसक उठी है)।

४

आजि शरत-तपने प्रभातस्वपने की जानि परान की ये चाय।
ओइ शेफालिर शाखे की वलिया डाके, विहग विहगी की ये गाय ।।
आजि मधुर वातासे हृदय उदासे, रहे ना आवासे मन हाय—
कोन् कुसुमेर आशे कोन् फुलवासे सुनील आकाशे मन धाय ।।

आजि के येन गो नाइ, ए प्रभाते ताइ जीवन विफल हय गो—
ताइ चारि दिके चाय, मन केँदे गाय 'ए नहे, ए नहे, नय गो'।
कोन् स्वपनेर देशे आछे एलोकेशे कोन् छायामयी अमराय।
आजि कोन् उपवने, विरहवेदने आमारि कारणे केँदे याय ।।

आमि यदि गाँथि गान अथिरपरान से गान शुनाव कारे आर।
आमि यदि गाँथि माला लये फुलडाला, काहारे पराव फुलहार ।।
आमि आमार ए प्राण यदि करि दान, दिव प्राण तवे कार पाय।
सदा भय हय मने, पाछे अयतने मने मने केह व्यथा पाय ।।
१८८६

---

४ तपने—धूप मे; की चाय—क्या जानूं प्राण क्या चाहते हैं, ओइ. . शाखे—उस शेफाली की शाखा पर, की डाके—क्या कह कर पुकारते हैं, की .गाय—क्या गाते हैं, रहे. हाय—हाय, मन घर मे नही ठहरता, कोन्. धाय—किस कुसुम की आशा मे, किस फूल के गन्ध से (आकर्षित हो) मन, नील आकाश की ओर दौडता है, आजि नाइ—(पता नही) आज जैसे कौन नही है; ए गो—इसीलिये इस प्रभात मे जीवन विफल हो रहा है, ताइ चाय—इसीलिए चारो ओर देखता है; मन नय गो —मन क्रन्दन करता हुआ गाता है 'यह नही, यह नही हैं'; कोन् देशे—किस सपनो के देश में; आछे एलोकेशे—आलुलायित केशो वाली है; कोन् अमराय—किस छायामयी अमरावती मे, आमारि याय—मेरे ही कारण रोती जा रही है, आमि गान—मैं यदि गान गूँथू, अथिर परान—अस्थिर प्राण, से आर—वह गान और किसे सुनाऊँगी, लये—ले कर, फुलडाला—फूलो की डलिया; काहारे हार—किसे फूल का हार पहनाऊँगी; आमि. पाय—मैं

५

हेलाफेला सारा वेला　　ए की खेला आपन-सने ।
एइ वातासे फुलेर वासे　　मुखखानि कार पड़े मने ॥
आँखिर काछे बेड़ाय भासि　　के जाने गो काहार हासि,
दुटि फोँटा नयनसलिल　　रेखे याय एइ नयनकोणे ॥
कोन् छायाते कोन् उदासी　　दूरे वाजाय अलस वाँशि,
मने हय कार मनेर वेदन　　केँदे वेडाय वाँशिर गाने ॥
सारा दिन गाँथि गान　　कारे चाहे, गाहे प्राण—
तरुतलेर छायार मतन वसे आछि फुलवने ॥

१८८६

६

अलि　वार वार फिरे याय,　अलि　वारवार फिरे आसे—
तवे तो फुल विकाशे ॥
कलि　फुटितें चाहे, फोटे ना,　मरे लाजे, मरे त्रासे ॥

अपने इस प्राण को यदि अर्पित करूँ, तव किस के पैरो प्राण दूँगी, सदा ... मने—सदा मन में भय होता है; पाछे . .पाय—कहीं अयत्न (अवहेलना) मे कोई मन ही मन कष्ट न पाए।

५. हेलाफेला—अवज्ञा, अवहेलना; ए . सने—अपने साथ यह कैसा खेल है; एइ. .मने—इस हवा मे फूल के गन्ध से किसका मुख याद हो आता है; आँखिर .... हासि—कौन जाने (पता नही) किसकी हँसी आँखों के पास तिरती फिरती है; दुटि. . .कोणे—इन आँखो के कोनो मे दो बूँद आँसो का पानी रख जाती है; कोन् . वाँशि—कौन उदासीन किस छाया में दूर अलस (भाव से) बाँसुरी बजा रहा है, मने . .गाने—लगता है किसीके मन की वेदना बाँसुरी के गान में क्रन्दन करती फिर रही है, सारा . ..गान—समस्त दिन गान गूँथ कर; कारे.. ..प्राण—किसे चाहता है, प्राण गाता है, तरु तलेर फुलवने—पेड़ों के नीचे की छाया के समान फूलों के वन में बैठी हुई हूँ।

६. अलि　विकाशे—भौंरा वार वार लौट जाता है, वार वार लौट आता है, तभी तो फूल विकसित होता है; कलि . त्रासे—कली खिलना चाह कर भी नहीं खिलती, लाज से मरती है, शंका से मरती है, भुलि—भूल कर;

भुलि मान अपमान दाओ मन प्राण, निशिदिन रहो पाशे।
ओगो, आशा छेड़े तवु आशा रेखे दाओ हृदयरतन-आशे।
फिरे एसो, फिरे एसो— वन मोदित फुलवासे।
आज विरहरजनी, फुल्ल कुसुम शिशिरसलिले भासे॥
१८८८

७

आमार परान याहा चाय तुमि ताइ, तुमि ताइ गो।
तोमा छाडा आर ए जगते मोर केह नाई, किछु नाइ गो॥
तुमि सुख यदि नाहि पाओ याओ सुखेर सन्धाने याओ—
आमि तोमारे पेयेछि हृदय-माझे, आर किछु नाहि चाइ गो।
आमि तोमारि विरहे रहिव विलीन, तोमाते करिव वास—
दीर्घ दिवस, दीर्घ रजनी, दीर्घ वरष-मास।
यदि आर-कारे भालोवास, यदि आर फिरे नाहि आस,
तवे तुमि याहा चाओ ताइ येन पाओ, आमि यत दुख पाइ गो।
१८८८

दाओ—दो; पाशे—वगल मे; आशा . दाओ—आशा छोड कर भी आशा रख छोडो, हृदयरतन आशे—हृदयरत्न की आशा में, फिरे एसो—लौट आओ।

७ आमार गो—मेरे प्राण जो चाहते हैं तुम वही हो, अजी, तुम वही हो, तोमा गो—इस ससार में तुम्हे छोड़ कर मेरा और कोई नही है, कुछ नही है; तुमि याओ—अगर तुम सुख नही पाओ (तो) जाओ, सुख की खोज मे जाओ, आमि .गो—मैंने तुम्हे हृदय के भीतर पाया है, (अब) और कुछ नही चाहती; आमि. वास—मैं तुम्हारे ही विरह मे विलीन रहूँगी, तुम्ही में वास करूँगी; यदि आस—यदि और किसी को प्यार करो यदि लौटकर न आओ; तवे पाइगो—ऐसा हो कि तब तुम जो चाहते है वही पाओ, मैं (चाहे) जितना दु.ख पाऊँ।

८

विदाय करेछ यारे नयनजले,
एखन फिरावे तारे किसेर छले गो ।।
आजि मधु समीरणे निशीथे कुसुमवने
तारे कि पड़ेछे मने बकुलतले ।।
मे दिनओ तो मधुनिशि प्राणे गियेछिल मिशि,
मुकुलित दश दिशि कुसुमदले ।
दुटि सोहागेर वाणी यदि हत कानाकानि,
यदि ओइ मालाखानि पराते गले ।
एखन फिरावे तारे किसेर छले गो ।।
मधुराति पूर्णिमार फिरे आसे वार वार,
से जन फिरे ना आर ये गेछे चले ।।
छिल तिथि अनुकूल, शुधु निमेषेर भुल—
चिरदिन तृषाकुल पराण ज्वले ।
एखन फिरावे तारे किसेर छले गो ।।

१८८८

९

ओइ मधुर मुख जागे मने ।
भुलिव ना ए जीवने, की स्वपने की जागरणे ।।

---

८ विदाय . नयन जले—नयनों के जल से जिसे (तुमने) विदा दी है; एखन. छले—अब उसे किस बहाने लौटाओगी; आजि . समीरणे—आज वसन्त की हवा में; तारे .मने—वह क्या याद आया है, से मिशि—उस दिन भी तो वसन्त की रात्रि प्राणों में घुल मिल गई थी; दुटि कानाकानि—कानों-कानों में अगर दो दुलार की बातें होतीं; यदि ..गले—अगर वह माला गले में पहनाती; मधु . वार-वार—वसन्त की पूर्णिमा की मधुर रात्रि बारबार लौट आती है; से .. चले—जो जन चला गया, और नहीं लौटता; छिल. . ज्वले—तिथि (घड़ी) अनुकूल थी, केवल क्षण भर की भूल के लिये प्राण तृषा से व्याकुल जलते रहते हैं।

९. ओइ . मने—वह मधुर मुख मन में जागता रहता है; भुलिव .....

तुमि जान वा ना जान,
मने सदा येन मधुर वाँशरि वाजे—
हृदये सदा आछ व'ले।
आमि प्रकाशिते पारि ना, शुधु चाहि कातरनयने।

१८८८

१०

प्रेमेर फाँद पाता भुवने।
के कोथा धरा पडे के जाने—
गरव सव हाय कखन् टुटे याय, सलिल वहे याय नयने।
ए सुखधरणीते केवलइ चाह निते, जान ना हवे दिते आपना—
सुखेर छाया फेलि कखन यावे चलि, वरिवे साध करि वेदना।
कखन वाजे वाँशि, गरव याय भासि, परान पड़े आसि वाँधने॥

१८८८

जागरणे—(उसे) इस जीवन मे नही भूलूँगा, क्या स्वप्न मे, क्या जागरण मे, तुमि जान—तुम जानो या न जानो; मने . वाजे—मन मे जैसे सर्वदा मधुर वाँसुरी वजती रहती है; हृदये व'ले—(तुम) सदा हृदय मे हो इसलिये; आमि नयने—मै प्रकट नही कर पाता, केवल कातर दृष्टि से देखता रहता हूँ।

१० प्रेमेर भुवने—जगत् मे प्रेम का जाल विछा हुआ है, के . जाने—कौन कहाँ पकडाई दे जाता है, कौन जाने, ए निते—इस आनन्ददायक पृथ्वी में केवल (तुम) लेना ही चाहते हो, जान आपना—(यह) नहीं जानते कि अपने को देना होगा; सुखेर चलि—सुख की छाया को छोडकर कव चले जाओगे, वरिवे वेदना—(और) वरवस वेदना को वरण करोगे, कखन वाँधने—कव वाँसुरी वजती है, गर्व वह जाता है, प्राण वन्धन मे आ पडते है।

११

यदि आसे तबे केन येते चाय।
देखा दिये तबे केन गो लुकाय।।
चेये थाके फुल, हृदय आकुल—
वायु बले एसे 'भेसे याइ'।
धरे राखो, धरे राखो—
सुखपाखि फाँकि दिये उड़े याय।।
पथिकेर वेशे सुखनिशि एसे
बले हेसे हेसे 'मिशे याइ'।
जेगे थाको, जेगे थाको—
वरषेर साध निमेषे मिलाय।।

१८८९

१२

एमन दिने तारे बला याय,
एमन घनघोर बरिषाय।
एमन दिने मन खोला याय—
एमन मेघस्वरे बादल-झरझरे
तपनहीन घन तमसाय।।

---

११. यदि . चाय—यदि आता ही है तब क्यों चला जाना चाहता है, देखा .. लुकाय—दिखलाई दे कर फिर क्यों छिप जाता है; चेये थाके—देखता रहता है; वायु . याइ—वायु आ कर कहती है 'बह चले'; धरे राखो—पकड़ रखो; सुखपाखि . याय—सुख रूपी पक्षी छल कर उड़ा जाता है; पथिकेर .याइ—पथिक के वेश में सुख की रात्रि आ कर हँस हँस कर कहती है 'विलीन हो जाय'; जेगे . मिलाय—जागे रहो, जागे रहो, वर्षों की साध क्षण भर में विलीन हो जाती है।

१२. एमन .. बरिषाय—ऐसे दिन, ऐसी घनघोर वर्षा में उससे कहा जा सकता है; एमन ..याय—ऐसे दिन मन खोला जा सकता है (मन की बात कही जा सकती है), तपनहीन—सूर्यविहीन; घन तमसाय—घन अंधकार में;

से कथा शुनिवे ना केह् आर,
निभृत निर्जन चारि धार।
दुजने मुखोमुखि, गभीर दुखे दुखि,
आकाशे जल झरे अनिवार—
जगते केह् येन नाहि आर॥
समाज संसार मिछे सव,
मिछे ए जीवनेर कलरव।
केवल आँखि दिये आँखिर सुधा पिये
हृदय दिये हृदि अनुभव—
आँधारे मिशे गेछे आर सव॥
ताहाते ए जगते क्षति कार,
नामाते पारि यदि मनोभार।
श्रावणवरिषने एकदा गृहकोणे
दु कथा वलि यदि काछे तार,
ताहाते आसे यावे किवा कार॥
व्याकुल वेगे आजि वहे वाय,
विजुलि थेके थेके चमकाय।

से . आर—वह वात और कोई नही सुनेगा, चारि धार—चारो ओर, दुजने मुखोमुखि—दोनो आमने सामने है, दुखि—दुखी, आकाशे अनिवार—आकाश से निरतर वर्षा हो रही है, जगते आर—ससार मे जैसे और कोई नही है, मिछे सव—सव मिथ्या है, केवल सव—केवल आँखो से आँखो का अमृत पीकर, हृदय से हृदय का अनुभव करना है, और सव अधकार मे घुलमिल गया है; ताहाते .. मनोभार—यदि मन के भार को उतार सकूँ (हल्का कर सकूँ) तो उससे इस ससार मे किसकी क्षति होगी; श्रावणवरिषने कार—श्रावण की वर्षा मे किसी समय घर के कोने मे यदि उससे दो वाते कहूँ तो उससे किसीका क्या आता जाता है; व्याकुल चमकाय—आज व्याकुल वेग से हवा वहती है, विजली रह रह कर चमकती है; ये कथा वरिषाय—

ये कथा ए जीवने रहिया गेल मने
से कथा आजि येन बला याय—
एमन घनघोर बरिषाय ।।

१८९०

१३

आमार परान लये की खेला खेलावे, ओगो
परानप्रिय ।
कोथा हते भेसे कूले लेगेछे चरणमूले
तुले देखियो ।।
ए नहे गो तृणदल, भेसे आसा फुलफल—
ए ये व्यथाभरा मन, मने राखियो ।।
केन आसे केन याय केह ना जाने ।।
के आसे काहार पाशे किसेर टाने ।
राख यदि भालोवेसे चिरप्राण पाइवे से,
फेले यदि याओ तवे बाँचिबे कि ओ ।।

१८९४

बात इस जीवन में मन में ही रह गई वह बात आज जैसे इस घनघोर वर्षा में कही जा सकती है।

१३. आमार . परानप्रिय—मेरे प्राणों को ले कर, हे प्राणप्रिय, कौन सा खेल खिलाओगे; कोथा . भेसे—कहाँ से बह कर; लेगेछे—लगा है; तुले देखियो—उठा कर देखना, ए नहे—यह नहीं है; भेसे आसा—बह कर आए हुए, ए .... मन—यह तो व्यथा से भरा हुआ मन है; मने राखियो—याद रखना; केन .. जाने—क्यों आता है, क्यों जाता है, कोई नहीं जानता; के. टाने—कौन किस के पास किस आकर्षण से आता है; राख से—अगर प्यार से (इसे) रखो (तो) यह चिरप्राण पाएगा; फेले ओ—अगर (दूर) फेंक जाओ तब क्या यह बचेगा।

१४

के दिल आवार आघात आमार दुयारे।
ए निशीथकाले के आसि दाँड़ाले, खुँजिते आसिले काहारे।।
वहुकाल हल वसन्तदिन एसेछिल एक अतिथि नवीन
आकुल जीवन करिल मगन अकूल पुलकपाथारे।।
आजि ए वरषा निविड़तिमिर, झरो झरो जल, जीर्ण कुटीर—
वादलेर वाये प्रदीप निवाये जेगे वसे आछि, एका रे।
अतिथि अजाना, तव गीतसुर लागितेछे काने भीपणमधुर—
भावितेछि मने याव तव सने अचेना असीम आँधारे।।

१८९५

१५

वाजिल काहार वीणा मधुर स्वरे
आमार निभृत नव जीवन-'परे।
प्रभातकमलसम फुटिल हृदय मम
कार दुटि निरुपम चरण-तरे।।
जेगे उठे सव शोभा, सव माधुरी।
पलके पलके हिया पुलके पूरि।

---

१४ के दुयारे—मेरे दरवाजे पर किसने फिर आघात किया; ए काहारे—इस अर्धरात्रि मे कौन आ कर खडा हुआ, किन्हे खोजता आया, हल—हुआ, एसेछिल—आया था, करिल—किया, पुलक पाथारे—पुलक के समुद्र में, ए—यह; वादलेर एका रे—वरसात की हवा से दीप वुझा कर अकेली जगी हुई वैठी हूँ; अजाना—अज्ञात; अतिथि मधुर—हे अनजाने अतिथि, तुम्हारे गीत का सुर कानो को भीपण-मधुर लग रहा है; भावितेछि आंधारे—मन में सोच रही हूँ कि तुम्हारे साथ अपरिचित असीम अंधकार में जाऊँगी।

१५ वाजिल स्वरे—किसकी वीणा मधुर स्वर में वजी, आमार—मेरे; नव जीवन-'परे—तरुण जीवन पर, सम—समान, फुटिल—खिला; कार.. तरे—किसके दो निरुपम चरणो के निमित्त, जेगे उठे—जाग उठती हैं; पलके .पूरि—क्षण-क्षण हृदय पुलक से भर उठता है; कोथा ..जागरण—

कोथा हते समीरण 	आने नव जागरण,
परानेर आवरण मोचन करे ॥
लागे बुके सुखे दुखे कत ये व्यथा,
केमने बुझाये कव ना जानि कथा ।
आमार वासना आजि 	त्रिभुवने उठे बाजि,
काँपे नदी वनराजि वेदनाभरे ॥

१८९५

१६

बडो विस्मय लागे 	हेरि तोमारे ।
कोथा हते एले तुमि 	हृदिमाझारे ।
ओइ मुख ओइ हासि 	केन एत भालोबासि,
केन गो नीरवे भासि 	अश्रुधारे ॥
तोमारे हेरिया येन 	जागे स्मरणे
तुमि चिरपुरातन 	चिरजीवने ।
तुमि ना दाँड़ाले आसि 	हृदये वाजे ना वाँशि—
यत आलो यत हासि 	डुबे आँधारे ॥

१८९५

कहाँ से हवा नव जागरण लाती है; परानेर . करे—प्राणों के आवरण को दूर करती है; लागे . व्यथा—सुख-दुःख से हृदय में कितनी व्यथा होती है, केमने . कथा—कैसे समझा कर कहूँ, कहना नहीं जानता, आमार . बाजि—आज मेरी वासना त्रिभुवन में बज उठती है; काँपे—काँपती है; वेदनाभरे—वेदना से भर कर।

१६. बडो . तोमारे—तुम्हें देखकर अत्यन्त विस्मय होता है; कोथा . . माझारे—कहाँ से तुम हृदय के बीच आए; ओइ . . भालोबासि—उस मुख, उस हँसी को क्यों इतना प्यार करता हूँ; केन . अश्रुधारे—अजी क्यों आँसुओं की धारा में चुपचाप बहता हूँ; तोमारे. . स्मरणे—तुम्हें देख कर जैसे स्मृति में जाग उठता है; तुमि. आँधारे—सामने आ कर तुम्हारे खड़े हुए बिना हृदय में बाँसुरी नहीं बजती (और) जितना आलोक, जितनी हँसी है (सब) अन्धकार में डूब जाती है।

१७

आमार मन माने ना—दिनरजनी।
आमि की कथा स्मरिया ए तनु भरिया पुलक राखिते नारि।
ओगो की भाविया मने ए दुटि नयने उथले नयनवारि—
ओगो सजनि ।।
से सुधावचन, से सुखपरश, अङ्गे वाजिछे वाँशि।
ताइ शुनिया शुनिया आपनार मने हृदय हय उदासी—
केन ना जानि ।।
ओगो, वातासे की कथा भेसे चले आसे, आकाशे की मुख जागे।
ओगो, वनमर्मरे नदीनिर्झरे की मधुर सुर लागे।
फुलेर गन्ध वन्धुर मतो जडाये धरिछे गले—
आमि ए कथा, ए व्यथा, सुख-व्याकुलता काहार चरणतले
दिव निछनि ।।

१८९६

१८

आमि चिनि गो चिनि तोमारे ओगो विदेशिनी।
तुमि थाक सिन्धुपारे ओगो विदेशिनी ।।

---

१७ आमार ना—मेरा मन नही मानता; आमि नारि—मैं कौन-सी वात याद कर इस शरीर में पुलक भर कर रख नही पाती (आनन्द अँट नही पाता, उद्वेलित हो उठता है), ओगो .. वारि—मन में क्या सोच कर इन दोनो आँखो में आँसू उमड उठते हैं; से वाँशि—वह अमृत (के समान मीठी) वाणी, वह आनन्द (देने वाला) स्पर्श—(मेरे) अग (प्रत्यंग) मे वाँसुरी ध्वनित हो रही है; ताइ जानि—उसे सुन सुन कर अपने आप हृदय उदास हो उठना है, क्यो (ऐसा होता है) नही जानती, ओगो आसे—हवा में कौन सी वात वह कर चली आती है, आकाशे जागे—आकाश मे कौन सा मुख जागता है (उदित होता है), की. लागे—कैसा मधुर सुर लगता है, फुलेर गले—फूलो का गन्ध वन्धु के समान आ गले से लग रहा है, आमि निछनि—मैं (अपनी) यह वात, यह व्यथा, आनन्द की व्याकुलता किसके चरणो में न्योछावर करूँगी।

१८ आमि विदेशिनी—अजी ओ विदेशिनी, मैं तुम्हे पहचानता हूँ, पा-

तोमाय देखेछि शारदप्राते, तोमाय देखेछि माधवी राते,
तोमाय देखेछि हृदि-माझारे ओगो विदेशिनी ॥
आमि आकाशे पातिया कान शुनेछि शुनेछि तोमारि गान,
आमि तोमारे सँपेछि प्राण ओगो विदेशिनी ।
भुवन भ्रमिया शेषे आमि एसेछि नूतन देशे,
आमि अतिथि तोमारि द्वारे ओगो विदेशिनी ॥
१८९६

१९

आहा, जागि पोहालो विभावरी ।
क्लान्त नयन तव सुन्दरी ॥
म्लान प्रदीप उषानिलचञ्चल, पाण्डुर शशधर गत-अस्ताचल,
मुछ आँखिजल, चल' सखि चल' अङ्गे नीलाञ्चल सम्वरि ॥
शरत-प्रभात निरामय निर्मल, शान्त समीरे कोमल परिमल,
निर्जन वनतल शिशिरसुशीतल, पुलकाकुल तरुवल्लरी ।
विरहशयने फेलि मलिन मालिका एस नव भुवने एस गो बालिका;
गाँथि लह अञ्चले नव शेफालिका, अलके नवीन फुलमञ्जरी ॥
१८९६

जानता हूँ; तुमि . पारे—तुम समुद्र-पार रहती हो; तोमाय . ..राते—तुम्हें शरद् के प्रात (और) वसन्त की रात में देखा है; तोमाय.. माझारे—तुम्हें हृदय के भीतर देखा है, आमि.. ..गान—मैंने आकाश में कान लगा कर तुम्हारा ही गान सुना है, आमि ..प्राण—मैंने अपने प्राण तुम्हें सौंप दिए हैं; भुवने .देशे—(समस्त) भुवन का भ्रमण कर अन्त में मैं नवीन देश में आया हूँ; आमि.. ..द्वारे—मैं तुम्हारे ही द्वार पर अतिथि हूँ।

१९ जागि.. विभावरी—जाग कर रात्रि बीती; मुछ . सम्वरि—आँखों के जल को पोंछ कर, अंगों पर नील अञ्चल को संभाल कर चलो, सखि, चलो, फेलि—फेंक कर; एस—आओ; गाँथि लह—गूँथ लो।

२०

ओहे सुन्दर, मरि मरि,
तोमाय की दिये वरण करि।।
तव फाल्गुन येन आसे
आजि मोर परानेर पाशे,
देय सुधारसधारे-धारे
मम अञ्जलि भरि भरि।।
मधु समीर दिगञ्चले—
आने पुलकपूजाञ्जलि,
मम हृदयेर पथतले
येन चञ्चल आसे चलि।
मम मनेर वनेर शाखे
येन निखिल कोकिल डाके,
येन मञ्जरीदीपशिखा
नील अम्बरे राखे धरि।।

१८९६

२१

की रागिणी वाजाले हृदये मोहन, मनोमोहन,
ताहा तुमि जान हे, तुमि जान।।

---

२० मरि मरि—सौन्दर्य आदि को देख विस्मय, प्रशंसा आदि को सूचित करने वाला अव्यय; बलि जाऊँ, बलि जाऊँ, तोमाय करि—क्या दे कर तुम्हें वरण करूँ; तव पाशे—आज जैसे तुम्हारा फाल्गुन मेरे प्राणों के पास आता है; पाशे—पार्श्व मे, देय—देता है; भरि-भरि—भर भर कर, मधु पूजाञ्जलि—मादक (वसन्त की) हवा दिशाओं के अञ्चल में पुलक रूपी पूजा की अञ्जलि लाती है; येन चलि—जैसे चञ्चल चला आता है; येन धरि—जैसे नील आकाश मञ्जरी की दीपशिखा को सँजोए है।

२१. की मोहन—मनोमोहन, हृदय मे कौन-सी मोहक रागिणी (तुमने) वजाई, ताहा जान—वह तुम जानते हो; चाहिले प्राण—(मेरे) [illegible]

चाहिले मुखपाने, की गाहिले नीरवे,
किसे मोहिले मन प्राण,
ताहा तुमि जान हे, तुमि जान ।।
आमि शुनि दिवारजनी
तारि ध्वनि, तारि प्रतिध्वनि ।
तुमि केमने मरम परशिले मम,
कोथा हते प्राण केड़े आन,
ताहा तुमि जान हे, तुमि जान ।।

१८९६

२२

चित्त पिपासित र
गीतसुधार तरे ।।
तापित शुष्कलता वर्षण याचे यथा
कातर अन्तर मोर लुण्ठित धूलि-'परे
गीतसुधार तरे ।।
आजि वसन्तनिशा, आजि अनन्त तृषा,
आजि ए जाग्रत प्राण तृषित चकोर-समान
गीतसुधार तरे ।।

की ओर देखा, नीरव कौन-सा गान गाया, (न-जाने) किस (मंत्र) से मन-प्राण को मोह लिया; आमि . ध्वनि—मैं रात दिन उसीकी ध्वनि सुनती हूँ; तुमि . मम—तुमने कैसे (मेरे) मर्म का स्पर्श किया; कोथा . आन—कहाँ से तुम प्राणों को छीन कर ले आते हो।

२२ तरे—के लिये; तापित . तरे—झुलसी हुई शुष्कलता जैसे वर्षा की याचना करती है, (उसी प्रकार) मेरा कातर हृदय गीतरूपी सुधा के लिये धूलि के ऊपर लुण्ठित है; चन्द्र . .भवे—चन्द्रमा, निद्राविहीन आकाश में—

चन्द्र अतन्द्र नभे जागिछे सुप्त भवे,
अन्तर वाहिर आजि काँदे उदास स्वरे
गीतसुधार तरे ।।

१८९६

२३

तोमार गोपन कथाटि सखी, रेखो ना मने ।
शुधु आमाय, बोलो आमाय गोपने ।।
ओगो धीरमधुरहासिनी, बोलो धीरमधुर भाषे—
आमि काने ना शुनिब गो, शुनिब प्राणेर श्रवणे ।।
यबे गभीर यामिनी, यबे नीरव मेदिनी,
यबे सुप्तिमगन विहगनीड कुसुमकानने,
बोलो अश्रुजड़ित कण्ठे, बोलो कम्पित स्मित हासे—
बोलो मधुरवेदनविधुर हृदये शरमनमित नयने ।।

१८९६

२४

तबु मने रेखो यदि दूरे याइ चले ।
यदि पुरातन प्रेम ढाका पडे याय नवप्रेमजाले ।

सुप्त ससार में—जाग रहा है; अन्तर . स्वरे—आज अन्तर और बाहर उदास स्वर में रो रहे हैं।

२३ तोमार मने—सखी, अपनी गोपन बात मन मे न रखो; शुधु . गोपने—केवल मुझसे, गुपचुप मुझसे कहो; आमि . श्रवणे—मैं कानो से नही सुनूंगा, अजी, प्राणो के श्रवण (कानो) से सुनूंगा; यबे—जब, विधुर—कातर; शरमनमित नयने—लज्जा से झुकी हुई आंखों से।

२४. तबु चले—अगर दूर चला जाऊं तोभी याद रखना, यदि . जाले—अगर पुराना प्रेम नये प्रेम के जाल से ढँक जाय; यदि काछावाधि—

यदि थाकि काछाकाछि,
देखिते ना पाओ छायार मतन आछि ना आछि—
तबु मने रेखो।
यदि जल आसे आँखिपाते,
एक दिन यदि खेला थेमे याय मधुराते,
एक दिन यदि बाधा पडे काजे शारद प्राते—
तबु मने रेखो।
यदि पड़िया मने
छलछलो जल नाइ देखा देय नयनकोणे—
तबु मने रेखो॥

१८९६

२५

तुमि येयो ना एखनि।
एखनो आछे रजनी॥
पथ विजन तिमिरसघन,
कानन कण्टकतरुगहन— आँधारा धरणी॥
बडो साधे ज्वालिनु दीप, गाँथिनु माला—
चिरदिने बँधु, पाइनु हे तव दरशन।

यदि निकट रहें, देखिते . आछि—छाया के समान हैं या नहीं, यदि न देख पाओ; यदि . पाते—यदि नयन-पल्लवों में आँसू आए; थेमे याय—थम जाय, रुक जाय; यदि .कोणे—याद आने पर (भी) अगर आँखों के कोने में छलछलाते हुए आँसू दिखाई न पड़ें।

२५ तुमि. .एखनि—तुम अभी न जाना; एखनो.. रजनी—अभी भी रात्रि (बाकी) है, आँधारा—अन्धकार पूर्ण; बडो दीप—बड़ी साध से दीप जलाया था, गाँथिनु माला—माला गूँथी थी; चिरदिने .दरशन—हे बन्धु, बहुत दिनों में तुम्हारे दर्शन पाए, आजि.. पारे—आज अकूल के पार

आजि याव अकूलेर पारे,
भासाव प्रेमपारावारे जीवनतरणी ।।

१८९६

२६

तुमि रबे नीरवे हृदये मम
निविड़ निभृत पूर्णिमानिशीथिनी-सम ।।
मम जीवन यौवन मम अखिल भुवन
तुमि भरिवे गौरवे निशीथिनी-सम ।।
जागिवे एकाकी तव करुण आँखि,
तव अञ्चलछाया मोरे रहिवे ढाकि।
मम दु:खवेदन मम सफल स्वपन
तुमि भरिवे सौरभे निशीथिनी-सम ।।

१८९६

२७

वड़ो वेदनार मतो वेजेछ तुमि हे आमार प्राणे;
मन ये केमन करे मने मने ताहा मनइ जाने ।।
तोमारे हृदये क'रे आछि निशिदिन ध'रे;
चेये थाकि आँखि भ'रे मुखेर पाने ।।

जाऊँगी, भासाव. तरणी—जीवन की नौका प्रेम के समुद्र में बहा दूँगी।

२६ तुमि .. मम—नीरव तुम मेरे हृदय में रहोगी, तुमि भरिवे—तुम भरोगी, जागिवे—जागेगी; तव ढाकि—तुम्हारे अञ्चल की छाया मुझे ढँके हुए रहेगी, स्वपन—स्वप्न।

२७ वड़ो. प्राणे—वडी व्यथा के समान तुम मेरे प्राणों में बसक उठे हो; मन जाने—मन कैसा करता है मन ही मन, इसे मन ही जानता है, तोमारे.. ध'रे—रात दिन तुम्हे हृदय मे रखे हुए हैं; चेये पाने—भर-

वड़ो आशा, वड़ो तृषा, वड़ो आकिञ्चन तोमारि लागि।
वड़ो सुखे, वड़ो दुखे, वड़ो अनुरागे रयेछि जागि।
ए जन्मेर मतो आर हये गेछे या हवार,
भेसे गेछे मन प्राण मरण-टाने ॥

१८९६

२८

से आसे धीरे
याय लाजे फिरे।
रिनिकि रिनिकि रिनिझिनि मञ्जु मञ्जु मञ्जीरे
रिनिझिनि-झिन्नीरे।
विकच नीपकुञ्जे निविड़ तिमिरपुञ्जे
कुन्तलफुलगन्ध आसे अन्तरमन्दिरे
उन्मद समीरे
शङ्कित चित कम्पित अति, अञ्चल उड़े चञ्चल।
पुष्पित तृणवीथि, झंकृत वनगीति—
कोमलपदपल्लवतलचुम्बित धरणीरे
निकुञ्जकुटीरे ॥

१८९६

आँख (तुम्हारे) मुख की ओर निहारता रहता हूँ; वड़ो—बड़ी; वड़ो.. लागि—तुम्हारे लिये बड़ी दयनीय (विनीत) कामना है; वड़ो.... जागि—बड़े सुख, बड़े दुःख, बड़े अनुराग में (तुम्हारे लिये) जागा हुआ हूँ; ए जन्मेर..... हवार—जो कुछ होना था वह इस जन्म भर के लिये हो गया; भेसे. ..टाने—मृत्यु के खिंचाव में मन-प्राण बह गए हैं।

२८. से.... फिरे—वह धीरे आती है और लज्जा में फिर जाती है; मञ्जीर—नूपुर; कुन्तल .... मन्दिरे—कुन्तल (केश राशि) रूपी फूल का गन्ध हृदय रूपी मन्दिर में आता है।

२९

सखी, आमारि दुयारे केन आसिल
निशिभोरे योगी भिखारि।
केन करुणस्वरे वीणा बाजिल ।।
आमि आसि याइ यतवार चोखे पडे मुख तार,
तारे डाकिब कि फिराइब ताइ भावि लो ।।
श्रावणे आँधार दिशि, शरते विमल निशि,
वसन्ते दक्षिण वायु, विकशित उपवन—
कत भावे कत गीति गाहितेछे निति निति—
मन नाहि लागे काजे, आँखिजले भासि लो ।।

१८९६

३०

के उठे डाकि मम वक्षोनीड़े थाकि
करुण मधुर अधीर ताने विरहविधुर पाखि ।।
निविड़ छाया, गहन माया, पल्लवघन निर्जन वन—
शान्त पवने कुञ्जभवने के जागे एकाकी ।।
यामिनी विभोरा निद्राघनघोरा—
घन तमालशाखा निद्राञ्जन-माखा।

---

२९ सखी ... भिखारि—सखी, योगी भिखारी (आज) प्रातः क्यो मेरे ही दरवाज़े पर आया; केन .वाजिल—क्यो करुणस्वर मे वीणा बजी; आमि . तार—मै जितनी बार आती जाती हूँ उसका मुख दृष्टि मे पडता है, तारे लो—सखि, उसको पुकारूँ या लौटाऊँ यही सोचती हूँ; श्रावण दिशि—सावन मे दिशाएँ अँधेरी रहती है; कत—कितने, गाहितेछे निति—बराबर गा रहा है; मन काजे—काम काज मे मन नहीं लगता, आँखि लो—सखि, आँखो के आँसुओ में बही जाती हूँ।

३०. के डाकि—कौन पुकार उठता है; थाकि—रह कर, पाखि—पक्षी; के जागे—कौन जाग रहा है; विभोरा—विभोर, विह्वल; निद्राञ्जन-

स्तिमित तारा चेतनहारा, पाण्डु गगन तन्द्रामगन—
चन्द्र श्रान्त दिकभ्रान्त निद्रालस-आँखि ।।

१८९६

३१

केन नयन आपनि भेसे याय जले ।
केन मन केन एमन करे ।।
येन सहसा की कथा मने पड़े—
मने पड़े ना गो, तवु मने पड़े ।।

चारि दिके सव मधुर नीरव,
केन आमारि परान कँदे मरे ।
केन मन केन एमन केन रे ।।

येन काहार वचन दियेछे वेदन,
येन के फिरे गियेछे अनादरे—
वाजे तारि अयतन प्राणेर 'परे ।
येन सहसा की कथा मने पड़े—
मने पड़े ना गो, तवु मने पड़े ।।

१८९६

माखा—निद्रा का अञ्जन लेप किए हुए है; स्तिमित—निश्चल, जड़; चेतनहारा—चेतनाहीन, पाण्डु—पीलापन मिला हुआ सफेद वर्ण ।

३१. केन . जले—आँखें क्यों अपने आप ही जल में बह जाती हैं, केन ..करे—क्यों, मन क्यों ऐसा करता है; येन पड़े—जैसे सहसा जाने कौन-सी बात याद आती है; मने पड़े—याद नहीं आती, तो भी याद आती है; चारि दिके—चारों ओर, केन.. .मरे—क्यों मेरे ही प्राण रो रो कर मरते हैं; येन... वेदन—जैसे किसी की बातों ने व्यथा दी है (व्यथा पहुँचाई है); येन..... अनादरे—जैसे कोई अनादर के कारण लौट गया है; वाजे... .परे—प्राणों में उसके प्रति की गई अवहेलना बसती है ।

३२

आमि चाहिते एसेछि शुधु एकखानि माला
तव नव प्रभातेर नवीन शिशिर-ढाला ।।
हेरो शरमे-जड़ित कत-ना गोलाप कत-ना गरवि करवी,
ओगो, कत-ना कुसुम फुटेछे तोमार मालञ्च करि आला ।।
ओगो, अमल शरत-शीतल-समीर वहिछे तोमारि केशे,
ओगो किशोर अरुण-किरण तोमार अधरे पडेछे एसे ।
तव अञ्चल हते वनपथे फुल येतेछे पडिया झरिया—
ओगो, अनेक कुन्द अनेक शेफालि भरेछे तोमार डाला ।।

१९००

३३

ओगो काङाल, आमारे काङाल करेछ, आरो की तोमार चाइ ।
ओगो भिखारि, आमार भिखारि, चलेछ की कातर गान गाइ' ।।
प्रतिदिन प्राते नव नव धने तुषिव तोमारे साध छिल मने—

---

३२ आमि . ढाला—मैं तुम्हारे नव प्रभात के नवीन ओस कणो से भीगी हुई केवल एक माला माँगने आया हूँ, शरमे आला—शरमाए हुए कितने गुलाव, कितने गरवीले कनेर के फूल और न-जाने कितने (प्रकार के) पुष्प तुम्हारी फुलवाडी को आलोकित किए हुए खिले हुए हैं, वहिछे केशे—तुम्हारे केशो में बह रहा है, तोमार एसे—तुम्हारे अधरो पर आ कर पडी है, अञ्चल . झरिया—वन के रास्ते में आँचल से फूल झडकर गिरते जा रहे हैं, अनेक डाला—अनेक कुन्द, अनेक शेफाली ने तुम्हारे फूलो की डलिया को भरा है।

३३. काङाल—कगाल (नि स्व), ओगो . चाइ—अजी ओ कगाल, (तुमने) मुझे कंगाल वनाया है, और तुम्हें क्या चाहिए; आमार भिखारि—मेरे भिखारी; चलेछ गाइ—कैसा कातर गान गाते हुए चले हो, प्रतिदिन . मने—मन मे साध थी कि प्रतिदिन प्रात नये नये धन से तुम्हे तुष्ट करूँगी, पलके नाइ—पल भर में सभी कुछ चरणो में सौंप दिया

भिखारि आमार भिखारि,

हाय, पलके सकलइ सँपेछि चरणे, आर तो किछुइ नाइ ॥

आमि आमार बुकेर आँचल घेरिया तोमारे परानु वास।

आमि आमार भुवन शून्य करेछि तोमार पुराते आशा।

हेरो मम प्राण मन यौवन नव करपुटतले पड़े आछे तव—

भिखारि आमार भिखारि,

हाय, आरो यदि चाओ मोरे किछु दाओ, फिरे आमि दिब ताइ ॥

१९००

३४

केन वाजाओ काँकन कनकन कत छलभरे।

ओगो घरे फिरे चलो कनककलसे जल भरे ॥

केन जले ढेउ तुलि छलकि छलकि कर खेला।

केन चाह खने खने चकित नयने कार तरे कत छलभरे ॥

हेरो यमुना-वेलाय आलसे हेलाय गेल वेला,

यत हासिभरा ढेउ करे कानाकानि कलस्वरे कत छलभरे।

है, अब और तो कुछ नहीं है; आमि......वास—अपनी छाती के आँचल से घेर कर मैंने तुम्हें वस्त्र पहनाया है; आमि .....आशा—तुम्हारी आस पूरी करने के लिये मैंने अपने समस्त संसार को शून्य (रिक्त) कर दिया है; करपुटतले ... तव—तुम्हारे दोनों हाथों (मुट्ठी) में पड़ा हुआ है; आरो ... ताइ—यदि और भी चाहते हो तो मुझे कुछ दो, मैं उसे ही लौटा दूँगी।

३४. केन . .कनकन—क्यों कंकण खनखन बजाती हो; कत—कितना; छलभरे—भान करती हुई; ओगो . . . भरे—अजी, सोने की कलसी जल से भर घर लौट चलो; केन ... खेला—क्यों जल में लहरें उठा कर छल छल करती हुई क्रीड़ा कर रही हो; केन ... तरे—क्षण-क्षण क्यों चौंकी हुई दृष्टि से किसकी बाट जोहती हुई देख रही हो; हेरो.. .वेला—देखो, यमुना के किनारे आलस और अवहेला में कितनी वेला गई (कितना समय बीत गया); यत ...कलस्वरे—हँसी भरी जितनी लहरें हैं, कलकल स्वर में कानों-कान छल से बातें कर रही हैं; हेरो. .मेघमेला—देखो, नदी के उस पार आकाश की

हेरो नदीपरपारे गगनकिनारे मेघमेला,
तारा हासिया हासिया चाहिछे तोमारि मुख'परे कत छलभरे ।।
१९००

३५

तुमि सन्ध्यार मेघमाला, तुमि आमार साधेर साधना,
मम शून्यगगनविहारी ।
आमि आपन मनेर माधुरी मिशाये तोमारे करेछि रचना—
तुमि आमारि, तुमि आमारि,
मम असीमगगनविहारी ।।

मम हृदयरक्तरागे तव चरण दियेछि राङिया,
अयि सन्ध्यास्वपनविहारी ।
तव ✓ अधर एँकेछि सुधाविषे मिशे मम सुखदुख भाङिया—
तुमि आमारि, तुमि आमारि,
मम विजनजीवनविहारी ।।

मम मोहेर स्वपन-अञ्जन तव नयने दियेछि पराये,
अयि मुग्धनयनविहारी ।

सीमा पर (क्षितिज में) मेघो का मेला लगा है; तारा 'परे—वे हँस हँस कर तुम्हारे ही मुख को निहार रहे हैं।

३५ तुमि . साधना—तुम सन्ध्या की मेघमाला हो, तुम मेरी (एकान्त) साध की साधना हो; आमि. रचना—अपने मन की मधुरिमा को मिला कर मैंने तुम्हारी रचना की है, तुमि आमारि—तुम मेरी ही हो; रागे—रंग में; तव राङिया—तुम्हारे चरणो को रंग दिया है; तव भाङिया—अपने सुख-दुःख को चूर्ण-विचूर्ण कर सुधा और विष मिला कर तुम्हारे अधरो का चित्रण किया है; मम . .पराये—अपने मोह के सपनो का अञ्जन तुम्हारे नयनों में

मम　सगीत तव अङ्गे अङ्गे दियेछि जडाये जड़ाये—
तुमि　आमारि, तुमि आमारि,
मम　जीवन-मरण-विहारी।

१९००

३६

भालोबेसे सखी, निभृते यतने
आमार नामटि लिखो—तोमार
मनेर मन्दिरे।
आमार पराने ये गान बाजिछे
ताहारि तालटि शिखो—तोमार
चरणमञ्जीरे॥
धरिया राखियो सोहागे आदरे
आमार मुखर पाखि—तोमार
प्रासादप्राङ्गणे।
मने क'रे सखी, बाँधिया राखियो
आमार हातेर राखि—तोमार
कनककङ्कणे॥
आमार लतार एकटि मुकुल
भुलिया तुलिया रेखो—तोमार
अलकबन्धने।

लगा दिया है; मम... जड़ाये—अपने संगीत से तुम्हारे अंग-अंग को आवृत कर दिया है।

३६. भालोबेसे ...मन्दिरे—सखी, एकान्त मे यत्न (सानुराग मनोयोग) से दुलार के साथ मेरा नाम अपने मन के मन्दिर मे अंकित करना; आमार... ...मञ्जीरे—मेरे प्राणों में जो गान ध्वनित हो रहा है उसी का ताल अपने चरण-नूपुरों में सीखना; धरिया ...प्राङ्गणे—अत्यन्त आदर और दुलार के साथ अपने प्रासाद-प्राङ्गण मे मेरे मुखर पक्षी को पकड़ रखना; मने... कङ्कणे—याद कर के सखी, मेरे हाथ की राखी अपने सोने के कंगन में बाँध रखना; आमार ...बन्धने—मेरी

आमार स्मरण-शुभ-सिन्दूरे
एकटि विन्दु एँको—तोमार
ललाटचन्दने।
आमार मनेर मोहेर माधुरी
माखिया राखिया दियो—तोमार
अङ्गसौरभे।
आमार आकुल जीवनमरण
टुटिया लुटिया नियो—तोमार
अतुल गौरवे॥

१९००

३७

सखी, प्रतिदिन हाय एसे फिरे याय के।
तारे आमार माथार एकटि कुसुम दे॥
यदि शुधाय के दिल, कोन् फुलकानने,
मोर शपथ, आमार नामटि वलिस ने॥
सखी, से आसि धुलाय वसे ये तरुर तले
सेथा आसन विछाये राखिस वकुलदले।

लता की एक कली को भूल से चुन कर अपनी अलकों के वन्धन (कवरी) में रखना; आमार एँको—मेरे स्मरण के शुभ सिन्दूर से एक विन्दी अपने ललाट के चंदन पर अंकित करना; आमार. सौरभे—मेरे मन के मोह की माधुरी को अपने अङ्ग के सौरभ में प्रलेप कर रख देना; टुटिया—चूर्ण कर, लुटिया नियो—लूट लेना।

३७ सखी. के—सखी, हाय प्रतिदिन आ कर कौन लौट जाता है, तारे दे—उसे मेरे सिर का एक फूल देना; यदि . ने—अगर पूछे कि किसने दिया, किस फूल-वन में, (तो) मेरी सौगंध, मेरा नाम न बतलाना; सखी . वकुलदले—वह आ कर पेड़ के नीचे धूल में बैठता है, सखी, वहाँ वकुलदल का

से ये करुणा जागाय सकरुण नयने —
येन की वलिते चाय, ना वलिया याय से ।।

१९००

३८

आजि ये रजनी याय फिराइव ताय केमने ।
केन नयनेर जल झरिछे विफल नयने ।।
ए वेशभूषण लहो सखी, लहो, ए कुसुममाला हयेछे असह—
एमन यामिनी काटिल विरहशयने ।।
आमि वृथा अभिसारे ए यमुनापारे एसेछि,
वहि वृथा मन-आशा एत भालोवासा वेसेछि ।
शेषे निशिशेषे वदन मलिन, क्लान्तचरण, मन उदासीन,
फिरिया चलेछि कोन् सुखहीन भवने ।।
ओगो, भोला भालो तवे, काँदिया की हवे मिछे आर ।
यदि येते हल हाय प्राण केन चाय पिछे आर ।

आमन बिछा रखना; से ये ....नयने—करुण नयनों मे वह (हृदय में) करुणा जगाता है; येन ..से—जैसे कुछ कहना चाहता है (लेकिन) बिना कहे वह चला जाता है।

३८. आजि ..केमने—आज जो रजनी जा रही (समाप्त हो रही) है, उसे कैसे लौटाऊँगी, केन ..नयने—आँखों का जल (अश्रु) क्यों विफल नयनों से बह रहा है; ए. असह—सखी, यह वेशभूषा, यह अलंकार लो, यह कुसुम माला असह्य हो गई है; एमन ..शयने—ऐसी रात्रि विरह-शय्या पर कटी; आमि ..एसेछि—मैं व्यर्थ के अभिसार के लिये इस यमुना के किनारे आई हूँ; वहि ..वेसेछि—मन की वृथा आशा को वहन कर इतना अधिक प्यार किया है; शेषे—अन्त में; निशिशेषे—रात्रि के शेष में; फिरिया ..भवने—किस आनन्द-हीन भवन की ओर लौट चली हूँ; ओगो ..आर—अजी, (अगर) भूल जाना अच्छा है तब और व्यर्थ रोने से क्या होगा; यदि ..आर—हाय, अगर जाना (ही) हुआ (लौटना ही पड़ा) तब प्राण पीछे की ओर और क्यों

कुञ्जदुयारे अवोधेर मतो रजनीप्रभाते वसे रव कत—
एवारेर मतो वसन्त गत जीवने ।।

१९०३

३९

केन सारा दिन धीरे धीरे
वालु निये शुधु खेल तीरे ।।
चले गेल वेला, रेखे मिछे खेला
झाँप दिये पडो कालो नीरे।
अकूल छानिये या पाओ ता निये
हेसे केँदे चलो घरे फिरे ।।
नाहि जानि मने की वासिया
पथे वसे आछे के आसिया।
की कुसुमवासे फागुनवातासे
हृदय दितेछे उदासिया।
चल् ओरे एइ स्थापा वातासेइ
साथे निये सेइ उदासीरे ।।

१९०३

ताक रहे हे, अवोधेर मतो—नासमझ की तरह; रजनी . कत—रात बीतने पर प्रभातकाल में और कितना वैठी रहूँगी; एबारेर. जीवने—इस बार के लिये जीवन से वसन्त चला गया।

३९. केन—क्यो; वालु ..तीरे—वालू ले कर तीर पर केवल खेले ही जा रही हो; चले नीरे—वेला ढल गई, व्यर्थ के खेल को रख (छोड) काले जल मे कूद पडो, अकूल. फिरे—अकूल को छान जो पाओ उसे ले कर हँसती-रोती घर लौट चलो, नाहि आसिया—नही जानती, मन मे क्या कामना ले कर रास्ते में कौन आ कर वैठा हुआ है, की. उदासिया—किन फूलो के गन्ध (तथा) फागुन की हवा से हृदय को उदास बना रहा है, चल् उदासिरे—अरी, इसी पागल हवा में उस उदासीन को साथ ले कर चल पड।

४०

मम   यौवननिकुञ्जे गाहे पाखि—
  सखि, जाग' जाग'।
 मेलि राग-अलस आँखि—
अनु राग-अलस आँखि सखि, जाग' जाग'॥
 आजि चञ्चल ए निशीथे
 जाग' फागुनगुणगीते
 अयि प्रथमप्रणयभीते,
 मम नन्दन-अटवीते
पिक मुहु मुहु उठे डाकि—सखि, जाग' जाग'॥
 जाग' नवीन गौरवे,
 नव वकुलसौरभे,
 मृदु मलयवीजने
 जाग' निभृत निर्जने।
 आजि आकुल फुलसाजे
 जाग' मृदुकम्पित लाजे,
 मम हृदयशयन-माझे
 शुन मधुर मुरली बाजे
मम अन्तरे थाकि थाकि—सखि, जाग' जाग'॥

१९०३

४०. गाहे पाखि—पक्षी गाता है; जाग'—जागो; मेलि—खोल; पिक डाकि—कोकिल बारबार पुकार उठता है, फुलसाजे—फूलों की सज्जा, फूलों का आभरण, शुन—सुनो; शुन. जाग'—सुनो, मेरे अन्तर में रह रह कर मधुर मुरली बजती है, सखी जागो, जागो।

४१

अलके कुसुम ना दियो, शुधु शिथिल कवरी बाँधियो।
काजलविहीन सजल नयने हृदयदुयारे घा दियो ॥
आकुल आँचले पथिकचरणे मरणेर फाँद फाँदियो—
ना करिया वाद मने याहा साध, निदया, नीरवे साधियो ॥
एसो एसो विना भूषणेइ, दोष नेइ ताहे दोष नेइ;
ये आसे आसुक ओइ तव रूप अयतन-छाँदे छाँदियो।
शुधु हासिखानि आँखिकोणे हानि उतला हृदय धाँदियो ॥

१९०४

४२

निशि ना पोहाते जीवनप्रदीप ज्वालाइया याओ प्रिया,
तोमार अनल दिया ॥
कवे यावे तुमि समुखेर पथे दीप्त शिखाटि वाहि
आछि ताइ पथ चाहि ॥

---

४१. अलके बाँधियो—अलको मे कुसुम न देना, केवल कवरी को ढीला बाँधना, काजल दियो—काजल-विहीन सजल आँखो से (मेरे) हृदय-द्वार पर थपकी देना, आकुल फाँदिये—आकुल अंचल से पथिक के चरणो मे मरण की फाँस लगाना, ना साधियो—विना वाद-विवाद जो मन की साध हो (उसे) हे निठुरा, चुपचाप पूरी करना; एसो नेइ—विना भूषण के ही आओ, आओ, उस मे दोष नही, (कोई) दोष नही, ये छाँदियो—जो आवे, आवे, अपना वह रूप किसी प्रकार का प्रयास किये बिना (अयत्नज अलकार से) ही सजाना, शुधु धाँदियो—केवल आँखो के कोनों से हँसी का आघात कर आकुल हृदय को विमूढ करना।

४२ निशि दिया—रात्रि समाप्त होने के पहले हे प्रिये, अपनी अग्नि द्वारा (मेरा) जीवन प्रदीप जलाती जाओ, कबे चाहि—(न जाने) कब तुम सामने के पथ से जलती हुई शिखा ले कर जाओगी, इसीलिये रास्ता देख रहा हूँ,

पुड़िबे बलिया रयेछे आशाय आमार नीरव हिया
आपन आँधार निया ॥

१९०४

४३

आर नाइ रे बेला, नामल छाया धरणीते ।
एखन चल् रे घाटे कलसखानि भरे निते ॥
जलधारार कलस्वरे सन्ध्यागगन आकुल करे;
ओरे डाके आमाय पथेर 'परे सेइ ध्वनिते ॥
एखन विजन पथे करे ना केउ आसा याओया ।
ओरे, प्रेमनदीते उठेछे ढेउ, उतल हाओया ।
जानि ने आर फिरब किना, कार साथे आज हबे चिना—
घाटे सेइ अजाना बाजाय वीणा तरणीते ॥

१९०८

पुड़िबे ...निया—जल जाएगा इसी आशा में मेरा नीरव हृदय अपने अंधकार को लिए हुए है ।

४३. आर...बेला—अब और बेला (समय) नहीं है; नामल—उतरी, झुकी; एखन...निते—अरी, अब कलशी भर लेने के लिये घाट पर चल; जलधारा ..करे—जल की धारा का कल कल स्वर सन्ध्या के आकाश को आकुल करता है; ओरे...ध्वनिते—अरी, उसी ध्वनि में (वह) मुझे पथ पर बुलाता है ; एखन.. याओया—इस समय एकान्त पथ पर कोई भी आता-जाता नहीं; प्रेम.....ढेउ—प्रेमनदी में लहरें उठ रही हैं ; उतल हाओया—हवा चंचल (है); जानि...किना—नहीं जानती और लौटूंगी या नहीं; कार.... चिना—किसके साथ आज पहचान होगी, घाटे ...तरणीते—घाट पर वही अपरिचित नौका में वीणा बजा रहा है ।

४४

आमि रूपे तोमाय भोलाव ना, भालोवासाय भोलाव;
आमि हात दिये द्वार खुलव ना गो, गान दिये द्वार खोलाव।
भराव ना भूषणभारे, साजाव ना फुलेर हारे;
सोहाग आमार माला क'रे गलाय तोमार दोलाव॥
जानवे ना केउ कोन् तुफाने तरङ्गदल नाचवे प्राणे;
चाँदेर मतन अलख टाने जोयारे ढेउ तोलाव॥

१९१०

४५

कोथा वाइरे दूरे याय रे उड़े हाय रे हाय,
तोमार चपल आँखि वनेर पाखि वने पालाय।
ओगो हृदये यबे मोहन रवे वाजवे वाँशि
तखन आपनि सेधे फिरवे केँदे, परवे फाँसि,
तखन घुचबे त्वरा घुरिया मरा हेथा होथाय—
आहा, आजि से आँखि वनेर पाखि वने पालाय॥

---

४४ आमि . भोलाव—मै रूप से तुम्हे नही भुलाऊँगा, (अपने) प्यार से भुलाऊँगा, आमि .खोलाव—मं हाथ से द्वार नही खोलूगा, गान से द्वार खुलवाऊँगा, भराव भारे—गहनो के भार से (तुम्हें) वोझिल नही करूंगा; साजाव हारे—फूलो के हार से (तुम्हें) नही सजाऊँगा; सोहाग .दोलाव—अपने दुलार की माला वना कर तुम्हारे गले में झुलाऊँगा; जानवे. प्राणे—कोई नही जानेगा कि किस तूफान मे प्राणो में तरगें नाचेंगी; चाँदेर . तोलाव—चाँद के समान अलख आकर्षण से ज्वार की लहरे उठाऊँगा।

४५ कोथा उड़े—कहाँ, वाहर दूर उडी जा रही हैं; तोमार पालाय—तुम्हारी चचल आँखो (रूपी) वन के पक्षी वन की ओर भागते हैं; हृदये .. बाँशि—जव मोहने वाली आवाज मे हृदय मे वांसुरी वजेगी, तखन . फाँसि—उस समय अपनी ही साध से (स्वयप्रवृत्त हो कर) रोने लौटेंगे और फाँसी (का फदा) पहन लेगे, तखन होथाय—उस समय उतावली, अधीरता समाप्त हो जायगी, यहाँ वहाँ भटकते मरना वन्द हो जायगा,

चेये देखिस ना रे हृदयद्वारे के आसे याय,
तोरा शुनिस काने वारता आने दखिनवाय।
आजि फुलेर वासे सुखेर हासे आकुल गाने
चिर- वसन्त ये तोमारि खोँजे एसेछे प्राणे,
तारे वाहिरे खुँजि फिरिछ बुझि पागलप्राय—
तोमार चपल आँखि वनेर पाखि वने पालाय॥

१९१०

४६

खोलो खोलो द्वार, राखियो ना आर
वाहिरे आमाय दाँड़ाये।
दाओ साड़ा दाओ, एइ दिके चाओ,
एसो दुइ वाहु वाड़ाये॥
काज हये गेछे सारा, उठेछे सन्ध्यातारा।
आलोकेर खेया हये गेल दे'या
अस्तसागर पाराये॥
भरि लये झारि एनेछ कि वारि,
सेजेछ कि शुचि दुकूले।

चेये....याय—ताक कर देख ना, हृदय के द्वार पर कौन आता-जाता है; तोरा....वाय—तुम सुनना, दक्षिण पवन संदेश लाता है; आजि ....प्राणे—आज फूल के गंध में, सुख की हँसी में, व्याकुल गान में चिरवसन्त तुम्हारी ही खोज में प्राणों में आया है, तारे ...प्राय—लगता है, उसे पागल के समान बाहर खोजती फिर रही हो।

४६. राखियो. दाँड़ाये—मुझे और वाहर खड़ा कर न रखना; दाओ—दो, साड़ा दाओ—आह्वान का उत्तर दो; एइ.. चाओ—इस ओर निहारो, एसो....बाड़ाये—दोनों बाँहें बढ़ा (फैला) कर आओ; काज..तारा—कामकाज समाप्त हो गया है, सन्ध्या का तारा उदित हुआ है; आलोकेर.... पाराये—अस्तसागर को पार करके आलोक का खेवा देना समाप्त हो गया है; भरि....वारि—झारी भर कर क्या पानी लाई हो, सेजेछ.. दुकूले—क्या पावन दुकूल से सज लिया है; बेँधेछ..चुल—केशों को क्या बाँधा है;

वेँधेछ कि चुल, तुलेछ कि फुल,
गेँथेछ कि माला मुकुले।
धेनु एल गोठे फिरे, पाखिरा एसेछे नीड़े,
पथ छिल यत जुड़िया जगत
आँधारे गियेछे हाराये ।।

१९१०

४७

घरेते भ्रमर एल गुन्‌गुनिये।
आमारे कार कथा से याय शुनिये ।।
आलोते कोन् गगने माधवी जागल वने
एल सेइ फुल-जागानोर खवर निये।
सारा दिन सेइ कथा से याय शुनिये ।।
केमने रहि घरे, मन ये केमन करे,
केमने काटे ये दिन दिन गुनिये।
की माया देय वुलाये, दिल सव काज भुलाये,
वेला याय गानेर सुरे जाल वुनिये।
आमारे कार कथा से याय शुनिये ।।

१९११

तुलेछ फुल—क्या फूल चुने है, गेँथेछ . मुकुल—कलियो की माला गूंधी है क्या; धेनु नीड़े—गायें गोष्ठ में लौट आई, पक्षी नीड में आए, पथ . . हाराये—ससार-भर के जितने पथ थे (सव) अधकार में खो गए हैं।

४७. घरेते .. शुनिये—घर मे गुनगुनाता भ्रमर आया, मुझे वह किनकी वात सुना जाता है; आलोते—आलोक से; कोन्—किस; जागल—जागी; एल .नियें—वही फूलो को जगाने की खवर ले कर आया है, सारा शुनिये—समस्त दिन वही वात वह सुना जाता है; केमने फरे—घर में कैसे रहूँ, मन जाने कैसा-कैसा करता है, केमने गुनिये—दिन गिनते, दिन कैसे कटे; की . वुलाये—कैसा जादू का स्पर्श करा जाता है (कौन-सा जादू कर जाता है); दिल . भुलाये—(उसने) सभी कामकाज भुला दिए, वेला वुनिये—गान के सुर का जाल वुनते वेला ढल जाती है।

४८

तुमि एकटु केवल वसते दियो काछे
आमाय शुधु क्षणेक-तरे।
आजि हाते आमार या-किछु काज आछे
आमि साङ्ग करव परे॥
ना चाहिले तोमार मुखपाने
हृदय आमार विराम नाहि जाने,
काजेर माझे घुरे वेड़ाइ यत
फिरि कूलहारा सागरे॥
वसन्त आज उच्छ्वासे निश्वासे
एल आमार वातायने।
अलस भ्रमर गुञ्जरिया आसे,
फेरे कुञ्जेर जागरणे।
आजके शुधु एकान्ते आसीन
चोखे चोखे चेये थाकार दिन;
आजके जीवन-समर्पणेर गान
गाव नीरव अवसरे॥

१९१४

---

४८. तुमि . तरे—टुक क्षण भर के लिये केवल (अपने) पास मुझे बैठने देना; आजि . परे—आज मेरे हाथो मे जो कुछ भी कामकाज है उसे मैं बाद में पूरा करूँगा; ना . जाने—बिना तुम्हारे मुख की ओर देखे मेरा हृदय विश्राम नहीं जानता; काजेर... सागरे—कामकाज के भीतर जितना भटकता फिरता हूँ, (लगता है जैसे) कूल-हीन सागर में फिर रहा हूँ; एल—आया; आमार—मेरे; गुञ्जरिया आसे—गुञ्जार करता हुआ आता है; फेरे—फिरता है; भ्रमर—भँवरा, आजके.... दिन—आज केवल एकान्त में बैठ आँखों में आँखें डाले रहने का दिन है; गाव—गाऊँगा; अवसरे—अवकाश में।

४९

अनेक पाओयार माझे माझे कवे कखन एकटुखानि पाओया,
सेइटुकुतेइ जागाय दखिन हाओया।।
दिनेर परे दिन चले याय येन तारा पथेर स्रोतेइ भासा,
बाहिर हतेइ तादेर याओया आसा।
कखन् आसे एकटि सकाल से येन मोर घरेइ बाँधे वासा,
से येन मोर चिरदिनेर चाओया।।
हारिये-याओया आलोर माझे कणा कणा कुड़िये पेलेम यारे
रइल गाँथा मोर जीवनेर हारे।
सेइ-ये आमार जोड़ा-देओया छिन्न दिनेर खण्ड आलोर माला
सेइ निये आज साजाइ आमार थाला—
एक पलकेर पुलक यत, एक निमेषेर प्रदीपखानि ज्वाला,
एकताराते आधखाना गान गाओया।।

१९१८

---

४९ अनेक पाओया—अनेक (कुछ) पाने के बीच-बीच में कब, किस समय थोडा-सा पाना (प्राप्ति); सेइटुकुतेइ हाओया—वही थोडा-सा (पाना) दक्षिण पवन को जगाता है; दिनेर भासा—दिन पर दिन चले जाते हे, जैसे वे (दिन) पथ के स्रोत में ही वह रहे हो, बाहिर आसा—बाहर से ही उन का आना-जाना (होता है), कखन्. वासा—किसी समय एक भोर वेला आती है वह जैसे मेरे घर में ही रहने का स्थान बनाती है, से. चाओया—वह जैसे मेरी चिरदिन की चाह (काम्य) हो; हारिये हारे—खो जाने वाले प्रकाश के बीच कण-कण चुन कर जिसे पाया है वह मेरे जीवन के हार मे गुंथा हुआ रह गया, सेइ-ये—वह जो; जोड़ा-देओया—जुडे हुए (पैवन्द लगाए हुए); छिन्न—फटे हुए; सेइ . थाला—उसी को ले कर आज अपनी (पूजा की) थाली को सजाऊँ, एक . यत—एक क्षण का सारा पुलक; एक .. ज्वाला—एक निमेष के लिये दीपक जलाना; एकताराते . गाओया—एकतारे मे आधा गीत गाना।

५०

आमार एकटि कथा बाँशि जाने, बाँशिइ जाने ॥
भरे रइल बुकेर तला, कारो काछे हय नि बला,
केवल बले गेलेम बाँशिर काने काने ॥
आमार चोखे घुम छिल ना गभीर राते,
चेये छिलेम चेये-थाका तारार साथे ।
एमनि गेल सारा राति, पाइ नि आमार जागार साथि—
बाँशिटिरे जागिये गेलेम गाने गाने ॥

१९१८

५१

एकदा तुमि, प्रिये, आमारि ए तरुमूले
बसेछ फुलसाजे से कथा ये गेछ भुले ॥
सेथा ये बहे नदी निरवधि से भोले नि,
तारि ये स्रोते आँका बाँका बाँका तव वेणी,
तोमारि पदरेखा आछे लेखा तारि कूले ।
आजि कि सबइ फाँकि—से कथा कि गेछ भुले ॥

---

५०. आमार....जाने—मेरी एक बात बाँसुरी जानती है, बाँसुरी ही जानती है; भरे .. बला—हृदय के भीतर (अन्तस्तल में) भरी रही, किसीके निकट कही नहीं गई है; केवल . काने—केवल बाँसुरी के कानों में कह गया; आमार. .राते—गभीर रात्रि में मेरी आँखों में नींद न थी; चेये. . साथे—निहारने वाले तारे के साथ (मैं भी) निहार रहा था; एमनि .... साथि—इसी प्रकार सारी रात (बीत) गई, (मैंने) अपने जागरण का साथी नहीं पाया; बाँशिटिरे . गाने—बाँसुरी को गानोंगानों में जगा गया ।

५१. एकदा . भुले—प्रिये, मेरे ही इस वृक्ष के नीचे फूलों का शृंगार किए, कभी तुम बैठी हो, वह बात भूल ही गई हो; सेथा ....नि—वहाँ निरन्तर जो नदी बहती है, वह नहीं भूली; तारि ... वेणी—उसीके बाँके स्रोत में तुम्हारी बंकिम वेणी है; तोमारि. कूले—उसके किनारों में तुम्हारी ही पद-रेखा अंकित है; आजि. .फाँकि—आज क्या सभी छलना है; से ....भुले—यह बात

गेँथेछ ये रागिणी एकाकिनी दिने दिने
आजिओ याय व्येपे केँपे केँपे तृणे तृणे।
गाँथिते ये आँचले छायातले फुलमाला
ताहारि परशन हरषन्- सुधा-ढाला
फागुन आजो ये रे खुँजे फेरे चाँपाफुले।
आजि कि सवइ फाँकि—से कथा कि गेछ भुले।।

१९१८

५२

कवे तुमि आसवे व'ले रइव ना वसे, आमि चलव वाहिरे।
शुकनो फुलेर पातागुलि पडतेछे खसे, आर समय नाहि रे।।
ओरे वातास दिल दोल, दिल दोल;
एवार घाटेर वाँधन खोल्, ओ तुइ खोल्।
माझ-नदीते भासिये दिये तरी वाहि रे।।
आज शुक्ला एकादशी, हेरो निद्राहारा शशी
ओइ स्वप्नपारावारेर खेया एकला चालाय वसि।
तोर पथ जाना नाइ, नाइवा जाना नाइ—

क्या भूल गई हो, गेँथेछ रागिणी—जिस रागिणी को गूँथा है; आजिओ तृणे—आज भी (वह) काँप काँप कर तृण-तृण मे व्याप्त हो जाती है, गाँथिते चाँपाफुले—छाया तले जिस अचल मे (तुम) फूलो की माला गूँथती, हर्ष की सुधा से सिक्त उसी का स्पर्श फाल्गुन आज भी चम्पा के फूलो में खोजता फिर रहा है।

५२. कवे वाहिरे—कव तुम आओगे (इसी आसरे) वैठा नही रहूँगा, मैं वाहर जाऊँगा, शुकनो नाहि रे—सूखे फूलो की पखडियाँ झड कर गिर रही है, (अव) और समय नही है, ओरे दोल—हवा आन्दोलित हुई है, एवार खोल्—अव घाट का वधन खोल, ओ तू खोल; माझ . रे—वीच नदी मे नौका वहा कर खेऊँ; हेरो शशी—देखो, निद्रा-हीन चाँद, ओइ वसि—उस स्वप्न-सागर का खेना अकेले वैठा चलाता है, तोर . नाइ—पथ तेरा जाना हुआ नही है; नाइवा . नाइ—भले ही जाना नही है,

तोर नाइ माना नाइ, मनेर माना नाइ—
सबार साथे चलबि राते सामने चाहि रे ।।

१९१८

५३

धरा दियेछि गो आमि आकाशेर पाखि,
नयने देखिछि तव नूतन आकाश।
दुखानि आँखिर पाते की रेखेछ ढाकि,
हासिले फुटिया पड़े उपार आभास ।।
हृदय उड़िते चाय होथाय एकाकी—
आँखितारकार देशे करिबारे वास।
ओइ गगनेते चेये उठियाछे डाकि—
होथाय हाराते चाय ए गीत-उच्छ्वास ।।

१९१९

तोर नाइ—तेरे लिये मनाही नहीं है, मनेर. ...नाइ—मन की मनाही नहीं है; सबार.... चाहि रे—सामने (की ओर) देखते हुए रात में सबके साथ चलना।

५३. धरा. .पाखि—मैं आकाश का पक्षी, मैं पकड़ाई दे गया हूँ (पकड़ में आ गया हूँ); नयने आकाश—तुम्हारे नयनों में मैंने नया आकाश देखा है; दुखानि . ढाकि—दो आँखों की पलकों में (तुमने) क्या ढक (छिपा) रखा है; हासिले . आभास—हँसने पर उषा का आभास प्रस्फुटित हो उठता है (खिल उठता है); हृदय. एकाकी—हृदय वहाँ एकाकी (अकेला) उड़ना चाहता है; आँखि. . .वास—आँखों के तारों के देश में वास करना (चाहता है); ओइ ..उच्छ्वास—यह गीत-उच्छ्वास उस गगन को देखता हुआ पुकार उठा है (और) वहीं खो जाना चाहता है।

५४

आज सवार रङे रङ मिशाते हवे।
ओगो आमार प्रिय, तोमार रङिन उत्तरीय
परो परो परो तवे॥
मेघ रङे रङे वोना, आज रविर रङे सोना,
आज आलोर रङ ये वाजल पाखिर रवे॥
आज रङ-सागरे तुफान ओठे मेते।
यखन तारि हाओया लागे तखन रङेर मातन जागे
काँचा सबुज धानेर खेते।
सेइ रातेर स्वपन-भाडा आमार हृदय होक-ना राडा
तोमार रङेरइ गौरवे॥

१९१९

५५

के आमारे येन एनेछे डाकिया, एसेछि भुले।
तबु एकबार चाओ मुख-पाने नयन तुले॥
देखि ओ नयने निमेषेर तरे से दिनेर छाया पड़े कि ना पड़े,

---

५४. आज . हवे—आज सभी के रंग मे रग मिलाना होगा, ओगो . तबे—अजी ओ मेरे प्रियतम, तव अपने रगीन उत्तरीय को धारण करो, मेघ . .बोना—मेघ नाना रगो से बुना हुआ है, आज सोना—आज सूर्य के रग में सोना है; आज . . रवे—आज प्रकाश का रग पक्षियो के कलरव मे ध्वनित हुआ है; आज मेते—आज रग-सागर में तूफान मत्त हो उठा है, यखन लागे—जव उसीकी हवा लगती है; तखन खेते—तव रग की मस्ती कच्चे हरे धान के खेत में जाग उठती है, सेइ भाडा—वह (मेरा हृदय) जिनके रात के सपने टूट गए हैं; आमार राडा—मेरा हृदय रग जाय ना, तोमार .. गौरवे—तुम्हारे ही रग के गौरव मे।

५५ के भुले—कौन जैसे मुझे पुकार कर लाया है, (मैं) भूल कर आया हूँ; तबु तुले—तो भी एक वार आंखें उठा कर मेरे मुख की ओर देखो; देखिओ .पड़े—देखू, उन आंखो मे क्षण भर के लिये उस दिन की छाया पड़ती

सजल आवेगे आँखिपाता-दुटि पडे कि ढुले।
क्षणेकेर तरे भुल भाङायोना, एसेछि भुले॥
व्यथा दिये कवे कथा कयेछिले पड़े ना मने,
दूरे थेके कवे फिरे गियेछिले नाइ स्मरणे।
शुधु मने पड़े हासिमुखखानि, लाजे बाधो-बाधो सोहागेर वाणी,
मने पड़े सेइ हृदय-उछ्वास नयनकूले।
तुमि ये भुलेछ भुले गेछि, ताइ एसेछि भुले॥
काननेर फुल एरा तो भोले नि, आमरा भुलि।
एइ तो फुटेछे पाताय पाताय कामिनीगुलि।
चाँपा कोथा हते एनेछे धरिया अरुणकिरण कोमल करिया,
वकुल झरिया मरिवारे चाय काहार चुले।
केह भोले केउ भोले ना ये, ताइ एसेछि भुले॥
एमन करिया केमने काटिवे माधवीराति।
दखिनवातासे केह नाहि पाशे साथेर साथि।
चारि दिक हते बाँशि शोना याय, सुखे आछे यारा तारा गान गाय—

है या नहीं; सजल... ढुले—सजल व्याकुलता से दोनो आखों की पलके क्या ढुलक पड़ती है, क्षणेकेर..... भुले—क्षण भर के लिये (मेरी) भूल न तुडाना, भूल कर (ही) आया हूँ, व्यथा ...मने—व्यथा पहुँचाने वाली वात (तुमने) कव कही थी, याद नही आता; दूरे. . स्मरणे—दूर मे (ही) कव लौट गई थी स्मरण नही आता; शुधु. वाणी—केवल हँसी मे भरा मुख, लज्जा से अटकी-अटकी प्यार-दुलार भरी वातें याद आती है; मने पड़े—याद आता है; सेइ—वह; उछ्वास—उच्छ्वास; तुमि .. ..भुले—(यह) भूल गया हूँ कि तुम (मुझे) भूल गई हो, इसलिये भूल कर आया हूँ; काननेर . गुलि—कानन के फूल—ये तो भूले नही, हमलोग (ही) भूल जाते है, यही तो पत्तों-पत्तों में कामिनी खिली हुई है; चाँपा . करिया—चम्पा कहाँ मे सूर्य की अरुणिम किरणों को कोमल वना कर पकड लाया है; वकुल . ..चुले—वकुल झड कर किसकी केशराशि में मर मिटना चाहता है; केह .. भुले—कोई भूल जाता है, कोई भूलता जो नही, इसीलिये भूल कर आया हूँ; एमन .रात्ति—इस प्रकार वसन्त की रात कैसे कटेगी; दखिन ... साथि—दक्षिण-वायु मे वगल में कोई साथ का सगी नही है; चारि .....याय—चारो ओर से वाँसुरी सुन पड़ती है; सुखे .. गाय—जो सुख में है

आकुल वातासे, मदिर सुवासे, विकच फुले,
एखनो कि केँदे चाहिवे ना केउ आसिले भुले ।।

१९१९

५६

से ये वाहिर हल आमि जानि,
वक्षे आमार वाजे ताहार पथेर वाणी ।।
कोथाय कवे एसेछे से सागरतीरे, वनेर शेषे,
आकाश करे सेइ कथारइ कानाकानि ।।
हाय रे, आमि घर वेँधेछि एतइ दूरे,
ना जानि तार आसते हवे कवे कत घुरे ।
हिया आमार पेते रेखे साराटि पथ दिलेम ढेके,
आमार व्यथाय पडुक ताहार चरणखानि ।।

१९१९

५७

आकाशे आज कोन् चरणेर आसा-याओया ।
वातासे आज कोन् परशेर लागे हाओया ।।

वे गान गाते हे, आकुल ..भुले—आकुल हवा, मदिर सुगध, खिले हुए फूलों में भूल कर आने पर अब भी क्या कोई आँसू भरकर नही निहारेगा ?

५६. से जानि—वह जो वाहर हुआ (निकला) सो मैं जानती हूँ, वक्षे वाणी—मेरे वक्ष में उसके पथ की वाणी ध्वनित होती है; कोथाय शेषे—सागर के तट पर, वन के छोर पर कब, कहाँ वह आया, आकाश.. कानाकानि—आकाश इसी वात की कानाफूसी कर रहा है, आमि दूरे—मैंने इतनी दूर घर बांधा है, ना घुरे—न जाने कब कितना घूम कर उसे आना होगा, हिया ढेके—अपने हृदय को विछा कर (मैंने) सारा पथ ढँक दिया है, आमार खानि—मेरी व्यथा पर उनके चरण पडे ।

५७. आकाशे याओया—आकाश मे आज किन चरणों का आना-जाना है, वातासे हाओया—वातास में आज किस स्पर्श की हवा लग रही है;

अनेक दिनेर विदायवेलार व्याकुल वाणी
आज उदासीर बाँशिर सुरे के देय आनि—
वनेर छायाय तरुण चोखेर करुण चाओया ।।
कोन् फागुने ये फुल फोटा हल सारा
मौमाछिदेर पाखाय पाखाय काँदे तारा ।
वकुलतलाय काज-भोला सेइ कोन् दुपुरे
से-सब कथा भासिये दिलेम गानेर सुरे
व्यथाय भरे फिरे आसे से गान-गाओया ।।

१९२२

५८

आसा-याओयार पथेर धारे गान गेये मोर केटेछे दिन ।
यावार वेलाय देव कारे बुकेर काछे वाजल ये वीण ।।
सुरगुलि तार नाना भागे रेखे याव पुष्परागे,
मीड़गुलि तार मेघेर रेखाय स्वर्णलेखाय करव विलीन ।।
किछु वा से मिलनमालाय युगलगलाय रइबे गाँथा,
किछु वा से भिजिये देवे दुइ चाहनिर चोखेर पाता ।

विदायवेलार—विदाई के समय की; उदासीर. सुरे—उदासीन की बाँसुरी के सुर में; के.... आनि—कौन ला देता है, वनेर छायाय—वन की छाया में; चाओया—देखना, दृष्टि; कोन्. . .सारा—किस फाल्गुन में फूलों का खिलना समाप्त हुआ; मौमाछिदेर... तारा—मधुमक्खियों के पंखों में वे क्रन्दन कर रहे हैं; वकुल. . दुपुरे—वकुल वृक्ष के नीचे कामकाज को भुला देने वाली उन कौन-सी दुपहरिया में; से. . . .सुरे—गानों के सुर में वे सभी बातें बहा दीं; व्यथाय . .गाओया—वह गीत गाना व्यथा से भर कर लौट आता है।

५८. आसा. . .दिन—आने जाने के रास्ते के किनारे गान गा कर मेरे दिन कटे हैं; यावार.. वीण—हृदय के पास जो वीन (वीणा) बजी, जाने के समय (उसे) किसे दूंगा; सुरगुलि . ..रागे—उसके सुरों को नाना रूपों में पुष्पों के रंगों में रख जाऊँगा; मीड़ ....विलीन—उनकी मीडों को मेघों की रेखाओं में स्वर्णांकित कर विलीन करूँगा; किछु.. गाँथा—कुछ तो मिलन की माला में दो (प्रेमियों के) गले में गुँथी रहेंगी; किछु.. ..पाता—कुछ दो

किछु वा कोन् चैत्रमासे वकुल-ढाका वनेर घासे
मनेर कथार टुकरो आमार कुड़िये पावे कोन् उदासीन ॥

१९२२

५९

एइ कथाटि मने रेखो, तोमादेर एइ हासिखेलाय
आमि ये गान गेयेछिलेम जीर्ण पाता झरार वेलाय ॥
शुकनो घासे शून्य वने आपन-मने
अनादरे अवहेलाय
आमि ये गान गेयेछिलेम जीर्ण पाता झरार वेलाय ॥
दिनेर पथिक मने रेखो, आमि चलेछिलेम राते
सन्ध्याप्रदीप निये हाते।
यखन आमाय ओ पार थेके गेल डेके भेसेछिलेम भाडा भेलाय।
आमि ये गान गेयेछिलेम जीर्ण पाता झरार वेलाय ॥

१९२२

६०

फिरबे ना ता जानि,
आहा, तबु तोमार पथ चेये ज्वलुक प्रदीपखानि।

चितवनो की पलको को भिगो जायगी, किछु वा—अथवा कुछ; कोन् चैत्रमासे—किस चैत्र मास में, वकुल घासे—वकुल (के फूलो) से ढँकी वन की घास में, मनेर . आमार—मेरे मन की बातो के टुकडे, कुड़िये पावे—चुन पाएगा; कोन् उदासीन—कोई उदासीन।

५९ एइ वेलाय—यह बात याद रखना कि जीर्ण पत्तो के झड़ने के समय तुमलोगो के इस हँसी-खेल में मैंने गान गाए थे, शुकनो घासे—सूखी हुई घास पर; आमि हाते—मैं सन्ध्याप्रदीप हाथ मे ले कर रात्रि मे चला था, यखन भेलाय—जब वह उस पार से मुझे पुकार गया (जब उसने मुझे उस पार से पुकारा), मै टूटे हुए भेलक (वेडे) पर (जल मे) बह चला था।

६०. फिरबे जानि—लौटोगे नहीं यह जानती हूँ; तबु खानि—

गाँथबे ना माला जानि मने,
आहा, तबु धरुक मुकुल आमार बकुलवने
प्राणे ओइ परशेर पियास आनि ।।
कोथाय तुमि पथभोला,
तबु थाक्‌ना आमार दुयार खोला ।
रात्रि आमार गीतहीना,
आहा, तबु बाँधुक सुरे बाँधुक तोमार वीणा—
तारे घिरे फिरुक काङाल वाणी ।।

१९२२

६१

दीप निवे गेछे मम निशीथसमीरे,
धीरे धीरे एसे तुमि येयो ना गो फिरे ।।
ए पथे यखन यावे आँधारे चिनिते पावे—
रजनीगन्धार गन्ध भरेछे मन्दिरे ।।
आमारे पड़िबे मने कखन से लागि
प्रहरे प्रहरे आमि गान गेये जागि ।

तो भी तुम्हारा पंथ निहारते प्रदीप जलता रहे; गाँथबे.... .मने—माला नहीं गूँथोगे, मन ही मन जानती हूँ; तबु . आनि—तो भी प्राणों में उस स्पर्श की प्यास ला मेरे बकुल वन में कलियाँ लगती रहें; कोथाय..... भोला—रास्ता भूले हुए तुम (न-जाने) कहाँ (हो); तबु... .खोला—तो भी मेरा द्वार खुला रहे ना; तबु. वीणा—तो भी तुम्हारी वीणा सुर मिलाए रहे; तारे... वाणी—उसे घेर कर निःस्व-याचक वाणी घूमती फिरे।

६१. दीप . .गेछे—दीप बुझ गया है; धीरे.. फिरे—धीरे धीरे आ कर अजी, तुम लौट न जाना, ए... पावे—इस रास्ते जब जाओगे, अंधकार में पहचान पाओगे, रजनी मन्दिरे—रजनीगन्धा का गन्ध मदिर (कक्ष) में भरा है; आमारे . .. जागि—जाने किस समय मुझे याद कर बैठो, इसीलिये मैं प्रहर-प्रहर गान गाती हुई जागती रहती हूँ; भय .... पाने—भय होता है कि कहीं रात्रि के

भय पाछे शेष राते घुम आसे आँखिपाते,
क्लान्त कण्ठे मोर सुर फुराय यदि रे ॥
१९२२

६२

राते राते आलोर शिखा राखि ज्वेले
घरेर कोणे आसन मेले ॥
वुझि समय हल एवार आमार प्रदीप निविये देवार—
पूर्णिमाचाँद, तुमि एले ॥
एत दिन से छिल तोमार पथेर पाशे
तोमार दरशनेर आशे।
आज तारे येइ परशिवे याक से निवे, याक से निवे—
या आछे सव दिक से ढेले ॥
१९२२

६३

तार विदायवेलार मालाखानि आमार गले रे
दोले दोले वुकेर काछे पले पले रे ॥
गन्ध ताहार क्षणे क्षणे जागे फागुनसमीरणे
गुञ्जरित कुञ्जतले रे ॥

अन्त में आँखो की पलको में नीद न आ जाय; क्लान्त . यदि—क्लान्त कण्ठ में मेरा सुर कही समाप्त न हो जाय।

६२ राते . मेले—घर के कोने मे आसन विछा कर रात-रात भर दीप-शिखा जलाए रखती हूँ; वुझि एले—पूर्णिमा के चाँद, तुम आए, लगता है अपना प्रदीप वुझा देने का अव समय हो गया; एत . आशे—तुम्हारे दर्शन की आशा मे तुम्हारे रास्ते के किनारे इतने दिनो से रह था; आज निवे—आज जैसे ही उसका स्पर्श करोगे (आज तुम्हारे स्पर्श करते ही) वह बुझ जाय, या ढेले—जो कुछ है सव वह ढाल दे।

६३. तार.. पले रे—मेरे गले में उनकी विदाई के समय की माला पल-पल (मेरे) हृदय के पास डोलती है, ताहार—उसका; दिनेर . [illegible]

दिनेर शेषे येते येते पथेर 'परे
छायाखानि मिलिये दिल वनान्तरे।
सेइ छाया एइ आमार मने, सेइ छाया ओइ काँपे वने,
काँपे सुनील दिगञ्चले रे॥

१९२२

६४

आमार मन चेये रय मने मने हेरे माधुरी।
नयन आमार काङाल हये मरे ना घुरि॥
चेये चेये बुकेर माझे गुञ्जरिल एकतारा ये—
मनोरथेर पथे पथे बाजल बाँशुरि।
रूपेर कोले ओइ-ये दोले अरूप माधुरी॥
कूलहारा कोन् रसेर सरोवरे मूलहारा फुल भासे जलेर 'परे।
हातेर धरा धरते गेले ढेउ दिये ताय दिइ ये ठेले—
आपन-मने स्थिर हये रइ, करि ने चुरि॥
धरा देओयार धन से तो नय, अरूप माधुरी॥

१९२५

—दिन की समाप्ति पर पथ पर जाते-जाते (दूर) अन्य वन मे (उसने अपनी) छाया विलीन कर दी; सेइ... रे—वही छाया मेरे मन मे है, वही छाया उस वन में, नील वर्ण के दिगञ्चल में काँप रही है।

६४. आमार.. मने—मेरा मन मन-ही-मन निहारता रहता है; हेरे—देखता है; नयन ...घुरि—मेरी आँखें याचक हो भटकती हुई मरती नहीं; चेये... माझे—हृदय के भीतर देखते देखते; गुञ्जरिल—गुञ्जरित हुआ; बाजल—बजी; बाँशुरि—बाँसुरी; रूपेर... माधुरी—रूप की गोद में वह अरूप माधुरी डोल रही है, कूलहारा.....परे—तट-हीन किस रस के सरोवर में जड़-हीन फूल जल के ऊपर बह रहा है; हातेर .. ठेले—इसीलिये हाथो से पकड़ने जा कर उसे लहरों में और भी ठेल देता हूँ; आपन ..चुरि—अपने आप में स्थिर हो कर रहता हूँ, चोरी नहीं करता; धरा ... माधुरी—वह पकड़ाई देने वाला धन तो नहीं है, अरूप माधुरी है।

६५

एवार उजाड़ करे लओ हे आमार या-किछु सम्बल।
फिरे चाओ, फिरे चाओ, फिरे चाओ ओगो चञ्चल॥
चैत्ररातेर वेलाय नाहय एक प्रहरेर खेलाय
आमार स्वपनस्वरूपिणी प्राणे दाओ पेते अञ्चल॥
यदि एइ छिल गो मने,
यदि परम दिनेर स्मरण घुचाओ चरम अयतने,
तवे भाङा खेलार घरे नाहय दाँडाओ क्षणेक-तरे—
सेथा धुलाय धुलाय छड़ाओ हेलाय छिन्न फुलेर दल॥

१९२५

६६

केन आमाय पागल करे यास ओरे चले-याओयार दल।
आकाशे वय वातास उदास, पराण टलोमल।
प्रभाततारा दिशाहारा, शरतमेघेर क्षणिक धारा—
सभा-भाङार शेष वीणाते तान लागे चञ्चल

---

६५ एवार . सम्वल—मेरा जो कुछ सम्बल है (उसे) इस बार निःशेष कर लो, फिरे चाओ—फिर कर ताको, ना हय—न हो, एक . . वेलाय—पहर भर के खेल मे, दाओ . . अञ्चल—अञ्चल बिछा (फैला) दो, यदि . . मने—अजी, अगर यही तुम्हारे मन में था, यदि . . अयतने—यदि परम दिवस की स्मृति को अत्यन्त अवहेलना मे मिटाती हो, तवे . तरे—तब टूटे हुए खेल-घर (क्रीडा गृह) मे ही न हो टुक क्षण भर के लिये ठहरो, सेथा . दल—वहाँ धूलि मे छिन्न फूलो की पखुडियो को अवहेलना के साथ विखराओ।

६६. केन . . दल—अरे, ओ चले जाने वालो के दल, क्यों (तू) मुझे पागल कर जाता है, आकाशे . . टलोमल—उदास हवा आकाश मे बहती है, प्राण चचल, डगमग है, दिशाहारा—दिग्भ्रान्त; सभा-भाङार—सभा भंग होने [illegible]

नागकेशरेर अंग केशर धुलार साथे मिता।
गोधूलि से रक्त-आलोय ज्वाले आपन चिता।
शीतेर हाओयाय झराय पाता, आमलकि-वन मर्मर-माता,
विदायबाँशिर सुरे विधुर साँझेर दिगञ्चल।।

१९२५

९७

दिनशेषेर राङा मुकुल जागल चित्ते।
संगोपने फुटबे प्रेमेर मञ्जरीते।।
मन्दवाये अन्धकारे दुलबे तोमार पथेर धारे,
गन्ध ताहार लागबे तोमार आगमनीते—
फुटबे यखन मुकुल प्रेमेर मञ्जरीते।।
रात येन ना वृथा काटे प्रियतम हे—
एसो एसो प्राणे मम, गाने मम हे।
एसो निविड मिलनक्षणे रजनीगन्धार कानने,
स्वपन हये एसो आमार निशीथिनीते—
फुटबे यखन मुकुल प्रेमेर मञ्जरीते।।

१९२५

धुलार साथे—धूल के साथ. धुलार ...मिता—धूल के साथ मिताई जोड़ी है; गोधूलि ... चिता—गोधूलि उस रक्त-आलोक में अपनी चिता जलाती है, शीतेर ... माता—शीत (काल) की हवा पत्ते झराती है, आंवले का वन मर्मर (पत्ते लिये) मत्त है; विदाय ... दिगञ्चल—सन्ध्या का दिगञ्चल विदाई की बांसुरी के स्वर से विधुर है।

९७ दिन ...चित्ते—दिन की समाप्ति का लाल मुकुल (कली) चित्त में जागा, संगोपने ... मञ्जरीते—गोपन रूप से प्रेम की मञ्जरी में खिलेगा; वाये—वायु में, दुलबे ...धारे—तुम्हारे पथ के किनारे झूमेगा; गन्ध ... आगमनीते—तुम्हारी अगवानी में उसका गन्ध लगेगा; यखन—जब, रात ... हे—हे प्रियतम, ऐसा हो कि रात व्यर्थ न कटे; एसो—आओ, स्वपन ... निशीथिनीते—मेरी गहन रात्रि में स्वप्न हो कर आओ।

६८

वेदनाय भरे गियेछे पेयाला, नियो हे नियो।
हृदय विदारि हये गेल ढाला, पियो हे पियो।।
भरा से पात्र तारे बुके क'रे वेड़ानु वहिया सारा रात्ति धरे,
लओ तुले लओ आजि निशिभोरे, प्रिय हे प्रिय।।
वासनार रङे लहरे लहरे रङिन हल।
करुण तोमार अरुण अधरे तोलो हे तोलो।
ए रसे मिशाक तव निश्वास नवीन उषार पुष्पसुवास—
एरि 'परे तव आँखिर आभास दियो हे दियो।।

१९२५

६९

द्वारे केन दिले नाडा ओगो मालिनी।
कार काछे पाबे साड़ा ओगो मालिनी।।
तुमि तो तुलेछ फुल, गेँथेछ माला, आमार आँधार घरे लेगेछे ताला।
खुंजे तो पाइ नि पथ, दीप ज्वालि नि।।

---

६८ वेदनाय ..नियो—वेदना से प्याला भर गया है, लेना, हे, लेना हृदय पियो—हृदय को विदीर्ण कर ढालना हो गया, पियो, हे, पियो, भरा धरे—उस भरे हुए पात्र को छाती से लगाए सारी रात वहन किए घूमता रहा, लओ लओ—लो, उठा लो, आजि—आज; वासनार हल—वासना के रग से लहर-लहर रगीन हो गई, तोलो—उठाओ, अधरे तोलो—अपने से लगाओ, ए .मिशाक—इस रस में घुल जाय, एरि दियो—उनके ऊपर अपनी आँखो की आभा डालना, हे, डालना, आभास—क्षीण अथवा अस्पष्ट प्रकाश।

६९ द्वारे नाड़ा—द्वार पर (तुमने) क्यो धक्का दिया, कार साडा—किसके पास अपनी पुकार का प्रत्युत्तर पाओगी, तुमि माला—तुमने तो फूल चुने हैं, माला गूँधी है, मेरे अंधेरे घर में ताला लगा है खुंजे...नि—खोजने पर तो रास्ता नहीं पाया, (मैंने) दीपक नहीं जलाया

ओइ देखो गोधूलिर क्षीण आलोते
दिनेर शेषेर सोना डोबे कालोते ।
आँधार निविड़ ह'ले आसियो पाशे,　　यखन दूरेर आलो ज्वाले आकाशे
असीम पथेर रात्ति　　दीपशालिनी ॥

१९२५

७०

ना, ना गो ना,
कोरो ना भावना—
यदि वा निशि याय　　याव ना, याव ना ॥
यखनि चले याइ　　आसिव ब'ले याइ,
आलोछायार पथे　　करि आनागोना ॥
दोलाते दोले मन　　मिलने विरहे ॥
बारे बारेइ जानि,　　तुमि तो चिर हे ।
क्षणिक आड़ाले　　बारेक दाँडाले
मरि भये भये　　पाव कि पाव ना ॥

१९२५

ओइ.. कालोते—वह देखो, गोधूलि के क्षीण आलोक में दिन के अंत का सोना (सुनहला रंग) कालिमा में डूबता है; आँधार. . पाशे—अन्धकार गहन होने पर पास आना; यखन　आकाशे—जब दूर का आलोक आकाश में जलाती है।

७०. कोरो .भावना—चिन्ता न करना (उद्विग्न न होना); यदि याय—अगर रात्रि बीत ही जाय; याव ना—जाऊँगा नहीं; यखनि.... याइ—जब भी चला जाता हूँ; आसिव .याइ—आऊँगा इसीलिये जाता हूँ, आलोछायार ..आनागोना—प्रकाश और छाया के पथ में आवाजाही करता हूँ; दोलाते.. मन—झूले पर मन झूलता है, बारे　चिर हे—बार बार (यही) जानता हूँ, तुम तो चिर (नित्य) हो; क्षणिक.. पावना—क्षण भर के लिये ओट में एक बार (भी) खड़े होते हो तो भय से मरता रहता हूँ कि पाऊँगा या नहीं।

७१

भरा थाक् स्मृतिसुधाय विदायेर पात्रखानि।
मिलनेर उत्सवे ताय फिराये दियो आनि ।।
विषादेर अश्रुजले नीरवेर मर्मतले
गोपने उठुक फ'ले हृदयेर नूतन वाणी ।।
ये पथे येते हवे से पथे तुमि एका—
नयने आँधार रवे, धेयाने आलोकरेखा।
सारा दिन सगोपने सुधारस ढालबे मने
परानेर पद्मवने विरहेर वीणापाणि ।।

१९२५

७२

ये दिन सकल मुकुल गेल झरे
आमाय डाकले केन गो, एमन करे ।।
येते हवे ये पथ वेये शुकनो पाता आछे छेये,
हाते आमार शून्य डाला की फुल दिये देव 'भरे ।।
गानहारा मोर हृदयतले
तोमार व्याकुल वाँशि की ये वले।

---

७१ भरा पात्रखानि—विदाई का पात्र स्मृति की सुधा से भरा रहे मिलनेर आनि—मिलन के उत्सव मे उसे ला कर लौटा देना; उठुक फ'ले—फल उठे, ये एका—जिस पथ से जाना होगा उस पथ मे तुम अकेले हो, नयने .रेखा—आँखो मे अन्धकार रहेगा, ध्यान मे प्रकाश की रेखा ढालबे मने—मन मे ढालेगी; परानेर—प्राणो के।

७२. ये झरे—जिस दिन सभी कलियाँ झर गईं, आमाय करे—मुझे इस प्रकार (तुमने) क्यो पुकारा, येते छेये—जिस पथ से हो कर जाना होगा (उसपर) सूखी पत्तियाँ छाई हुई है, हाते भरे—मेरे हाथो मे सूनी डलिया है, किस फूल से (उसे) भर दूंगा, गानहारा—गानहीन, गानहारा वले—सगीत विहीन मेरे अन्तस्तल मे तुम्हारी व्याकुल बाँसुरी (न-जाने) क्या

नेइ आयोजन, नेइ मम धन, नेइ आभरण, नेइ आवरण—
रिक्त बाहु एइ तो आमार बाँधबे तोमाय बाहुडोरे ।।

१९२८

७३

यखन भाङल मिलन-मेला
भेवेछिलेम भुलब ना आर चक्षेर जल फेला ।।
दिने दिने पथेर धुलाय माला हते फुल झरे याय—
जानि ने तो कखन एल विस्मरणेर बेला ।।
दिने दिने कठिन हल कखन् बुकेर तल ।
भेवेछिलेम, झरबे ना आर आमार चोखेर जल ।
हठात् देखा पथेर माझे, कान्ना तखन थामे ना ये—
भोलार तले तले छिल अश्रुजलेर खेला ।।

१९२५

७४

यदि हल यावार क्षण
तबे याओ दिये याओ शेषेर परान ।।

रहती है; नेइ—नहीं है, रिक्त ... डोरे—मेरी ये सूनी भुजाएँ तुम्हें भुजाओं की डोरी में बाँधेंगी।

७३ यखन . मेला—जब मिलन-मेला समाप्त हुआ; भेवेछिलेम ... फेला—सोचा था (अब) और आँखों से आँसू बहाना नहीं भूलूँगा; दिने . याय—दिन-दिन पथ की धूल में माला से फूल झरते जाते हैं, जानि . बेला—नहीं जानता, कब विस्मृति की बेला आई; दिने ... तल—दिन-दिन कब हृदयतल कठिन (कठोर) हुआ; भेवेछिलेम . . जल—सोचा था (अब) और मेरी आँखों से आँसू नहीं बहेंगे; हठात् ...ना ये—अकस्मात् पथ के बीच दर्शन हुए, उस समय रुलाई रोके नहीं रुकी; भोलार . खेला—भूलने के नीचे अश्रुजल का खेल (चल रहा) था।

७४. यदि ...परान—यदि जाने का समय हो गया हो तो जाओ (किन्तु)

वारे वारे येथाय आपन गाने   स्वपन भासाइ दूरेर पाने,
माझे माझे देखे येयो शून्य वातायन—
से मोर   शून्य वातायन ।।
वनेर प्रान्ते ओइ मालतीलता
करुण गन्धे कय की गोपन कथा ।
ओरइ डाले आर श्रावणेर पाखि   स्मरणखानि आनवे ना कि,
आज—श्रावणेर सजल छायाय विरह मिलन—
आमादेर विरह मिलन ।।

१९२५

७५

हे क्षणिकेर अतिथि,
एले प्रभाते कारे चाहिया
झरा शेफालिर पथ वाहिया ।
कोन् अमरार विरहिणीरे   चाह नि फिरे,
कार विषादेर शिशिरनीरे   एले नाहिया ।।
ओगो अकरुण, की माया जान,
मिलनछले विरह आन ।

अन्तिम स्पर्श देते जाओ, वारे . पाने—वार-वार जहा अपने गान मे दूर की ओर स्वप्न तिराता हूँ; माझे वातायन—बीच-बीच मे (उन) सूने वातायन को देख जाना, प्रान्त—सीमा, ओइ—वह, करुण कथा—करुण गन्ध मे कौन सी गोपन वात कहती है, ओरइ ना कि—उसीकी डाल पर फिर श्रावण का पक्षी स्मृति को नही लाएगा क्या, छायाय—छाया मे, आमादेर—हम लोगो का ।

७५ क्षणिकेर—क्षण भर के; एले वाहिया—किसे देख [illegible] शेफालिका के रास्ते हो कर प्रभात मे आए, कोन् फिरे—किस [illegible] की विरहिणी को फिर कर नही देखा, कार . नाहिया—किसके विषाद के [illegible] मे नहा कर आए, की जान—कौन-सा जादू जानते हो, मिलन आन—

चलेछ पथिक आलोकयाने आँधार-पाने
मनभुलानो मोहन-ताने गान गाहिया ।।

१९२५

७६

तोमाय गान शोनाब ताइ तो आमाय जागिये राख
ओगो घुम-भाङानिया ।
बुके चमक दिये ताइ तो डाक
ओगो दुख-जागानिया ।।
एल आधार घिरे, पाखि एल नीडे,
तरी एल तीरे—
शुधु आमार हिया विराम पाय नाको
ओगो दुख-जागानिया ।।
आमार काजेर माझे माझे
कान्नाधारार दोला तुमि थामते दिले ना ये ।
आमाय परश क'रे प्राण सुधाय भ'रे
तुमि याओ ये सरे—
बुझि आमार व्यथार आडालेते दाँडिये थाक
ओगो दुख-जागानिया ।।

१९२६

निरन्तर मिल विरह जाते हो, आँधार पाने—अन्धकार की ओर, मन-भुलानो—मन को मुग्ध करने वाली, गाहिया—गाते हुए।

७६. तोमाय ... राख—तुम्हें गान सुनाऊँगा, इसीलिये तो मुझे जगा रखती हो, ओगो—अजी जी; घुम-भाङानिया—निद्रा भंग करने वाली (नींद उचाटने वाली); बुके ... डाक—हृदय को चौंका कर इसीलिये तो तुम पुकारती हो, दुख-जागानिया—दुःख जगाने वाली; आमार ... ना ये—मेरे कामकाज के बीच-बीच में क्रन्दन की वर्षा के हिल्लोल को तुमने थमने तो नहीं दिया, आमाय ... सरे—मुझे स्पर्श कर प्राणों में सुधा भर तुम अलग चली जाती हो; बुझि ... थाक—लगता है, मेरी व्यथा की ओट में (तुम) खड़ी रहती हो।

७७

निशीथे की कये गेल मने   की जानि, की जानि।
से कि घुमे, से कि जागरणे   की जानि, की जानि॥
नाना काजे नाना मते   फिरि घरे, फिरि पथे—
से कथा कि अगोचरे वाजे क्षणे क्षणे। की जानि, की जानि॥
से कथा कि अकारणे व्यथिछे हृदय,   एकि भय, एकि जय।
से कथा कि काने काने वारे वारे कय   'आर नय' 'आर नय'।
से कथा कि नाना सुरे   वले मोरे 'चलो दूरे'—
से कि वाजे वुके मम, वाजे कि गगने। की जानि, की जानि॥
१९२६

७८

यखन एसेछिले अन्धकारे
चाँद ओठे नि सिन्धुपारे॥
हे अजाना, तोमाय तवे   जेनेछिलेम अनुभवे—
गाने तोमार परशखानि वेजेछिल प्राणेर तारे॥

---

७७. निशीथे जानि—अर्धरात्रि को मन मे क्या कह गया, क्या जानूं, क्या जानू, से जानि—वह नीद मे (कह गया) या जागरण मे, क्या जानू, क्या जानू, नाना क्षणे—नाना कामकाज मे, नाना प्रकार के घर मे, (नाना) रास्ते मे फिरता हूँ, वह वात क्या अगोचर मे क्षण-क्षण ध्वनित होती है, से हृदय—वह वात क्या विना कारण हृदय को व्यथा पहुँचा रही है; एकि—यह क्या; से कथा नय—वह वात क्या वार वार कानो मे कहती है 'और नहीं' 'और नही', से दूरे—वह वात क्या नाना सुरो मे मुझसे कहती है 'दूर चलो' से गगने—वह क्या मेरी छाती में बज रही है या आकाश में ध्वनित हो रही है।

७८ यखन पारे—जव तुम अन्धकार में आए थे, (तब) सागर-पार चाँद नहीं निकला था, हे अजाना अनुभवे—हे अपरिचित, तब तुम्हें अनुभव से जाना था; गाने तारे—गानो मे तुम्हारा स्पर्श प्राणों के तारों में बज गया

तुमि गेले यखन एकला चले
चाँद उठेछे रातेर कोले।
तखन देखि, पथेर काछे माला तोमार पड़े आछे—
बुझेछिलेम अनुमाने ए कण्ठहार दिले कारे॥

१९२६

३९

भालोवासि, भालोवासि—
एइ सुरे काछे दूरे जले स्थले बाजाय बाँशि।
आकाशे कार बुकेर माझे व्यथा बाजे,
दिगन्ते कार कालो आँखि आँखिर जले याय गो भासि॥
सेइ सुरे सागरकूले बाँधन खुले
अतल रोदन उठे दुले।
सेइ सुरे बाजे मने अकारणे
भुले-याओया गानेर वाणी, भोला दिनेर काँदन-हासि॥

१९२६

तुमि . .कोले—तुम जब अकेले चले गए, (तब) रात्रि की गोद में चाँद निकल आया था; तखन .. .आछे—तब देखती हूं, रास्ते के पास तुम्हारी माला पड़ी हुई है; बुझेछिलेम . .कारे—अनुमान से समझा था, यह कण्ठहार (तुम) किसे दे गए।

'३९. भालोवासि . . बाँशि—प्यार करता हूँ, प्यार करता हूँ, इसी सुर में पास, दूर, जल में, स्थल में (कोई) बाँसुरी बजाता है, आकाशे . .बाजे—आकाश में जिसके हृदय में व्यथा बज रही है, दिगन्ते .. .भासि—दिगन्त में जिसकी काली आँखें आँसों के जल में बह जा रही हैं; सेइ . . दुले—इसी सुर में सागर के किनारे बन्धन खोल अतल रोदन दोलायित होता है; सेइ. . हासि—इसी सुर में भूले हुए गान की वाणी, भूले हुए दिनों के क्रन्दन और हास्य अकारण मन में बज उठते हैं।

८०

जानि तुमि फिरे आसिवे आवार, जानि ।
तवु मने मने प्रवोध नाहि ये मानि ।।
विदायलगने धरिया दुयार ताइ तो तोमाय वलि वारवार
'फिरे एसो, एसो, वन्धु आमार,' वाष्पविभल वाणी ।।
यावार वेलाय किछु मोरे दियो दियो
गानेर सुरेते तव आश्वास, प्रिय ।
वनपथे यवे यावे से क्षणेर हयतो वा किछु रवे स्मरणेर,
तुलि लव सेइ तव चरणेर दलित कुसुमखानि ।।

१९२८

८१

दिये गेनु वसन्तेर एइ गानखानि—
वरष फुराये यावे, भुले यावे जानि ।।
तवु तो फाल्गुनराते ए गानेर वेदनाते
आँखि तव छलोछलो, एइ वहु मानि ।।

---

८० जानि जानि—जानता हूँ तुम फिर लौट कर आओगे, जानता हूँ, तवु मानि—तौभी मन में सान्त्वना नही पाता, विदायलगने वारवार—विदाई की वेला में दरवाजा पकडे हुए इसीलिये तो तुमसे वारवा कहता हूँ, 'फिरे आमार'—लौट आओ, लौट आओ, ओ मीत मे वाष्पविभल—वाष्प-गद्गद, वाष्पविह्वल, यावार दियो—जाने के समय मुझे कुछ देना, देना, गानेर आश्वास—गान के सुर मे अपना आश्वास वनपथे स्मरणेर—वनपथ से जव जाओगे, उस क्षण की याद के रूप मे हो सकता है कि कुछ रह जाय, तुलि कुसुमखानि—तुम्हारे चरणों मे दलित उस फूल को उठा लूंगी।

८१ दिये गानखानि—वसन्त का यह गान (मैं) दे गया; वरष—वर्ष फुराये यावे—समाप्त हो जायगा, भुले जानि—जानता हूँ भूल जाओगे, तवु मानि—तौभी तो फाल्गुन की रात मे इस गान की व्यथा से तुम्हारी

चाहि ना रहिते बसे फुराइले बेला,
तखनि चलिया याब शेष हले खेला।
आसिबे फालुन पुन, तखन आबार शुनो
नव पथिकेरइ गाने नूतनेर वाणी॥

१९२८

८२

मने रबे कि ना रबे आमारे से आमार मने नाइ।
क्षणे क्षणे आमि तव दुयारे, अकारणे गान गाइ॥
चले याय दिन, यतखन आछि पथे येते यदि आसि काछाकाछि
तोमार मुखेर चकित सुखेर हासि देखिते ये चाइ—
ताइ अकारणे गान गाइ॥
फागुनेर फुल याय झरिया फागुनेर अवसाने—
क्षणिकेर मुठि देय भरिया, आर किछु नाहि जाने।
फुराइबे दिन, आलो हबे क्षीण, गान सारा हबे, थेमे याबे वीणा,

ओर से छलछलाई हुई है, इसे ही बहुत (यथेष्ट) मानता हूँ, चाहि ..बेला—समय चुक जाने पर बैठा नहीं रहना चाहता, तखनि ...खेला—खेल समाप्त होने पर उसी समय चला जाऊँगा, आसिबे—आएगा, पुन—पुनः, फिर, तखन शुनो—तब फिर सुनना, नव पथिकेरइ—नव पथिक के ही, गाने—गान में।

८२ मने . आमारे—मेरी याद रहेगी या नहीं रहेगी, से . .नाइ—यह मुझे याद नहीं; क्षणे गाइ—क्षण-क्षण तुम्हारे द्वार पर आता हूँ (और) अकारण गान गाता हूँ, चले . दिन—दिन बीत जाते हैं; यतखन आछि—जितने समय है, पथे काछाकाछि—राह चलते यदि पास आऊँ; तोमार. चाइ—तुम्हारे मुख की विस्मित सुख की हँसी को देखना जी चाहता है; ताइ—इसीलिये, फागुनेर. अवसाने—फाल्गुन की समाप्ति पर फागुन के फूल झर जाते हैं; मुठि भरिया—मुट्ठी भर देते हैं, आर .. जाने—और कुछ नहीं जानते, फुराइबे—समाप्त होगा; आलो—आलोक, हबे—होगा, गान ..वीणा—गान पूरा होगा, वीणा थम जायगी,

यतखन थाकि भरे दिबे ना कि ए खेलारइ भेलाटाइ—
ताइ अकारणे गान गाइ ।।

१९२८

८३

यावार वेला शेष कथाटि याओ वले,
कोन्‌खाने ये मन लुकानो दाओ वले ।।
चपल लीला छलनाभरे वेदनखानि आडाल करे,
ये वाणी तव हय नि वला नाओ वले ।।
हासिर वाणे हेनेछ कत श्लेषकथा,
नयनजले भरो गो आजि शेष कथा ।
हाय रे अभिमानिनी नारी, विरह हल द्विगुण भारि
दानेर डालि फिरायें निते चाओ व'ले ।।

१९२८

८४

सकरुण वेणु वाजाये के याय विदेशी नाये,
ताहारि रागिणी लागिल गाये ।।

यतखन भेलाटाइ—जितने दिन हूँ, इस खेल-खेल के बेड़े को ही [illegible], भर नही दोगे क्या ।

८३. यावार वले—जाने के समय अन्तिम बात कह जाओ, कोन्‌खाने वले—कहाँ (तुम्हारा) मन छिपा हुआ है, यह दो, वेदन करे—वेदना को ओट बना कर, ये वले—तुम्हारी जो बात कही नहीं गई, (उसे) कह लो, हासिर कथा—कितनी श्लेष भरी बातें (तुमने) हँसी के [illegible] निक्षिप्त की है, नयन कथा—आज (अपनी) अन्तिम बात नयनों के [illegible] पूर्ण करो; हल—हुआ, भारि—भारी, दानेर व'ले—दान की [illegible] लेना चाहती हो, इसलिये ।

८४. सकरुण . . नाये—करुण बाँसुरी बजाता कौन [illegible] पर जा रहा है, ताहारि . . गाये—उसीकी [illegible]

से सुर वाहिया भेसे आसे कार   सुदूर विरहविधुर हियार
अजाना वेदना, सागरवेलाय   अधीर वाये
वनेर छाये ।।

ताइ शुने आजि विजन प्रवासे हृदय-माझे
शरत्‌शिशिरे भिजे भैरवी नीरवे बाजे ।
छवि मने आने आलोते ओ गीते— येन जनहीन नदीपथटिते
के चलेछे जले कलस भरिते   अलस पाये
वनेर छाये ।।

१९२८

८५

केन रे एतइ यावार त्वरा—
वसन्त, तोर हयेछे कि भोर गानेर भरा ।।
एखनि माधवी फुरालो कि सबइ,
वनछाया गाय शेष भैरवी—
निल कि विदाय शिथिल करवी वृन्तझरा ।।

से... वेदना—उस सुर में बहती किसके सुदूर विरह-कातर हिया की अज्ञात वेदना तिर आती है; सागर...वाये—सागर-तट की अधीर वायु में; वनेर छाये—वन की छाया में; ताइ... बाजे—उसीको सुन कर आज जनशून्य प्रवास में शरद् के ओसकणों से भीगी हुई भैरवी हृदय में नीरव बज रही है; छवि... गीते—आलोक और गीत से मन में (यह) चित्र ला देती है; येन... छाये—जैसे जनहीन नदी की ओर जाने वाले पथ पर वन की छाया में कौन मन्थर गति से गगरी भरने चली है।

८५. केन... त्वरा—अरे, जाने की इतनी उतावली ही क्यों; तोर... भरा—गीतों की तेरी मालवाही नौका क्या भर चुकी है; एखनि... सबइ—अभी ही क्या माधवी के सभी फूल चुक गए; वनछाया... भैरवी—वनछाया अन्तिम भैरवी गाती है; निल... झरा—वृन्तच्युत शिथिल करवी (कनेर) ने

एखनि तोमार पीत उत्तरी दिबे कि फेले
तप्त दिनेर शुष्क तृणेर आसन मेले।
विदायेर पथे हताश वकुल
कपोतकूजने हल ये आकुल,
चरणपूजने झराइछे फुल वसुन्धरा॥

१९२९–३२

८६

कार चोखेर चाओयार हाओयाय दोलाय मन,
ताइ केमन हये आछिस साराक्षण।
हासि ये ताइ अश्रुभारे नोओया,
भावना ये ताइ मौन दिये छोँओया,
भाषाय ये तोर सुरेर आवरण॥
तोर पराने कोन् परशमणिर खेला,
ताइ हृद्गगने सोनार मेघेर मेला।

क्या विदा ले ली, एखनि. मेले—गर्म दिनो की सूखी घास का आसन फैला कर क्या अभी ही अपने पीले उत्तरीय को उतार फेंकोगे, विदायेर आकुल—विदाई के पथ पर निराश वकुल कपोतकूजन से आकुल है, चरण. . वसुन्धरा—चरणो की पूजा के लिये वसुन्धरा फूल बिखेर रही है।

८६ कार मन—किसकी आँखो की चितवन रूपी हवा मन को दोलायमान कर रही है, ताइ क्षण—इसीलिये सब समय हँसे-हँसे हो रहे हो; हासि नोओया—इसीलिये तो हँसी आँसुओ के भार से झुकी हुई है, भावना . छोँओया—इसीलिये चिन्ता को मौन सा [illegible] है, भाषाय .आवरण—तेरी भाषा पर सुर का आवरण (छाया) है: तोर खेला—तेरे प्राणो में किस पारस-मणि का खेल (चल रहा) है ताइ . मेला—जिस कारण हृदय के आकाश में सुनहले मेघों का मेला लगा है,

दिनेर सोते ताइ तो पलकगुलि
ढेउ खेले याय सोनार झलक तुलि,
कालोय आलोय कांपे आँखिर कोण ।।

१९२९-३२

८७

दिन परे याय दिन, वसि पथपाशे
गान परे गाइ गान वसन्तवातासे ।।
फुराते चाय ना वेला, ताइ सुर गेँथे खेला—
रागिणीर मरीचिका स्वप्नेर आभासे ।।
दिन परे याय दिन, नाइ तव देखा ।
गान परे गाइ गान, रइ वसे एका ।
सुर थेमे याय पाछे ताइ नाहि आस काछे—
भालोवासा व्यथा देय यारे भालोवासे ।।

१९२९-३२

८८

दे पड़े दे आमाय तोरा की कथा आज लिखेछे से ।
तार दूरेर वाणीर परशमानिक लागुक आमार प्राणे एसे ।।

दिनेर.... तुलि—इसीलिये तो जितने भी क्षण हैं वे दिन के स्रोत में सुनहली आभा झलका कर लहरें उठा रहे हैं; कालोय—कालिमा में; आलोय—आलोक में, कांपे—कांपते हैं, आँखिर कोण—आँखों के कोने।

८७ दिन ..दिन—दिन पर दिन जाते हैं, वसि.. वातासे—वसन्त की हवा में रास्ते के किनारे बैठ कर गान पर गान गाए जाता हूँ, फुराते. .वेला—समय बीतना नहीं चाहता, ताइ .. खेला—इसीलिये सुर गूंथ कर खेल (चल रहा है); नाइ देखा—तुम्हारे दर्शन नहीं; रइ ..एका—अकेला बैठा रहता हूँ; सुर.. काछे—कहीं सुर न थम जाय इसीलिये (तुम) पास नहीं आते, भालोवासा ..भालोवासे—प्यार (उसे ही) व्यथा देता है जिसे प्यार करता है।

८८. दे से—तुमलोग पढ़ दो (मुझे पढ़ कर सुना दो), आज उसने कौनसी बात लिखी है; तार...एसे—दूर से उसकी वाणी की पारस-मणि

शस्यखेतेर गन्धखानि एकला घरे दिक से आनि,
क्लान्तगमन पान्थ हाओया लागुक आमार मुक्तकेशे ॥
नील आकाशेर सुरटि निये बाजाक आमार विजन मने,
धूसर पथेर उदास वरन मेलुक आमार वातायने ।
सूर्य डोवार राङा वेलाय छड़ाव प्राण रङेर खेलाय,
आपन-मने चोखेर कोणे अश्रु-आभास उठबे भेसे ॥
१९२९-३२

८९

आमाय यावार वेलाय पिछु डाके
भोरेर आलो मेघेर फाँके फाँके ॥
  वादलप्रातेर उदास पाखि ओठे डाकि
  वनेर गोपन शाखे शाखे, पिछु डाके ॥
भरा नदी छायार तले छुटे चले—
खोँजे काके, पिछु डाके ।

मेरे प्राणो को आ कर छुए; शस्य आनि—अन्न वाले खेत का गन्ध वह (मैं इस) एकान्त घर मे ला दे; क्लान्त .. केशे—थकित गति से चलने वाली बटोही-हवा मेरे खुले केशो मे लगे; नील. मने—नीले आकाश के सुर को ले कर मेरे एकान्त मन मे बजावे; वरन—वर्ण, रग; मेलुक—प्रसारित कर दे. डोबार—डूबने की; राङा—लाल; वेलाय—वेला मे; छड़ाव खेलाय—रंगों के खेल मे प्राणो को बिखेर दूगा, आपन .. कोणे—अपने-आप आंखों के कोनों से, अश्रु. भेसे—आंसुओ की झलक तिर उठेगी।

८९. आमाय—मुझे; यावार वेलाय—जाने के समय; पिछु—पीछे से, डाके—पुकारता है ('पिछु डाका'—आगे जाते हुए व्यक्ति को पीछे से बुलाना); आलो—आलोक; फाँक—व्यवधान, सन्धि; पाखि—पक्षी; ओठे डाकि—पुकार उठता है, भरा डाके—भरी हुई नदी (वन की) छाया-तले दौड़ी जाती है, (पता नही) किसे खोजती है, (किसे) पीछे से पुकारती है;

आमार प्राणेर भितर से के थेके थेके
विदायप्रातेर उतलाके पिछु डाके ।।

१९२९-३८

९०

नूपुर बेजे याय रिनिरिनि ।
आमार मन कय, चिनि चिनि ।।

गन्ध रेखे याय मधुवाये माधवीवितानेर छाये छाये,
धरणी शिहराय पाये पाये, कलसे कङ्कणे किनिकिनि ।
पारुल शुधाइल, के तुमि गो, अजाना काननेर मायामृग ।
कामिनी फुलकुल बरपिछे, पवन एलोचुल परशिछे,–
आँधारे तारागुलि हरपिछे, झिल्लि झनकिछे झिनिझिनि ।।

१९२९-३२

९१

वने यदि फुटल कुसुम नेइ केन सेइ पाखि ।
कोन् सुदूरेर आकाश हते आनब तारे डाकि ।।

आमार....के—मेरे प्राणो के भीतर वह कौन, थेके थेके—रह-रह कर… उतलाके—चचल, भावावेग से आकुल को।

९०. बेजे याय—बज जाता है, आमार चिनि—मेरा मन कहता है (उसे) पहचानता हूँ, पहचानता हूँ; मधुवाये—वसन्तकालीन वायु में, मदि… वायु में; छाये—छाया में; शिहराय—सिहरती है, पाये पाये—(उसके) प्रति चरणनिक्षेप पर, कलसे—कलश मे, पारुल—एक पुष्प विशेष, पाटली… शुधाइल—पूछा, के. गो—अजी, तुम कौन हो; अजाना—अजान; फुलकु… —पुष्पसमूह; बरषिछे—बरसा रहा है; पवन...परशिछे—पवन (उसके… आलुलायित केशों को स्पर्श कर रहा है; आँधारे....हरषिछे—अन्धकार में ता… हर्षित हो रहे हैं, झिल्ली—झिल्ली, झींगुर; झनकिछे—झनकार कर रहे हैं…

९१ वने. पाखि—वन मे यदि फूल खिला तो वह पक्षी क्यो नह… है, कोन्.....डाकि—किस सुदूर आकाश से उसे बुला लाऊँगा; हाओयाय…

हाओयाय हाओयाय मातन जागे, पाताय पाताय नाचन लागे गो—
एमन मधुर गानेर वेलाय सेइ शुधु रय बाकि ।।
उदास-करा हृदय-हरा ना जानि कोन् डाके
सागर-पारेर वनेर धारे के भुलालो ताके ।
आमार हेथाय फागुन वृथाय बारे बारे डाके ये ताय गो—
एमन रातेर व्याकुल व्यथाय केन से देय फाँकि ।।
१९२९-३२

९२

लिखन तोमार धुलाय हयेछे धूलि,
हारिये गियेछे तोमार आखरगुलि ।
चैत्ररजनी आज वसे आछि एका, पुन वुझि दिल देखा—
वने वने तव लेखनीलीलार रेखा,
नवकिशलये गो कोन् भुले एल भुलि, तोमार पुरानो आखरगुलि ।।
मल्लिका आजि कानने कानने कत
सौरभे-भरा तोमारि नामेर मतो ।

जागे—हवा-हवा में मत्तता जग रही है (हवा में मस्ती है); पाताय . गो—पत्ते-पत्ते मे नाचने की प्रवृत्ति है (पत्तिया नाच रही हैं); एमन बाकि—ऐसी मधुर गान की वेला मे वही केवल बाकी है, उदास ताके—उदासीन करने वाली, हृदय को हरने वाली न-जाने किन पुकार ने सागर-पार वन के किनारे उसे किसने भुला रखा है, आमार . फाँकि—यहाँ मेरा फाल्गुन बार-बार उसे वृथा पुकारता है, ऐसी रात की व्याकुल व्यथा मे वह क्यो छल करता है।

९२ लिखन धूलि—तुम्हारी लिपि धूल मे धूल (एकाकार) हो गई है, हारिये आखरगुलि—तुम्हारे अक्षर खो गए हैं, चैत्र एका—चैत्र की रात्रि में आज अकेला बैठा हुआ हूँ; पुन—पुन.; बुझि . देखा—[illegible] जैसे दिखाई दी; कोन् भुलि—किस भूल से भूल कर आए; पुरानो—पुराने; कत—कितने; तोमारि. मतो—तुम्हारे ही नाम के [illegible]

कोमल तोमार अङ्गुलि-छोँओया वाणी मने दिल आजि आनि
विरहेर कोन् व्यथाभरा लिपिखानि।
माधवीशाखाय उठितेछे दुलि दुलि तोमार पुरानो आखरगुलि॥
१९२९-३२

९३.

आजि साँझेर यमुनाय गो
तरुण चाँदेर किरणतरी कोथाय भेसे याय गो॥
तारि सुदूर सारिगाने विदायस्मृति जागाय प्राणे
सेइ-ये दुटि उतल आँखि उछल करुणाय गो॥
आज मने मोर ये सुर वाजे केउ ता शोने नाइ कि।
एकला प्राणेर कथा निये एकला ए दिन याय कि।
याय यावे, से फिरे फिरे लुकिये तुले नेय नि कि करे
आमार परम वेदनखानि आपन वेदनाय गो॥
१९२९-३२

अङ्गुलि-छोँओया—उंगली से स्पर्श की हुई; मने ... आनि—आज याद करा दी; विरहेर ... खानि—व्यथा से भरी हुई कौनसी विरह की लिपि; माधवी.... आखरगुलि—माधवी की शाखाओं पर तुम्हारे पुराने अक्षर झूम-झूम उठते हैं।

९३. आजि . .गो—अजी, आज साँझ की यमुना में; कोथाय ...याय—कहाँ बहती जा रही है; तारि . . प्राणे—उसके सुदूर मल्लाहों के गान प्राणों में विदा की स्मृति जगाते हैं; सारिगान—मल्लाहों के गान; सेइ... गो—वही करुणा से उच्छलित, भावावेग से आकुल दोनों आँखें; आज . कि—आज मेरे मन में जो सुर बज रहा है, उसे क्या किसीने नहीं सुना; एकला.... कि—एकाकी प्राणों की बात ले कर अकेले ये दिन बीतेंगे क्या; याय यावे—जाते हैं, तो जांय; से....गो—अजी, क्या उसने लौट-लौट कर अपनी वेदना में मेरी परम वेदना को चुपचाप अपने हाथों नहीं उठा लिया।

९४

एकला ब'से, हेरो, तोमार छवि   एँकेछि आज वासन्ती रङ दिया।
खोँपार फुले एकटि मधुलोभी   मौमाछि ओड गुञ्जरे वन्दिया॥
समुख-पाने वालुतटेर तले   शीर्ण नदी श्रान्तधाराय चले,
वेनुच्छाया तोमार चेलाञ्चले   उठिछे स्पन्दिया॥
मग्न तोमार स्निग्ध नयन दुटि   छायाय छन्न अरण्य-अङ्गने
प्रजापतिर दल येखाने जुटि   रङ छड़ालो प्रफुल्ल रङ्गने।
तप्त हाओयाय शिथिलमञ्जरी   गोलकचाँपा एकटि दुटि करि
पायेर काछे पड़छे झरि झरि   तोमारे नन्दिया॥
घाटेर धारे कम्पित झाउशाखे   दोयेल दोले सगीते चञ्चलि,
आकाश ढाले पातार फाँके फाँके तोमार कोले सुवर्ण-अञ्जलि।
वनेर पथे के याय चलि दूरे— वाँशिर व्यथा पिछन-फेरा सुरे
तोमाय घिरे हाओयाय घुरेघुरे   फिरिछे ऋन्दिया॥

१९२९-३२

---

९४. एकला. दिया—देखो, आज अकेले बैठ कर वासन्ती रग मे तुम्हारी तस्वीर आँकी है; खोँपार. वन्दिया—जूडे के फूल मे मधु का लोभी एक भ्रमर स्तुति करता हुआ गुञ्जार कर रहा है, समुख-पाने—सामने की ओर, चेलाञ्चले—पट्टवस्त्र के अञ्चल मे, उठिछे स्पन्दिया—स्पन्दित हो रही है, दुटि—दो, छन्न—आच्छन्न; प्रजापतिर जुटि—जहाँ तितलियों के दल ने मिल कर, रड छडालो—रग बिखेर दिये है, रङ्गने—रगन (पुष्प विशेष) मे, तप्त नन्दिया—तपी हवा मे शिथिल मजरी वाला गोलकचम्पा एक-दो करके तुम्हारा अभिनन्दन करता हुआ (तुम्हारे) चरणो के निकट झर-झर पडता है, दोयेल—एक पक्षी विशेष; आकाश . अञ्जलि—आकाश पत्तियो की हर सन्धि से तुम्हारी गोद मे स्वर्ण-अञ्जलि ढाल रहा है, वनेर दूरे—वन पथ से कौन दूर चला जा रहा है, पिछन-फेरा—पीछे लौटाने वाले; तोमाय .क्रन्दिया—तुम्हे घेर कर हवा मे क्रन्दन करती हुई फिर रही है (चक्कर काट रही है)।

९५

ए पारे मुखर हल केका ओइ, ओ पारे नीरव केन कुहु हाय।
एक कहे, 'आर-एकटि एका कइ, शुभयोगे कबे हब दुँहु हाय।'
अधीर समीर पुरवैयाँ निविड विरह व्यथा बइया
निश्वास फेले मुहु मुहु हाय।
आषाढ़ सजलघन आँधारे भावे वसि दुराशार धेयाने,—
'आमि केन तिथिडोरे बाँधा रे, फागुनेरे मोर पाशे के आने।'
ऋतुर दु धारे थाके दुजने, मेले ना ये काकली ओ कूजने,
आकाशेर प्राण करे हुहु हाय॥

१९३१-३२

९६

चाँदेर हासिर बाँध भेङेछे, उछले पड़े आलो।
ओ रजनीगन्धा, तोमार गन्धसुधा ढालो॥
पागल हाओया बुझते नारे डाक पड़ेछे कोथाय तारे—
फुलेर वने यार पाशे याय तारेइ लागे भालो॥

---

९५ ए. .हाय—उस पार वह मयूर-ध्वनि मुखर हुई, उस पार, हाय, कोयल की कुहू नीरव क्यों है, एक. ...हाय—एक (ध्वनि) कहती है 'और एक एकाकिनी कहाँ है, कब (किस) शुभयोग में हाय, (हम) दो होंगे'; पुरवैयाँ—पुरवा, पुरवैया, पूरब से झूम-झूम कर बहने वाली हवा; बइया—वहन करती हुई; निश्वास फेले—लंबी साँसें लेती है; मुहु मुहु—बार-बार; भावे . धेयाने—दुराशा का ध्यान करता हुआ बैठा सोचता है; 'आमि.. आने'—मैं तिथि की डोरी में क्यों बँधा हुआ हूँ, फागुन को मेरे निकट कौन लाता है (लायेगा); ऋतुर कूजने—दोनों ऋतु के दो तटों पर रहते हैं, काकली और कूजन मिलते जो नहीं।

९६ चाँदेर. .आलो—चाँद की हँसी का बाँध टूट गया है, आलोक उद्वेलित हो उठा है; तोमार.. ढालो—अपने गन्ध रूपी अमृत को ढालो; पागल नारे—पागल हवा समझ नहीं पाती, कहाँ उसकी पुकार हुई है; फुलेर भालो—फूलों के वन में जिसके निकट जाती है, उसे ही भला लगता है;

नील गगनेर ललाटखानि चन्दने आज माखा,
वाणीवनेर हंसमिथुन मेलेछे आज पाखा।
पारिजातेर केशर निये धराय शशी, छड़ाओ की ए।
इन्द्रपुरीर कोन् रमणी वासर प्रदीप ज्वाल।

१९२९-३२

९७

चैत्र पवने मम चित्तवने वाणीमञ्जरी सञ्चलिता
ओगो ललिता।
यदि विजने दिन वहे याय खर तपने झरे पड़े हाय
अनादरे हबे धूलिदलिता
ओगो ललिता॥
तोमार लागिया आछि पथ चाहि— बुझि वेला आर नाहि नाहि।
वनछायाते तारे देखा दाओ, करुण हाते तुले निये याओ—
कण्ठहारे करो संकलिता
ओगो ललिता॥

१९२९-३२

नील माखा—नील आकाश का ललाट आज चंदन से चर्चित है, वाणी. पाखा—वाणी-वन के हंस-मिथुन (हंसों के जोड़े) ने आज पंख पसारे हैं; पारिजातेर ए—चन्द्रमा, पारिजात का केशर ले कर पृथ्वी पर यह क्या बिखेर रहे हो, कोन्—कौन, वासर—वह कक्ष जिस में वर-कन्या विवाह की रात बिताते हैं, ज्वाल—जलाती हो।

९७ सञ्चलिता—दोलायित(है), ललिता—सुन्दरी, यदि याय—यदि एकान्त में दिन बीत जाय; खर हाय—हाय, प्रखर धूप में (यदि) झर कर गिर पड़े; अनादरे—अनादर से, हबे—होगी; तोमार चाहि—तुम्हारे लिये पथ निहार रहा हूँ; बुझि नाहि—लगता है, अब और समय नहीं है. वनछायाते . दाओ—वनछाया में उन्हें दर्शन दो; करुण . याओ—करुण हाथों से (उन्हें) चुन कर लेती जाओ, करो संकलिता—[illegible]।

९८

जानि, हल यावार आयोजन—
तबु पथिक, थामो किछुक्षण ।।
श्रावण गगन वारि-झरा, कानानवीथि छायाय भरा,
शुनि जलेर झरोझरे यूथीवनेर फुल-झरा क्रन्दन ।।
येयो— यखन वादलशेषेर पाखि
पथे पथे उठवे डाकि ।
शिउलिवनेर मधुर स्तवे जागवे शरत्‌लक्ष्मी यवे,
शुभ्र आलोर शङ्खरवे परवे भाले मङ्गलचन्दन ।।

१९२९-३२

९९

नीलाञ्जनछाया, प्रफुल्ल कदम्ववन,
जम्वुपुञ्जे श्याम वनान्त, वनवीथिका घनसुगन्ध ।
मन्थर नव नीलनीरद— परिकीर्ण दिगन्त ।
चित्त मोर पन्थहारा कान्तविरहकान्तारे ।

१९२९-३२

९८ जानि. क्षण—जानता हूँ, जाने का आयोजन हो गया है, तोभी पथिक, थोड़ी देर ठहरो, छायाय—छाया से; शुनि झरोझरे—जल की झर-झर ध्वनि में सुनता हूँ; येयो—जाना; यखन ...डाकि—जब वर्षा के अन्त (में आने वाला) पक्षी रास्ते-रास्ते पुकार उठेगा, शिउलि—शेफाली, जागबे —जागेगी; यवे—जब, शुभ्र ...चन्दन—शुभ्र आलोक के शंख की ध्वनि से ललाट पर मंगल-चन्दन धारण करेगी।

९९ परिकीर्ण—समान रूप से व्याप्त; चित्त हारा—मेरा चित्त पथ-भोला हुआ है; कान्तविरहकान्तारे—प्रिय-वियोग के सघन वन में ।

१००

वाजे करुण सुरे हाय दूरे
तव चरणतल-चुम्बित पन्थवीणा ।
ए मम पान्थचित चञ्चल हाय
जानि ना की उद्देशे ।।
यूथीगन्ध अशान्त समीरे
धाय उतला उच्छ्वासे,
तेमनि चित्त उदासी हे हाय
निदारुण विच्छेदेर निशीथे ।।

१९२९-३२

१०१

सखी, आँधारे एकेला घरे मन माने ना ।
किसेरइ पियासे कोथा ये यावे से, पथ जाने ना ।।
झरोझरो नीरे, निविड़ तिमिरे, सजल समीरे गो
येन कार वाणी कभु काने आने— कभु आने ना ।।

१९२९-३२

१०२

सुनील सागरेर श्यामल किनारे
देखेछि पथे येते तुलनाहीनारे ।।

---

१००. वाजे—बजती है, ए—यह; जानि उद्देशे—न जाने कि[illegible] कारण, धाय—दौडता है; उतला—उतावला. तेमनि—वैसे ही, निदारुण—अत्यन्त असह्य ।

१०१ आँधारे ना—अन्धकार में सूने घर में मन नहीं मानता, किसेरइ ना—किस (वस्तु) की तृष्णा में वह कहाँ जायगा, पथ नहीं जानता, झरोझरो—झर-झर; येन. ना—जैसे किसी की वाणी [illegible] है, कभी नहीं लाते ।

१०२. देखेछि . हीनारे—तुलनाहीना (अतुलनीया) [illegible]

ए कथा कभु आर पारे ना घुचिते,
आछे से निखिलेर माधुरीरुचिते।
ए कथा शिखानु ये आमार वीणारे,
गानेते चिनालेम से चिर-चिनारे॥
से कथा सुरे सुरे छड़ाब पिछने
स्वपनफसलेर बिछने बिछने।
मधुपगुञ्जे से लहरी तुलिबे,
कुसुमपुञ्जे से पवने दुलिबे,
झरिबे श्रावणेर बादलसिचने॥
शरते क्षीण मेघे भासिबे आकाशे
स्मरणवेदनार वरने आँका से।
चकिते क्षणे क्षणे पाब ये ताहारे
इमने केदाराय बेहागे बाहारे॥

१९२१-२२

१०३

स्वपने दोँहे छिनु की मोहे, जागार बेला हल—
याबार आगे शेष कथाटि बोलो।

(मैंने) देखा है, ए ...रुचिते—यह बात कभी और मिट नहीं सकती कि वह विश्व की मधुर शोभा में (वर्तमान) है; ए... .वीणारे—यह बात मैंने अपनी वीणा को सिखाई; गानेते....चिनारे—गान में उस चिरपरिचित को पहचनवाया (चिरपरिचित से परिचित कराया); से. पिछने—उसी बात को प्रति सुर में (बीज की भाँति) पीछे बिखेरता जाऊँगा, स्वपनफसलेर. ... बिछने—सपनों की फसल के हर बिछाव में; मधुप तुलिबे—भौंरों की गुञ्जार में वह लहरियाँ उठाएगी; दुलिबे—झूमेगी, झरिबे—झरेगी; बादलसिचने—वर्षा के सिंचन में; बरने—रंग में, आँका—अंकित; चकिते—विस्मय से; पाब . ताहारे—उसे पाऊँगा; इमने बाहारे—ईमन, केदारा, बिहाग और बहार (राग-रागिनियों) में।

१०३. स्वपने .. मोहे—स्वप्न में (हम) दोनों कैसे बेसुध थे, जागार.... हल—जागने का समय हुआ; याबार बोलो—जाने के पहले अन्तिम बात कहो;

फिरिया चेये एमन किछु दियो
वेदना हवे परम रमणीय—
आमार मने रहिवे निरवधि
विदायखने खनेक-तरे यदि सजल आँखि तोलो ।।
निमेषहारा ए शुकतारा एमनि उषाकाले
उठिवे दूरे विरहाकाशभाले ।
रजनीशेषे एइ-ये शेष-काँदा
वीणार तारे पड़िल ताहा वाँधा,
हारानो मणि स्वपने गाँथा रवे—
हे विरहिणी, आपन हाते तवे विदायद्वार खोलो ।।

१९२९-३२

१०४

आमार जीवनपात्र उच्छलिया माधुरी करेछ दान—
तुमि जान नाइ, तुमि जान नाइ,
तुमि जान नाइ तार मूल्येर परिमाण ।।
रजनीगन्धा अगोचरे
येमन रजनी स्वपने भरे सौरभे,

फिरिया . .रमणीय—फिर कर देख, कुछ ऐसा देना (कि जिससे) वेदना [illegible] रमणीय हो जाएगी; आमार . . तोलो—(वह 'कुछ') बराबर मेरे मन में [illegible]— यदि विदाई के क्षण में क्षण भर के लिये सजल आँखें उठाओ; निमेषहारा—[illegible] हीन; ए—यह, एमनि—इसी प्रकार; उठिवे . . भाले—विरहाकाश के [illegible] पर दूर उदित होगा; रजनी . . वाँधा—रात्रि के अन्त में [illegible] अन्तिम [illegible] (है), वह वीणा के तारों में बँध गया; हारानो . . रवे—[illegible] में गुँथी रहेगी; आपन . . खोलो—अपने हाथों तब विदाई का द्वार [illegible]।

१०४ आमार . . दान—मेरे जीवनपात्र को [illegible] (तुमने) माधुरी (मधुरता) दान की है; तुमि . . नाइ—तुम नहीं जानते, तार—[illegible], रजनीगन्धा . . सौरभे—जैसे रजनीगन्धा आँखों की ओट रात्रि को [illegible]

तुमि जान नाइ, तुमि जान नाइ,
तुमि जान नाइ, मरमे आमार ढेलेछ तोमार गान ।।
विदाय नेबार समय एबार हल—
प्रसन्न मुख तोलो, मुख तोलो, मुख तोलो;
मधुर मरणे पूर्ण करिया सँपिया याब प्राण चरणे ।
यारे जान नाइ, यारे जान नाइ, यारे जान नाइ
तार गोपन व्यथार नीरव रात्रि होक आजि अवसान ।।

१९३२-३६

१०५

आमार नयन तव नयनेर निविड़ छायाय
मनेर कथार कुसुमकोरक खोँजे ।
सेथाय कखन अगम गोपन गहन मायाय
पथ हाराइल ओ ये ।।
आतुर दिठिते शुधाय से नीरवेरे—
निभृत वाणीर सन्धान नाइ ये रे;
अजानार माझे अबूझेर मतो फेरे
अश्रुधाराय मजे ।।

सुगन्धि से भर देती है, मरमे ...गान—(वैसे ही) मेरे मर्म (हृदय) में (तुमने) अपने गान डाले हैं; विदाय...तोलो—विदा लेने का अब समय हुआ, प्रसन्न मुख उठाओ, मधुर...चरणे—मधुर मरण में प्राणों को पूर्ण कर (तुम्हारे) चरणों में सौंप जाऊँगा, यारे...अवसान—जिसे नहीं जानती, उसकी गोपन व्यथा की नीरव रात्रि का आज अवसान हो ।

१०५ आमार...खोँजे—मेरी आँखें तुम्हारी आँखों की निविड़ छाया में मन की बात (रूपी) कुसुम-कलिका खोजती हैं; सेथाय...ये—वहां कब अगम, गोपन, गहन माया में उन (आँखों) ने पथ खो दिया, दिठिते—दृष्टि से; शुधाय...नीरवेरे—वे (आँखें) नीरव से पूछती हैं; नाइ—नहीं है; अजानार...मजे—अज्ञान के बीच अबोध की नाईं अश्रुधारा में निमज्जित भटकती फिरती हैं;

आमार हृदये ये कथा लुकानो तार आभाषण
फेले कभु छाया तोमार हृदयतले ?
दुयारे एँकेछि रक्तरेखाय पद्म-आसन,
से तोमारे किछु वले ?
तव कुञ्जेर पथ दिये येते येते
वातासे वातासे व्यथा दिइ मोर पेते—
वाँशि की आशाय भाषा देय आकाशेते
से कि केह नाहि वोझे ।।

१९३३-३६

१०६

ना ना ना, डाकव ना, डाकव ना अमन करे वाइरे थेके ।
पारि यदि अन्तरे तार डाक पाठाव, आनव डेके ।।
देवार व्यथा वाजे आमार वुकेर तले,
नेवार मानुष जानि ने तो कोथाय चले—
एइ देओया-नेओयार मिलन आमार घटावे के ।।

आमार....लुकानो—मेरे हृदय मे जो वात छिपी हुई है, तार—उनके, आभाषण—वोल, फेले हृदयतले—तुम्हारे हृदय-पट पर कभी (क्या अपनी) छाया डालते हैं; दुयारे .वले—द्वार पर रक्त की रेखाओं से (मैंने) पद्म-आसन आँका है, वह (क्या कभी) तुम से कुछ कहता है; तव पेते—तुम्हारे कुञ्ज के रास्ते मे जाते-जाते हवा मे (मैं) अपनी व्यथा विछा देता हूँ; वाँशि . . वोझे—वांसुरी किस आशा से आकाश को भाषा प्रदान करती है, वह क्या कोई नही समझता ।

१०६ डाकव . थेके—इस प्रकार वाहर से नही पुकारूँगी, नहीं [illegible]रूँगी, पारि डेके—अगर (पुकार) सकूँ तो उनके अन्तर मे (अपनी) पुकार पहुँचाऊँगी (और उन्हे) वुला लाऊँगी; देवार वुले—देने (सौंपने) की [illegible] मेरे हृदय-तल मे कसकती है; नेवार चले—(उन्हे लेने वाले) [illegible] व्यक्ति, नही जानती, कहाँ विचरण करता है; एइ के—[illegible]

मिलवे ना कि मोर वेदना तार वेदनाते—
गङ्गाधारा मिशवे नाकि कालो यमुनाते।
आपनि की सुर उठल वेजे
आपना हते एसेछे ये—
गेल यखन आशार वचन गेछे रेखे॥

१९२३-२६

१०७

ना चाहिले यारे पाओया याय, तेयागिले आसे हाते,
दिवसे से धन हारियेछि आमि, पेयेछि आँधार राते।
ना देखिवे तारे, परशिवे ना गो; तारि पाने प्राण मेले दिये जागो—
ताराय ताराय रवे तारि वाणी, कुसुमे फुटिवे प्राते॥
तारि लागि यत फेलेछि अश्रुजल
वीणावादिनीर शतदलदले करिछे ता टलोमल।
मोर गाने गाने पलके पलके झलसि उठिछे झलके झलके,
शान्त हासिर करुण आलोके भातिछे नयनपाते॥

१९२३-२६

का मिलन कौन घटित कराएगा; मिलवे ... यमुनाते—मेरी वेदना, उसकी वेदना के साथ क्या नही मिलेगी, गंगा की धारा क्या काली यमुना मे नही घुलेगी, आपनि. . बेजे—अपने-आप ही कौन-सा सुर वज उठा; आपना..... ये—(जो) अपने-आप ही आया था; गेल. ..रेखे—जब गया, आशा की वाणी रख गया।

१०७ ना . हाते—जो विना माँगे मिलता है (और) त्यागने पर हाथ आता है; दिवसे ...राते—उस धन को मैंने दिन मे गँवाया (और) अँधेरी रात्रि में पाया है, ना ..ना—उसे देख न पाओगे, छू न सकोगे; तारि... जागो—उसी की ओर प्राणों को प्रसारित कर जागो; रबे—रहेगी; तारि. ... टलोमल—उसके लिये जितने आँसू बहाए हैं, वीणावादिनी (सरस्वती) के शतदल (कमल) की पखुड़ियों में वे ढुलक रहे हैं; मोर ...झलके—मेरे गान-गान में प्रतिपल हर कौंध में चकाचौंध लगा रहा है; शान्त ... पाते—शान्त हँसी के करुण आलोक मे नयन-पल्लवों में दीप्त हो रहे हैं।

१०८

रोदनभरा ए वसन्त कखनो आसे नि बुझि आगे।
मोर विरहवेदना राडालो किंशुकरक्तिमरागे।।
कुञ्जद्वारे वनमल्लिका सेजेछे परिया नव पत्रालिका,
सारा दिन-रजनी अनिमिखा कार पथ चेये जागे।।
दक्षिणसमीरे दूर गगने एकेला विरही गाहे बुझि गो।
कुञ्जवने मोर मुकुल यत आवरणबन्धन छिंड़िते चाहे।
आमि ए प्राणेर रुद्ध द्वारे व्याकुल कर हानि बारे बारे—
देओया हल ना ये आपनारे एइ व्यथा मने लागे।।

१९३३-३६

१०९

शुनि क्षणे क्षणे मने मने अतल जलेर आह्वान।
मन रय ना, रय ना, रय ना घरे, चञ्चल प्राण।।
भासाये दिब आपनारे भरा जोयारे,
सकल-भावना-डुबानो धाराय करिब स्नान—
व्यर्थ वासनार दाह हवे निर्वाण।।

---

१०८ रोदन . आगे—रुदन से भरा यह वसन्त (इसके) पहले शायद कभी नही आया, मोर रागे—मेरी विरह वेदना किंशुक (पलाश) के रक्तिम (लाल) रंग मे रँग गई; कुञ्जद्वारे पत्रालिका—कुञ्जद्वार पर वनमल्लिका नवीन पत्रालिका (कपोलो पर चित्ररचना अथवा किसलय-समष्टि) धारण कर सजी है; सारा. .. .जागे—समस्त दिन-रात अनिमेष दृष्टि से वह (वनमल्लिका) किसकी बाट जोहती जाग रही है, एकेला—अकेला; गाहे—गाता है, बुझि—ऐसा लगता है जैसे, कुञ्ज चाहे—कुञ्जवन की मेरी सभी कलियाँ आवरण के बन्धन को छिन्न करना चाहती है, आमि बारे—मैं इन प्राणो के रुद्ध द्वार पर बार-बार व्याकुल हाथो से आघात करती हूँ; देओया लागे—मन मे यही व्यथा होती है कि अपने-आपको देना जो नहीं हुआ।

१०९ शुनि—सुनता हूँ, रय घरे—घर मे नहीं लगता; भासाये जोयारे—भरे ज्वार मे अपने को बहा दूंगा. सकल . स्नान—सभी चिन्ताओ को डुबाने वाली धारा मे स्नान करूँगा. वासनार दाह—वासना का दाह. हबे निर्वाण—बुझ जाएगा.

ढेउ दियेछे जले।
ढेउ दिल आमार मर्मतले।
एकि व्याकुलता आजि आकाशे, एइ वातासे,
येन उतला अप्सरीर उत्तरीय करे रोमाञ्चदान—
दूर सिन्धुतीरे कार मञ्जीरे गुञ्जरतान।।

१९३३-३६

११०

हे निरुपमा,
गाने यदि लागे विह्वल तान करियो क्षमा।।
झरोझरो धारा आजि उतरोल, नदीकूले-कूले उठे कल्लोल,
वने वने गाहे मर्मरस्वरे नवीन पाता।
सजल पवन दिशे दिशे तोले बादलगाथा।।
हे निरुपमा,
चपलता आजि यदि घटे तबे करियो क्षमा।
तोमार दुखानि कालो आँखि-'परे बरषार कालो छायाखानि पड़े,
घन कालो तव कुञ्चित केशे यूथीर माला।।
तोमारि चरणे नववरषार वरणडाला।।

ढेउ...जले—जल में तरंग उठी है, ढेउ...मर्मतले—मेरा अन्तस्तल तरंगायित हुआ है; एकि...वातासे—आज आकाश में, इस हवा में यह कैसी व्याकुलता है; येन.....दान—जैसे अधीर अप्सरी का उत्तरीय रोमांचित कर रहा है; कार—किसके; मञ्जीरे—नूपुरों में।

११०. गाने...क्षमा—यदि गान की तान में विह्वलता हो तो क्षमा करना; झरोझरो...उतरोल—झर-झर वर्षा आज उद्विग्न है; वने...पाता—वन-वन में नवीन पत्ते मर्मर ध्वनि में गा रहे हैं; सजल...गाथा—सजल पवन दिशा-दिशा में वर्षा की गाथा छेड़ रहा है; चपलता...क्षमा—आज यदि किसी प्रकार की चंचलता बन पड़े तो क्षमा करना; तोमार...पड़े—तुम्हारी दो काली आँखों पर वर्षा की काली छाया पड़ती है; तोमारि...डाला—तुम्हारे

हे निरुपमा,
चपलता आजि यदि घटे तबे करियो क्षमा।
एल बरषार सघन दिवस, वनराजि आजि व्याकुल विवश,
बकुलवीथिका मुकुले मत्त कानन-'परे।
नवकदम्ब मदिर गन्धे आकुल करे।।
हे निरुपमा,
आँखि यदि आज करे अपराध, करियो क्षमा।
हेरो आकाशेर दूर कोणे कोणे विजुलि चमकि ओठे खने खने,
द्रुत कौतुके तव वातायने की देखे चेये।
अधीर पवन किसेर लागिया आसिछे धेये।।

१९३३-३६

१११

अशान्ति आज हानल ए की दहनज्वाला।
विँधल हृदय निदय वाणे वेदनढाला।।
वक्षे ज्वालाय अग्निशिखा, चक्षे काँपाय मरीचिका—
मरणसुतोय गाँथल के मोर वरणमाला।।

ही चरणो मे नव वर्षा की वरण-डाली (निवेदित) है; एल—आया; बरषार—वर्षा का, मुकुले मत्त—कलियो से मत्त; नव करे—नव कदम्ब (अपने) मदिर गन्ध से आकुल करता है, आँखि. अपराध—आँखे यदि आज अपराध करें (आँखो से यदि अपराध हो जाय); हेरो. . खने—देखो, दूर आकाश के कोने-कोने मे क्षण-क्षण विजली चमक उठती है; कौतुके—कुतूहल से, की. . चेये—क्या देखती है; अधीर धेये—अधीर पवन किसलिए दौड़ा आ रहा है।

१११. अशान्ति . . ज्वाला—अशान्ति ने आज यह कैसी दहन-ज्वाला निक्षिप्त की है; बिंधल. . . ढाला—वेदना-ढले निर्दय बाणो से हृदय बिंध गया; ज्वालाय—जलाती है; कांपाय—कँपाती है, मरण. माला—[illegible]

चेना भुवन हारिये गेल स्वपनछायाते,
फागुनदिनेर पलाशरङेर रङीन मायाते।
यात्रा आमार निरुद्देश, पथ-हारानोर लागल नेशा—
अचिन देशे एबार आमार यावार पाला।।

१९३२-३६

११२

आमरा दुजना स्वर्ग-खेलना गडिब ना धरणीते
मुग्ध ललित अश्रुगलित गीते।।
पञ्चशरेर वेदनामाधुरी दिये
वासररात्रि रचिब ना मोरा प्रिये—
भाग्येर पाये दुर्बल प्राणे भिक्षा ना येन याचि।
किछु नाइ भय, जानि निश्चय, तुमि आछ आमि आछि।।
उड़ाब ऊर्ध्वे प्रेमेर निशान दुर्गम पथ-माझे
दुर्दम वेगे दुःसहतम काजे।
रुक्ष दिनेर दुःख पाइ तो पाब—
चाइ ना शान्ति, सान्त्वना नाहि चाब।

धागे में किसने मेरी वरमाला गूँथी है; चेना ...छायाते—जाना-पहचाना जगत् स्वप्न की छाया में खो गया; फागुन ... मायाते—फाल्गुन के पलाश के रंग की रंगीन माया में (खो गया); पथ... .नेशा—राह भूलने का नशा चढ़ गया है; अचिन . ..पाला—अपरिचित देश में इस बार मेरे जाने की बारी है।

११२ आमरा. ..गीते—मुग्ध, ललित, अश्रुविगलित गीतों से हम दोनों पृथ्वी पर खेल-खेल का स्वर्ग नहीं गढ़ेंगे (निर्माण करेंगे); पञ्चशरेर. ..प्रिये—पञ्चशर (कामदेव) की वेदना-माधुरी के द्वारा, प्रिये, हमलोग वासर-रात्रि (विवाह-रजनी) की रचना नहीं करेंगे; भाग्येर . याचि—ऐसा हो कि भाग्य के चरणों में दुर्बल प्राणों से भिक्षा न मांगें, किछु.. आछि—कुछ भय नहीं, निश्चय पूर्वक जानता हूँ (कि) तुम हो (और) मैं हूँ; उड़ाब . .माझे—प्रेम की ध्वजा दुर्गम पथ में ऊपर की ओर उड़ाएंगे; रुक्ष. ..पाब—कठिन दिनों का दुःख पाएँगे तो पाएँ; चाइ ... चाब—(हम) शान्ति नहीं चाहते, सान्त्वना नहीं मांगेंगे;

पाडि दिते नदी हाल भाङ्गे यदि, छिन्न पालेर काछि.
मृत्युर मुखे दाँड़ाये जानिव, तुमि आछ आमि आछि ।।
दुजनेर चोखे देखेछि जगत्, दोँहारे देखेछि दोँहे—
मरुपथताप दुजने नियेछि सहे ।
छुटि नि मोहन मरीचिका-पिछे-पिछे,
भुलाइ नि मन सत्येरे करि मिछे—
एइ गौरवे चलिव ए भवे यत दिन दोँहे बाँचि ।
ए वाणी प्रेयसी, होक महीयसी, 'तुमि आछ आमि आछि' ।।

१९३३-३६

११३

प्रेमेर जोयारे भासावे दोँहारे— बाँधन खुले दाओ, दाओ दाओ ।
भुलिव भावना, पिछने चाव ना— पाल तुले दाओ, दाओ दाओ ।।
प्रवल पवने तरङ्ग तुलिल, हृदय दुलिल, दुलिल दुलिल—
पागल हे नाविक, भुलाओ दिग्‌विदिक— पाल तुले दाओ, दाओ दाओ ।।

१९३३-३६

पाड़ि .. यदि—नदी पार होने में यदि पतवार टूट जाय, छिन्न . काछि—पाल की रस्सी टूटी हो, मृत्युर आछि—मृत्यु के मुँह में खड़े हो कर जानेंगे, तुम हो, मैं हूँ; दुजनेर .दोँहे—दोनो की आँखो से हमने जगत् को देखा है, (तथा) दोनो ने दोनो को देखा है, मरु . सहे—मरु-पथ का उत्ताप हम दोनो ने सहन कर लिया है; छुटि .पिछे—मोहने वाली मरीचिका के पीछे-पीछे (हम) नही दौडे, भुलाइ मिछे—सत्य को मिथ्या कर (हम ने अपने) मन को नहीं भुलाया, एइ. बाँचि—इस संसार में हम दोनो जितने दिन जिएँगे, इसी गौरव के साथ चलेंगे, ए—यह, होक—हो।

११३ प्रेमेर दाओ—प्रेम का ज्वार (हम) दोनो को [illegible] बंधन खोल दो, खोल दो; भुलिव दाओ—चिन्ता भूल जाऊँगा, पीछे नहीं ताकूँगा, पाल चढा दो, चढा दो, प्रबल. .दुलिल—प्रबल पवन से तरंगें [illegible] है, हृदय झूम उठा, भुलाओ—भुला दो।

११४

आजि गोधूलिलगने एइ बादलगगने
तार चरणध्वनि आमि हृदये गणि—
'से आसिबे' आमार मन बले सारावेला,
अकारण पुलके आँखि भासे जले ॥
अधीर पवने तार उत्तरीय दूरेर परशन दिल कि ओ—
रजनीगन्धार परिमले 'से आसिबे' आमार मन बले ॥
उतला हयेछे मालतीर लता, फुरालो ना ताहार मनेर कथा।
वने वने आजि ए की कानाकानि,
किसेर वारता ओरा पेयेछे ना जानि,
कांपन लागे दिगङ्गनार बुकेर आँचले—
'से आसिबे' आमार मन बले ॥

१९३७-३९

११५

आजि दक्षिणपवने
दोला लागिल वने वने ॥
दिक्ललनार नृत्यचञ्चल मञ्जीरध्वनि अन्तरे ओठे रनरनि
विरहविह्वल हृत्स्पन्दने ॥

---

११४. एइ—इन; बादलगगने—वर्षा के आकाश मे; तार. गणि—उसकी चरणध्वनि को मैं (अपने) हृदय मे गिनता हूँ; से . बेला—मेरा मन सब समय कहता रहता है 'वह आयगा'; अकारण .जले—अकारण पुलक से आँखें आँसुओ में तिरती है; अधीर. .ओ—उसके उत्तरीय ने अधीर पवन मे यह कैसा दूर का स्पर्श दिया; उतला कथा—मालती की लता आकुल हुई है, उसके मन की बात चुकी नही; वने.. कानि—वन-वन मे आज यह कैसी कानाफूसी चल रही (चल रही) है; किसेर.. ...जानि—उन सबो ने न-जाने किसका संवाद पाया है; कांपन .आंचले—दिग्वधुओं की छाती के अंचल में कंपन का संचार होता है।

११५. दोला.. वने—समस्त वन झूम उठा; मञ्जीर—नूपुर; अन्तरे..

माधवीलताय भाषाहारा व्याकुलता
पल्लवे पल्लवे प्रलपित कलरवे।
प्रजापतिर पाखाय दिके दिके लिपि निये याय
उत्सव-आमन्त्रणे ॥

१९३७-३९

११६

आमार प्राणेर माझे सुधा आछे, चाओ कि—
हाय बुझि तार खबर पेले ना।
पारिजातेर मधुर गन्ध पाओ कि—
हाय बुझि तार नागाल मेले ना॥
प्रेमेर बादल नामल, तुमि जानो ना हाय ताओ कि।
मेघेर डाके तोमार मनेर मयूरके नाचाओ कि।
आमि सेतारेते तार बेँधेछि, आमि सुरलोकेर सुर सेधेछि,
तारि ताने ताने मने प्राणे मिलिये गला गाओ कि—
हाय आसरेते बुझि एले ना।

रनरनि—अन्तर में अनुरणित हो उठती है, माधवीलताय—माधवी लता में, भाषाहारा—भाषाहीन; प्रजापतिर याय—तितलियों के पर दिशाओं-दिशाओं मे पत्र ले जाते है।

११६ आमार . कि—मेरे प्राणों के भीतर अमृत है (उसे) चाहते हो क्या; हाय ना—हाय, लगता है (तुमने) उस की खबर नहीं पाई, पाओ कि—पाते हो क्या; हाय ना—हाय, लगता है वहां तक पहुँच नहीं है, प्रेमेर. कि—प्रेम की वर्षा उतरी है, हाय, तुम क्या इतना भी नहीं जानते, मेघेर. ...कि—मेघ के गर्जन पर अपने मन के मयूर को नचाते हो क्या; आमि . . बेँधेछि—मैंने सितार मे तार बांधा है, सुरलोकेर सेधेछि—[illegible] सुर साधा है; तारि. कि—उसकी तान-तान में मन-प्राण से [illegible] गाते हो क्या, हाय ना—हाय, लगता है, [illegible] की सभा में नहीं आए.

डाक उठेछे बारे बारे, तुमि साड़ा दाओ कि।
आज झूलनदिने दोलन लागे, तोमार पराण हेले ना॥
१०,३०-३९

११७

आमि तोमार सङ्गे बेँधेछि आमार प्राण सुरेर बाँधने—
तुमि जान ना, आमि तोमारे पेयेछि अजाना साधने॥
से साधनाय मिशिया याय बकुल गन्ध,
से साधनाय मिलिया याय कविर छन्द—
तुमि जान ना, ढेके रेखेछि तोमार नाम
रङिन छायार आच्छादने॥
तोमार अरूप मूर्तिखानि
फाल्गुनेर आलोते बसाइ आनि।
बाँशरि बाजाइ ललित-वसन्ते, सुदूर दिगन्ते
सोनार आभाय काँपे तव उत्तरी
गानेर तानेर से उन्मादने॥

१०,२७-३९

डाक ... कि—बार-बार पुकार हुई है, तुम उसका प्रत्युत्तर देते हो क्या, आजि ... ना—आज झूलन के दिन हिंडोला पेंग भर रहा है, (क्या) तुम्हारे प्राण नहीं झूमते।

११७ आमि ... बाँधने—तुम्हारे साथ अपने प्राणों को मैंने सुर के बन्धन में बाँधा है, तुमि ... साधने—तुम नहीं जानते, मैंने तुम्हें अजान साधन द्वारा पाया है, से ... गन्ध—उस साधना में बकुल का गन्ध घुल जाता है, मिलिया याय—विलीन हो जाता है; ढेके ... आच्छादने—तुम्हारे नाम को रंगीन छाया के आच्छादन में ढँक रखा है, तोमार ... आनि—तुम्हारी अरूप मूर्ति को फाल्गुन के प्रकाश में ला कर बिठाता हूँ; बाँशरि ... उन्मादने—ललित-वसन्त (राग अथवा ऋतु) में बाँसुरी बजाता हूँ, गान की तान के उस उन्माद से सुदूर दिगन्त में सुनहरी आभा में तुम्हारा उत्तरीय काँपता है।

११८

एइ उदासि हाओयार पथे पथे मुकुलगुलि झरे;
आमि कुड़िये नियेछि, तोमार चरणे दियेछि—
लहो लहो करुण करे ।।
यखन याब चले ओरा फुटबे तोमार कोले,
तोमार माला गाँथार आङुलगुलि मधुर वेदनभरे
येन आमाय स्मरण करे ।।
बउकथाकओ तन्द्राहारा विफल व्यथाय डाक दिये हय सारा
आजि विभोर राते ।
दुजनेर कानाकानि कथा, दुजनेर मिलनविह्वलता,
ज्योत्स्नाधाराय याय भेसे याय दोलेर पूर्णिमाते ।
एइ आभासगुलि पडबे मालाय गाँथा कालके दिनेर तरे
तोमार अलस द्विप्रहरे ।।

१९३७-३९

११९

ओगो किशोर, आजि तोमार द्वारे परान मम जागे ।
नवीन कबे करिबे तारे रङिन तव रागे ।।

---

११८ एइ.. झरे—इस उदासीन हवा के रास्ते-रास्ते कलियाँ झरती हैं, आमि. नियेछि—मैंने चुन ली हैं, चरणे दियेछि—(उन्हें) तुम्हारे चरणों में दिया (अर्पित किया) है, लहो करे—करुण हाथों से लो (ग्रहण करो), यखन कोले—(मैं) जब चला जाऊँगा, वे (कलियाँ) तुम्हारी गोद में खिलेंगी, तोमार . करे—ऐसा हो कि माला गूँथने वाली तुम्हारी अंगुलियाँ मधुर वेदना से भर मुझे याद करें, बउकथाकओ—(कोकिल की जाति का एक पक्षी), तन्द्राहारा—तन्द्राविहीन; विफल राते—आज विभोर (करने वाली) रात में विफल व्यथा से पुकार कर क्लान्त हो जाता है; दुजनेर पूर्णिमाते—दोनों की कानो-कान बातें, दोनों की मिलन-विह्वलता फाल्गुन की पूर्णिमा को चाँदनी की धारा में बह जाती है; एइ. . गाँथा—ये संकेत माला में गुँथ जाएँगे; कालके तरे—कल के लिये; तोमार. प्रहरे—तुम्हारी अलस दुपहरी में ।

११९ ओगो—अजी ओ; आजि जागे—आज तुम्हारे द्वार पर मेरे प्राण जागते हैं, नवीन रागे—अपने रंगीन राग (रंग, प्रेम) से उसे नव नवीन

भावनागुलि बाँधनखोला रचिया दिबे तोमार दोला,
दाँड़ियो आसि हे भावे-भोला आमार आँखि-आगे ।।
दोलेर नाचे बुझि गो आछ अमरावतीपुरे—
बाजाओ वेणु बुकेर काछे, बाजाओ वेणु दूरे ।
शरम भय सकलि त्येजे माधवी ताइ आसिल सेजे,
शुधाय शुधु, 'बाजाय के ये मधुर मधुसुरे ।'
गगने शुनि ए की ए कथा, कानने की ये देखि ।
एकि मिलन-चञ्चलता, विरहव्यथा एकि ।
आँचल काँपे धरार बुके, की जानि ताहा सुखे ना दुखे—
धरिते यारे ना पारे तारे स्वपने देखिछे कि ।।
लागिल दोल जले स्थले, जागिल दोल वने वने—
सोहागिनिर हृदयतले विरहिणीर मने मने ।
मधुर मोरे विधुर करे सुदूर तार वेणुर स्वरे,
निखिल हिया किसेर तरे दुलिछे अकारणे ।।

कर देंगे; भावना ...दोला—बंधनहीन भावनाएँ तुम्हारे झूले की रचना कर देंगी; दाँड़ियो ...आगे—हे भाव में भूले हुए, मेरी आँखों के सामने आ कर खड़े होना; दोलेर—झूले के; बुझि—लगता है; आछ—हो; बाजाओ .... दूरे—हृदय के निकट वेणु बजाते, दूर वेणु बजाते हो; शरम ...सेजे—इसीलिये लाज, भय सब कुछ त्याग कर माधवी सज कर आई है; शुधाय ...मधुसुरे—बार-बार पूछती है 'मादक मधुर सुर में कौन (बाँसुरी) बजाता है'; गगने .. देखि—आकाश में यह कैसी बात सुनता हूँ, वन में क्या देखता हूँ, एकि ...एकि—यह क्या मिलन की चञ्चलता (अथवा) विरह की व्यथा है; आँचल ...दुखे—धरती की छाती पर आँचल काँपता है, क्या जाने वह सुख से या दुख से (काँपता है), धरिते ...कि—जिसे पकड़ नहीं पाती उसे क्या स्वप्न में देख रही है; लागिल ...स्थले—जल में, स्थल में झूलन लगा है (सभी दोलायमान हैं); सोहागिनिर—सुहागिन (सौभाग्यवती) के; मधुर ...स्वरे—अपनी बाँसुरी के सुदूर सुर में 'मधुर' मुझे कातर कर रहा है, विधुर—कातर; निखिल ...अकारणे—समस्त निखिल-हृदय किस लिये अकारण दोलायमान है;

आनो गो आनो भरिया डालि करवीमाला लये,
आनो गो आनो साजाये थालि कोमल किशलये।
एसो गो पीत वसने साजि, कोलेते वीणा उठुक वाजि,
ध्यानेते आर गानेते आजि यामिनी याक वये।।
एसो गो एसो दोलविलासी वाणीते मोर दोलो,
छन्दे मोर चकिते आसि मातिये तारे तोलो।
अनेक दिन बुकेर काछे रसेर स्रोत थमकि आछे
नाचिवे आजि तोमार नाचे समय तारि हल।।

१९३७-३९

१२०

ओगो तुमि पञ्चदशी, पौँछिले पूर्णिमाते।
मृदुस्मित स्वप्नेर आभास तव विह्वल राते।।
क्वचित् जागरित विहङ्गकाकली
तव नवयौवने उठिछे आकुलि क्षणे क्षणे।
प्रथम आषाढेर केतकीसौरभ तव निद्राते।।
येन अरण्यमर्मर
गुञ्जरि उठे तव वक्षे थरोथर।

आनो . लये—करवी की (कनेर) माला ले कर डालिया भर लाओ, साजाये किलशये—कोमल किसलय से थाली सजा कर, एसो साजि—पीले वस्त्र में (सज कर) आओ, कोलेते .वाजि—गोद में वीणा वज उठे; ध्यानेते.. वये—ध्यान और गान में आज रात्रि व्यतीत हो जाय; एसो दोलो—अजी ओ दोल-विलासी (झूले के प्रेमी), आओ, मेरी वाणी में झूलो, छन्दे तोलो—मेरे छन्द में अचानक आ कर उसे मतवाला वना दो, अनेक आछे—बहुत दिनों से हृदय के निकट रस का स्रोत थमा हुआ है, नाचिवे .हल—आज तुम्हारे नाच में वह नाचेगा, उसीका समय हो आया है।

१२०. पौँछिले—पहुँची, आई, पूर्णिमाते—पूर्णिमा तक, उठिछे क्षणे—क्षण-क्षण आकुल हो उठती है; येन—जैसे; थरोथर—थर-थर,

अकारण वेदनार छाया घनाय मनेर दिगन्ते,
छलो छलो जल एने देय तव नयनपाते ॥

१९३७-३०

१२१

चिनिले ना आमारे कि।
दीपहारा कोणे छिनु अन्यमने,
फिरे गेले कारेओ ना देखि ॥
द्वारे एसे गेले भुले— परशने द्वार येत खुले,
मोर भाग्यतरी एटुकु बाधाय गेल ठेकि ॥
झड़ेर राते छिनु प्रहर गनि।
हाय, शुनि नाइ तव रथेर ध्वनि।
गुरुगुरु गरजने काँपि वक्ष धरियाछिनु चापि,
आकाशे विद्युत्वह्नि अभिशाप गेल लेखि ॥

१९३७-३१

१२२

जीवने परम लगन कोरो ना हेला,
कोरो ना हेला हे गरबिनि।

घनाय—घनीभूत हो उठती है, एने देय—ला देती है।

१२१ चिनिले...कि—मुझे पहचाना नहीं क्या, दीपहारा...अन्यमने—दीपविहीन कोने में अन्यमनस्क (बैठी) थी, फिरे...देखि—किसी को न देख लौट गए। द्वारे...भुले—द्वार पर आ कर भूल गए; परशने...खुले—(जो) छूने से ही द्वार खुल जाता, मोर...ठेकि—मेरी भाग्यतरी (नौका) उतनी-सी बाधा पर अटक कर रह गई; झड़ेर...गनि—आंधी की रात में प्रहर गिन रही थी, शुनि...ध्वनि—तुम्हारे रथ की आवाज नहीं सुनी, गुरुगुरु...चापि—(मेघ के) गुरु-गुरु गर्जन से कांपती वक्ष को दबाए हुए थी, आकाशे...लेखि—आकाश में विद्युत्वह्नि (बिजली की आग) अभिशाप लिख गई।

१२२ जीवने...गरबिनि—हे गर्विणी जीवन में परम लग्न (शुभ

वृथाइ काटिवे वेला, साङ्ग हवे ये खेला,
सुधार हाटे फुरावे विकिकिनि हे गरविनि ।।
मनेर मानुष लुकिये आसे, दाँडाय पाशे, हाय
हेसे चले याय जोयार-जले भासिये भेला—
दुर्लभ धने दुःखेर पणे लओ गो जिनि हे गरविनि ।।
फागुन यखन यावे गो निये फुलेर डाला
की दिये तखन गाँथिवे तोमार वरणमाला
हे विरहिणी ।
वाजवे बाँशि दूरेर हाओयाय,
चोखेर जले शून्य चाओयाय काटवे प्रहर—
वाजवे वुके विदायपथेर चरणफेला दिन यामिनी
हे गरविनि ।।

१९३७-३९

१२३

डेको ना आमारे, डेको ना, डेको ना ।
चले ये एसेछे मने तारे रेखो ना ।।

लग्न) की अवहेलना न करो; वृथाइ वेला—व्यर्थ ही घड़ी बीतेगी, साङ्ग खेला—खेल समाप्त जो हो जाएगा; सुधार गरविनि—हे अभिमानिनी, अमृत की हाट मे खरीद-बिक्री बन्द हो जाएगी, मनेर भेला—मन का मानुष (मीत) छिप कर आता है, बगल में खड़ा होता है (और) हाय, हँस [illegible] ज्वार के जल में भेला (बेड़ा) तिराए चला जाता है, दुर्लभ गरविनि—[illegible] गर्विणी, दुर्लभ धन को दुःख का मूल्य दे कर जीत लो, फागुन वरणमाला—फाल्गुन जब फूल की डाली ले कर चला जायगा, तब किस (चीज) से तुम अपनी वरमाला गूंथोगी, वाजवे हाओयाय—दूर हवा में बाँसुरी बजेगी, चोखेर प्रहर—आंखो मे जल भरे शून्य दृष्टि लिए प्रहर बीतेंगे (समय बीतेगा), वाजवे यामिनि—विदाई के पथ का पद-निक्षेप छाती में रातदिन कसका करेगा ।

१२३ डेको ना—मुझे न पुकारो, न पुकारो, चले ना—[illegible]

आमार वेदना आमि निये एसेछि,
मूल्य नाहि चाइ ये भालोबेसेछि,
कृपाकणा दिये आँखिकोणे फिरे देखो ना ।।
आमार दुःखजोयारेर जलस्रोते
निये यावे मोर लाञ्छना हते ।
दूरे याव यबे सरे तखन चिनिबे मोरे—
आज अवहेला छलना दिये ढेको ना ।।

१०.३७–३१

१२८

मने की द्विधा रेखे गेले चले से दिन भरा साँझे,
येते येते दुयार हते की भेवे फिराले मुखखानि—
की कथा छिल ये मने ।।
तुमि से कि हेसे गेले आँखिकोणे—
आमि बसे बसे भावि निये कम्पित हृदयखानि,
तुमि आछ दूर भुवने ।।
आकाशे उड़िछे बकपाँति,
वेदना आमार तारि साथि ।

आया हूँ उसे मन में न रखो, आमार ...एसेछि—अपनी वेदना मैं ले कर आया हूँ; मूल्य ... भालोबेसेछि—मूल्य नहीं चाहता, (मैंने) प्यार जो किया है; कृपाकणा ...ना—आँखों के कोनों में दया का कण लिए फिर कर न देखो; आमार... हते—मेरे दुःख के ज्वार का जलस्रोत मुझे सभी लाञ्छनाओं से (दूर) ले जायगा, दूरे ... मोरे—जब दूर हट जाऊँगा, तब मुझे पहचानोगी; आज ...ना—आज (अपनी) अवहेलना की छलना द्वारा न ढँको।

१२८. मने ... साँझे—उस दिन भरी साँझ को मन में क्या दुविधा लिए चले गए, येते ... मुखखानि—आते-जाते द्वार से क्या सोच कर मुँह फिराया; की ...मने—कौन सी बात मन में थी; तुमि ...कोणे—तुम आँखों के कोनों में मन्द-मुग्ध हँस कर चले गए; आमि ...भुवने—मैं कम्पित हृदय लिए बैठी-बैठी चिन्ता करती रहती हूँ, (और) तुम (कहीं) दूर विश्व में हो; आकाशे... साथि—आकाश में बगुलों की पंक्ति उड़ रही है, मेरी वेदना उन्हींकी संगिनी है;

वारेक तोमाय शुधावारे चाइ विदायकाले की वलो नाइ,
से कि रये गेल गो सिक्त यूथीर गन्धवेदने ॥
१९३७–३९

१२५

ये छिल आमार स्वपनचारिणी
तारे बुझिते पारि नि।
दिन चले गेछे खुँजिते खुँजिते ॥
शुभखने काछे डाकिले,
लज्जा आमार ढाकिले गो,
तोमारे सहजे पेरेछि वुझिते ॥

के मोरे फिरावे अनादरे,
के मोरे डाकिवे काछे,
काहार प्रेमेर वेदनाय आमार मूल्य आछे,
ए निरन्तर संशये हाय पारि ने यूझिते—
आमि तोमारेइ शुधु पेरेछि वुझिते ॥
१९३७–३९

बारेक चाइ—एक बार टुक तुमसे पूछना चाहती हूँ, बिदाय. .नाइ—विदाई के समय कौन-सी बात नही कह पाए; से. वेदने—वह (बात) क्या भीगी हुई जुही की गन्ध (रूपी) वेदना में (समाई) रह गई।

१२५. ये नि—जो मेरे स्वप्नो में विचरण करने वाली थी, उसे समझ नही सका; दिन. खुँजिते—खोजते-खोजते दिन बीत गए; शुभक्षणे गो—शुभक्षण में (तुमने अपने) निकट पुकारा (और) मेरी लज्जा ढँक दी; तोमारे. बुझिते—तुम्हे सहज ही मे समझ पाया हूँ; के अनादरे—कौन मुझे अनादर से लौटाएगा; के .काछे—कौन मुझे पास बुलाएगा; काहार .आछे—किसके प्रेम की वेदना मे मेरा मूल्य है, ए युझिते—इस बराबर बने रहने वाले सशय से, हाय, जूझ नही पाता, आमि .बुझिते—केवल तुम्हे ही मैं समझ पाया हूँ।

१२६

यदि हाय जीवन पूरण नाइ हल मम तव अकृपण करे
मन तबु जाने जाने—
चकित क्षणिक आलोछाया तव आलिपन आँकिया याय
भावनार प्राङ्गणे ॥
वैशाखेर शीर्ण नदी भरा स्रोतेर दान ना पाय यदि
तबु संकुचित तीरे तीरे
क्षीण धाराय पलातक परशखानि दिये याय,
पियासि लय ताहा भाग्य मानि ॥

मम भीरु वासनार अञ्जलिते
यतटुकु पाइ रय उच्छलिते ।
दिवसेर दैन्येर सञ्चय यत
यत्ने धरे राखि,
से ये रजनीर स्वप्नेर आयोजन ॥

११.३७–३१.

---

१२६ यदि ... करे—हाय, यदि तुम्हारे अकृपण हाथों मेरा जीवनपूर्ण नहीं हुआ, मन ... जाने—तोभी मन जानता है, जानता है, चकित... प्राङ्गणे—(ग) क्षण मात्र के विस्मित आलोक और छाया, चिन्तन के आंगन में तुम्हारा आलिम्पन (चौकपूरन) अंकित कर जाते हैं, वैशाखेर ... याय—वैशाख की शीर्ण नदी जब भरे हुए स्रोत का दान न पावे तोभी सकुचित तटों को (अपनी) क्षीण धारा से पलातक (जो भाग जानेवाला है) स्पर्श दे जाती है, पियासि ... मानि—प्यासा उसे अपना भाग्य मान कर लेता है; अञ्जलिते—अञ्जलि में; यतटुकु ... उच्छलिते—जितना भी पाता हूँ, (वही) उच्छलित होता रहता है; दिवसेर ... राखि—(सयत्न) दिवस के दैन्य का जितना सञ्चय है, (उसे) यत्नपूर्वक रखता हूँ, से ... आयोजन—वह रात्रि के स्वप्न का आयोजन जो है (रात्रि के स्वप्नों के लिये संग्रहीत है)।

१२७

याक छिँड़े याक छिँड़े याक मिथ्यार जाल।

    दुखेर प्रसादे एल आजि मुक्तिर काल॥

        एइ भालो ओगो एइ भालो   विच्छेद-वह्निशिखार आलो,

            निष्ठुर सत्य करुक वरदान—

                घुचे याक छलनार अन्तराल॥

याओ प्रिय, याओ तुमि याओ जयरथे—

    वाधा दिव ना पथे।

            विदाय नेवार आगे   मन तव स्वप्न हते येन जागे—

                निर्मल होक होक सव जञ्जाल॥

१९३७–३९

---

१२७ याक.. जाल—मिथ्या का जाल छिन्न-भिन्न हो जाय, छिन्न-भिन्न हो जाय; दुःखेर काल—दुख के प्रसाद (कृपा) ने आज मुक्ति का काल आया है, एइ भालो—यही अच्छा है, विच्छेद अन्तराल—विच्छेद की अग्नि-शिखा का प्रकाश निष्ठुर सत्य का वरदान दे (और) छलना (प्रवञ्चना) का अन्तराल (व्यवधान) विनष्ट हो जाय, याओ—जाओ, बाधा . पथे—(तुम्हारे) पथ में बाधा नही दूंगी, विदाय जागे—ऐसा हो कि विदा लेने के पहले तुम्हारा मन सपने से जाग उठे; होक—हो।

प्रकृति

१

शाउनगगने घोर घनघटा, निशीथयामिनी रे।
कुञ्जपथे सखि, कैसे याओब अबला कामिनी रे।
उन्मद पवने यमुना तर्जित, घन घन गर्जित मेह।
दमकत विद्युत्, पथतरु लुण्ठित, थरहर कम्पित देह।
घन घन रिम्झिम् रिम्झिम् बरखत नीरदपुञ्ज।
शाल-पियाले ताल-तमाले निविडतिमिरमय कुञ्ज।
कह रे सजनी, ए दुर्योगे कुञ्जे निरदय कान
दारुण बाँशी काह बजायत सकरुण राधा नाम।
मोतिम हारे वेश बना दे सीँथि लगा दे भाले।
उरहि विलुण्ठित लोल चिकुर मम बाँधह चम्पकमाले।
गहन रयनमे न याओ बाला, नओलकिशोरक पाश।
गरजे घन घन, बहु डर पाओब, कहे भानु तव दास।।

१८७७

२

एस' एस' वसन्त, धरातले।
आन' मुहु मुहु नव तान, आन' नव प्राण नव गान।
आन' गन्धमदभरे अलस समीरण।

---

१. शाउन—सावन; याओब—जाऊँगी, पियाले—चिरौंजी (वृक्ष) में, दुर्योगे—दुःसमय में; कान—कान्ह, कृष्ण; बाँशी—बाँसुरी, काह बजायत—क्यों बजाता है; मोतिम—मोती का बना हुआ, सीँथि—सीमन्त; सीँथि ... भाले—ललाट पर माँग काढ़ दे; बाँधह चम्पकमाले—चम्पक की माला से बाँध दो; रयनमे—रैन में; रात्रि में; न याओ—न जाओ; नओलकिशोरक पाश—नवलकिशोर (कृष्ण) के पास; पाओब—पाओगी; भानु—भानुसिंह (रवीन्द्रनाथ ने भानुसिंह के नाम से 'भानुसिंहेर पदावली' की रचना की थी, जिसमें यह गान लिया गया है)।

२ एस'—आओ, धरातले—पृथ्वी तल पर; आन'—लाओ; मुहु

आन' विश्वेर अन्तरे अन्तरे निविड़ चेतना।
आन' नवउल्लासहिल्लोल।
आन' आन' आनन्दछन्देर हिन्दोला धरातले।
भाङ' भाङ' बन्धनशृङ्खल।
आन' आन' उद्दीप्त प्राणेर वेदना धरातले।
एस' थरथर-कम्पित मर्मर-मुखरित नव-पल्लव-पुलकित
फुल- आकुल मालतीवल्लीविताने— सुखछाये, मधुवाये।
एस' विकशित उन्मुख, एस' चिरउत्सुक नन्दनपथ-चिरयात्री।
एस' स्पन्दित नन्दित चित्तनिलये गाने गाने, प्राणे प्राणे।
एस' अरुण-चरण कमल-वरण तरुण उषार कोले।
एस' ज्योत्स्नाविवश निशीथे, कलकल्लोल तटिनी-तीरे,
सुख- सुप्त सरसी-नीरे। एस' एस'।
एस' तड़ित्-शिखा-सम झञ्झाचरणे सिन्धुतरङ्ग-दोले।
एस' जागर-मुखर प्रभाते।
एस' नगरे प्रान्तरे वने।
एस' कर्मे वचने मने। एस' एस'।
एस' मञ्जीरगुञ्जर चरणे।
एस' गीतमुखर कलकण्ठे।
एस' मञ्जुल मल्लिकामाल्ये।
एस' कोमल किशलय-वसने।
एस' सुन्दर, यौवनवेगे।
एस' दृप्त वीर, नवतेजे।

मुहु—बार-बार; हिन्दोला—हिंडोला, झूला; भाङ'—तोड़ो, सुखछाये—सुखद छाया में, मधुवाये—मधुर वायु में; वरण—वर्ण, रंग, कोले—गोद में,, एस' निशीथे—चाँदनी से विह्वल अर्द्ध रात्रि में आओ; जागर—जागरण, प्रान्तरे—वृक्ष-जल-जनविहीन फैले हुए मैदान में; एस'. चरणे—नूपुर-गुंजरित चरणों से आओ; माल्य—माला, हार, एस' माल्ये—सुन्दर मल्लिका की माला पहन कर; एस' . वसने—कोमल किसलय का वस्त्र पहन कर; सुन्दर—(यहाँ वसन्त को संबोधित किया गया है).

ओहे दुर्मद, कर जययात्रा,
चल' जरापराभव-समरे
पवने केशररेणु छड़ाये, चञ्चल कुन्तल उड़ाये ।।

१८८८

३

एकि आकुलता भुवने। एकि चञ्चलता पवने।
एकि मधुर मदिर रसराशि आजि शून्यतले चले भासि,
झरे चन्द्रकरे एकि हासि, फुल- गन्ध लुटे गगने ।।
एकि प्राणभरा अनुरागे, आजि विश्वजगतजन जागे,
आजि निखिल नील गगने सुख- परश कोथा हते लागे।
सुखे शिहरे सकल वनराजि, उठे मोहन बाँशरि बाजि,
हेरो पूर्णविकशित आजि मम अन्तर सुन्दर स्वपने ।।

१८९६

४

झरझर वरिषे वारिधारा।
हाय पथवासी, हाय गतिहीन, हाय गृहहारा ।।
फिरे वायु हाहास्वरे, डाके कारे जनहीन असीम प्रान्तरे—
रजनी आँधारा ।।
अधीरा यमुना तरङ्ग-आकुला अकूला रे, तिमिरदुकूला रे।
निविड़ नीरद गगने गरगर गरजे सघने,
चञ्चल चपला चमके—नाहि शशितारा ।।

१८९६

दुर्मद—प्रमत्त, दुर्दम; कर—करो; चल'—चलो; जरा—बुढ़ापा; छड़ाये—बिखेरते हुए।

३. एकि . यह कैसी; चले भासि—बह चली है; लुटे—लुटता है, सुख...लागे—सुखद स्पर्श कहाँ से आ कर लगता है; उठे .... बाजि—मोहने वाली बाँसुरी बज उठी है; हेरो स्वपने—आज सुन्दर सपनों में पूर्ण रूप से खिले हुए मेरे अन्तर को देखो।

४ गृहहारा—गृहहीन; डाके कारे—किसे पुकारती है; नाहि—नहीं है।

५

विश्ववीणारवे विश्वजन मोहिछे।
स्थले जले नभतले वने उपवने
नदीनदे गिरिगुहा-पारावारे
नित्य जागे सरस संगीतमधुरिमा,
नित्य नृत्यरस भङ्गिमा।—

नव वसन्ते नव आनन्द, उत्सव नव।
अति मञ्जुल, अति मञ्जुल, शुनि मञ्जुल गुञ्जन कुञ्जे,
शुनि रे शुनि मर्मर पल्लवपुञ्जे,
पिककूजन पुष्पवने विजने,
मृदु वायुहिलोलविलोल विभोल विशाल सरोवर-माझे
कलगीत सुलगीत सुललित वाजे।
श्यामल कान्तार-'परे अनिल सञ्चारे धीरे रे,
नदीतीरे शरवने उठे—ध्वनि सरसर मरमर।
कत दिके कत वाणी, नव नव कत भाषा, झरझर रसधारा॥

आषाढ़े नव आनन्द, उत्सव नव।
अति गम्भीर, अति गम्भीर नील अम्बरे डम्बरु वाजे,
येन रे प्रलयकरी शङ्करी नाचे।
करे गर्जन निर्झरिणी सघने,
हेरो क्षुब्ध भयाल विशाल निराल पियाल-तमाल-विताने
उठे रव भैरवताने।
पवन मल्लारगीत गाहिछे आँधार राते;

---

५ मोहिछे—मोहित हो रहे हैं; शुनि—सुनता हूँ; विभोल—विभोर; कान्तार-'परे—सघन वन के ऊपर; शर—कांस; कत दिके—कितनी दिशाओं में, येन—जैसे; करे—करती है; हेरो—देखो; भयाल—भयकर; गाहिछे—गा

उन्मादिनी सौदामिनी रङ्गभरे नृत्य करे अम्बरतले।
दिके दिके कत वाणी, नव नव कत भाषा, झरझर रसधारा ॥

आश्विने नव आनन्द, उत्सव नव।
अति निर्मल, अति निर्मल, अति निर्मल उज्ज्वल साजे
भुवने नव शरदलक्ष्मी विराजे।
नव इन्दुलेखा अलके झलके,
अति निर्मल हासविभासविकाश आकाशनीलाम्बुज-माझे
श्वेत भुजे श्वेत वीणा वाजे।
उठिछे आलाप मृदु मधुर वेहागताने,
चन्द्रकरे उल्लसित फुल्लवने झिल्लिरवे तन्द्रा आने रे।
दिके दिके कत वाणी, नव नव कत भाषा, झरझर रसधारा ॥

१८९६

६

हेरिया श्यामल घन नील गगने,
सजल काजल आँखि पड़िल मने।
अधर करुणा-माखा, मिनतिवेदना-आँका
नीरवे चाहिया थाका विदायखने ॥
झरझर झरे जल, विजुलि हाने,
पवने मातिछे वने पागल गाने।
आमार परानपुटे कोन्खाने व्यथा फुटे,
कार कथा बेजे उठे हृदयकोणे ॥

१९००

रहा है; वेहाग—विहाग (राग)।

६ हेरिया—देख कर, पड़िल मने—याद आ गई; अधर..... आँका—करुणा में सिक्त, अनुनय-विनय की वेदना से अंकित अधर; नीरवे ... खने—विदाई के क्षण नीरव देखते रहना; विजुलि हाने—बिजली प्रहार करती है; मातिछे—मस्त बन रहा है; परान पुटे—प्राणों के कोष में; कोन्खाने—किस जगह; फुटे—खिलती है; कार ... कोणे—हृदय के कोने में किस की बातें कसकती हैं।

७

आजि झडेर राते तोमार अभिसार
परानसखा वन्धु हे आमार ।।
आकाश कांदे हताश-सम, नाइ ये घुम नयने मम—
दुयार खुलि हे प्रियतम, चाइ ये वारे वार ।।
वाहिरे किछु देखिते नाहि पाइ,
तोमार पथ कोथाय भावि ताइ ।
सुदूर कोन् नदीर पारे गहन कोन् वनेर धारे
गभीर कोन् अन्धकारे हतेछ तुमि पार ।।

१९०८

८

आज वारि झरे झरझर भरा वादरे,
आकाश-भाडा आकुल धारा कोथाओ ना धरे ।।
शालेर वने थेके थेके झड़ दोला देय हेँके हेँके,
जल छुटे याय एँके वेँके माठेर 'परे ।
आज मेघेर जटा उडिये दिये नृत्य के करे ।।

---

७. झड़ेर राते—आँधी वाली रात मे, परान सखा—प्राण-सखा, आकाश . ..सम—आकाश निराश-जैसा क्रन्दन कर रहा है, नाइ . मम—मेरी आँखो में नीद नही है, दुयार . वार—द्वार खोल कर, हे प्रियतम, वार-वार ताकती हूँ, वाहिरे . पाइ—वाहर कुछ देख नही पाती; तोमार ताइ—यही सोचती हूँ कि तुम्हारा पथ कहाँ है, कोन्—किस, धारे—किनारे; हतेछ पार—तुम पार हो रहे हो।

८ कोथाओ.. धरे—कहीं समाती नही, शालेर हेँके—शाल वन को रह-रह कर आंधी हांक देती (चीत्कार करती) हुई झकझोर रही है, जल .... 'परे—खुले विस्तृत मैदान मे जल टेटामेटा दौड़ा जा रहा है, आज करे—आज मेघ (रूपी) जटा को उडाते हुए कौन नृत्य कर रहा है

ओरे वृष्टिते मोर छुटेछे मन, लुटेछे एइ झड़े—
बुक छापिये तरङ्ग मोर काहार पाये पड़े।
अन्तरे आज की कल्लोल, द्वारे द्वारे भाङल आगल—
हृदय-माझे जागल पागल आजि भादरे।
आज एमन क'रे के मेतेछे बाहिरे घरे॥

१९०८

९

आजि श्रावणघन-गहन मोहे गोपन तव चरण फेले
निशार मतो नीरव ओहे, सबार दिठि एड़ाये एले॥
प्रभात आजि मुदेछे आँखि, वातास वृथा येतेछे डाकि,
निलाज नील आकाश ढाकि निविड़ मेघ के दिल मेले॥
कूजनहीन काननभूमि, दुयार देओया सकल घरे—
एकेला कोन् पथिक तुमि पथिकहीन पथेर 'परे।

ओरे....झड़े—अरे, वर्षा में मेरा मन भाग रहा है, इस आँधी में लुंठित हो रहा है, बुक ..पड़े—हृदय को छा कर मेरी तरंग किसके पैरों पड़ती है, अन्तरे. कल्लोल—अन्तर में आज कैसा कोलाहल है; द्वार...आगल—द्वार-द्वार की अर्गला (साँकल) टूट गई है; हृदय ..भादरे—भाद्र मास में हृदय के भीतर आज पागल जाग उठा है; आज.....घरे—आज कौन इस प्रकार घर-बाहर मन हो उठा है।

९. आजि. .मोहे—आज सावन के बादलों की गंभीर मूर्च्छना (में भीतर से); गोपन एले—रात्रि के समान नीरव, अपने गोपन चरणों को निःशब्द रखते हुए, सब की दृष्टि बचा कर (तुम) आए; प्रभात ..आँखि—प्रभात ने आज आँखें मूँद ली हैं; वातास.. .डाकि—पवन व्यर्थ ही पुकारे जा रहा है; निलाज . मेले—निर्लज्ज नील आकाश को ढँक कर (ढँकने के लिये) किस ने घने मेघों को फैला दिया है; दुआर. . घरे—सभी घरों के द्वार बन्द हैं; एकेला...'परे—पथिकहीन पथ पर, पथिक, अकेले तुम कौन हो,

हे एका सखा, हे प्रियतम, रयेछे खोला ए घर मम—
समुख दिये स्वपन-सम येयो ना मोरे हेलाय ठेले ।।

१९०८

१०

मेघेर परे मेघ जमेछे, आँधार करे आसे ।
आमाय केन वसिये राख एका द्वारेर पाशे ।।
काजेर दिने नाना काजे थाकि नाना लोकेर माझे,
आज आमि ये वसे आछि तोमारि आश्वासे ।।
तुमि यदि ना देखा दाओ, कर आमाय हेला,
केमन करे काटे आमार एमन वादल-वेला ।
दूरेर पाने मेले आँखि केवल आमि चेये थाकि,
परान आमार केँदे वेडाय दुरन्त वातासे ।।

१९०८

११

अमल धवल पाले लेगेछे मन्द मधुर हाओया ।
देखि नाइ कभु देखि नाइ एमन तरणी-वाओया ।।

एका—एकाकी; रयेछे ....मम—मेरा यह घर खुला हुआ है; समुख ठेले—मुझे अवहेला से ठेल कर—सपने के समान सामने से चले न जाना ।

१०. मेघेर.. .आसे—मेघ पर मेघ जमे हैं (और) अधकार हुआ आ रहा है; आमाय......पाशे—द्वार के किनारे मुझे अकेला क्यो वैठा रखते हो, काजेर ... माझे—काम-धधे के दिनो में अनेक लोगो के वीच नाना कामो में (लगा) रहता हूँ, आज.. आश्वासे—आज तो मै तुम्हारे ही भरोसे बैठा हुआ हूँ; तुमि.. ...वेला—तुम यदि दर्शन न दो (और) मेरी अवहेला करो (तो) मेरी ऐसी वादल-वेला (वादलो से घिरे रहने के कारण औत्सुक्य, उत्कठा, सूना-पन आदि नाना भावो को पैदा करने वाला समय) क्योकर कटे; दूरेर . थाकि—सुदूर की ओर दृष्टि प्रसारित कर मै केवल निर्निमेष ताकता रहता हूँ; परान वातासे—मेरे प्राण अशान्त हवा मे क्रन्दन करते फिरते हैं ।

११ पाले—पाल में; लेगेछे—लगी है; हाओया—हवा, देखि

कोन् सागरेर पार हते आने कोन सुदूरेर धन—
भेसे येते चाय मन,
फेले येते चाय एइ किनाराय सब चाओया सब पाओया।
पिछने झरिछे झरो झरो जल, गुरु गुरु देया डाके,
मुखे एसे पड़े अरुणकिरण छिन्न मेघेर फाँके।
ओगो काण्डारी, के गो तुमि, कार हासिकान्नार धन
भेवे मरे मोर मन—
कोन् सुरे आज बाँधिबे यन्त्र, की मन्त्र हबे गाओया।।

१९०८

१२

आमार नयन-भुलानो एले,
आमि की हेरिलाम हृदय मेले।।
शिउलितलार पाशे पाशे झरा फुलेर राशे राशे
शिशिर-भेजा घासे घासे अरुणराङा चरण फेले
नयन-भुलानो एले।।

गाओया—इस प्रकार नाव खेना नहीं देखा, कभी नहीं देखा; कोन्...धन—(यह नाव) किस सागर के पार से किस सुदूर का धन लाती है; भेसे...मन—मन बह जाना चाहता है; फेले...पाओया—इसी किनारे सब चाहना, सब पाना फेंक जाना चाहता है; पिछने...डाके—पीछे झरझर जल झर रहा है और मेघ गुरुगुरु गर्जन कर रहे हैं, मुखे...फाँके—छिन्न मेघ के बीच से सूर्य की किरणें आ कर मुख पर पड़ रही हैं; काण्डारी...मन—अजी ओ कर्णधार, तुम कौन हो, किसके हास्य-क्रन्दन के (तुम) धन हो, (यही) सोचते मेरा मन मरता है; कोन्...गाओया—किस सुर से आज (वाद्य) यन्त्र बाँधोगे (मिलाओगे), किस मन्त्र का गान होगा।

१२ आमार...एले—मेरे नयनों को मुग्ध करने वाले, (तुम) आए, आमि...मेले—हृदय को खोल कर मैंने क्या देखा; शिउलि...एले—शेफाली (हरसिंगार) की जगह-जगह में, राशि-राशि झरे हुए फूलों और ओसकणों से भीगी हुई घास पर अरुण-रंजित चरण निक्षेप करते हुए, नयनों को मुग्ध करने

आलोछायार आँचलखानि लुटिये पड़े वने वने,
फुलगुलि ओइ मुखे चेये की कथा कय मने मने।
तोमाय मोरा करव वरण, मुखेर ढाका करो हरण,
ओइटुकु ओड मेघावरण दु हात दिये फेलो ठेले।।
वनदेवीर द्वारे द्वारे शुनि गभीर शङ्खध्वनि,
आकाशवीणार तारे तारे जागे तोमार आगमनी।
कोथाय सोनार नूपुर वाजे, वुझि आमार हियार माझे
सकल भावे सकल काजे पाषाण-गाला सुधा ढेले—
नयन भुलानो एले।।

१९०८

१३

आज धानेर खेते रौद्र छायाय लुकोचुरि खेला—
नील आकाशे के भासाले सादा मेघेर भेला।।
आज भ्रमर भोले मधु खेते— उड़े वेडाय आलोय मेते,
आज किसेर तरे नदीर चरे चखा-चखीर मेला।।

वाले, तुम आए; आलो पने—प्रकाश और छाया (से निर्मित) आंचल वन-वन में लोट पडता है; फुल.. ...मने—उस मुंह को देख कर (सभी) फूल मन ही मन जाने कौन-सी बात कहते है; तोमाय हरण—हम लोग तुम्हे वरण करेंगे, मुख के आवरण को हटाओ, ओइटुकु ठेले—(अपने मुख के ऊपर का) वह जराना मेघ का आवरण दोनो हाथो से ठेल कर फेक दो, वनदेवीर ध्वनि—वनदेवी के द्वार-द्वार गंभीर शङ्खध्वनि सुनता हूँ, आकाश . आगमनी—आकाश-वीणा के तार-तार में तुम्हारे आगमन (के उपलक्ष्य) मे स्तवगान उठ रहा है; कोथाय बाजे—सोने का नूपुर कहाँ वजता है, वुझि माझे—सम्भवत. मेरे हृदय के भीतर, सकल काजे—सभी चिन्ताओ (और) सभी कर्मों मे, पाषाण ढेले—पत्थर को गलाने वाली सुधा ढाल कर।

१३. आज. खेला—आज धान के खेत मे धूप और छाया की लुका-छिपी का खेल (चल रहा है), नील . भेला—नीले आकाश में किसने उजले मेघो का वेडा वहा दिया है; भोले—भूले हुए हैं; उडे . मेते—प्रकाश में मत्त हो कर उडते फिर रहे हैं. आज मेला—आज किसलिये नदी के चर

ओरे याव ना आज घरे रे भाइ, याव ना आज घरे।
ओरे आकाश भेड़े बाहिरके आज नेव रे लुट क'रे।
   येन जोयार-जले फेनार राशि बातासे आज छुटछे हासि,
      आज विना काजे वाजिये बाँशि काटबे सकल बेला॥

१९०८

१४

आमरा बेँधेछि काशेर गुच्छ, आमरा गेँथेछि शेफालिमाला—
      नवीन धानेर मञ्जरी दिये साजिये एनेछि डाला॥
      एसो गो शारदलक्ष्मी, तोमार शुभ्र मेघेर रथे,
एसो निर्मल नील-पथे
एसो धौत-श्यामल आलो-झलमल वनगिरि-पर्वते—
एसो मुकुटे परिया श्वेत शतदल शीतल-शिशिर-ढाला॥
      झरा मालतीर फुले
      आसन बिछानो निभृत कुञ्जे भरा गङ्गार कूले,
      फिरिछे मराल डाना पातिबारे तोमार चरणमूले।

में चकवा-चकवी का मिलन है; याव . घरे—आज घर नहीं जाऊँगा; आकाश . . क'रे—आकाश को तोड़-फोड़ कर बाहर (बहिर्जगत्) को लूट लूँगा; येन . हासि—ज्वार के जल में फेन के समूह के समान हवा में जैसे हँसी दौड़ रही है; आज . बेला—आज बिना काम बाँसुरी बजाते सब समय बीत जाएगा।

१४. आमरा . . डाला—हम लोगों ने काँस के गुच्छे बाँधे हैं, हम लोगों ने शेफाली (हरसिंगार) की मालाएँ गूँथी हैं (और) नये धान की मञ्जरी से (हम) डाली सजा कर लाए हैं, तोमार . रथे—अपने शुभ्र मेघों के रथ पर, एसो—आओ; आलो-झलमल—प्रकाश से झलमल; परिया—धारण कर; शिशिर—ओसकण; झरा . फूले—भरी गंगा के किनारे एकान्त कुञ्ज में झरे

गुञ्जरतान तुलियो तोमार सोनार वीणार तारे
मृदुमधु झंकारे,
हासि-ढाला सुर गलिया पड़िवे क्षणिक अश्रुधारे।
रहिया रहिया ये परशमणि झलके अलककोणे
पलकेर तरे सकरुण करे वुलायो वुलायो मने—
सोना हये यावे सकल भावना, आँधार हइवे आला ।।

१९०८

१५

मेघेर कोले रोद हेसेछे, वादल गेछे टुटि,
आज आदेर छुटि ओ भाइ, आज आमादेर छुटि।
की करि आज भेवे ना पाइ, पथ हारिये कोन् वने याइ,
कोन् माठे ये छुटे वेड़ाइ सकल छेले जुटि ।।
केया-पातार नौको गड़े साजिये देव फुले—
तालदिघिते भासिये देव, चलवे दुले दुले।

तले डैने विछा देने के लिये मराल घूम रहा है; तुलियो—छेड़ना, हासि-ढाला सुर—वह सुर जिसमें हँसी उँडेली गई है, गलिया . धारे—क्षणिक अश्रु की धारा में गल जाएगा, रहिया कोणे—रह-रह कर अलक के कोने में जो पारस-मणि चमक उठता है; पलकेर .. मने—क्षण भर के लिये करुण हाथों ने (हम लोगों के) मन में (उसे) हौले-हौले स्पर्श कराना; सोना आला—(हम लोगों की) सम्पूर्ण चिन्ताएँ सोना हो जाएँगी (और) अन्धकार, प्रकाश हो जायगा।

१५ मेघेर . छुटि—मेघ की गोद में धूप हँस पड़ी है, बादल टूट गए (खण्ड-खण्ड हो गए) है, अरे भाई, आज हम लोगों की छुट्टी है, हम लोगों की छुट्टी है; की . .पाइ—आज क्या करें समझ नहीं पाते; पथ याइ—[illegible] किस वन में जांय, कोन्. . जुटि—(हम) सभी [illegible] मैदान में दौडते फिरे; केया फुले—केवड़े के पत्ते की नौका बना [illegible] सजा देंगे; ताल दुले—ताड वाले तालाब में बहा देंगे, [illegible]

राखाल छेलेर सङ्गे धेनु चराब आज बाजिये वेणु,
माखब गाये फुलेर रेणु चाँपार वने लुटि ॥

१९०८

१६

आबार एसेछे आषाढ़ आकाश छेये
आसे वृष्टिर सुवास बातास बेये ॥
एइ पुरातन हृदय आमार आजि पुलके दुलिया उठिछे आबार बाजि
नूतन मेघेर घनिमार पाने चेये ॥
रहिया रहिया विपुल माठेर 'परे नव तृणदले बादलेर छाया पड़े ।
'एसेछे एसेछे' एइ कथा बले प्राण, 'एसेछे एसेछे' उठितेछे एइ गान—
नयने एसेछे, हृदये एसेछे धेये ॥

१९१०

१७

आजि वसन्त जाग्रत द्वारे ।
तव अवगुण्ठित कुण्ठित जीवने
कोरो ना विडम्बित तारे ॥

राखाल ...वेणु—ग्वाले लड़कों के साथ बाँसुरी बजा कर गाय चराऊँगे;
माखब ...लुटि—चम्पे के वन में लोट कर देह में फूल का पराग सानेंगे।

१६. आबार ... छेये—आकाश को छाता हुआ फिर आषाढ़ आया है, आसे ...बेये—हवा में हो कर वृष्टि की सुगन्धि आती है; एइ...बाजि—यह मेरा पुराना हृदय आज पुलक से झूम फिर बज उठता है; नूतन... चेये—नवीन मेघों की सघनता की ओर देख; रहिया रहिया—रह-रह कर; विपुल... पड़े—बड़े विस्तृत मैदान में नव तृणदल के ऊपर बादलों की छाया पड़ती है, 'एसेछे...प्राण'—'आता है, आता है' यही बात प्राण कहते हैं; उठितेछे ... गान—यही गान उठ रहा है, एसेछे धेये—दौड़ कर आया है।

१७. कोरो ...तारे—उसे कुण्ठित न करो; विडम्बित—वञ्चित;

आजि खुलियो हृदयदल खुलियो,
आजि भुलियो आपन पर भुलियो,
एइ सगीतमुखरित गगने
तव गन्ध तरङ्गिया तुलियो।
एइ वाहिर-भुवने दिशा हाराये
दियो छड़ाये माधुरी भारे भारे॥
एकि निविड़ वेदना वन-माझे
आजि पल्लवे पल्लवे वाजे—
दूरे गगने काहार पथ चाहिया
आजि व्याकुल वसुन्धरा साजे।
मोर पराने दखिनवायु लागिछे,
कारे द्वारे द्वारे कर हानि मागिछे—
एइ सौरभविह्वल रजनी
कार चरणे धरणीतले जागिछे।
ओहे सुन्दर, वल्लभ, कान्त,
तव गम्भीर आह्वान कारे॥

१९१०

आजि खुलियो—आज हृदय-दल खोलना, आजि भुलियो—आज अपना-पराया भूल जाना; एइ—इस; तव .तुलियो—अपने गध को तरंगित करना, एइ .भारे—इस वाहर की दुनिया मे दिशा भूल कर राशि-राशि माधुर्य विखेर देना; एकि वाजे—वन मे यह कैसी निविड वेदना है (जो) आज पल्लव-पल्लव में कसक रही है; दूरे साजे—दूर आकाश मे किसका पथ निहारती हुई आज व्याकुल वसुन्धरा सज रही है, मोर लागिछे—मेरे प्राणो मे दक्षिणवायु लग रही है, कारे मागिछे—द्वार-द्वार पर हाथ से आघात कर किसकी याचना कर रही है, एइ जागिछे—सुगन्धि से विह्वल यह रात्रि किनके चरणो मे धरणी-तल पर जाग रही है, तव कारे—किसके लिये तुम्हारा (यह) गम्भीर आह्वान है।

१८

आजि दखिन-दुयार खोला—
एसो हे, एसो हे, एसो हे आमार वसन्त, एसो।
दिब हृदय-दोलाय दोला,
एसो हे, एसो हे, एसो हे आमार वसन्त, एसो॥
नव श्यामल शोभन रथे एसो बकुल-बिछानो पथे,
एसो बाजाये व्याकुल वेणु मेखे पियालफुलेर रेणु।
एसो हे, एसो हे, एसो हे आमार वसन्त, एसो॥
एसो घन पल्लवपुञ्जे एसो हे, एसो हे, एसो हे।
एसो वनमल्लिकाकुञ्जे एसो हे, एसो हे, एसो हे।
मृदु मधुर मदिर हेसे एसो पागल हाओयार देशे,
तोमार उतला उत्तरीय तुमि आकाशे उड़ाये दियो—
एसो हे, एसो हे, एसो हे आमार वसन्त, एसो॥

१९१०

१९

वसन्ते कि शुधु केवल फोटा फुलेर मेला रे।
देखिस ने कि शुक्नो-पाता झरा-फुलेर खेला रे॥
ये ढेउ उठे तारि सुरे बाजे कि गान सागर जुड़े।

---

१८. आजि. .खोला—आज दक्षिण-द्वार खुला हुआ है; एसो... वसन्त—हे मेरे वसन्त आओ; दिब ..दोला—हृदय के झूले पर झुलाऊँगा; नव...पथे—बकुल से बिछे हुए पथ पर नव श्यामल सुन्दर रथ पर आओ; एसो. .रेणु—पियाल (चिरौंजी) फूल की धूल लिपटाए, व्याकुल बाँसुरी बजाते हुए आओ; हेसे—हँस कर; पागल देशे—पागल हवा के देश में; तोमार.. दियो—अपने चंचल उत्तरीय (दुपट्टे) को तुम आकाश में उड़ा देना।

१९. वसन्ते ...रे—वसन्त में क्या खिले हुए फूलों की भीड़ मात्र होती है; देखिस. ..रे—क्या (तूने) सूखे पत्ते और झरे हुए फूलों का खेल नहीं देखा; ये. .जुड़े—जो लहर उठती है, उसीके सुर में समस्त सागर में कैसा गान

ये ढेउ पड़े ताहारो सुर जागछे सारा वेला रे।
वसन्ते आज देख् रे तोरा झरा फुलेर खेला रे ॥
आमार प्रभुर पायेर तले शुधुइ कि रे मानिक ज्वले।
चरणे ताँर लुटिये काँदे लक्ष माटिर ढेला रे ॥
आमार गुरुर आसन-काछे सुवोध छेले क जन आछे।
अबोध जने कोल दियेछेन, ताइ आमि ताँर चेला रे।
उत्सवराज देखेन चेये झरा फुलेर खेला रे ॥

१९१०

२०

एइ शरत्-आलोर कमलवने
बाहिर हये विहार करे ये छिल मोर मने मने ॥
तारि सोनार काँकन वाजे आजि प्रभात-किरण माझे,
हाओयाय काँपे आँचलखानि— छड़ाय छाया क्षणे क्षणे ॥
आकुल केशेर परिमले
शिउलिवनेर उदास वायु पड़े थाके तरुर तले ॥

ध्वनित होता है; ये.. .रे—जो लहर गिरती है, उसका भी सुर सब समय जाग रहा है; वसन्ते .रे—वसन्त में आज तुम सब झरे हुए फूलो का खेल देखो; आमार. ..ज्वले—मेरे प्रभु के चरण-तले क्या केवल माणिक्य ही प्रदीप्त हैं; चरणे......रे—उनके चरणो मे लाखो मिट्टी के ढेले लोट-लोट कर क्रन्दन करते है; आमार आछे—मेरे गुरु के आसन के निकट सुवोध लड़के (आखिर) कितने है; अबोध. ..रे—अबोध (बालको) को भी (उन्होने) गोद में स्थान दिया है, इसीलिये मै उनका चेला हूँ; उत्सवराज रे—उत्सवराज झरे हुए फूलो का खेल देखते है।

२० एइ .मने—जो मेरे मन के भीतर थी (वह) इसी शरत् के प्रकाश के कमल-वन में बाहर हो कर विहार करती है; तारि माझे—उसी का सोने का कंकण आज प्रभात की किरणो मे बजता है; हाओयाय.. क्षणे—हवा मे (उसका) आँचल काँपता है और क्षण-क्षण छाया फैलाता है; आकुल ... तले—चचल केशो के परिमल मे शेफाली के वन की उदासीन हवा पेड़ के

हृदय-माझे हृदय दुलाय, बाहिरे से भुवन भुलाय—
आजि से तार चोखेर चाओया छड़िये दिल नील गगने ॥

१९१०

२१

ओगो शेफालिवनेर मनेर कामना, केन सुदूर गगने गगने
आछ मिलाये पवने पवने।
केन किरणे किरणे झलिया
याओ शिशिरे शिशिरे गलिया।
केन चपल आलोते छायाते
आछ लुकाये आपन मायाते।
तुमि मुरति धरिया चकिते नामो-ना,
ओगो शेफालिवनेर मनेर कामना ॥

आजि माठे माठे चलो विहरि,
तृण उठुक शिहरि शिहरि।
नामो ताल पल्लव-वीजने,
नामो जले छायाछविसृजने।

गाने गाती रहती है; हृदय. दुलाय—हृदय के भीतर (वह) हृदय को आन्दोलित करती है; बाहिरे. .भुलाय—बाहर वह जगत् को मुग्ध करती है; आजि गगने—आज उसने अपनी आँखों की चितवन को नील आकाश में प्रसारित कर दिया है।

२१ ओगो . .कामना—अजी ओ शेफाली-वन के मन की कामना; केन पवने—क्यों सुदूर आकाश में हवा में घुली-मिली हो; केन. .गलिया—क्यों किरणों में झलक कर ओसकणों में गल जाती हो; केन. ..मायाते—क्यों चपल प्रकाश और छाया में अपनी माया में छिपी हुई हो; तुमि .... ना—तुम रूप धारण कर क्षण भर के लिये उतरो-ना।

माठे—मैदान में, विहरि—विहरती हुई; उठुक ...शिहरि—सिहर

एसो सौरभ भरि आँचले,
आँखि आँकिया सुनील काजले।
मम चोखेर समुखे क्षणेक थामो-ना,
ओगो शेफालिवनेर मनेर कामना ।।

ओगो सोनार स्वपन, साधेर साधना,
कत आकुल हासि ओ रोदने
राते दिवसे स्वपने बोधने
ज्वालि जोनाकि-प्रदीप-मालिका,
भरि निशीथतिमिरथालिका,
प्राते कुसुमेर साजि साजाये,
साँजे झिल्लि-झाँझर बाजाये,
कत करेछे तोमार स्तुति-आराधना,
ओगो सोनार स्वपन, साधेर साधना ।।

ओइ वसेछ शुभ्र आसने
आजि निखिलेर सम्भाषणे।
आहा श्वेतचन्दनतिलके
आजि तोमारे साजाये दिल के।

सिहर उठे, नामो—उतरो, बीजन—पखा, एसो—आओ; भरि—भर कर, आँखि काजले—आँखो मे सुनील काजल आँज कर, मम ना—क्षण भर मेरी आँखो के सामने रुको-ना ।

कत—कितनी, ज्वालि—जला कर, जोनाकि—खद्योत, जुगनू, थालिका—थाली, साजि—डाली; साजाये—सजा कर; सांजे. बाजाये—सांझ को झिल्ली की झांझ बजा कर, करेछे—की है।

ओइ—वह, वसेछ—बैठो हो; निखिलेर सम्भाषणे—[illegible] सभापण (बातचीत) मे, श्वेत के—श्वेत-चदन के [illegible]

आहा वरिल तोमारे के आजि
तार दुःखशयन तेयाजि—
तुमि घुचाले काहार विरह-कांदना,
ओगो सोनार स्वपन, साधेर साधना ॥

१९१४

२२

तोमार मोहन रूपे के रय भुले।
जानि ना कि मरण नाचे, नाचे गो ओइ चरणमूले ॥
शरत्-आलोर आँचल टुटे किसेर अलक नेचे उठे,
झड़ एनेछ एलोचुले ॥
काँपन धरे वातासेते—
पाका धानेर तरास लागे, शिउरे ओठे भरा खेते।
जानि गो आज हाहारवे तोमार पूजा सारा हवे
निखिल-अश्रु-सागर-कूले ॥

१९१४

तुम्हें सजा दिया है; वरिल...तेयाजि—अपनी दुःख-शय्या को त्याग आज किसने तुम्हें वरण किया; तुमि .. कांदना—किसके विरह-जनित क्रन्दन को तुमने दूर भगाया; ओगो. साधना—ओ सोने के स्वप्न, साध की साधना।

२२. तोमार . भुले—तुम्हारे मुग्ध करने वाले रूप से (भला) कौन भूल रहा है; जानि ..मूले—क्या नहीं जानता कि मृत्यु नाचती है, अर्थात्, उन चरणों में मृत्यु नाचती है; शरत्. टुटे—शरत्-आलोक का अंचल टूटा पड़, किसेर . उठे—किसकी अग्निशिखा नाच उठती है; झड़—आँधी, एनेछ—लाए हो; एलोचुले—आकुलायित केशों में; कांपन ...वातासेते—हवा प्रकम्पित हो उठती है, पाका खेते—पके धान को भय मालूम होता है, (वह) भरे खेत में सिहर उठता है; जानि ..कूले—अर्थात्, जानता हूँ, आज समस्त जगत् के अश्रुसागर के किनारे हाहाकार में तुम्हारी पूजा पूरी होगी।

२३

शरत्, तोमार अरुण आलोर अञ्जलि
छड़िये गेल छापिये मोहन अङ्गुलि।
शरत्, तोमार शिशिर-धोओया कुन्तले
वनेर-पथे-लुटिये-पड़ा अञ्चले
आज प्रभातेर हृदय ओठे चञ्चलि॥
मानिक-गाँथा ओई-ये तोमार कङ्कणे
झिलिक लागाय तोमार श्यामल अङ्गने।
कुञ्जछाया गुञ्जरणेर सगीते
ओड़ना ओड़ाय एकि नाचेर भङ्गीते,
शिउलिवनेर वुक ये ओठे आन्दोलि॥

१९१४

२४

एत दिन ये वसेछिलेम पथ चेये आर काल गुने
देखा पेलेम फाल्गुने॥
वालक वीरेर वेशे तुमि करले विश्वजय—
एकि गो विस्मय।
अवाक् आमि तरुण गलार गान शुने॥

---

२३ शरत् . अङ्गुलि—शरत्, तुम्हारे अरुण प्रकाश की अञ्जलि मुग्ध करने वाली (तुम्हारी) उँगलियो को अतिक्रम कर बिखर गईं; शरत्-चञ्चलि—शरत्, तुम्हारे ओसकणो से धुले केशो से (तथा) वनपथ मे लोट पड़े हुए अञ्चल से आज प्रभात का हृदय चञ्चल हो उठता है, मानिक अङ्गने—माणिक्य-गूँथा तुम्हारा वह कंकण तुम्हारे श्यामल आँगन में चकाचौंध उत्पन्न करता है, गुञ्जरणेर संगीते—गुंजरण के संगीत में, ओड़ना ओड़ाय—ओढनी उड़ाती है, एकि.. .भङ्गीते—यह किस नाच की भंगी मे, शिउलि . आन्दोलि—शेफाली के वन का हृदय आन्दोलित हो उठता है।

२४. एत फाल्गुने—तुम्हारा रास्ता देखते और दिन गिनते इतने दिनों से बैठा था, (अन्त में) फाल्गुन में (तुम) दीख पड़े, देखा—देखा, तुमि करले—तुमने किया; एकि विस्मय—अजी, यह कैसा आश्चर्य है; शुने—सुन कर.

गन्धे उदास हाओयार मतो उड़े तोमार उत्तरी,
कर्णे तोमार कृष्णचूड़ार मञ्जरी।
तरुण हासिर आड़ाले कोन् आगुन ढाका रय—
एकि गो विस्मय।
अस्त्र तोमार गोपन राखो कोन् तूणे।।

१९१५

२५

ओगो दखिन हाओया, ओ पथिक हाओया, दोदुल दोलाय दाओ दुलिये।
नूतन-पातार-पुलक-छाओया परशखानि दाओ बुलिये।।
आमि पथेर धारेर व्याकुल वेणु हठात् तोमार साड़ा पेनु गो—
आहा, एसो आमार शाखाय शाखाय प्राणेर गानेर ढेउ तुलिये।।
ओगो दखिन हाओया, ओ पथिक हाओया, पथेर धारे आमार बासा।
जानि तोमार आसा-याओया, शुनि तोमार पायेर भाषा।
आमाय तोमार छोँओया लागले परे एकटुकुतेइ काँपन धरे गो—
आहा, काने काने एकटि कथाय सकल कथा नेय भुलिये।।

१९१५

गन्धे. मञ्जरी—गन्ध से आकुल हवा के समान तुम्हारा उत्तरीय उड़ता है, तुम्हारे कानों में कृष्णचूड़ा की मञ्जरी है; तरुण ....रय—तरुण हँसी की ओट कौन-सी आग ढकी रहती है, कोन् तूणे—किस तरकस में।

२५. हाओया—हवा; दोदुल . . . दुलिये—दोलायमान झूले पर झुला दो; पातार—पत्तियों का; छाओया—परिव्याप्त, परशखानि—स्पर्श; दाओ बुलिये—हलके-हलके फेर दो; आमि . . वेणु—मैं रास्ते के किनारे का व्याकुल बाँस, तोमार—तुम्हारी; साड़ा—आहट, पेनु—(मैंने) पाई; एसो . . तुलिये—मेरी शाखा-शाखा में प्राणों के गान की तरंग उठाते हुए आओ; पथेर . बासा—पथ के किनारे मेरा वासस्थान है; जानि . .भाषा—तुम्हारा आना-जाना जानता हूँ, तुम्हारे पैरों की भाषा सुनता हूँ; आमार ...गो—तुम्हारा छोटा-सा भी स्पर्श लगते ही मुझ में कंपन होता है; काने. . . .भुलिये—कानों-कान (कही हुई) एक बात से सभी बातें भुला देता है।

२६

ओरे भाइ, फागुन लेगेछे वने वने—
डाले डाले फुले फले पाताय पाताय रे,
आडाले आडाले कोणे कोणे ॥
रङे रङे रङिल आकाश, गाने गाने निखिल उदास—
येन चल चञ्चल नव पल्लवदल मर्मरे मोर मने मने ॥
हेरो हेरो अवनीर रङ्ग,
गगनेर करे तपोभङ्ग।
हासिर आघाते तार मौन रहे ना आर,
केँपे केँपे ओठे खने खने।
वातास छुटिछे वनमय रे, फुलेर ना जाने परिचय रे।
ताइ वुझि वारे वारे कुञ्जेर द्वारे द्वारे
शुधाये फिरिछे जने जने ॥

१९१५

२७

वसन्ते फुल गाँथल आमार जयेर माला।
वइल प्राणे दखिन-हाओया आगुन-ज्वाला ॥
पिछेर वाँशि कोणेर घरे मिछे रे ओइ केँदे मरे—
मरण एवार आनल आमार वरणडाला ॥

---

२६ फागुन .पाताय—वन-वन, डाल-डाल, फूल-फल, पत्ती-पत्ती में फाल्गुन (का स्पर्श) लगा है, आड़ाले—अन्तराल में; कोणे-कोणे—कोने-कोने में, रङे आकाश—विभिन्न रंगों ने आकाश रँग गया, निखिल—समस्त विश्व; येन—जैसे, मर्मरे—मर्मर करता है; हेरो—देखो, करे—करता है, हासिर. .. खने—उसकी हँसी के आघात से (आकाश) और चुप नहीं रह पाता क्षण-क्षण काँप-काँप उठता है; वातास परिचय रे—समस्त वन में पवन दौड़ लगा रहा है, फूलों का परिचय नहीं जानता, ताइ जने—सम्भवतः इसीलिये बारबार कुञ्ज के द्वार-द्वार, जन-जन से पूछता फिर रहा है।

२७ वसन्ते .माला—वसन्त ने मेरी जयमाला में फूल गूँथे, [illegible] ज्वाला—आग लगाने वाली दक्षिण हवा प्राणों में बही; पिछेर मरे—पीछे (विगत) की बाँसुरी कोने वाले घर में व्यर्थ रोती-कलपती है, मरण . डाला—

यौवनेरइ झड़ उठेछे आकाश-पाताले।
नाचेर तालेर झंकारे तार आमाय माताले।
कुड़िये नेवार घुचल पेशा, उड़िये देवार लागल नेशा—
आराम बले 'एल आमार यावार पाला'॥

१९१५

२८

'आमि पथभोला एक पथिक एसेछि।
सन्ध्यावेलार चामेलि गो, सकाल-वेलार मल्लिका,
आमाय चेन कि।'
'चिनि तोमाय चिनि, नवीन पान्थ—
वने वने ओड़े तोमार रङिन वसन-प्रान्त।
फागुन प्रातेर उतला गो, चैत्रेर रातेर उदासी,
तोमार पथे आमरा भेसेछि।'
'घरछाड़ा एइ पागलटाके एमन क'रे के गो डाके
करुण गुञ्जरि
यखन वाजिये वीणा वनेर पथे वेड़ाइ सञ्चरि।'

इस बार मृत्यु मेरे वरण की डाली ले आई, यौवनेरइ ....पाताले—आकाश-पाताल में यौवन की ही आँधी उठी है; नाचेर ... माताले—अपने नृत्य के ताल की झंकार से मुझे मतवाला कर दिया; कुड़िये ..पेशा—संचय करने का पेशा खत्म हुआ; उड़िये . नेशा—उड़ा देने का नशा चढ़ा; आराम.....पाला—आराम कहता है '(अब) मेरे जाने की बारी आई'।

२८. आमि .एसेछि—मैं पथ-भूला एक पथिक आया हूँ; सन्ध्या ... चेन कि—अजी, सन्ध्या समय की चमेली, प्रातःकाल की मल्लिका, मुझे पहचानती हो क्या; चिनि चिनि—(हम) पहचानती हैं, तुम्हें पहचानती हैं; वने... प्रान्त—वन-वन में तुम्हारे रंगीन वस्त्र का छोर उड़ता है; फागुन ....भेसेछि—अजी जी, फाल्गुन के प्रभात से आतुर, चैत्र की रात्रि के उदासीन (पथिक), तुम्हारे मार्ग में हमलोग बह आई हैं; घरछाड़ा . गुञ्जरि—गृहहीन इस पगले को करुण (स्वर) में गुञ्जार कर इस प्रकार कौन पुकारता है; यखन ....सञ्चरि—जब

'आमि तोमाय डाक दियेछि ओगो उदासी,
आमि आमेर मञ्जरी।
तोमाय चोखे देखार आगे तोमार स्वपन चोखे लागे,
वेदन जागे गो—
ना चिनितेइ भालो वेसेछि।'
'यखन फुरिये वेला चुकिये खेला तप्त धुलार पथे
याव झरा फुलेर रथे—
तखन सङ्ग के ल'वि।
'लव आमि माधवी।'
'यखन विदाय-बाँशिर सुरे सुरे शुक्नो पाता यावे उडे
सङ्गे के र'वि।'
'आमि रव, उदास हव ओगो उदासी।
आमि तरुण करवी।'
'वसन्तेर एइ ललित रागे विदाय-व्यथा लुकिये जागे—
फागुन दिने गो
काँदन-भरा हासि हेसेछि।'

१९१८

वीणा वजाते वन के रास्ते पर सञ्चरण करता घूमता हूँ, आमि . मञ्जरी—ओ उदासी, मैंने तुम्हे पुकारा है, मै आम की मञ्जरी हूँ, तोमाय वेसेछि—तुम्हे आँखो से देखने के पहले (ही) तुम्हारा स्वप्न आँखो मे रम जाता है, वेदना जाग उठती है, विना पहचाने ही तुम्हे प्यार किया है, यखन . ल'वि—जव समय चुका कर, खेल समाप्त करके जलती धूल के रास्ते झरे फूलो के रथ पर जाऊँगा, उस समय (तुम मे से) कौन साथ होगा, लव ... माधवी—मै माधवी साथ हूँगी, यखन . र'वि—जब विदाई की वाँसुरी के हर स्वर के साथ सूखी पत्तियाँ उड जाएँगी, (उस समय) कौन साथ रहेगा, आमि . करवी—मै तरुण करवी (कनेर), ओ उदासी, मै रहूँगी, मै (तुम्हारे साथ) उन्मना होऊँगी; वसन्तेर हेसेछि—वसन्त के इस ललित राग मे विदाई की व्यथा गोपन भाव से जागती है, अजी, (मैंने) फागुन में क्रन्दन से भरी हँसी हँसी है।

२९

आमार दिन फुरालो व्याकुल बादलसाँझे
गहन मेघेर निविड़ धारार माझे।
वनेर छायाय जल छलछल सुरे
हृदय आमार कानाय कानाय पूरे।
खने खने ओइ गुरुगुरु ताले ताले
गगने गगने गभीर मृदङ बाजे॥
कोन् दूरेर मानुष येन एल आज काछे,
तिमिर-आडाले नीरबे दाँडाये आछे।
बुके दोले तार विरहव्यथार माला,
गोपन-मिलन-अमृतगन्ध-ढाला।
मने हय तार चरणेर ध्वनि जानि—
हार मानि तार अजाना जनेर साजे॥

१९१९

३०

मोर वीणा ओठे कोन् सुरे बाजि कोन् नव चञ्चल छन्दे।
मम अन्तर कम्पित आजि निखिलेर हृदय-स्पन्दे॥

---

२९. आमार—मेरा, फुरालो—समाप्त हुआ; माझे—मध्य, बीच, वनेर... पूरे—वन की छाया में जल छलछल स्वर से मेरे हृदय को लबालब भर रहा है; कानाय-कानाय—किनारा-पर्यन्त, खने... बाजे—क्षण-क्षण गुरु-गुरु नाद से गगन भर में गभीर मृदङ्ग बज रहा है, कोन्... काछे—किस दूर का व्यक्ति जैसे आज निकट आया; तिमिर... आछे—अन्धकार की ओट में चुपचाप खड़ा है; बुके... माला—उसकी छाती पर विरह-व्यथा की माला झूल रही है, मने... जानि—लगता है जैसे उसकी चरण-ध्वनि को जानता हूँ; हार... साजे—अपरिचित व्यक्ति (जैसी) उसकी सज्जा (के निकट) हार मानता हूँ।

३०. मोर... छन्दे—मेरी वीणा किस सुर में, किस अभिनव चञ्चल छन्द में बज उठी है, मम... स्पन्दे—मेरा अन्तर अखिल विश्व के हृदय के

आसे कोन् तरुण अशान्त, उड़े वसनाञ्चल-प्रान्त—
आलोकेर नृत्ये वनान्त मुखरित अधीर आनन्दे ॥
ओइ अम्वरप्राङ्गण-माझे नि:स्वर मञ्जीर गुञ्जे।
अश्रुत सेइ ताले वाजे करतालि पल्लवपुञ्जे।
कार पद-परशन-आशा तृणे तृणे अर्पिल भाषा—
समीरण वन्धनहारा उन्मन कोन् वनगन्धे ॥

१९१९

३१

आमारे डाक दिल के भितर-पाने—
ओरा ये डाकते जाने।
आश्विने ओइ शिउलिशाखे
मौमाछिरे येमन डाके
प्रभाते सौरभेर गाने ॥
घरछाड़ा आज घर पेल ये, आपन मने रइल म'जे।
हाओयाय हाओयाय केमन क'रे खवर ये तार पौंछल रे
घर-छाड़ा ओइ मेघेर काने ॥

१९२१

स्पन्दन के साथ आज कम्पित है; आसे आनन्दे—कौन अशान्त तरुण अपने अचल के छोर को उडाते हुए आता है, वन प्रान्त आलोक के नृत्य में आकुल आनन्द से मुखरित है, अम्वर गुञ्जे—आकाश के प्रागण मे नि शब्द नूपुर [illegible] है, अश्रुत . पुञ्जे—पल्लव समूह मे उसी अश्रुत (अनसुनी) ताल में [illegible] वज रही है; कार भाषा—किसके पैरो के स्पर्श की आशा ने तृण-तृण को [illegible] दी; समीरण वनगन्धे—वधनहीन समीर वन की किस सुगन्धि से [illegible]।

३१. आमारे पाने—भीतर (अन्तर) की ओर किसने मेरा [illegible] किया है, ओरा जाने—वे पुकारना जानते है; आश्विने गाने—[illegible] मे शेफाली की शाखा पर सौरभ-संगीत जैसे प्रभात मे मधुमक्खियो को [illegible] है, घर . ये—गृहहीन ने आज गृह पाया, आपन . मंजे—[illegible] में ही मगन रहा, हाओयाय काने—हवा-हवा मे कैसे उसकी खबर [illegible] उस मेघ के कानो तक पहुँची।

३२

दारुण अग्निबाणे रे हृदय तृषाय हाने रे।
रजनी निद्राहीन, दीर्घ दग्ध दिन
आराम नाहि ये जाने रे॥
शुष्क काननशाखे क्लान्त कपोत डाके
करुण कातर गाने रे॥
भय नाहि, भय नाहि। गगने रयेछि चाहि।
जानि झञ्झार वेशे दिबे देखा तुमि एसे
एकदा तापित प्राणे रे॥

१९२२

३३

प्रखर तपनतापे आकाश तृषाय काँपे,
वायु करे हाहाकार।
दीर्घपथेर शेषे डाकि मन्दिरे एसे,
'खोलो खोलो खोलो द्वार।'
बाहिर हयेछि कबे कार आह्वानरबे,
एखनि मलिन हबे प्रभातेर फुलहार॥

---

३२. हाने—आघात करता है; आराम...जाने—आराम नहीं जानता; नाहि—नहीं; गगने...चाहि—आकाश की ओर (टकटकी लगाए) देख रहा हूँ; जानि...प्राणे—जानता हूँ, एक समय तप्त प्राणों में आँधी-पानी के वेश में आ कर दिखाई पड़ोगे।

३३. तपनतापे—सूर्य की गर्मी से; आकाश...काँपे—आकाश तृष्णा से काँप रहा है; शेषे—अन्त में; डाकि...एसे—मन्दिर में आ कर पुकारता हूँ; बाहिर...कबे—किसके आह्वान पर कब का बाहर हुआ हूँ; एखनि...फुलहार—प्रभात के फूलों का हार अभी मलिन होगा; बुके बाजे—हृदय में बजती है; जानि...नार—नहीं जानता कोई है कि नहीं, उसकी तो कोई

वुके वाजे आशाहीना क्षीणमर्मर वीणा,
जानि ना के आछे किना, साड़ा तो ना पाइ तार
आजि सारा दिन ध'रे प्राणे सुर ओठे भरे,
एकेला केमन क'रे वहिव गानेर भार ।।

१९२२

३४

आजि हृदय आमार याय ये भेसे
यार पाय नि देखा तार उद्देशे ।।
वाँधन भोले, हाओयाय दोले, याय से वादल-मेघेर कोले रे
कोन्से असम्भवेर देशे ।।
सेथाय विजन सागरकूले
श्रावण घनाय शैलमूले ।
राजार पुरे तमालगाछे नूपुर शुने मयूर नाचे रे
सुदूर तेपान्तरेर शेषे ।।

१९२२

३५

एसो एसो हे तृष्णार जल, कलकल् छलछल्—
भेद करि कठिनेर क्रूर वक्षतल कलकल् छलछल् ।।

आहट नही पाता; आजि . भार—आज समस्त दिन प्राणो मे सुर भर उठते हैं, गान का भार अकेला क्यो-कर वहन करूँगा।

३४ आजि ... उद्देशे—जिसे देख नही पाया, उसके निमित्त आज मेरा हृदय वहा जा रहा है ; वांधन. कोले—बन्धन भूल जाता है, हवा मे [illegible] जाता है, वह वरसाती वादलो की गोद मे जाता है; सेथाय—वहाँ, घनाय—सघन हो आता है, राजार . नाचे—राजा की पुरी मे तमालवृक्ष पर नूपुर (की आवाज़) सुन कर मयूर नाचता है; तेपान्तरेर शेषे—[illegible] मैदान के अन्त मे; तेपान्तर—(बँगला ग्राम-गीतो और दन्तकथाओं मे [illegible] विस्तृत मैदान के अर्थ मे इस शब्द का प्रयोग होता है)।

३५. एसो . . जल—आओ, आओ हे तृष्णा के जल, भेद . [illegible]—

एसो एसो उत्सस्रोते गूढअन्धकार हते
एसो निर्मल, कलकल् छलछल् ॥
रविकर रहे तव प्रतीक्षाय।
तुमि ये खेलार साथि, से तोमारे चाय।
ताहारि सोनार तान तोमाते जागाय गान,
एसो हे उज्ज्वल, कलकल् छलछल् ॥
हांकिछे अशान्त वाय,
आय, आय, आय। से तोमाय खुंजे याय।
ताहार मृदङ्गरवे करतालि दिते हवे,
एसो हे चञ्चल, कलकल् छलछल् ॥
मरुदैत्य कोन् मायावले
तोमारे करेछे बन्दी पाषाणशृङ्खले।
भेङे फेले दिये कारा एसो बन्धहीन धारा,
एसो हे प्रबल, कलकल् छलछल् ॥
१९२२

३६

ओगो आमार श्रावणमेघेर खेयातरीर माझि,
अश्रुभरा पुरब हाओयाय पाल तुले दाओ आजि ॥

कठिन के गुप्त वक्ष-स्थल का भेदन कर; हते—से; रविकर—सूर्य की किरण; तव प्रतीक्षाय—तुम्हारी प्रतीक्षा में; तुमि. .चाय—तुम जो (उसके) खेल के साथी हो, वह तुम्हें चाहती है, ताहारि गान—उसी की सुनहली तान तुम में गान जगाती है, हांकिछे . वाय—अशान्त वायु (तुम्हें) हांक दे कर बुलाती है; आय—आ, से. .याय—वह तुम्हें खोज जाती है; ताहार. हवे—उसके मृदङ्ग की आवाज के साथ ताल दे ताल देनी पड़ेगी; मरु. .शृंखले—मरुभूमि (रूपी) दैत्य किस मायाबल से तुम्हें पत्थर की शृंखला में बन्दी किए हुए है; भेङे धारा—कारागार को तोड़ कर; एसो—आओ।

३६. ओगो माझि—अहो ओ मेरे सावन के मेघ (रूपी) खेवे की नाव के मांझी; अश्रुभरा. आजि—आंसू से भरी पुरवैया हवा में आज पाल ऊपर

उदास हृदय ताकाय रय, वोझा ताहार नय भारि नय,
पुलक-लागा एइ कदम्बेर एकटि केवल साजि ।।
भोरवेला ये खेलार साथि छिल आमार काछे,
मने भावि, तार ठिकाना तोमार जाना आछे।
ताइ तोमारि सारिगाने सेइ आँखि तार मने आने,
आकाश-भरा वेदनाते रोदन उठे वाजि ।।

१९२२

३७

तिमिर-अवगुण्ठने वदन तव ढाकि
के तुमि मम अङ्गने दाँडाले एकाकी ।।
आजि सघन शर्वरी, मेघमगन तारा,
नदीर जले झर्झरि झरिछे जलधारा,
तमालवन मर्मरि पवन चले हाँकि ।।
ये कथा मम अन्तरे आनिछ तुमि टानि
जानि ना कोन् मन्तरे ताहारे दिव वाणी।

चढा दो, उदास नय—उदासीन हृदय देख रहा हूँ (दृष्टि लगाए हुए है), उसका बोझ भारी नही है, पुलक. साजि—पुलक से भरी इस कदम्ब की केवल मात्र एक फूलो की डालिया है; भोरवला काछे—भोर के समय खेल का जो साथी मेरे पास था, मने आछे—मन मे सोचता हूँ, उसका पता तुम्हारा जाना हुआ है; ताइ आने—इसीलिये तुम्हारा माझियो का गान ही उसकी उन्ही आंखो को याद करा देता है; सारिगान—(मल्लाहो का गान), आकाश बाजि—समस्त आकाश को भरने वाली वेदना मे रोदन बज उठता है।

३७ ढाकि—ढंक, के एकाकी—कौन तुम मेरे आँगन मे अकेले (आ) खडे हुए, शर्वरी—रात्रि; मेघमगन—मेघ मे छिपा, झर्झरि—[illegible] शब्द करती, मर्मरि—मर्मर शब्द से गुंजित कर, हाँकि—उच्च स्वर से [illegible] करता; ये वाणी—जो बात मेरे अन्तर मे तुम (बरबस) [illegible]

रयेछि बाँधा बन्धने छिँड़िब, याब बाटे—
येन ए वृथा क्रन्दने निशि नाहि काटे।
कठिन बाधा-लङ्घने दिब ना आमि फाँकि॥

१९२२

३८

पूर्व-सागरेर पार हते कोन् एल परवासी—
शून्ये बाजाय घन घन हाओयाय हाओयाय सन सन
साप खेलावार बाँशि॥
सहसा ताइ कोथा हते कुलु कुलु कलस्रोते
दिके दिके जलेर धारा छुटेछे उल्लासी॥
आज दिगन्ते घन घन गभीर गुरु गुरु डमरु-रव हयेछे ओइ शुरु।
ताइ शुने आज गगनतले पले पले दले दले
अग्निवरन नाग नागिनी छुटेछे उदासी॥

१९२२

नहीं जानता किस मन्त्र से उसे वाणी दूँगा; रयेछि .. काटे—बन्धन में बँधा हुआ हूँ, (उसे) तोड़ूँगा, रास्ते से जाऊँगा, ऐसा हो कि इस वृथा क्रन्दन में यह रात्रि न कटे; कठिन . फाँकि—कठिन बाधा को पार करने से मैं बच निकलने की चेष्टा नहीं करूँगा।

३८. पूर्व .परवासी—पूर्व-सागर के पार से कौन प्रवासी आया; शून्ये ... बाँशि—(वह) साँप खिलाने वाली बाँसुरी बार-बार शून्य में, हवा में सन-सन बजाता है; ताइ—इसीलिये; कोथा हते—कहाँ से; कुलु कुलु—कल-कल; छुटेछे—दौड़ पड़ी है; घन घन—बार-बार; डमरु ...शुरु—डमरु की आवाज वह शुरू हुई है, ताइ शुने—उसी को सुन कर; पले पले—क्षण-क्षण, अग्निवरन—अग्नि के रंग की।

३९

वादल-बाउल बाजाय रे एकतारा—
सारा वेला ध'रे झरो झरो झरो धारा ॥
जामेर वने धानेर खेते आपन ताने आपनि मेते
नेचे नेचे हल सारा ॥
घन जटार घटा घनाय आँधार आकाश-माझे,
पाताय पाताय टुपुर टुपुर नूपुर मधुर बाजे।
घर-छाड़ानो आकुल सुरे उदास हये वेड़ाय घुरे
पुबे हाओया गृहहारा ॥

१९२२

४०

बादल-मेघे मादल बाजे गुरुगुरु गगन-माझे ॥
तारि गभीर रोले आमार हृदय दोले,
आपन सुरे आपनि भोले ॥
कोथाय छिल गहन प्राणे गोपन व्यथा गोपन गाने—
आजि सकल वाये श्यामल वनेर छाये
छड़िये गेल सकलखाने गाने गाने ॥

१९२२

---

३९. वादल-बाउल—वर्षा रूपी बाउल, बाउल—(बंगाल का एक साधक सम्प्रदाय—इस सम्प्रदाय के साधक बंगाल में ही सीमित हैं। एकतारा ले कर बड़ी मस्ती से ये नाचते और गाते हैं। ये पैरों में नूपुर भी बांध लेते हैं); बाजाय—बजा रहा है; जामेर . सारा—जामुन के वन में, धान के खेत में अपनी तान में आप ही मत्त हो कर नाचते-नाचते विह्वल हो गया है, घन माझे—घनी घटा का समूह आकाश में अन्धकार को घनीभूत करता है; पाताय पाताय—पत्ती-पत्ती में; घर गृहहारा—घर से बाहर निकालने वाले आकुल सुर में उदासीन हो कर गृहहीन पुरवैया हवा घूमती फिरती है।

४०. मादल—ढोल की तरह का एक वाद्य-यन्त्र; तारि . दोले—उसीकी गभीर ध्वनि से मेरा हृदय झूमता है, आपन भोले—अपने सुर पर आप ही मुग्ध होता है, कोथाय छिल—कहाँ थी, गहन—गंभीर, दुर्गम, आजि . वाये—आज समस्त वायु में, वनेर छाये—वन की छाया में; छड़िये गेल—फैल गई; सकल खाने—सब जगह।

४१

बहु युगेर ओ पार हते आषाढ़ एल आमार मने,
कोन् से कविर छन्द बाजे झरो झरो वरिषने ॥
ये मिलनेर मालागुलि   धुलाय मिशे हल धूलि
गन्ध तारि भेसे आसे आजि सजल समीरणे ॥
से दिन एमनि मेघेर घटा रेवानदीर तीरे,
एमनि वारि झरेछिल श्यामल शैलशिरे ।
मालविका अनिमिखे   चेये छिल पथेर दिके,
सेइ चाहनि एल भेसे कालो मेघेर छायार सने ॥

१९२२

४२

भोर हल येइ श्रावणशर्वरी
तोमार बेड़ाय उठल फुटे हेनार मञ्जरी ॥
गन्ध तारि रहि रहि   बादल-बातास आने वहि,
आमार मनेर कोणे कोणे बेड़ाय सञ्चरि ॥

---

४१. बहु ..मने—अनेक युगों के उस पार से आषाढ़ मुझे याद आया; कोन्. वरिषने—झरझर बरसने वाली वर्षा में किस कवि का छन्द ध्वनित हो रहा है; ये . समीरणे—मिलन की जो मालाएँ धूल में मिल कर धूल हो गई, उन्हीं का गन्ध आज सजल हवा में बहता आ रहा है; से . . तीरे—उस दिन इसी प्रकार रेवा नदी के तट पर मेघों का समारोह था; एमनि... ..शैलशिरे—इसी प्रकार श्यामल शैल शिखर पर वर्षा की झड़ी लगी थी; मालविका.... .दिके—मालविका (कालिदास की मालविका) निर्निमेष दृष्टि से रास्ते की ओर टकटकी लगाए हुए थी, सेइ. .मने—(उसकी) वही चितवन काले मेघों की छाया के साथ बह आई।

४२. हल—हुई, येइ—जैसे ही; तोमार.. मञ्जरी—तुम्हारी बाड़ में हिना की मञ्जरी खिल उठी; गन्ध वहि—रह-रह कर उसी का गन्ध बरसाती हवा बहा कर ले आती है; आमार. सञ्चरि—मेरे मन के कोने-कोने

वेडा दिले कवे तुमि तोमार फुलवागाने,
आडाल क'रे रेखेछिले आमार वनेर पाने ।
कखन गोपन अन्धकारे वर्षारातेर अश्रुधारे
तोमार आड़ाल मधुर हये डाके मर्मरि ।।

१९२२

४३

हृदय आमार, ओइ बुझि तोर वैशाखी झड आसे ।
वेडा-भाडार मातन नामे उद्दाम उल्लासे ।।
तोमार मोहन एल भीषण वेशे, आकाश ढाका जटिलकेशे—
बुझि एल तोमार साधनधन चरम सर्वनाशे ।।
वातासे तोर सुर छिलना, छिल तापे भरा ।
पिपासाते वुक-फाटा तोर शुष्क कठिन धरा
एवार जाग् रे हताश, आय रे छुटे अवसादेर बाँधन टुटे—
बुझि एल तोमार पथेर साथि विपुल अट्टहासे ।।

१९२२

मे घूमती फिरती है, वेड़ा बागाने—अपनी फूलों की बगिया में तुमने कब बाड़ दी, आड़ाल .पाने—मेरे वन की ओर ओट कर रखा था; कखन—कब; तोमार . मर्मरि—तुम्हारी (वही) ओट मधुर हो कर मर्मर (ध्वनि में) पुकारती है।

४३ हृदय आसे—मेरे हृदय, लगता है वह तेरी वैशाखी झड़ की आंधी आती है (चैत्र-वैशाख महीने मे तीसरे पहर जो आंधी, वृष्टि आती है, उसे कालवैशाखी कहते है), वेड़ा . उल्लासे—उद्दाम उल्लास में बाड़ को चूर्ण-विचूर्ण करने वाली मत्तता अवतरित होती है; तोमार वेशे—तुम्हारा मोहन भयंकर वेश में आया, आकाश .केशे—आकाश को ढकने वाले जटिल केशों को लिए हुए, बुझि सर्वनाशे—चरम सर्वनाश में सम्भवतः तुम्हारी साधना का धन आया, वातासे भरा—हवा मे तेरा सुर नहीं था, वह ताप (गर्मी) से भरी थी, पिपासाते धरा—धरती तेरी छाती को फाड़ने वाली प्यास से सूखी, कठिन हो रही थी, एवार . अब, आय . छुटे—दौड़ कर आ, बांधन टुटे—बन्धन तोड़ कर, बुझि अट्टहासे—लगता है, तुम्हारा पथ का साथी गभीर अट्टहास करता आया।

४४

ओ आमार चाँदेर आलो, आज फागुनेर सन्ध्याकाले
धरा दियेछ ये आमार पाताय पाताय डाले डाले ॥
ये गान तोमार सुरेर धाराय वन्या जागाय ताराय ताराय
मोर आङिनाय वाजल से सुर आमार प्राणेर ताले ताले ॥
सब कुड़ि मोर फुटे ओठे तोमार हासिर इशाराते ।
दखिन-हाओया दिशाहारा आमार फुलेर गन्धे माते ।
शुभ्र, तुमि करले विलोल आमार प्राणे रङेर हिलोल,
मर्मरित मर्म आमार जड़ाय तोमार हासिर जाले ॥

१९२२

४५

शीतेर हाओयार लागल नाचन आम्लकिर एइ डाले डाले ।
पातागुलि शिर्शिरिये झरिये दिल ताले ताले ॥
उड़िये देवार मातन एसे काङाल तारे करल शेषे,
तखन ताहार फलेर वाहार रइल ना आर अन्तराले ॥

---

४४. ओ ....डाले—ओ मेरे चाँद के आलोक (चांदनी), आज फाल्गुन की सन्ध्या के समय मेरी पत्ती-पत्ती तथा डाली-डाली में तुम पकड़ाई जो दे गए हो; ये ..ताराय—जो गान तुम्हारे स्वर की धारा में तारागण में बन्या (बाढ़) जगाता है (ला देता है); मोर.. .ताले—मेरे आंगन में मेरे प्राणों के ताल-ताल पर वही स्वर बज उठा, सब. .इशाराते—तुम्हारी हँसी के इशारे से मेरी सभी कलियाँ खिल उठती हैं; दखिन.. माते—दिग्भ्रान्त दक्षिण-पवन मेरे फूलों की गन्ध से मत्त हो उठता है; तुमि .विलोल—तुमने चंचल कर दिया; मर्म—हृदय; जड़ाय—विजड़ित हो जाता है।

४५. शीतेर . डाले—शीत कालीन हवा का नर्तन इस आँवले की डाल-डाल में लगा, पातागुलि ...ताले—पत्तियों को सिहरा कर (सिहरन देकर) ताल-ताल पर (उस नर्तन ने) झरा दिया; उड़िये. ...शेषे—उड़ा देने के मतवालेपन से आ कर अन्त में उसे कंगाल बना दिया; तखन .. अन्तराले—उस समय उसके फल की बहार और अन्तराल में (छिपी) नहीं रही;

शून्य करे भरे देओया याहार खेला   तारि लागि रइनु वसे सकल वेला
शीतेर परश थेके थेके   याय वुझि ओइ डेके डेके,
सब खोओयावार समय आमार हवे कखन कोन् सकाले ।।

१९२२

४६

शिउलि-फोटा फुरोल येइ शीतेर वने
एले ये सेइ शून्यक्षणे ।
ताइ गोपने साजिये डाला   दुखेर सुरे वरणमाला
गाँथि मने मने   शून्यक्षणे ।।
दिनेर कोलाहले
ढाका से ये रइवे हृदयतले—
रातेर तारा उठवे यवे   सुरेर माला वदल हवे
तखन तोमार सने   मने मने ।।

१९२२

शून्य . .वेला—शून्य (रिक्त) करके भर देना (ही) जिसका खेल है, उसी के लिये (उसीकी प्रतीक्षा में) मै सब समय वैठा रहा, शीतेर . डेके—शीत का स्पर्श रह-रह कर संभवत. पुकार-पुकार जाता है, सब... सकाले—सब कुछ खो देने का मेरा समय कब किस प्रभात में होगा ।

४६. शिउलि ..शून्यक्षणे—शेफाली (हरसिंगार) का खिलना जैसे ही शीतकालीन वन मे समाप्त हुआ, उसी रीते क्षण मे (तुम) आ गए; ताइ . शून्यक्षणे—इसीलिए गोपन भाव से डाली सजा रीते क्षण में मन ही मन दुःख के सुर मे वरमाला गूंथती हूं, दिनेर . तले—दिन के कोलाहल मे वह तो अन्तस्तल में ढँकी (छिपी) रहेगी, रातेर. मने—रात का तारा जब उदय होगा, तब तुम्हारे साथ मन ही मन सुर की माला की बदला-बदली होगी (विवाह के समय वर-कन्या मे माल्य-विनिम्य की प्रथा है) ।

४७

आज दखिन-बातासे
नाम-ना-जाना कोन् वनफुल फुटल वनेर घासे।
'ओ मोर पथेर साथि पथे पथे गोपने याय आसे।'
कृष्णचूडा चूड़ाय साजे, बकुल तोमार मालार माझे,
शिरीष तोमार भरबे साजि फुटेछे सेइ आशे।
'ए मोर पथेर बाँशिर सुरे सुरे लुकिये काँदे हासे।'
ओरे देख वा नाइ देख, ओरे याओ वा ना याओ भुले।
ओरे नाइ वा दिले दोला, ओरे नाइ वा निले तुले।
सभाय तोमार ओ केह नय, ओर साथे नेइ घरेर प्रणय,
याओया-आसार आभास निये रयेछे एक पाशे।
'ओगो ओर साथे मोर प्राणेर कथा निश्वासे निश्वासे।'

१९२२

४८

एनेछ ओइ शिरीष बकुल आमेर मुकुल साजिखानि हाते करे।
कबे ये सब फुरिये देबे, चले याबे दिगन्तरे॥

---

४७. दखिन-बातासे—दक्षिण-पवन में; नाम . घासे—जंगल की घास में कोई वनफूल (जिसका) नाम नहीं जाना हुआ है, खिला; ओ . . आसे—यह मेरे पथ का साथी रास्ते-रास्ते चुप-चुप आना-जाना है; कृष्णचूड़ा. . . साजे—कृष्णचूड़ा के फूल चूड़ा में सजते हैं, बकुल . . माझे—बकुल तुम्हारी माला में (सजता) है; शिरीष . आशे—शिरीष तुम्हारी (फूलों की) डाली भरेगा, इसी आशा से खिला है, ए... हासे—यह मेरे पथ की बाँसुरी के प्रत्येक सुर में छिप कर रोना-हँसना है, ओरे . . भुले—(भले ही) उसे देखो या न देखो, उसे भूल जाओ या न भूल जाओ, ओरे . . . तुले—उसे भले ही न झुलाया, उसे भले ही चुन नहीं लिया; सभाय . . प्रणय—सभा में वह तुम्हारा कोई नहीं, उसके साथ घर का भी कोई प्रणय नहीं; याओया .... पाशे—जाने-आने के संकेत को लिए हुए वह तो एक किनारे विद्यमान है; ओर.. निश्वासे—उसके साथ प्रत्येक साँस में मेरे प्राणों की बातचीत (चल रही) है।

४८ एनेछ . करे—हाथों हाथ में ले कर शिरीष, बकुल, आमों की मंजरी लाए हो, एनेछ—लाए हो; कबे . दिगन्तरे—जाने कब सब को समाप्त

पथिक, तोमाय आछे जाना, करव ना गो तोमाय माना—
यावार वेलाय येयो येयो विजयमाला माथाय प'रे ॥
तबु तुमि आछ यत क्षण
असीम हये ओठे हियाय तोमारि मिलन ।
यखन यावे तखन प्राणे विरह मोर भरवे गाने—
दूरेर कथा सुरे वाजे सकल वेला व्यथाय भ'रे ॥

१९२२

४९

ओ मञ्जरी, ओ मञ्जरी, आमेर मञ्जरी,
आज हृदय तोमार उदास हये पडछे कि झरि ॥
आमार गान ये तोमार गन्धे मिशे दिशे दिशे
फिरे फिरे फेरे गुञ्जरि ॥
पूर्णिमाचाँद तोमार शाखाय शाखाय
तोमार गन्ध-साथे आपन आलो माखाय ।
ओइ दखिन-वातास गन्धे पागल भाङल आगल,
घिरे घिरे फिरे सञ्चरि ॥

१९२२

कर अन्य दिशा मे चले जाओगे, पथिक ... माना—पथिक, तुम्हे जानता हूँ, तुम्हे मना नही करूँगा; यावार ... प'रे—जाने के समय सिर पर विजयमाला धारण करके जाना, तबु .. मिलन—तौभी जितने क्षण तुम हो, हृदय मे तुम्हारा ही मिलन असीम हो उठता है; यखन ... गाने—जब जाओगे तब मेरा विरह प्राणो में, गानो मे भर उठेगा, दूरेर ... भ'रे—दूर की बात सब समय व्यथा से भर कर सुर मे बजती है।

४९. आज ... झरि—आज तुम्हारा हृदय क्या उदासीन हो कर झरा जा रहा है,, आमार. ... गुञ्जरि—मेरा गान तुम्हारे गन्ध से घुलमिल कर प्रत्येक दिशा में लौट-लौट कर गुञ्जरित होता फिरता है, पूर्णिमाचाँद ... माखाय—पूर्णिमा का चाँद तुम्हारी शाखा-शाखा मे तुम्हारे गन्ध के साथ अपने प्रकाश को मिश्रित कर रहा है, माखा—सानना; ओइ—वह; गन्धे पागल—गन्ध से पागल; भाङल आगल—अर्गला को तोड दिया है।

५०

दखिन हाओया, जागो जागो, जागाओ आमार सुप्त ए प्राण।
आमि वेणु, आमार शाखाय नीरव ये हाय कत-ना गान। जागो जागो ॥
पथेर धारे आमार कारा, ओगो पथिक बाँधन-हारा,
नृत्य तोमार चित्ते आमार मुक्ति दोला करे ये दान। जागो जागो ॥
गानेर पाखा यखन खुलि बाधा-वेदन तखन भुलि।
यखन आमार बुकेर माझे तोमार पथेर बाँशि बाजे
बन्ध भाङार छन्दे आमार मौन-काँदन हय अवसान। जागो जागो ॥
१९२२

५१

धीरे धीरे धीरे बओ ओगो उतल हाओया।
निशीथरातेर बाँशि बाजे, शान्त हओ गो शान्त हओ ॥
आमि प्रदीपशिखा तोमार लागि भये भये एका जागि,
मनेर कथा काने काने मृदु मृदु कओ ॥

---

५०. हाओया—हवा, ए प्राण—इस प्राण को, आमि .....गान—मैं वेणु (बाँस) हूँ, मेरी शाखा पर हाय, कितने गान नीरव हैं; पथेर . ..कारा—पथ के किनारे मेरा कारागार है; बाँधन-हारा—बन्धनहीन; नृत्य . .. दान—तुम्हारा नृत्य मेरे चित्त में मुक्ति का दोला जो प्रदान करता है; गानेर . .भुलि—गान के पंख जब खोलता हूँ, बाधा-वेदना उस समय भूल जाता हूँ; यखन..... बाजे—जब मेरे हृदय के भीतर तुम्हारे पथ की बाँसुरी बजती है; बन्ध. ... अवसान—बन्धन को तोड़ने वाले मेरे छन्द में मौन-क्रन्दन का अवसान हो जाता है।

५१. बओ—बहो; ओगो—ओ; उतल हाओया—चंचल हवा; निशीथ .. .बाजे—आधी रात की बाँसुरी बज रही है, हओ—होओ; आमि. . जागि—मैं प्रदीपशिखा (दीपक की लौ) तुम्हारे लिये अकेली भय पूर्वक जागती रहती हूँ; मनेर.. कओ—मन की बात कानों-कान धीरे-धीरे कहो;

तोमार दूरेर गाथा तोमार वनेर वाणी
घरेर कोणे देहो आनि।
आमार किछु कथा आछे भोरेर वेलार तारार काछे,
सेइ कथाटि तोमार काने चुपिचुपि लओ॥
१९२२

५२

वसन्त तार गान लिखे याय धूलिर 'परे की आदरे॥
ताइ से धुला ओठे हेसे वारे वारे नवीन वेशे,
वारे वारे रूपेर साजि आपनि भरे की आदरे॥
तेमनि परश लेगेछे मोर हृदयतले,
से ये ताइ धन्य हल मन्त्रवले।
ताइ प्राणे कोन् माया जागे, वारे वारे पुलक लागे,
वारे वारे गानेर मुकुल आपनि धरे की आदरे॥
१९२२

५३

वाकि आमि राखव ना किछुइ—
तोमार चलार पथे पथे छेये देव भुंइ।

घरेर. आनि—घर के कोने में ला दो; आमार लओ—भोर बेला के तारे से मुझे कुछ बात कहनी है, उस बात को अपने कान में गुपचुप ग्रहण करो।

५२ वसन्त आदरे—वसन्त कितने आदर (स्नेहपूर्ण यत्न) से धूलि पर अपने गान लिख जाता है; ताइ वेशे—इसीलिये वह धूलि बार-बार नवीन वेश में हँस उठती है, वारे भरे—बार-बार रूप की डाली अपने आप ही भर उठती है; तेमनि हृदयतले—मेरे हृदयतल में वैसा ही स्पर्श लगा है; से... वले—इसीलिये तो वह मन्त्रबल से धन्य हुआ; ताइ लागे—इसीलिये प्राणों में कौन-सी माया जागती है, वे बार-बार पुलक से भर उठते हैं; वारे.. धरे—बार-बार गान की कलियाँ अपने आप ही लगती हैं।

५३ वाकि किछुइ—मैं कुछ भी बाकी नहीं रखूँगी; तोमार . भुंइ

ओगो मोहन, तोमार उत्तरीय गन्धे आमार भरे नियो,
उजाड करे देब पाये बकुल बेला जुँइ ॥
दखिन-सागर पार हये ये एले पथिक तुमि,
आमार सकल देब अतिथिरे आमि वनभूमि।
आमार कुलाय-भरा रयेछे गान, सब तोमारेइ करेछि दान—
देबार काडाल करे आमाय चरण यखन छुँइ।

१९२२

५४

माधवी हठात् कोथा हते एल फागुन-दिनेर स्रोते।
एसे हेसेइ बले 'या इ या इ या इ।'
पाताग घिरे दले दले तारे काने काने बले,
'ना ना ना।'
नाचे ता इ ता इ ता इ ॥
आकाशेर तारा बले तारे, 'तुमि एसो गगन-पारे,
तोमाय चा इ चा इ चा इ।'

—तुम्हारे चलने के प्रति पथ की भूमि को आच्छादित कर दूँगी; तोमार.... नियो—अपना उत्तरीय मेरे गन्ध से भर लेना; उजाड़ . जुँइ—(तुम्हारे) पैरों में बकुल, बेला, जुही को निःशेष बिखेर दूँगी, दखिन.. तुमि—तुम जो दक्षिण सागर से पार हो कर आए, पथिक; आमार ..वनभूमि—मैं वनभूमि, अपना सब (कुछ) अतिथि को दूँगी; आमार.. दान—मेरे पास नीड़-भर गान हैं; सब तुम्हें ही अर्पित कर दिए हैं; देबार छुँइ—जब अपने को निःस्व करके तुम्हारे चरण छुए।

५४ माधवी . स्रोते—फागुन के दिनों के स्रोत में हठात् माधवी कहाँ से आई; एसे या इ—आ कर हँसते हुए ही कहती है 'जा रही हूँ, जा रही हूँ'; पाताग ना—दल के दल पत्ते उसे घेर कर कानों-कान कहते हैं 'नहीं', नहीं, नहीं'; नाचे ..ता इ—(पत्ते) ता-ता-थेई नाचते हैं; आकाशेर. चा इ—आकाश का तारा उससे कहता है 'तुम आकाश के पार आओ, तुम्हें चाहता हूँ,

पातारा   घिरे दले दले   तारे   काने काने वले,
'ना   ना   ना।'
नाचे ता इ   ता इ   ता इ ॥
वातास   दखिन हते आसे, फेरे तारि पाशे पाशे,
वले,   'आ य   आ य   आ य।'
वले,   'नील अतलेर कूले सुदूर   अस्ताचलेर मूले
वेला   या य   या य   या य।'
वले,   'पूर्णशशीर राति   क्रमे   हबे मलिन-भाति,
समय   ना इ   ना इ   ना इ।'
पातारा   घिरे दले दले   तारे   काने काने वले,
'ना   ना   ना'
नाचे   ता इ   ता इ   ता इ ॥

१९२२

५५

यदि तारे नाइ चिनि गो से कि आमाय नेबे चिने
एइ नव फाल्गुनेर दिने— जानि ने, जानि ने ॥
से कि आमार कुँडिर काने   कबे कथा गाने गाने,
परान ताहार नेबे किने   एइ नव फाल्गुनेर दिने—
जानि ने, जानि ने ॥

चाहता हूँ;' वातास   आ य—दक्षिण से पवन आता है और उसको [illegible]
घूमता है, कहता है 'आ, आ'; वले   या य—कहता है, 'नील अतल के किनारे
सुदूर अस्ताचल के नीचे वेला ढली जा रही है' (दिन समाप्त हो गया है),
वले   ना इ—कहता है, 'पूर्णिमा की रात्रि का प्रकाश क्रमशः मलिन होगा
समय नही है, समय नही है'।

५५. यदि   चिने—इस नव फाल्गुन के दिन यदि (मैं) उसे नहीं पहचानूँ
(तो) क्या वह मुझे पहचान लेगा, नही जानती, नहीं जानती, से   गाने—[illegible]
मेरी कली के कानो मे गान-गान मे (अपनी) बात कहेगा; परान   दिने—[illegible]

से कि आपन रङे फुल राङावे
से कि मर्मे एसे घुम भाङावे।
घोमटा आमार नतुन पातार हठात् दोला पावे कि तार,
गोपन कथा नेबे जिने एइ नव फाल्गुनेर दिने—
जानि ने, जानि ने।।

१९२२

५६

सहसा डालपाला तोर उतला ये ओ चाँपा, ओ करबी।
कारे तुइ देखते पेलि आकाश-माझे जानि ना ये।।
कोन् सुरेर मातन हाओयाय एसे बेड़ाय भेसे ओ चाँपा, ओ करबी।
कार नाचनेर नूपुर बाजे जानि ना ये।।
तोरे क्षणे क्षणे चमक लागे।
कोन् अजानार धेयान तोमार मने जागे।
कोन् रङेर मातन उठल दुले फुले फुले ओ चाँपा, ओ करबी।
के साजाले रङिन साजे जानि ना ये।।

१९२२

प्राणों को मरोड़ लेगा, से कि.... राङावे—वह क्या अपने रंग में फूलों को रँगेगा; से कि.. भाङावे—वह क्या अन्तर में आ कर निद्रा भंग करेगा; घोमटा .. तार—नयी पत्तियों के मेरे घूँघट को क्या वह हठात् आन्दोलित कर जाएगा; गोपन .. जिने—(मेरे अन्तर की) गोपन बात को क्या (वह) जय कर लेगा (बरबस जान लेगा)।

५६ सहसा ...करबी—सहसा तुम्हारी शाखाएँ-प्रशाखाएँ चंचल जो हो उठीं, ओ चम्पा, ओ करबी (कनेर); कारे . ये—आकाश के बीच तूने किसे देख लिया, नहीं जानता; कोन्.. .भेसे—हवा में किस सुर की मस्ती आ कर झूमती फिरती है; कार.. बाजे—किसके नर्तन का नूपुर बजता है; तोरे... लागे—तुझे क्षण-क्षण में विस्मय होता है; कोन्.. जागे—किस अपरिचित का ध्यान तुम्हारे मन में जागता है; कोन . दुले—किस रंग की मस्ती झूम उठी; फुले फुले—फूल-फूल में; के... ये—रंगीन सज्जा में किसने सजाया, नहीं जानता।

५७

से दिन आमाय वलेछिले आमार समय हय नाइ—
फिरे फिरे चले गेले ताइ ॥
तखनो खेलार वेला— वने मल्लिकार मेला,
पल्लवे पल्लवे वायु उतला सदाइ ॥
आजि एल हेमन्तेर दिन
कुहेलिविलीन, भूषणविहीन ।
वेला आर नाइ वाकि, समय हयेछे नाकि—
दिनशेषे द्वारे वसे पथ-पाने चाइ ॥

१९२२

५८

पूर्णचाँदेर मायाय आजि भावना आमार पथ भोले,
येन सिन्धुपारेर पाखि तारा याय याय याय चले ॥
आलोछायार सुरे अनेक कालेर से कोन् दूरे
डाके आय आय आय व'ले ॥
येथाय चले गेछे आमार हारा फागुनराति
सेथाय तारा फिरे फिरे खोँजे आपन साथि ।

---

५७. से नाइ—उस दिन मुझसे (तुमने) कहा था, मेरा समय नहीं हुआ है, फिरे ताइ—इसीलिये लौट-लौट कर चले गए, तखनो सदाइ—उस समय भी खेल का समय (था), वन में मल्लिका का मेला (लगा था) और पत्ते-पत्ते में हवा निरन्तर चंचल थी, आजि एल—आज आ गया; कुहेलि—कुहरा; वेला नाकि—वेला और बाकी नहीं रह गई है, समय हो गया है क्या: दिन चाइ—दिन का अन्त होने पर द्वार पर बैठा रास्ते की ओर ताकता हूँ।

५८ पूर्णचांदेर भोले—पूर्ण चांद की माया ने आज मेरी [illegible] भूलती हैं; तारा चले—वे चली जाती हैं, चली जाती हैं, आलोछायार सुरे—प्रकाश और छाया के सुर में; डाके—पुकारती है, आय—आ; [illegible]—कहती हुई; येथाय साथि—जहाँ मेरी फाल्गुन की रातें चली गई हैं वहाँ वे

आलोछायाय येथा अनेक दिनेर से कोन् व्यथा
  कांदे हाय हाय हाय व'ले ॥

१३२२

५९

कत ये तुमि मनोहर मनइ ताहा जाने,
हृदय मम थरोथरो काँपे तोमार गाने ॥
आजिके एइ प्रभातवेला मेघेर साथे रोदेर खेला,
जले नयन भरोभरो चाहि तोमार पाने ॥
आलोर अधीर झिलिमिलि नदीर ढेउये ओठे,
वनेर हासि खिलिखिलि पाताय पाताय छोटे ॥
आकाशे ओइ देखि की ये— तोमार चोखेर चाहनि ये
सुनील सुधा झरोझरो झरे आमार प्राणे ॥

१३२२

६०

कार येन एइ मनेर वेदन चैत्रमासेर उतल हाओयाय,
झुमकोलतार चिकन पाता काँपे रे कार चमके-चाओयाय ॥

(चिन्ताएँ) लोट-लोट कर अपना संगी खोजती फिर रही हैं; येथा—जहाँ, कांदे—क्रन्दन करती है।

५९ कत ..जाने—तुम जो कितने मनोहर हो, सो मन ही जानता है; थरोथरो ..गाने—तुम्हारे गान से थर-थर कांपता है, एइ—इस; मेघेर.... खेला—मेघ के साथ धूप का खेल (चल रहा है), जले—आँसुओं से; भरो-भरो—भरे, छलछलाए; चाहि ..पाने—तुम्हारी ओर देखता हूँ; आलोर..... ओठे—प्रकाश की अधीर झिलमिलाहट नदी की लहरों में उठती है; वनेर.... छोटे—वन की खिलखिल हँसी पत्ती-पत्ती में दौड़ती है; आकाशे. . ये—आकाश में यह क्या देखता हूँ; तोमार .. प्राणे—तुम्हारी आँखों की चितवन सुनील सुधा मेरे प्राणों में झर-झर झरती है।

६० कार ... हाओयाय—जाने किस के मन की यह व्यथा चैत्रमास की चंचल हवा में है; झुमके ... चाओयाय—झुमकोलता (एक फूलविशेष) की

हारिये-याओया कार से वाणी कार सोहागेर स्मरणखानि
आमेर बोलेर गन्धे मिशे काननके आज कान्ना पाओयाय।
काँकन-दुटिर रिनिझिनि कार वा एखन मने आछे।
सेइ कांकनेर झिकिमिकि पियालवनेर शाखाय नाचे।
यार चोखेर ओइ आभास दोले नदी-ढेउयेर कोले कोले
तार साथे मोर देखा छिल सेइ से कालेर तरी-बाओयाय।

१९२२

६१

नाइ रस नाइ, दारुण दाहनवेला। खेलो खेलो तव नीरव भैरव खेला।
यदि झ'रे पड़े पड़ुक पाता, म्लान हये याक माला गाँथा,
थाक् जनहीन पथे पथे मरीचिकाजाल फेला।।
शुष्क धुलाय खसे-पड़ा फुलदले घूर्णी-आँचल उड़ाओ आकाशतले।
प्राण यदि कर मरुसम तबे ताइ होक—हे निर्मम,
तुमि एका आर आमि एका, कठोर मिलनमेला।।

१९२५

चिकनी पत्तियाँ किनके हठात् दृष्टिपात से कांप रही हैं, हारिये पाओयाय—वह किसकी खोई हुई वाणी, किसके प्रणय की स्मृति आम की मञ्जरी की गन्ध मे घुल कर आज वन को रुला रही है, काँकन आछे—दो कंगनो की रुनझुन इस समय किसे याद आ रही है; सेइ नाचे—उन्हीं कंगनो की झलमल पियाल (चिरौंजी) वन की शाखाओ मे नाचती है; यार बाओयाय—जिनकी आँखों को वह झलक नदी की लहरों की गोद में झूमती है, उनके साथ मेरा परिचय हुआ था—वही उस समय के नौका-विहार में।

६१ नाइ—नही है, यदि गांथा—अगर पत्ते झर पड़ें (तो) पड़ें माला गूंधना म्लान हो जाय, थाक्—(चलता) रहे, फेला—फैला, धुलाय—धूल मे; खसे-पडा—टपके हुए, घूर्णी-आंचल—घूर्णाजाल (बवंडर) रूपी आँचल, कर—करो; तबे होक—तब वही हो, तुमि एका—तुम अकेले और मैं एकाकी; मिलनमेला—मिलन की प्राप्ति।

६२

अश्रुभरा वेदना दिके दिके जागे।
आजि श्यामल मेघेर माझे बाजे कार कामना॥
चलिछे छुटिया अशान्त वाय,
क्रन्दन कार तार गाने ध्वनिछे—
करे के से विरही विफल साधना॥

१९२५

६३

आज श्रावणेर पूर्णिमाते की एनेछिस बल्—
हासिर कानाय कानाय भरा नयनेर जल॥
बादल-हाओयार दीर्घश्वासे यूथीवनेर वेदन आसे—
फुल-फोटानोर खेलाय केन फुल-झरानोर छल।
ओ तुइ की एनेछिस बल्॥
ओगो, की आवेश हेरि चाँदेर चोखे,
फेरे से कोन् स्वपन-लोके।
मन बसे रय पथेर धारे, जाने ना से पावे कारे—

---

६२. मेघेर माझे—मेघों के बीच, बाजे... कामना—किसकी कामना ध्वनित होती है; चलिछे ..वाय—अशान्त वायु दौड़ी जा रही है; कार—किसका, तार... ध्वनिछे—उसके गान में ध्वनित हो रहा है; करे... ...साधना—यह कौन विरही विफल मनुहार कर रहा है।

६३. आज ... बल्—आज श्रावण की पूर्णिमा को (तू) क्या लाया है, बता तो सही; हासिर ..जल—हँसी में रुलाई भरा नयनों का जल; बादल .... आसे—बादल की हवा के दीर्घश्वास में यूथीवन की वेदना आती है; फुल... छल—फूल खिलने के खेल में फूल झराने का छल क्यों; तुइ—तू; की.. चोखे—चाँद की आँखों में कैसी विह्वलता देखता हूँ; फेरे. . लोके—वह किस स्वप्न-लोक में विचरण करता है; मन. .धारे—रास्ते के किनारे मन बैठा रहता है, जाने... कारे—नहीं जानता वह किसे पाएगा; [illegible]—[illegible] में आने-जाने का संकेत मिलता है।

आसा-याओयार आभास भासे वातासे चञ्चल।
ओ तुइ की एनेछिस वल्॥

१९२५

६४

एसो नीपवने छायावीथितले,
एसो करो स्नान नवधाराजले॥
दाओ आकुलिया घन कालो केश, परो देह घेरि मेघनील वेश—
काजल नयने, यूथीमाला गले, एसो नीपवने छायावीथितले॥
आजि क्षणे क्षणे हासिखानि सखी,
अधरे नयने उठुक चमकि।
मल्लारगाने तव मधुस्वरे दिक् वाणी आनि वनमर्मरे।
घनवरिषने जल-कलकले एसो नीपवने छायावीथितले॥

१९२५

६५

ओइ आसे ओइ अति भैरव हरषे
जलसिञ्चित क्षितिसौरभ-रभसे
घनगौरवे नवयौवना वरषा श्यामगम्भीर सरसा।

---

६४. एसो—आओ, नीपवने—कदम्ब के वन में, वीथि—दोनों ओर वृक्षों की कतार वाला पथ; दाओ ... केश—घने काले केशों को [illegible] कर दो; परो ... वेश—शरीर को घेर मेघ (के समान) [illegible] पहनो, नयने—आँखों में; आजि ... चमकि—सखी, आज क्षण-क्षण अधरों नयनों में हँसी थिरक उठे; मल्लार ...कलकले—मल्लारगान में तुम्हारा मधुर स्वर [illegible] मर्मरध्वनि को, सघन वर्षा को, जल के कलकल स्वर को वाणी प्रदान करे।

६५. ओइ आसे—वह आता है, हरषे—हर्ष के साथ, रभसे—[illegible]

गुरु गर्जने नील अरण्य शिहरे,
उतला कलापी केकाकलरवे विहरे—
निखिलचित्तहरषा
घनगौरवे आसिछे मत्त वरषा ।।

कोथा तोरा अयि तरुणी पथिकललना,
जनपदवधू तड़ित्-चकित-नयना,
मालतीमालिनी कोथा प्रियपरिचारिका,
कोथा तोरा अभिसारिका ।
घनवनतले एसो घननीलवसना,
ललित नृत्ये बाजुक स्वर्णरसना,
आनो वीणा मनोहारिका ।
कोथा विरहिणी, कोथा तोरा अभिसारिका ।।

आनो मृदङ्ग मुरज मुरली मधुरा,
बाजाओ शङ्ख, हुलुरव करो वधूरा—
एसेछे वरषा, ओगो नव-अनुरागिणी,
ओगो प्रियसुखभागिनी ।
कुञ्जकुटिरे अयि भावाकुललोचना,
भूर्जपाताय नवगीत करो रचना
मेघमल्लाररागिणी ।
एसेछे वरषा, ओगो नव-अनुरागिणी ।।

गे, गर्जने—गर्जन से; उतला—भावावेग से आकुल; कलापी—मोर; केका—मोर की बोली; विहरे—विहार कर रहा है।

कोथा तोरा—कहाँ हो तुम लोग; चकित—दीप्त; बाजुक—बजे; रसना—स्त्रियों का कटि-भूषण, मेखला, करधनी।

आनो—लाओ; हुलुरव—(विवाहादि मंगल-अवसर पर स्त्रियाँ मुँह से एक प्रकार की आवाज करती हैं, इसे हुलुरव कहते हैं); वधूरा—वधुएँ; भूर्जपाताय—भोज-पत्र पर।

केतकीकेशरे केशपाश करो सुरभि,
क्षीण कटितटे गाँथि लये परो करवी,
कदम्बरेणु विछाइया दाओ शयने,
अञ्जन आँको नयने ।
ताले ताले दुटि कङ्कण कनकनिया
भवनशिखीरे नाचाओ गनिया गनिया
स्मितविकशित वयने—
कदम्बरेणु विछाइया फुलशयने ।।

एसेछे वरषा, एसेछे नवीन वरषा,
गगन भरिया एसेछे भुवनभरसा ।
दुलिछे पवने सन-सन वनवीथिका,
गीतमय तरुलतिका ।
शतेक युगेर कविदले मिलि आकाशे
ध्वनिया तुलिछे मत्तमदिर वातासे
शतेक युगेर गीतिका ।
शत शत गीत-मुखरित वनवीथिका ।।

१९२५

सुरभि—सुगन्धित, क्षीण . करवी—क्षीण कटि प्रदेश में करवी (कनेर) गूँथ कर पहनो, कदम्ब शयने—सेज पर कदम्ब का पराग छिड़ा दो, आँको—अंकित करो, ताले ताले—ताल-ताल पर; दुटि—दो, कनकनिया—खनखना कर, ध्वनित कर, गनिया—(ताल) गिन-गिन कर, वयने—मुख से ।

गगन भरसा—आकाश को भर कर संसार की आशा (नव वर्षा) लाई है; दुलिछे—झूम रही है; पवने—पवन में; शतेक गीतिका—सैकड़ों युगों के कवियों के दल आकाश में मिल कर मत्तमंदिर हवा में सैकड़ों युगों के गीतों को ध्वनित कर रहे हैं; शत . वीथिका—सैकड़ों गीतों से वनवीथि गुञ्जित है ।

६६

कदम्बेरइ कानन घेरि आषाढमेघेर छाया खेले,
पियालगुलि नाटेर ठाटे हाओयाय हेले ॥
बरषनेर परशने शिहर लागे वने वने,
विरही एइ मन ये आमार सुदूर-पाने पाखा मेले ॥
आकाशपथे वलाका धाय कोन् से अकारणेर वेगे,
पुब हाओयाते ढेउ खेले याय डानार गानेर तुफान लेगे ।
झिल्लिमुखर बादल-साँझे के देखा देय हृदय-माझे—
स्वपनरूपे चुपे चुपे व्यथाय आमार चरण फेले ॥

१९२५

६७

पुब-हाओयाते देय दोला आज मरि मरि ।
हृदयनदीर कूले कूले जागे लहरी ॥
पथ चेये ताइ एकला घाटे विना काजे समय काटे,
पाल तुले ओइ आसे तोमार सुरेरइ तरी ॥

---

६६. कदम्बेरइ . खेले—कदम्ब ही के कानन को घेर आषाढ के मेघ की छाया खेलती है; पियाल ... हेले—प्रियाल फूल के वृक्ष अभिनय की भंगी में हवा में झूमते हैं, बरषनेर ... वने—वर्षण के स्पर्श से वन-वन सिहर उठता है; विरही .. मेले—मेरा यह विरही मन सुदूर की ओर पंख पसारता है; आकाश ... वेगे—आकाश मार्ग में बगुलों की पंक्ति किस अकारण वेग से दौड़ती है, पुब ...लेगे—डैनों के संगीत का तूफान लगने से पुरवैया हवा में लहर खेल जाती है; झिल्लि... साँझे—झिल्ली की झनकार से मुखर बरसाती साँझ में हृदय के भीतर कौन दिखाई दे रहा है; स्वपन... फेले—स्वप्न के रूप में चुपके-चुपके मेरी व्यथा में (आके) चरण धरता हुआ ।

६७ पुब ... दोला—पुरवैया हवा झूम रही है; मरि मरि—(सौन्दर्य आदि को देख विस्मयसूचक शब्द), बलिहारी है! पथ ...काटे—इसीलिये अकेले घाट पर रास्ता देखते बिना काम के समय बीतता है; पाल... तरी—तुम्हारे

व्यथा आमार कूल माने ना, वाधा माने ना।
परान आमार घुम जाने ना, जागा जाने ना।
मिलवे ये आज अकूल-पाने   तोमार गाने आमार गाने,
भेसे यावे रसेर वाने आज विभावरी॥
१९२५

६८

वज्रमानिक दिये गाँथा, आषाढ, तोमार माला।
तोमार श्यामल शोभार बुके विद्युतेरइ ज्वाला॥
तोमार   मन्त्रवले   पाषाण गले,   फसल फले—
मरु वहे आने तोमार पाये फुलेर डाला॥
मरो मरो पाताय पाताय   झरो झरो वारिर रवे
गुरु गुरु मेघेर मादल वाजे तोमार की उत्सवे।
सबुज   सुधार धाराय   प्राण एने दाओ तप्त धराय,
वामे राख भयंकरी वन्या मरण-ढाला॥
१९२५

ही सुर की नौका वह पाल ताने आती है, व्यथा. ना—मेरी व्यथा सीमा नही मानती, बाधा नही मानती, घुम—नींद; जागा—जागरण, मिलवे [illegible] गाने—आज अकूल (अनन्त) की ओर तुम्हारे और मेरे गान मिलेंगे, भेसे विभावरी—रस की बाढ़ में आज रात्रि बह जायगी।

६८ वज्र   माला—आषाढ, तुम्हारी माला वज्र (रूपी) माणिक्य से गुंथी हुई है, तोमार   ज्वाला—तुम्हारी श्यामल शोभा के वक्ष में विद्युत् की ही ज्वाला है; मन्त्र वले—मन्त्र के बल से, मरु .डाला—मरु तुम्हारे पैरो मे फूल की डाली वहन कर लाता है; मरो. रवे—मर्मर [illegible] मे, जल के झर-झर शब्द में; गुरु   उत्सवे—गुरु-गुरु मेघों का मर्दल तुम्हारे उत्सव मे कैसा बजता है, सबुज—सब्ज, हरी; सुधार धाराय—[illegible] धारा मे, प्राण .धाराय—तप्त पृथ्वी पर जीवन ला दो; वामे   [illegible]—(अपने) वाम (पार्श्व) में मृत्यु ढालती हुई भयंकरी वन्या को रखो।

६९

वन्धु, रहो रहो साथे
आजि ए सघन श्रावणप्राते।
छिले कि मोर स्वपने साथिहारा राते॥
वन्धु, वेला वृथा याय रे,
आजि ए वादले आकुल हाओयाय रे—
कथा कओ मोर हृदये, हात राखो हाते॥

१९२५

७०

येते दाओ गेल यारा।
तुमि येयो ना, येयो ना,
आमार वादलेर गान हयनि सारा॥
कुटिरे कुटिरे वन्ध द्वार, निभृत रजनी अन्धकार,
वनेर अञ्चल काँपे चञ्चल— अधीर समीर तन्द्राहारा॥
दीप निवेछे निवुक नाको, आँधारे तव परश राखो।
वाजुक काँकन तोमार हाते आमार गानेर तालेर साथे,
येमन नदीर छलो छलो जले झरे झरो झरो श्रावणधारा॥

१९२५

---

६९. छिले ... राते—संगीविहीन रात में क्या तुम मेरे सपनों में थे; याय—जाती है; ए—इस; बादले—वर्षा में; हाओयाय—हवा में; कथा ... हाते—मेरे हृदय में बात बोलो, हाथों में हाथ रखो।

७०. येते .. यारा—जो गए (उन्हें) जाने दो; तुमि ....ना—तुम न जाना, न जाना; आमार ...सारा—मेरा वर्षा का गान समाप्त नहीं हुआ, बन्ध—बन्द; तन्द्राहारा—तन्द्राहीन; दीप ...नाको—दीप बुझ गया है (तो) बुझे ना, आँधारे ...राखो—अन्धकार में अपना स्पर्श रख छोड़ो; बाजुक.....साथे—मेरे गान के ताल के साथ तुम्हारे हाथ में कंगन बजे; येमन ...धारा—जैसे नदी के छलछल जल में श्रावन की धारा झर-झर शब्द करती झरती है।

७१

आमार   रात पोहालो शारद प्राते।
बाँशि, तोमाय दिये याव काहार हाते ॥
तोमार बुके बाजल ध्वनि   विदायगाथा आगमनी कत ये—
फाल्गुने श्रावणे कत प्रभाते राते ॥
ये कथा रय प्राणेर भितर अगोचरे
गाने गाने नियेछिले चुरि क'रे।
समय ये तार हल गत   निशिशेषेर तारार मतो,
तारे शेष करे दाओ शिउलिफुलेर मरण-साथे ॥

१९२५

७२

एबार   अवगुण्ठन खोलो।
गहन मेघमायाय   विजन वनछायाय
तोमार   आलसे अवलुण्ठन सारा हल ॥
शिउलि-सुरभि राते   विकशित ज्योत्स्नाते
मृदु मर्मरगाने तव   मर्मर वाणी बोलो ॥

---

७१. आमार   प्राते—शरद् के प्रातःकाल मेरी रात प्रभात हुई, बाँशि . हाते—बाँसुरी, तुम्हें किसके हाथों दे जाऊँगा, तोमार बुके—तुम्हारे हृदय में; बाजल—बज उठी; विदाय   ये—कितनी विदा-गाथाएँ, कितने स्वागत-गीत ('आगमनी'—उमा के पितृगृह में आगमन के गीत), फाल्गुने   राते—फाल्गुन और श्रावण में, कितने प्रभात और कितनी रात्रियों में; ये . क'रे—जो बात प्राणों के भीतर अगोचर रहती है, (उसे तुमने) गान-गान में चुरा लिया था, समय   मतो—रात्रिशेष के तारा के समान उस (बात) का समय बीत जो गया, तारे   साथे—शेफाली (हरसिंगार) के फूलों के मरण के साथ उसे समाप्त कर दो।

७२. एबार—अब, इस बार, अवलुण्ठन—[illegible], सारा हल—समाप्त हुआ; शिउलि—शेफाली; ज्योत्स्नाते—चाँदनी में;

विषाद-अश्रुजले मिलुक शरमहासि—
मालतीवितानतले बाजुक बँधुर बाँशि।
शिशिरसिक्त वाये विजड़ित आलोछाये
विरह-मिलने-गाँथा नव प्रणयदोलाय दोलो॥

१९२५

७३

कार बाँशि निशिभोरे बाजिल मोर प्राणे।
फुटे दिगन्ते अरुणकिरणकलिका॥
शरतेर आलोते सुन्दर आसे, धरणीर आँखि ये शिशिरे भासे
हृदयकुञ्जवने मुञ्जरिल मधुर शेफालिका॥

१९२५

७४

आज कि ताहार बारता पेल रे किशलय।
ओरा कार कथा कय वनमय॥
आकाशे आकाशे दूरे दूरे सुरे सुरे
कोन् पथिकेर गाहे जय॥

मिलुक—विलीन हो जाए; शरमहासि—लाज की हँसी; बाजुक—बाँशि—मोहन की बाँसुरी बजे; शिशिर—ओसकण, वाये—वायु में; आलोछाये—प्रकाश और छाया में; गाँथा—गुँथे हुए, दोलाय—झूलने पर; दोलो—झूलो।

७३ कार...प्राणे—रात्रि के (अवसान पर) भोर में मेरे प्राणों में किसकी बाँसुरी बजी; फुटे...कलिका—सूर्य की किरण रूपी कलिका दिगन्त में खिलती है; शरतेर...आसे—शरत् के प्रकाश में 'सुन्दर' आता है; शिशिरे—ओस कणों में; भासे—तिरती है; मुञ्जरिल—मञ्जरित हुई।

७४. आज...किशलय—आज किसलय ने उसका संदेश पाया है क्या; ओरा...वनमय—वे समस्त वन में किसकी बातें करते हैं; कोन्—किस; गाहे

येथा चाँपा-कोरकेर शिखा ज्वले
झिल्लिमुखर घन वनतले,
एसो कवि, एसो, माला परो, बाँशि वरो—
होक गाने गाने विनिमय ।।

१९२५

७५

निशीथरातेर प्राण
कोन् सुधा ये चाँदेर आलोय आज करेछे पान ।
मनेर सुखे ताइ आज गोपन किछु नाइ,
आँधार-ढाका भेङे फेल सब करेछे दान ।।
दखिन-हाओयाय तार सब खुलेछे द्वार ।
तारि निमन्त्रणे आजि फिरि वने वने,
सङ्गे करे एनेछि एइ
रात-जागा मोर गान ।।

१९२५

७६

फागुनेर शुरु हतेइ शुकनो पाता झरल यत
तारा आज केँदे शुधाय, 'सेइ डाले फुल फुटल कि गो,
ओगो कओ फुटल कत ।'

—गाते हैं; येथा . ज्वले—जहाँ चम्पे की कलियों की शिखा जलती है, एसो—आओ; परो—पहनो, होक—हो।

७५. निशीथ पान—अर्धरात्रि के प्राण ने चाँद के प्रकाश में आज किस सुधा का पान किया है, मनेर नाइ—इसीलिये मन की मौज में आज (उसका) कुछ भी गोपन नहीं है; आँधार दान—अन्धकार के आवरण को चूर्ण-विचूर्ण कर सब (कुछ) अर्पित कर दिया है; दखिन द्वार—दक्षिण-पवन ने अपने सभी द्वार खोल दिए हैं; तारि. वने—उसीके निमन्त्रण पर आज वन-वन घूमता हूँ; सङ्गे . एनेछि—साथ लाया हूँ।

७६ फागुन यत—फाल्गुन के शुरू होते ही जितनी सूखी पत्तियाँ झर पड़ी, वे आज क्रन्दन करती पूछती हैं, 'उस डाल में फूल खिले या नहीं

तारा कय, 'हठात् हाओयाय एल भासि मधुरेर सुदूर हासि, हाय,
  ख्यापा हाओयाय आकुल हये झरे गेलेम शत शत।'
तारा कय, 'आज कि तबे एसेछे से नवीन वेशे।
  आज कि तबे एत क्षणे जागल वने ये गान छिल मने मने।
    सेइ वारता काने निये
      याइ चले एइ वारेर मतो।'

१९२५

७७

धरणी, दूरे चेये केन आज आछिस जेगे
येन कार उत्तरीयेर परशेर हरष लेगे॥
  आजि कार मिलनगीति ध्वनिछे काननवीथि,
  मुखे चाय कोन् अतिथि आकाशेर नवीन मेघे॥
घिरेछिस माथाय वसन कदमेर कुसुम-डोरे,
सेजेछिस नयनपाते नीलिमार काजल प'रे।
  तोमार ओइ वक्षतले नवश्याम दूर्वादले
  आलोकेर झलक झले परानेर पुलक-वेगे॥

१९२६

कहो, कितने (फूल) खिले'; तारा......हाय—वे कहती हैं, हठात् हवा में 'मधुर' की दूर की हँसी, हाय, तिर आई; ख्यापा.....शत—पागल हवा में व्याकुल हो कर (हम) सौ-सौ झर पड़ीं; तारा... वेशे—वे कहती हैं, तब क्या आज वह नवीन वेश में आया है; आज ....मने—तो क्या आज इतने (दिनों) बाद—जो गान मन ही मन में थे—वन में जाग गए; सेइ .. मतो—इसी संदेश को कानों में ले कर इस बार के लिये हम चली जायें।

७७. दूरे.. जेगे—दूर की ओर देखती आज (तू) क्यों जाग रही है; येन .. लेगे—जैसे किसी के उत्तरीय के स्पर्श का हर्ष अनुभव होने से; आजि कार—आज किसकी; ध्वनिछे—ध्वनित कर रही है; मुखे चाय—मुख की ओर देखता है; घिरेछिस.....डोरे—कदम्ब के फूल की डोरी से सिर पर (तूने) वसन घेर रखा है, सेजेछिस—सजी है; नयनपाते—नयन-पल्लवों में; प'रे—ओढ़ कर, तोमार ओइ—तुम्हारे उस; आलोकेर. झरे—प्रकाश की लौ झलकती है; परानेर—प्राणों के।

७८

एसो, एसो, एसो हे वैशाख।
तापसनिश्वासवाये मुमूर्षुरे दाओ उडाये,
वत्सरेर आवर्जना दूर हये याक॥
याक पुरातन स्मृति, याक भुले-याओया गीति,
अश्रुवाष्प सुदूरे मिलाक॥
मुछे याक ग्लानि, घुचे याक जरा,
अग्निस्नाने शुचि होक धरा।
रसेर आवेशराशि शुष्क करे दाओ आसि,
आनो आनो आनो तव प्रलयेर शांख।
मायार कुज्झटिजाल याक दूरे याक॥

१९२७

७९

केन पान्थ, ए चञ्चलता।
कोन् शून्य हते एल कार वारता॥
नयन किसेर प्रतीक्षा-रत विदायविषादे उदास-मतो—
घन-कुन्तलभार ललाटे नत, क्लान्त तडितवधू तन्द्रागता॥
केशरकीर्ण कदम्ववने मर्मरमुखरित मृदुपवने
वर्षणहर्ष-भरा धरणीर विरहविशङ्कित करुण कथा।
धैर्य मानो ओगो, धैर्य मानो, वरमाल्य गले तव हय नि म्लान—

---

७८. एसो—आओ, वाये—वायु से; मुमूर्षुरे—मरणासन्न को, दाओ उड़ाये—उडा दो, दूर याक—दूर हो जाय, याक—जाय, भुले-याओया—भूली हुई; मिलाक—विलीन हो जाय; मुछे याक—पुंछ कर मिट जाय, घुचे याक—दूर हो जाय, नष्ट हो जाय, होक—हो, आसि—आ कर, आनो—लाओ; शांख—शङ्ख; कुज्झटि—कुहेलिका, कुहरा।

७९. केन—क्यों; चञ्चलता—अधीरता, कोन्...वारता—किस शून्य-लोक से किसका संदेश आया, किसेर—किस की, विदाय...मतो—विदाई के दुःख से विषण्ण-जैसे; हय...म्लान—म्लान नहीं हुआ है।

आजो हय नि म्लान—
फुलगन्ध-निवेदन-वेदन-सुन्दर मालती तव चरणे प्रणता ॥
१९२७

८०

गगने गगने आपनार मने की खेला तव।
तुमि कत वेशे निमेषे निमेषे नितुइ नव ॥
जटार गभीरे लुकाले रविरे, छायापटे आँक ए कोन् छवि रे।
मेघमल्लारे की बल आमारे केमने कव ॥
वैशाखी झड़े से दिनेर सेइ अट्टहासि
गुरुगुरु सुरे कोन् दूरे दूरे याय ये भासि।
से सोनार आलो श्यामले मिशालो—श्वेत उत्तरी आज केन कालो।
लुकाले छायाय मेघेर मायाय की वैभव ॥
१९२७

८१

आलोर अमल कमलखानि के फुटाले,
नील आकाशेर घुम छुटाले ॥
आमार मनेर भावनागुलि वाहिर हल पाखा तुलि,
ओइ कमलेर पथे तादेर सेइ जुटाले ॥

---

८०. आपनार मने—मन की मौज में; तुमि.....नव—तुम कितने वेशों में क्षण-क्षण नित्य ही नवीन हो; जटार .... रविरे—जटा की गहनता में सूर्य को छिपा लिया; छायापटे .. रे—छायापट पर यह कैसी तस्वीर अंकित कर रहे हो; मेघ. .कव—मेघमल्लार (राग) में मुझसे क्या कहते हो, कैसे बताऊँ; वैशाखी .भासि—वैशाख की आँधी में उस दिन का वह अट्टहास गुरु-गम्भीर स्वर में किस सुदूर में बह जाता है, से .मिशालो—वह सुनहला आलोक श्यामलता में घुल गया; श्वेत कालो—श्वेत उत्तरीय आज काला क्यों है; लुकाले—छिपाना; छायाय—छाया में; मेघेर मायाय—मेघों की माया में।

८१. आलोर. फुटाले—प्रकाश के स्वच्छ कमल को किसने प्रस्फुटित किया; नील .छुटाले—नील आकाश की निद्रा दूर की, आमार.....तुलि—मेरे मन की चिन्ताएँ पंख फैला कर बाहर निकलीं; ओइ.. .जुटाले—उस कमल

शरतवाणीर वीणा वाजे कमलदले।
ललित रागेर सुर झरे ताइ शिउलितले।
ताइ तो वातास वेडाय मेते कचि धानेर सबुज खेते,
वनेर प्राणे मर्‌मरानिर ढेउ उठाले।।

१९२७

८२

हिमेर राते ओइ गगनेर दीपगुलिरे
हेमन्तिका करल गोपन आँचल घिरे।।
घरे घरे डाक पाठालो—'दीपालिकाय ज्वालाओ आलो,
ज्वालाओ आलो, आपन आलो, साजाओ आलोय धरित्रीरे।'
शून्य एखन फुलेर वागान, दोयेल कोकिल गाहे ना गान,
काश झरे याय नदीर तीरे।
याक अवसाद विषाद कालो, दीपालिकाय ज्वालाओ आलो—
ज्वालाओ आलो, आपन आलो; शुनाओ आलोर जयवाणीरे।।
देवतारा आज आछे चेये—जागो धरार छेले मेये,
आलोय जागाओ यामिनीरे।

के पथ पर उन्हे सम्मिलित किया; ताइ—इसीलिये, शिउलितले—[illegible]-तले; ताइ. मेते—इसीलिये हवा मतवाली हो कर घूमती है, कचि [illegible]—कच्चे धान के हरे खेत में; वनेर उठाले—वन के प्राणों में मर्मर-[illegible] की लहरें उठाईं।

८२. गगनेर दीपगुलिरे—आकाश के दीपकों को, हेमन्तिका. घिरे—हेमन्तिका ने अंचल से घेर कर छिपा लिया; घरे जाने—[illegible] भेजा, दीपावली में दीप जलाओ, साजाओ—सजाओ; आलोय—[illegible] धरित्रीरे—पृथ्वी को, शून्य वागान—फूल का बाग इस समय [illegible] है; दोयेल—(एक पक्षी); गाहे ना—गाते नहीं; याय—जाता है, याक—[illegible], कालो—काला; शुनाओ—सुनाओ; देवतारा मेये—[illegible] हैं—पृथ्वी के पुत्र-पुत्रियां, जागो; आलोय . यामिनीरे—[illegible]

एल आँधार, दिन फुराल़ो, दीपालिकाय ज्वालाओ आलो—
ज्वालाओ आलो, आपन आलो, जय करो एइ तामसीरे ॥
१९२७

८३

हाय हेमन्तलक्ष्मी, तोमार नयन केन ढाका—
हिमेर घन घोमटाखानि धूमल रङे आँका ॥
सन्ध्याप्रदीप तोमार हाते मलिन हेरि कुयाशाते,
कण्ठे तोमार वाणी येन करुण वाष्पे माखा ॥
धरार आँचल भरे दिले प्रचुर सोनार धाने ।
दिगङ्गनार अङ्गन आज पूर्ण तोमार दाने ।
आपन दानेर आड़ालेते रइले केन आसन पेते,
आपनाके एइ केमन तोमार गोपन क'रे राखा ।
१९२७

८४

चरणरेखा तव ये पथे दिले लेखि
चिह्न आजि तारि आपनि घुचाले कि ॥
अशोकरेणुगुलि राङालो यार धूलि
तारे ये तृणतले आजिके लीन देखि ॥

जलाओ; एल. फुराल़ो—अन्धकार आया, दिन समाप्त हो गया; तामसीरे—अन्धकारमयी को ।

८३. तोमार ... ढाका—तुम्हारी आँखें क्यों ढँकी हुई हैं; हिमेर... आँका—तुषार का गहन घूँघट धूमिल रंग में अंकित है; सन्ध्या.... कुयाशाते—तुम्हारे हाथ के सान्ध्य-दीप को कुहरे में मलिन देखता हूँ, माखा—मिला; भरे दिले—भर दिया, दिगङ्गनार . दाने—दिग्वधुओं का आँगन आज तुम्हारे दान से पूर्ण है, आपन पेते—अपने दान की ओट में आसन बिछा कर तुम क्यों (छिपी) रहीं; आपनाके राखा—अपने को इस प्रकार कैसा तुम्हारा छिपा रखना है ।

८४. चरण.. . लेखि—जिस पथ पर तुमने अपनी चरण-रेखा अंकित कर दी, उसके चिह्न को क्या आज अपने-आप ही मिटा दिया; अशोक. देखि—अशोक

फुराय फुल-फोटा, पाखिओ गान भोले,
दखिन-वायु सेओ उदासी याय चले ।।
तबु कि भरि तारे अमृत छिल ना रे—
स्मरण तारो कि गो मरणे यावे ठेकि ।।

१९२७

८५

नील अञ्जनघन पुञ्जछायाय सम्वृत अम्वर हे गम्भीर।
वनलक्ष्मीर कम्पित काय, चञ्चल अन्तर—
झंकृत तार झिल्लिर मञ्जीर हे गम्भीर ।।
वर्षणगीत हल मुखरित मेघमन्द्रित छन्दे,
कदम्ववन गभीर मगन आनन्दघन गन्धे—
नन्दित तव उत्सवमन्दिर हे गम्भीर ।।
दहनशयने तप्त धरणी पडेछिल पिपासार्ता,
पाठाले ताहारे इन्द्रलोकेर अमृतवारिर वार्ता।
माटिर कठिन वाधा हल क्षीण, दिके दिके हल दीर्ण—
नव-अङ्कुर-जयपताकाय धरातल समाकीर्ण—
छिन्न हयेछे वन्धन वन्दीर हे गम्भीर ।।

१९२९

फूल के पराग ने जिस (पथ) की धूलि को रँगा, उसे आज घास के [illegible] देखता हूँ; फुराय भोले—फूल का खिलना समाप्त होता है पक्षी भी गान भूल जाते हैं, दखिन. चले—दक्षिण पवन, वह भी उदासीन बन जाता है. तबु रे—तौभी क्या उन्हे पूर्ण कर अमृत नही था (क्या वे अमृत से पूर्ण नहीं थे), स्मरण . ठेकि—उसकी भी स्मृति क्या मृत्यु में जा कर रुक जायगी।

८५. सम्वृत—आच्छादित; तार. मञ्जीर—उसकी [illegible] के नूपुर, हल—हुआ, दहनशयने—दहन-सेज पर, पडेछिल—पड़ी हुई थी [illegible] पाठाले. वार्ता—उसे इन्द्रलोक के अमृतजल का सन्देश भेजा, माटिर—मिट्टी की, हल—हुई; हयेछे—हुआ है।

८६

श्यामल छाया, नाइ वा गेले
शेष वरपार धारा ढेले ।।
समय यदि फुरिये थाके   हेसे विदाय करो ताके,
एवार नाहय काटुक वेला असमयेर खेला खेले ।।
मलिन, तोमार मिलावे लाज—
शरत् एसे परावे साज ।
नवीन रवि उठवे हासि,   वाजावे मेघ सोनार बाँशि—
कालोय आलोय युगलरूपे शून्ये देवे मिलन मेले ।।

१९२१

८७

यखन मल्लिकावने प्रथम धरेछे कलि
तोमार लागिया तखनि वन्धु, वेँधेछिनु अञ्जलि ।।
तखनो कुहेलिजाले
सखा, तरुणी उषार भाले
शिशिरे शिशिरे अरुणमालिका उठितेछे छलोछलि ।।
एखनो वनेर गान वन्धु, हय नि तो अवसान—
तबु   एखनि यावे कि चलि ।

---

८६ श्यामल .. ढेले—(काले बादलों की) श्यामल छाया, (तुम)भले ही शेष वर्षा की धारा डाल कर नहीं गई; समय .... ताके—यदि समय चुक गया हो तो हँस कर उसे विदा करो; एवार.... खेले—अब, न हो, असमय का खेल खेल कर ही समय बीते; मलिन . साज—मलिन, तुम्हारी लज्जा मिटेगी, शरत् आ कर तुम्हें सज्जित वेश पहनाएगा; नवीन... बाँशि—नवीन सूर्य हँस पड़ेगा, मेघ सोने की बाँसुरी बजाएँगे; कालोय. मेले—कालिमा (छाया) और आलोक युगल रूप में शून्य में (आ कर) मिलन प्राप्त करेंगे।

८७ यखन .. अञ्जलि—जब मल्लिका वन में पहले पहल कलियाँ लगी थीं, (तभी) हे सखा, तुम्हारे लिये मैंने अञ्जलि बाँधी थी, तखनो—उस समय भी; कुहेलि—कुहरा; शिशिरे—ओसकणों में; उठितेछे छलोछलि—छलछल कर रही थी, एखनो.....चलि—बन्धु, वन का गान तो अब भी समाप्त नहीं

ओ मोर करुण वल्लिका,
तोर श्रान्त मल्लिका
झरो-झरो हल, एइ वेला तोर शेष कथा दिस वलि ।।

१९३०

८८

एकटुकु छोँया लागे, एकटुकु कथा शुनि—
ताइ दिये मने मने रचि मम फाल्गुनी ।।
किछु पलाशेर नेशा, किछु वा चाँपाय मेशा,
ताइ दिये सुरे सुरे रङे रसे जाल वुनि ।।
येटुकु काछेते आसे क्षणिकेर फाँके फाँके
चकित मनेर कोणे स्वपनेर छवि आँके ।
येटुकु याय रे दूरे भावना काँपाय सुरे,
ताइ निये याय वेला नूपुरेर ताल गुनि ।।

१९३०

८९

झरा पाता गो, आमि तोमारि दले ।
अनेक हासि अनेक अश्रुजले—
फागुन दिल विदायमन्त्र आमार हियातले ।।

हुआ, फिर भी क्या अभी ही चले जाओगे; वल्लिका—लतिका, झरो-झरो हल—झरने को उद्यत हुई है; एइ. वलि—(अव) इस समय अपनी अन्तिम वात तू कह देना ।

८८ एकटुकु लागे—तनिक-सा स्पर्श छू जाता है; एकटुकु शुनि—तनिक-सी वात सुनता हूँ, फाल्गुनी—फागुन की पूर्णिमा, ताइ. वुनि—उसी को ले कर सुर-सुर मे रंग और रस का जाल वुनता हूँ, येटुकु आँके—क्षणिक के वीच-वीच से जितना भी निकट आता है, वह [illegible] में स्वप्न की तस्वीर अंकित कर देता है; येटुकु सुरे—[illegible] है, चिन्ताओं को सुर में कँपाता है, ताइ गुनि—[illegible] ताल गिनते समय वीत जाता है ।

८९ झरा दले—झरे पत्ते, मैं तुम्हारे [illegible]; हासि—[illegible] दिल—दिया; आमार हियातले—मेरे हृदय-तल में, झरा. ए—[illegible]

झरा पाता गो, वसन्ती रङ दिये
शेषेर वेशे सेजेछ तुमि कि ए।
खेलिले होलि धुलाय घासे घासे
वसन्तेर एइ चरम इतिहासे।
तोमारि मतो आमारो उत्तरी
आगुन-रङे दियो रङिन करि—
अस्तरवि लागाक परशमणि
प्राणेर मम शेषेर सम्वले।।

१९३०

९०

तुमि किछु दिये याओ मोर प्राणे गोपने गो—
फुलेर गन्धे, बाँशिर गाने, मर्मरमुखरित पवने।।
तुमि किछु निये याओ वेदना हते वेदने—
ये मोर अश्रु हासिते लीन, ये वाणी नीरव नयने।।

१९३०

वसन्ती रंग से 'अन्तिम' के वेश में तुमने यह कैसी सज्जा की है; खेलिले होलि—होली खेली; धुलाय—धूलि में; घासे घासे—तृण-तृण में; एइ—इस; तोमारि ....करि—तुम्हारे ही जैसा मेरे उत्तरीय को भी आग के रंग में रंग देना; लागाक—लगा; परशमणि—पारस पत्थर; प्राणेर. .सम्वले—मेरे प्राणों के अन्तिम सम्बल (आश्रय) में।

९०. तुमि गो—जाओ, मेरे प्राणों में तुम गुपचुप कुछ देते जाओ; फुलेर गन्धे—फूलों की गन्ध में, बाँशिर गाने—बाँसुरी के गान में; तुमि.... याओ—तुम कुछ लेते जाओ, हते—से, ये—जो; हासिते—हँसी में।

९१

निविड अमा-तिमिर हते बाहिर हल जोयार-स्रोते
शुक्लराते चाँदेर तरणी।
भरिल भरा अरूप फुले, साजालो डाला अमरकूले
आलोर माला चामेलि-वरनी॥
तिथिर परे तिथिर घाटे आसिछे तरी दोलेर नाटे,
नीरवे हासे स्वपने धरणी।
उत्सवेर पशरा निये पूर्णिमार कूलेते कि ए
भिड़िल शेषे तन्द्राहरणी॥

१९३०

९२

वसन्ते वसन्ते तोमार कविरे दाओ डाक—
याय यदि से याक्॥
रइल ताहार वाणी रइल भरा सुरे, रइबे ना से दूरे—
हृदय ताहार कुन्जे तोमार रइबे ना निर्वाक्॥
छन्द ताहार रइबे बेँचे
किशलयेर नवीन नाचे नेचे नेचे॥

---

९१ अमा-तिमिर—अमावस्या के अंधकार, हते—[illegible]; बाहिर ह[illegible]—बाहर निकली, जोयार-स्रोते—ज्वार के स्रोत में, भरा—[illegible] दोने वाली नौका, भरिल—भरी, फुले—फूलों ने; साजालो डाला—[illegible], अमर-कूले—अमरावती के कूल पर, आलोर वरनी—चमेली [illegible], माला, तिथिर नाटे—तिथि के बाद तिथि के घाट पर झूलने [illegible] नौका आती है; हासे—हँसती है, उत्सवेर हरणी—[illegible] कर क्या वह तन्द्रा का हरण करने वाली (नौका) [illegible] में पूर्णिमा के [illegible] आ भिडी।

९२ वसन्ते डाक—प्रति वसन्त में अपने कवि [illegible] पुकारना, याय याय—अगर वह जाता है तो जाय, रइल—र[illegible]; ताहार—[illegible] सुरे—सुर से; रइबे दूरे—वह दूर नहीं [illegible], हृदय निर्वाक्—[illegible] हृदय तुम्हारे कुन्ज में मूक नहीं रहेगा, छन्द. बेँचे—[illegible]

तारे तोमार वीणा याय ना येन भुले,

तोमार फुले फुले

मधुकरेर गुन्जरणे वेदना तार थाक् ॥

१९३०

९३

वेदना की भाषाय रे

मर्मे मर्मरि गुन्जरि वाजे ।

से वेदना समीरे समीरे सञ्चारे,

चञ्चल वेगे विश्वे दिल दोला ।

दिवानिशा आछि निद्राहरा विरहे

तव नन्दनवन-अङ्गनद्वारे,

मनोमोहन वन्धु—

आकुल प्राणे

पारिजातमाला सुगन्ध हाने ॥

१९३०

९४

हे माधवी, द्विधा केन, आसिवे कि फिरिवे कि—

आङिनाते वाहिरिते मन केन गेल ठेकि ॥

के नवीन नाच में नाच-नाच बचा रहेगा, तारे..... भुले—ऐसा हो कि तुम्हारी वीणा उसे भूल न जाय, तोमार. ....थाक्—तुम्हारे फूल-फूल में, भौंरे की गुंजार में उसकी वेदना बनी रहे।

९३ वेदना ... वाजे—वेदना किस भाषा में मर्म में मर्मर करती, गुंजन करती हुई ध्वनित होती है; से—वह, विश्वे—विश्व को; दिल दोला—दोलायमान कर दिया; आछि—हूँ; निद्राहरा—निद्रा का हरण करने वाले; विरहे—विरह में, हाने—आघात करती है, दस्तक देती है।

९४. द्विधा केन—दुविधा क्यों; आसिवे ... कि—आओगी या लौट जाओगी, आङिनाते—आँगन में; वाहिरिते—बाहर होते; मन .. ठेकि—मन

वातासे लुकाये थेके के य तोरे गेछे डेके,
पाताय पाताय तोरे पत्र से ये गेछे लेखि ॥
कखन् दखिन हते के दिल दुयार ठेलि,
चमकि उठिल जागि चामेलि नयन मेलि।
वकुल पेयेछे छाड़ा, करवी दियेछे साड़ा,
शिरीष शिहरि उठे दूर हते कारे देखि ॥

१९३०

९५

ओगो वधू सुन्दरी, तुमि मधुमञ्जरी,
पुलकित चम्पार लहो अभिनन्दन—
पर्णेर पात्रे फाल्गुनरात्रे
मुकुलित मल्लिका-माल्येर बन्धन।
एनेछि वसन्तेर अञ्जलि गन्धेर,
पलाशेर कुङ्कुम चाँदिनिर चन्दन—
पारुलेर हिल्लोल, शिरिषेर हिन्दोल,
मञ्जुल वल्लीर वङ्किम कङ्कण—

क्यो ठिठक गया, वातासे. डेके—हवा मे (अपने को) छिपाए हुए कौन तुझे पुकार गया है; पाताय लेखि—पत्तियो-पत्तियो मे वह तुझे पत्र [illegible] गया है; कखन् ठेलि—किस समय दक्षिण से किसने दरवाजा [illegible] दिया चमकि . मेलि—चमेली चौक कर आंखे खोल जाग उठी, वकुल छाड़ा—वकुल (मौलसिरी) ने मुक्ती पाई है, करवी साड़ा—[illegible] ([illegible]) ने प्रत्युत्तर दिया है, शिरीष देखि—शिरीष दूर से [illegible] [illegible] [illegible] उठता है।

९५ मधुमञ्जरी—मधुपूर्ण मञ्जरी. 'मधुमञ्जरी' [illegible] [illegible]—ग्रहण करो; पर्णेर पात्रे—पर्ण (पत्तो) के पात्र में, फाल्गुनरात्रे—[illegible] में, माल्येर—माला का; एनेछि—[illegible] हूँ; चाँदिनिर—[illegible]; [illegible]—गुलाबी रग का एक सुगन्धित पुष्प, पाटली; हिन्दोल—[illegible], [illegible]—[illegible]

उल्लास-उतरोल वेणुवन-कल्लोल,
कम्पित किशलये मलयेर चुम्बन।
तव आँखिपल्लवे दियो आँकि वल्लभे
गगनेर नवनील स्वपनेर अञ्जन॥

१९३२

९६

चक्षे आमार तृष्णा ओगो, तृष्णा आमार वक्ष जुड़े।
आमि वृष्टिविहीन वैशाखी दिन, सन्तापे प्राण याय ये पुड़े॥
झड़ उठेछे तप्त हाओयाय, मनके सुदूर शून्ये धाओयाय—
अवगुण्ठन याय ये उड़े॥
ये फुल कानन करत आलो
कालो हये से शुकालो।
झरनारे के दिल बाधा— निष्ठुर पाषाणे बाँधा
दुःखेर शिखरचूड़े॥

१९३३

९७

आमार वने वने धरल मुकुल,
वहे मने मने दक्षिणहाओया,

रा, उतरोल—उल्लसित; दियो—देना, लगाना; आँखिपल्लवे—आँखों की पलकों में, तव अञ्जन—हे वल्लभे, अपने नयन-पल्लवों में आकाश के नव-नील स्वप्नों का काजल आँज लेना।

९६ चक्षे ... जुड़े—मेरी आँखों में तृष्णा है, तृष्णा मेरे हृदय को परिव्याप्त किए हुए है; वैशाखी—वैशाख का; सन्तापे ... पुड़े—सन्ताप से प्राण जल रहे हैं, झड़ ... उड़े—गर्म हवा में आँधी उठी है, (वह) मन को सुदूर शून्य में प्रधावित करती है, अवगुण्ठन (घूँघट) उड़ जाता है, ये ... शुकालो—जो फूल कानन को आलोकित करते थे, वे काले हो कर सूख गए; झरनारे ... बाधा—झरने को किसने बाधा दी।

९७ आमार ... हाओयाय—मेरे वन-वन में कलियाँ आ गईं, प्रति मन में

मौमाछिदेर डानाय डानाय
येन उडे मोर उत्सुक चाओया ।।
गोपन स्वपनकुसुमे के एमन सुगभीर रङ दिल एँके—
नव किशलय-शिहरणे भावना आमार हल छाओया ।।
फाल्गुन पूर्णिमाते
एइ दिशाहारा राते
निद्राविहीन गाने कोन् निरुद्देशेर पाने
उद्वेल गन्धेर जोयारतरङ्गे हबे मोर तरणी बाओया ।।

१९३४

९८

आँधार अम्बरे प्रचण्ड डम्बरु बाजिल गम्भीर गरजने ।
अशत्थपल्लवे अशान्त हिल्लोल समीरचञ्चल दिगङ्गने ।
नदीर कल्लोल, वनेर मर्मर, बादल-उच्छल निर्झर-झर्झर,
ध्वनि तरङ्गिल निविड़ संगीते— श्रावणसन्यासी रचिल रागिणी ।।
कदम्बकुञ्जेर सुगन्धमदिरा अजस्र लुटिछे दुरन्त झटिका ।

दक्षिण हवा बहती है, मौमाछिदेर चाओया—मधुमक्खियों के डैनों में जैसे मेरी उत्सुक चितवन उड रही है, कुसुमे—फूलों में, के एँके—किसने ऐसे चटकीले रग अकित कर दिए, शिहरणे—सिहरन में भावना छाओया—मेरी चिन्ता छा गई, पूर्णिमाते—पूर्णिमा में, एइ . राते—इस दिग्भ्रान्त रात में, कोन् पाने—किस निरुद्देश्य की ओर उद्वेल बाओया—उद्वेलित गन्ध के ज्वार की तरङ्गों में मेरा [illegible] होगा ।

९८ आंधार गरजने—अँधेरे आकाश में गम्भीर [illegible] डमरु बज उठा; अशत्थ—अश्वत्थ, पीपल, दिगङ्गने—[illegible] रचिल—रची; कदम्ब झटिका—कदम्ब-कुञ्ज की [illegible]

तडित्‌शिखा छुटे दिगन्त सन्धिया,   भयार्त यामिनी उठिछे क्रन्दिया—
नाचिछे येन कोन् प्रमत्त दानव   मेघेर दुर्गेर दुयार हानिया ॥
१९३६

९९

नील नवघने आषाढगगने तिल ठाँइ आर नाहि रे।
ओगो आज तोरा यास ने घरेर बाहिरे ॥
बादलेर धारा झरे झरो झरो,   आउषेर खेत जले भरो भरो,
कालिमाखा मेघे ओ पारे आँधार घनियेछे देख् चाहि रे ॥

ओइ शोनो शोनो पारे यावे ब'ले के डाकिछे बुझि माझिरे।
खेया-पारापार बन्ध हयेछे आजि रे।
पुबे हाओया बय, कूले नेइ केउ,   दु कूल बाहिया उठे पड़े ढेउ—
दरो दरो वेगे जले पड़ि जल छलो छलो उठे बाजि रे।
खेया पारापार बन्ध हयेछे आजि रे ॥

आँधी अपरिमित लूट रही है; छुटे.. सन्धिया—क्षितिज को खोजती हुई भाग रही है; भयार्त क्रन्दिया—भयार्त रात्रि क्रन्दन कर उठती है; नाचिछे .. हानिया—जैसे कोई प्रमत्त दानव मेघों के दुर्ग-द्वार पर आघात करता हुआ नाच रहा है।

९९. तिल रे—तिल भर भी ठाँव नहीं है, ओगो....बाहिरे—अरे, आज तुम सब घर के बाहर न जाना; झरे झरो झरो—झर-झर कर झरती है; आउषेर खेत—आउष (वर्षाकाल में होने वाला धान) का खेत, जले भरो भरो—जल से परिपूर्ण है; कालिमाखा . चाहि रे—देखो, सियाही पुते हुए मेघों से उस पार अन्धकार सघन हो रहा है; ओइ..... माझिरे—वह सुनो, सुनो, कोई पार जाना चाहता है, इसलिये शायद माँझी को पुकार रहा है; खेया. रे—नौके का आर-पार आना-जाना आज बन्द हो गया है; पुबे.. .बय—पुरवैया हवा बह रही है; कूले. केउ—किनारे पर कोई नहीं है; दु ढेउ—दोनों किनारों को प्लावित कर तरंग उठती-गिरती है; दरो ... .रे—अर्थात् धारा के वेग के साथ जल में जल गिर कर छल-छल शब्द कर रहा है;

ओइ डाके शोनो धेनु घन घन, धवलीरे आनो गोहाले—
एखनि आँधार हवे वेलाटुकु पोहाले।
दुयारे दाँड़ाये ओगो देखो देखि, माठे गेछे यारा तारा फिरिछे कि,
राखालवालक की जानि कोथाय सारा दिन आजि खोयाले।
एखनि आँधार हवे वेलाटुकु पोहाले॥

ओगो आज तोरा यास ने गो तोरा यास ने घरेर बाहिरे।
आकाश आंधार, वेला वेशि आर नाहि रे।
झरो झरो धारे भिजिवे निचोल, घाटे येते पथ हयेछे पिछल—
ओइ वेणुवन दोले घन घन पथपाशे देखो चाहि रे॥
१९३६

१००

एसो श्यामल सुन्दर,
आनो तव तापहरा तृषाहरा सङ्गसुधा।
विरहिणी चाहिया आछे आकाशे॥
से ये व्यथित हृदय आछे विछाये

ओइ . .गोहाले—वह सुनो, बार-बार गाय रँभा रही है, धवली (उज्ज्वल गाय) को गोशाला में लाओ, एखनि पोहाले—वेला ढलते ही अभी अन्धकार हो जायगा; दुयारे कि—अजी, दरवाजे पर खड़े हो कर देखो तो सही, जो मैदान में गए हैं, वे सभी लौट रहे हैं क्या, राखाल खोयाले—चरवाहे बालकों ने न-जाने आज समस्त दिन कहाँ गँवाया; वेला रे—और अधिक देर नहीं है, झरो निचोल—झर-झर वृष्टि में घाँघरा-ओढ़नी भीग जाएँगे घाटे. पिछल—घाट पर जाने वाला पथ रपटीला हो गया है; ओइ रे—वह देखो, रास्ते के किनारे बाँसों का झुरमुट बार-बार झूम रहा है।

१०० एसो—आओ; आनो—लाओ; तापहरा—ताप को हरने वाली; सङ्गसुधा—संग रूपी सुधा (संग जो सुधा के समान है), विरहिणी . आकाशे—विरहिणी आकाश की ओर टकटकी लगाए देख रही है, से [illegible]—तमाल कुञ्ज के रास्ते जलसिक्त छाया में वह (अपना) व्यथित हृदय [illegible]—

तमालकुञ्जपथे सजल छायाते,
नयने जागिछे करुण रागिणी ॥
बकुलमुकुल रेंगेछे गाँथिया,
बाजिछे अङ्गने मिलनबाँशरि ।
आनो साथे तोमार मन्दिरा,
चञ्चल नृत्येर बाजिबे छन्दे से—
बाजिबे कङ्कण, बाजिबे किङ्किणी,
झङ्कारिबे मञ्जीर रुणुरुणु ॥

१९३३

१०१

मधु -गन्ध-भरा मृदु -स्निग्धछाया नीप -कुञ्जतले
श्याम -कान्तिमयी कोन् स्वपनमाया फिरे वृष्टिजले ॥
फिरे रक्त-अलक्तक-धौत पाये धारा -सिक्त वाये,
मेघ -मुक्त सहास्य शशाङ्ककला सिँथि -प्रान्ते ज्वले ॥
पिये उच्छल तरल प्रलयमदिरा उन्मुखर तरङ्गिणी धाय अधीरा,
कार निर्भीक मूर्ति तरङ्गदोले कल -मन्द्ररोले ।
एइ ताराहारा निःसीम अन्धकारे कार तरणी चले ॥

१९३३

[illegible] है, नयने जागिछे—नयनों में जाग रही है; बकुल ... गाँथिया—बकुल (मौलश्री) की कलियों को (उसने) गूंथ रखा है; बाजिछे ... बाँशरि—आँगन में मिलन की बाँसुरी बज रही है; आनो ... मन्दिरा—साथ में अपना मजीरा [illegible] लाओ, चञ्चल ... से—चञ्चल नृत्य के छन्द में वह बजेगा; बाजिबे—[illegible], झङ्कारिबे—[illegible] होंगे, मञ्जीर—नूपुर ।

१०१ कोन्—कौन, फिरे—विचरती है, पाये—पैरों से, धारा ... वाये—वृष्टि-सिक्त वायु में; सिँथि—माँग, ज्वले—दीप्त है, उन्मुखर—[illegible], कल—[illegible], रोले—ध्वनि में, एइ—इस, ताराहारा—[illegible], अन्धकारे—अन्धकार में ।

१०२

किछु बलब ब'ले एसेछिलेम,
रइनु चेये ना ब'ले ॥
देखिलाम, खोला वातायने माला गांथ आपन-मने
गाओ गुन्-गुन् गुञ्जरिया यूथीकुँड़ि निये कोले ॥
सारा आकाश तोमार दिके
चेये छिल अनिमिखे ।
मेघ-छेँड़ा आलो एसे पडेछिल कालो केशे,
बादल-मेघे मृदुल हाओयाय अलक दोले ॥

१९३८

१०३

मन मोर मेघेर सङ्गी,
उड़े चले दिग्दिगन्तेर पाने
नि:सीम शून्ये श्रावणवर्षणसगीते
रिमिझिम रिमिझिम रिमिझिम ॥
मन मोर हंसबलाकार पाखाय याय उड़े
क्वचित क्वचित चकित तड़ित-आलोके ।
झन्झन मञ्जीर बाजाय झञ्झा रुद्र आनन्दे ।
कलो कलो कलमन्द्रे निर्झरिणी
डाक देय प्रलय-आह्वाने ॥

---

१०२ किछु एसेछिलेम—कुछ कहूँगा [illegible] था ([illegible] कहने के लिये आया था), रइनु ब'ले—बिना कुछ [illegible] देखिलाम—देखा, खोला मने—खुली खिड़की पर मन की मौज में [illegible] रही हो, गाओ कोले—गोद में जूही की कलियों को [illegible] गुनगुनाती [illegible] हो, सारा. अनिमिखे—समस्त आकाश तुम्हारी ओर [illegible] रहा था; मेघ केशे—मेघों को चीरने वाला प्रकाश [illegible] पर पड रहा था, बादल-मेघे—बरसाती बादलों में, हाओयाय—[illegible]

१०३ मोर—मेरा, पाने—ओर. पाखाय उड़े—[illegible] जाता है, बाजाय—बजाती है कलो कलो—[illegible]

से ये मन मोर दिल आकुलि
जल-भेजा केतकीर दूर सुवासे ।।

१९३८

१०५

आजि तोमाय आवार चाइ शुनावारे
ये कथा शुनायेछि वारे वारे—
आमार पराने आजि ये वाणी उठिछे वाजि
अविराम वर्षणधारे ।।
कारण शुधायो ना, अर्थ नाहि तार,
सुरेर संकेत जागे पुञ्जित वेदनार।
स्वप्ने ये वाणी मने मने ध्वनिया उठे क्षणे क्षणे
काने काने गुञ्जरिव ताइ वादलेर अन्धकारे ।।

१९३९

१०६

एसो गो, ज्वेले दिये याओ प्रदीपखानि
विजन घरेर कोणे, एसो गो।
नामिल श्रावणसन्ध्या, कालो छाया घनाय वने वने ।।

से . सुवासे—जल-भीनी केतकी के दूर से आने वाले गन्ध ने [illegible] मन [illegible] आकुल कर दिया।

१०५. आजि वारे—जो बात (मैंने) बार-बार सुनाई है (उसे) आज फिर तुम्हे सुनाना चाहता हूँ; आमार धारे—अविराम वर्षा की धारा में [illegible] प्राणो में जो वाणी ध्वनित हो रही है. कारण तार—कारण न पूछो, [illegible] (कोई) अर्थ नही हैं, सुरेर वेदनार—पुञ्जीभूत वेदना के स्वर [illegible] जागता है; स्वप्ने अन्धकारे—स्वप्न में जो वाणी क्षण-क्षण [illegible] हो उठती है, उसे ही वर्षा के अन्धकार में (तुम्हारे) [illegible]

१०६ एसो कोणे—अजी आलो निर्जन गृह के कोने में [illegible] जाओ, नामिल—उतरी, कालो वने—[illegible]

वृष्टि-नेशा-भरा सन्ध्यावेला कोन् बलरामेर आमि चेला,
आमार स्वप्न घिरे नाचे माताल जुटे— यत माताल जुटे।
या ना चाइबार ताइ आजि चाइ गो,
या ना पाइबार ताइ कोथा पाइ गो।
पाव ना पाव ना,
मरि असम्भवेर पाये माथा कुटे।।

१९३९

१०८

। बादल-दिनेर प्रथम कदम फुल करेछ दान,
आमि दिते एसेछि श्रावणेर गान।।
मेघेर छायाय अन्धकारे रेखेछि ढेके तारे
एइ-ये आमार सुरेर खेतेर प्रथम सोनार धान।।
आज एने दिले, हयतो दिबे ना काल—
रिक्त हबे ये तोमार फुलेर डाल।
ए गान आमार श्रावणे श्रावणे तव विस्मृतिस्रोतेर प्लावने
फिरिया फिरिया आसिबे तरणी वहि तव सम्मान।।

१९३९

नव टूट गई, वृष्टि .वेला—वृष्टि के नशे से भरी सन्ध्यावे[illegible], कोन् चेला—किस बलराम का मैं चेला हूँ (कृष्ण के भाई बलराम मदिरा [illegible] प्रेमी थे), आमार जुटे—मेरे स्वप्नों को घेर कर सब मतवाले [illegible] नाचते हैं, या गो—जो चाहने का नहीं, उसे ही आज चाहता हूँ, या पाइ गो—जो पाने का नहीं, उसे कहाँ पाऊँ, पाव ना—नहीं पाऊँगा, मरि कुटे—असम्भव के चरणों पर सिर पटकता मरता हूँ।

१०८ कदम फुल—कदम्ब का फूल, करेछ दान—भेंट किया [illegible] दिते एसेछि—देने आया हूँ, मेघेर धान—यह जो मेरे सुर के खेत का प्रथम [illegible] का धान है, उसे मेघों की छाया में, अन्धकार में ढँक रखा है, आज [illegible]—आज ला दिया, हो सकता है कल न दोगे, रिक्त डाल—तुम्हारे [illegible] डाल रीती जो होगी, ए—यह, फिरिया सम्मान—नौका [illegible] वहन कर लौट-लौट आएगी।

विचित्र

१

एसो गो नूतन जीवन।
एसो गो कठोर निठुर नीरव, एसो गो भीषण शोभन॥
एसो अप्रिय विरस तिक्त, एसो गो अश्रुसलिलसिक्त,
एसो गो भूषणविहीन रिक्त, एसो गो चित्तपावन॥
थाक् वीणा वेणु, मालतीमालिका, पूर्णिमानिशि, मायाकुहेलिका—
एसो गो प्रखर होमानलशिखा हृदयशोणितप्राशन।
एसो गो प्रखर होमानलशिखा हृदयशोणितप्राशन।
एसो गो परमदुःखनिलय, आशा-अङ्कुर करह विलय—
एसो संग्राम, एसो महाजय, एसो गो मरणसाधन॥

१८९५

२

आमरा लक्ष्मीछाड़ार दल भवेर पद्मपत्रे जल
सदा करछि टलोमल।
मोदेर आसा-याओया शून्य हाओया, नाइको फलाफल॥
नाहि जानि करण-कारण, नाहि जानि धरण-धारण,

---

१. एसो—आओ; भीषण—भयंकर; शोभन—सुन्दर; थाक्—[illegible] दी जाय; मालती-मालिका—मालती की माला; प्राशन—भोजन; करह—करो।

२. आमरा ... टलोमल—हम अभागो के दल संसार रूपी [illegible] के पत्तों पर जल (के समान) सर्वदा डुलमुल कर रहे हैं; लक्ष्मीछाड़ा—[illegible] के द्वारा परित्यक्त, मस्त, बेपरवाह व्यक्ति जिसे सुख-सम्पत्ति की चिन्ता नहीं, मोदेर ... फलाफल—हम लोगो का आना-जाना शून्य हवा (के समान) है (जिसका कोई) फलाफल नही, नाहि जानि—नही जानते, करण-कारण—[illegible] का अनुष्ठान; धरण-धारण—हावभाव; नाहि [illegible] गो—[illegible]

नाहि मानि शासन-वारण गो—
आमरा आपन रोगे मनेर झोंके छिंडेछि शिकल ।।

लक्ष्मी, तोमार वाहनगुलि धने पुत्रे उठुन फुलि,
लुटुन तोमार चरणधूलि गो—
आमरा स्कन्धे लये कांथा झुलि फिरव धरातल ।
तोमार बन्दरेते बांधा घाटे बोझाइ-करा सोनार पाटे
अनेक रत्न अनेक हाटे गो—
आमरा नोंडर-छेंडा भाडा तरी भेसेछि केवल ।।

आमरा एखन खुंजे देखि अकूलेते कूल मेले कि,
द्वीप आछे कि भवसागरे ।
यदि सुख ना जोटे देखब डुबे कोथाय रसातल ।
आमरा जुटे सारा वेला करव हतभागार मेला,
गाव गान खेलब खेला गो—
कण्ठे यदि गान ना आसे करव कोलाहल ।।

१८९९

नहीं मानते, आमरा ... शिकल—हमलोगों ने अपनी शौक में, मन की मौज में सांकल को तोड़ दिया है; तोमार ... फुलि—तुम्हारे वाहन सभी धन-पुत्र से फूले-फलें, लुटुन ... गो—(वे) तुम्हारी चरण धूलि लूटें; आमरा .. धरातल —हम लोग कंधे पर कथा (गुदड़ी) और झोली ले कर पृथ्वीतल पर विचरेंगे, तोमार ... घाटे—तुम्हारे बन्दरगाह में बँधे घाट पर, बोझाइ-करा—लदा हुआ; सोनार पाटे—सोने का पाट, हाटे—हाट में, बाजार में, आमरा ... केवल—हमलोगों ने केवल टूटे हुए लंगर वाली नौका को ही बहाया है, आमरा ... सागरे—इस बार हमलोग गोता लगा देखें, अकूल में कूल मिलता है क्या, भवसागर में द्वीप है क्या, यदि ... रसातल—अगर (भाग्य में) सुख न जुटे (तो) डूब कर देखेंगे, रसातल कहाँ है, आमरा ... गो—यहाँ, हमलोग सब समय जुट कर अभागों की भीड़ करेंगे, गान गायेंगे, खेल खेलेंगे; कण्ठे ... कोलाहल—अगर गले में गान नहीं आयगा तो शोर मचायेंगे ।

३

ओगो, तोमरा सबाइ भालो—
यार अदृष्टे येमनि जुटेछे सेइ आमादेर भालो।
आमादेर एइ आँधार घरे सन्ध्याप्रदीप ज्वालो॥
केउ वा अति ज्वलो-ज्वलो, केउ वा म्लान छलो-छलो,
केउ वा किछु दहन करे, केउ वा स्निग्ध आलो॥

नूतन प्रेमे नूतन वधू आगागोडा केवल मधु,
पुरातने अम्ल-मधुर एकटुकु झाँझालो।
वाक्य यखन विदाय करे चक्षु एसे पाये धरे,
रागेर सङ्गे अनुरागे समान भागे ढालो॥

आमरा तृष्णा, तोमरा सुधा— तोमरा तृप्ति, आमरा क्षुधा—
तोमार कथा वलते कविर कथा फुरालो।
ये मूर्ति नयने जागे सबइ आमार भालो लागे—
केउ वा दिव्यि गौरवरन, केउ वा दिव्यि कालो॥

१८९६

---

३ ओगो भालो—अजी, तुम सभी अच्छी हो; यार भालो—[illegible] भाग्य में जैसी जुट गई, वही हम लोगो के लिये अच्छी है, आमादेर [illegible]— हम लोगो के इस अँधेरे गृह में सन्ध्या-वाती जलाती हो, केउ [illegible]—[illegible] अत्यन्त (प्रखरता से) जल रही है, छलो छलो—[illegible]; किछु—[illegible], दहन करे—दग्ध करती है, आलो—आलोक, प्रेमे—प्रेम में, आगागोडा—[illegible] पैर तक, एकटुकु—तनिक, झाँझालो—तीखा, उग्र; पाये धरे—[illegible] जब विदा करते हैं, आँखे आ कर पैर पकड लेती है; रागेर ढालो—[illegible] (क्रोध) के साथ अनुराग समान अनुपात में ढालती हो, आमरा—[illegible] तोमरा—तुमलोग, तोमार फुरालो—तुम्हारी बातें [illegible] चातुरी समाप्त हो गई, ये जागे—आँखो में जो मूर्ति [illegible] सबइ लागे—सभी मुझे भाती हैं; केउ कालो—[illegible] वर्ण है, कोई सानी काले रंग की।

४

मधुर मधुर ध्वनि बाजे
हृदयकमलवन-माझे ।।
निभृतवासिनी वीणापाणि अमृतमुरतिमती वाणी
हिरणकिरण छविखानि— परानेर कोथा मे विराजे ।।
मधुऋतु जागे दिवानिशि पिककुहरित दिशि दिशि ।
मानसमधुप पदतले मुरछि पड़िछे परिमले ।
एसो देवी, एसो ए आलोके, एकबार तोरे हेरि चोखे—
गोपने थेको ना मनोलोके छायामय मायामय साजे ।।

१८९६

५

शुधु याओया आसा, शुधु स्रोते भासा,
शुधु आलो-आँधारे काँदा-हासा ।।
शुधु देखा पाओया, शुधु छुँये याओया,
शुधु दूरे येते येते केँदे चाओया,
शुधु नव दुराशाय आगे च'ले याय—
पिछे फेले याय मिछे आशा ।।

---

४. मुरति—मूर्ति; हिरण—सोना; छविखानि—चित्र; परानेर.. विराजे—प्राणों में कहाँ विराजमान है; मुरछि पड़िछे—मूर्च्छित हो जाना है; एसो—आओ; एकबार....चोखे—एकबार तुझे आँखों में देखूं; गोपने. ना—छिपी हुई न रहो।

५. शुधु .. आसा—केवल जाना आना, केवल स्रोत में बहना; शुधु .... हासा—केवल प्रकाश और छाया में रोना-हँसना; देखा पाओया—दर्शन पाना; छुँये याओया—छू जाना, स्पर्श करना; शुधु .. चाओया—केवल दूर जाते-जाते रोते हुए ताकना (दृष्टिपात करना), शुधु . आशा—केवल नई दुराशा में आगे चला जाना है और मिथ्या आशा को पीछे छोड़ जाना है;

अशेष वासना लये भाङा बल,
प्राणपण काजे पाय भाङा फल,
भाङा तरी ध'रे भासे पारावारे,
भाव केँदे मरे— भाङा भाषा।
हृदये हृदये आधो परिचय,
आधखानि कथा साङ्ग नाहि हय,
लाजे भये त्रासे आधो-विश्वासे
शुधु आधखानि भालोबासा॥

१८९६

६

मोरा सत्येर 'परे मन आजि करिब समर्पण,
जय जय सत्येर जय।
मोरा बुझिब सत्य, पूजिब सत्य, खुँजिब सत्यधन।
जय जय सत्येर जय॥
यदि दुःखे दहिते हय तबु मिथ्याचिन्ता नय।
यदि दैन्य वहिते हय तबु मिथ्याकर्म नय।
यदि दण्ड सहिते हय तबु मिथ्यावाक्य नय।
जय जय सत्येर जय॥

लये—ले कर; भाङा—टूटा हुआ, पाय—पाता है, भाङा पारावारे—टूटी नौका को पकड कर समुद्र मे बहता है, भाव मरे—भाव क्रन्दन करते मरते हैं, आधो—आधा, आधखानि ... हय—आधी-सी बात समाप्त नही होती; भालोबासा—प्यार।

६ मोरा ..समर्पण—हमलोग सत्य पर आज मन समर्पण करेंगे, सत्येर जय—सत्य की जय; यदि. नय—यदि दुःख से जलना पड़े तो भी व्यर्थ की चिन्ता नही होगी; वहिते हय—वहन करना पड़े, ढोना पड़े, सहिते हय—सहना पडे।

मोरा मङ्गलकाजे प्राण, आजि करिब सकले दान।
जय जय मङ्गलमय।
मोरा अर्जिब पुण्य, शोभिब पुण्ये, गाहिब पुण्यगान।
जय जय मङ्गलमय।
यदि दुःखे दहिते हय तबु अशुभचिन्ता नय।
यदि दैन्य बहिते हय तबु अशुभकर्म नय।
यदि दण्ड सहिते हय तबु अशुभवाक्य नय।
जय जय मङ्गलमय॥

सेइ अभय ब्रह्मनाम आजि मोरा सबे लइलाम—
यिनि सकल भयेर भय।
मोरा करिब ना शोक या हबार होक, चलिब ब्रह्मधाम।
जय जय ब्रह्मेर जय।
यदि दुःखे दहिते हय तबु नाहि भय, नाहि भय।
यदि दैन्य बहिते हय तबु नाहि भय, नाहि भय।
यदि मृत्यु निकट हय तबु नाहि भय, नाहि भय।
जय जय ब्रह्मेर जय॥

मोरा आनन्द-माझे मन आजि करिब विसर्जन।
जय जय आनन्दमय।
सकल दृश्ये सकल विश्वे आनन्दनिकेतन। जय जय आनन्दमय,
आनन्द चित्त-माझे आनन्द सर्वकाजे,
आनन्द सर्वकाले, दुःखे विपदजाले,
आनन्द सर्वलोके मृत्युविरहे शोके— जय जय आनन्दमय॥
१९११

अर्जिब—प्राप्त करेंगे, शोभिब पुण्ये—पुण्य से शोभा पाएँगे; गाहिब—गाएँगे; दहिते हय—दग्ध होना पड़े, तबु—तो भी।

सेइ—वही, आजि लइलाम—आज हम सभी ने लिया; यिनि...भय—जो सभी भयों के भय हैं; मोरा...धाम—हम लोग शोक नहीं करेंगे, जो होना हो, हो (हम लोग) ब्रह्मधाम चलेंगे।

७

आमार नाइ वा हल पारे याओया ।
ये हाओयाते चलत तरी अङ्गेते सेइ लागाइ हाओया ॥
नेइ यदि वा जमल पाडि घाट आछे तो, बसते पारि ।
आमार आशार तरी डुवल यदि देखव तोदेर तरी-बाओया ॥
हातेर काछे कोलेर काछे या आछे सेइ अनेक आछे ।
आमार सारा दिनेर एइ कि रे काज— ओपार-पाने केँदे चाओया ॥
कम किछु मोर थाके हेथा पुरिये नेव प्राण दिये ता ।
आमार सेइखानेतेइ कल्पलता येखाने मोर दावि-दाओया ॥
१९०६

८

ग्रामछाड़ा ओइ राडा माटिर पथ आमार मन भुलाय रे ।
ओरे कार पाने मन हात वाड़िये लुटिये याय धुलाय रे ॥
ओ ये आमाय घरेर वाहिर करे, पाये-पाये पाये धरे—
ओ ये केड़े आमाय निये याय रे याय रे कोन् चुलाय रे ॥

---

७ आमार याओया—भले ही मेरा पार जाना नहीं हुआ, ये हाओया—जिस हवा से नाव चलती, शरीर मे वही हवा लगाता हूँ, नेइ पारि—यदि दूसरे पार नही पहुँच सका तो घाट तो है, बैठ तो सकता हूँ, आमार बाओया—मेरी आशा की तरी यदि डूबी तो तुम लोगों [illegible] (चलाना) तो देखूँगा, हातेर आछे—हाथ के निकट, गोद में जो है, [illegible] है, आमार. .चाओया—समस्त दिन क्या मेरा यही काम है, [illegible] ओर क्रन्दन करते ताकना, कम ता—यहाँ मेरा (यदि) [illegible] रहे (तो) उसे (मैं) प्राणों से पूरा कर लूँगा, आमार दाओया—[illegible] मेरा अभाव-अभियोग है, दावा है, वही मेरी कल्पलता है ।

८ ग्राम .भुलाय रे—ग्राम से हो कर जाने [illegible] पथ मेरे मन को मुग्ध करता है; कार रे—[illegible] धूलि मे लोट जाता है; ओ ये धरे—[illegible] घर से बाहर जो करता (ले जाता) है, ओ ये चुलाय रे—[illegible]

ओ ये कोन् बाँके की धन देखाबे, कोन्खाने की दाय ठेकाबे—
कोथाय गिये शेष मेले ये भेबेइ ना कुलाय रे ॥

१९०८

९

मम चित्ते निति नृत्ये के ये नाचे
ताता थैथै ताता थैथै ताता थैथै ॥
तारि सङ्गे की मृदङ्गे सदा बाजे
ताता थैथै ताता थैथै ताता थैथै ॥
हासिकान्ना हीरापान्ना दोले भाले,
काँपे छन्दे भालो मन्द ताले ताले ॥
नाचे जन्म, नाचे मृत्यु पाछे पाछे
ताता थैथै ताता थैथै ताता थैथै ॥
की आनन्द, की आनन्द, की आनन्द—
दिबारात्रि नाचे मुक्ति, नाचे बन्ध—
से तरङ्गे छुटि रङ्गे पाछे पाछे
ताता थैथै ताता थैथै ताता थैथै ॥

१९१०

(निरन्तर) चल रहा है, (न-जाने) किस कोने में (लिए) जा रहा है (विनाश की ओर लिए जा रहा है); कोन्.. देखाबे—किस मोड़ पर कौन-सा धन दिखाएगा; कोन्खान.. .ठेकाबे—किस जगह किस संकट में डाल देगा, कोथाय रे—कहाँ जा कर अन्त मिलेगा (यह) सोचे नहीं सोचा जाता।

९. मम नाचे—मेरे चित्त में नित्य कौन नाचता रहता है; तारि.... बाजे—उसीके साथ किस मृदङ्ग में सर्वदा बजता है, हासिकान्ना—हँसी और रुदन, हीरापान्ना—हीरा और पन्ना, दोले—डुलते हैं; भाले—ललाट पर, भालो मन्द—अच्छा, बुरा, की—कैसा, बन्ध—बन्धन; पाछे पाछे—पीछे-पीछे; से तरङ्गे—उस तरङ्ग में; छुटि रङ्गे—आह्लादित हाव-भाव में दौड़ता है।

१०

आमरा चाप करि आनन्दे।
माठे माठे वेला काटे सकाल हते सन्धे।।
रौद्र ओठे, वृष्टि पड़े, बाँशेर वने पाता नड़े,
वातास ओठे भरे भरे चषा माटिर गन्धे।।
सवुज प्राणेर गानेर लेखा रेखाय रेखाय देय रे देखा,
माते रे कोन् तरुण कवि नृत्यदोदुल छन्दे।
धानेर शिषे पुलक छोटे— सकल धरा हेसे ओठे
अघ्रानेरइ सोनार रोदे, पूर्णिमारइ चन्द्रे।।

१९११

११

सव काजे हात लागाइ मोरा सव काजेइ।
वाधा-वाँधन नेइ गो नेइ।।
देखि खुँजि वुझि, केवल भाङि गड़ि युझि,
मोरा सव देशेतेइ वेडाइ घुरे सव साजेइ।।

---

१०. आमरा. आनन्दे—हमलोग आनन्द मे (मग्न) खेती करते हैं, माठे सन्धे—सवेरे से शाम तक (हमलोगो का) समय खेत में बीतता है; रौद्र ...नड़े—धूप निकलती है, वर्षा होती है, बाँस के वन में पत्तियाँ हिलती हैं; वातास गन्धे—जोती हुई मिट्टी के गन्ध से हवा भर-भर उठती है; सवुज ....देखा—सब्ज (हरे) प्राणो के गान की लिपि रेखाओं-रेखाओं में दिखाई देती है; माते . छन्दे—नृत्य से झूम उठने वाले छन्द मे कौन-सा तरुण कवि मत्त हो उठता है; धानेर ओठे—धान के शीर्ष (बालियो के अग्र भाग) में पुलक दौड रहा है, समस्त पृथ्वी हँस उठती है, अघ्रानेरइ...चन्द्रे—अगहन (अग्र-शीर्ष) की ही सुनहली धूप में, पूर्णिमा के ही चाँद में।

११. सव . काजेइ—सब कामो मे हमलोग हाथ लगाते हैं, सभी कामो में; वाधा नेइ—(हमलोगो के लिये) बाधा-बन्धन नहीं है, देखि युझि—(हमलोग) देखते हैं, खोजते हैं समझते हैं, सदा तोड़ते मे लगे हैं, जूझते रहते हैं: मोरा साजेइ—हमलोग सभी देशो में सभी वेश में

पारि नाइ वा पारि, नाहय जिति किम्बा हारि—
यदि अमनिते हाल छाडि मरि सेइ लाजेइ।
आपन हातेर जोरे आमरा तुलि सृजन क'रे,
आमरा प्राण दिये घर बाँधि, थाकि तार माझेइ॥

१०,११

१२

आलो आमार, आलो ओगो, आलो भुवन-भरा,
आलो नयन-धोओया आमार, आलो हृदय-हरा॥
नाचे आलो नाचे ओ भाइ, आमार प्राणेर काछे,
बाजे आलो बाजे ओ भाइ, हृदयवीणार माझे—
जागे आकाश, छोटे बातास, हासे सकल धरा॥
आलोर स्रोते पाल तुलेछे हाजार प्रजापति।
आलोर ढेउये उठल नेचे मल्लिका मालती।
मेघे मेघे सोना ओ भाइ, याय ना मानिक गोना,
पाताय पाताय हासि ओ भाइ, पुलक राशि राशि—
सुरनदीर कूल डुबेछे सुधा-निझर-झरा॥

१०,१२

पुकारते हैं, पारि. हारि—कर सकें अथवा न कर सकें भले ही जीतें अथवा हारें, यदि . लाजेइ—अगर वैसे ही पतवार छोड़ दें (हार मान लें) तो उसी लज्जा से मरते हैं, आपन. क'रे—अपने हाथों के बल हमलोग सृष्टि कर सकते हैं, आमरा माझेइ—हमलोग प्राणों के द्वारा गृह का निर्माण करते हैं और उसमें भीतर रहते हैं।

१२ आलो—आलोक; आमार—मेरा, भुवन-भरा—जगत् में भरा, नयन-धोओया—आँखों को धोने वाला, हृदय-हरा—हृदय हरण करने वाला, प्राणेर काछे—प्राणों के निकट; छोटे बातास—हवा दौड़ती है, हासे—हँसती है; मेघे सोना—हर मेघ में सोना है; याय ... गोना—माणिक्य गिने नहीं जाते; पाताय हासि—पत्तों-पत्तों में हँसी (है); डुबेछे—डूब गया है; सुधा ... झरा—अमृत का निर्झर झरने वाला।

१३

कमलवनेर मधुपराजि एसो हे कमलभवने।
की सुधागन्ध एसेछे आजि नववसन्तपवने॥
अमल चरण घेरिया पुलके शत शतदल फुटिल,
वारता ताहारि द्युलोके भूलोके छुटिल भुवने भुवने॥
ग्रहे तारकाय किरणे किरणे वाजिया उठेछे रागिणी,
गीतगुञ्जन कूजनकाकलि आकुलि उठिछे श्रवणे।
सागर गाहिछे कल्लोल गाथा, वायु वाजाउछे शङ्ख,
सामगान उठे वनपल्लवे, मङ्गलगीत जीवने॥

१९१३

१४

आमि चञ्चल हे,
आमि सुदूरेर पियासि।
दिन चले याय, आमि आनमने तारि आशा चेये थाकि वातायने—
ओगो, प्राणे मने आमि ये ताहार परश पावार प्रयासी॥
ओगो सुदूर, विपुल सुदूर, तुमि ये वाजाओ व्याकुल बाँशरि।
मोर डाना नाइ, आछि एक ठाँइ से कथा ये याइ पाशरि॥
आमि उन्मना हे,
हे सुदूर आमि उदासी।

---

१३ एसो—आओ, की—कैसा, एसेछे—आया है, आजि—आज, घेरिया—घेर कर, फुटिल—प्रस्फुटित हुए, वारता ताहारि—[illegible] समाचार, छुटिल—दौड़ा फैल गया, तारकाय—तारिकाओं में, [illegible] उठेछे—बज उठी है, गाहिछे—गा रहा है, वाजाइछे—बजा रहा है।

१४ आमि—मैं, सुदूरेर पियासि—सुदूर का पियासु, [illegible] पने—दिन बीत जाता है, मैं अनमना उसी की आशा में [illegible] से ताकता रहता हूँ, प्राणे ... प्रयासी—प्राण-मन से मैं [illegible] प्रयासी हूँ, तुमि ... बाँशरि—तुम व्याकुल (करने वाली) [illegible] हो, मोर ... पाशरि—मेरे डैने नहीं हैं मैं एक स्थान [illegible]

रौद्र-माखानो अलस बेलाय तरुमर्मरे छायार खेलाय
की मुरति नव नील आकाशे नयने उठे गो आभासि।
हे सुदूर, आमि उदासी।
ओगो सुदूर, विपुल सुदूर, तुमि ये बाजाओ व्याकुल बाँशरि।
घरे आमार रुद्ध दुयार, से कथा ये याइ पासरि॥

१९१४

१५

ना गो, एइ-ये धुला आमार ना ए।
तोमार धुलार धरार परे उड़िये याब सन्ध्यावाये॥
दिये माटि आगुन ज्वालि रचले देह पूजार थालि—
शेष आरति सारा क'रे भेङे याब तोमार पाये॥
फुल या छिल पूजार तरे
येते पथे डालि हते अनेक ये तार गेछे पड़े।
कत प्रदीप एइ थालाते साजियेछिले आपन हाते—
कत ये निबल हाओयाय, पौँछल ना चरणछाये॥

१९१४

गे; रौद्र...आभासि—धूप में सनी अलस बेला में, वृक्षों के मर्मर में, छाया के खेल में, नील आकाश में तुम्हारी कैसी मूर्ति (मेरी) आँखों में झलक जाती है; घरे...पासरि—मेरे कक्ष का द्वार रुद्ध है, यह बात भूल जो जाता हूँ।

१५. एइ...ए—यह जो धूलि है, वह मेरी नहीं; तोमार...बाये—सन्ध्या की हवा में तुम्हारी धूल की धरती पर (इसे) उड़ा जाऊँगा; दिये...थालि—अग्नि जला, मिट्टी द्वारा देहरूपी पूजा की थाली (तुमने) रची; शेष...पाये—अन्तिम आरती समाप्त कर (इसे) तुम्हारे पैरों में तोड़ जाऊँगा; फुल...तरे—पूजा के लिये जो फूल थे; येते...पड़े—राह चलते डलिया से उनमें बहुतेरे फूल गिर चुके हैं; कत...हाते—अपने हाथों इस थाल में न जाने कितने दीप (तुमने) सजाए थे; कत...छाये—न जाने कितने (दीप) हवा से बुझ गए, (तुम्हारे) चरणों की छाया तक नहीं पहुँचे।

१६

आमादेर भय काहारे।
बुडो बुड़ो चोर डाकाते की आमादेर करते पारे।।
आमादेर रास्ता सोजा, नाइको गलि— नाइको झुलि, नाइको थलि—
ओरा आर या काड़े काड़ुक, मोदेर पागलामि केउ काडबे ना रे।।
आमरा चाइ ने आराम, चाइ ने विराम,
चाइ ने ये फल, चाइ ने रे नाम—
मोरा ओठाय पडाय समान नाचि,
समान खेलि जिते हारे।।

१९१५

१७

आमादेर पाकवे ना चुल गो— मोदेर पाकवे ना चुल।
आमादेर झरवे ना फुल गो— मोदेर झरवे ना फुल।।
आमरा ठेकव ना तो कोनो शेषे, फुरोय ना पथ कोनो देशे रे.
आमादेर घुचवे ना भुल गो— मोदेर घुचवे ना भुल।।

---

१६. आमादेर फाहारे—हमलोगो को किसका भय है, बुडो पारे—बूढे-बूढे चोर-डकैत हमलोगो का क्या कर सकते है, आमादेर थलि—हमलोगो का रास्ता सीधा है, गली नही है, (हमलोगो के पास) न [illegible] न थैली; ओरा .रे—वे और जो काढें (निकाले) काढ ले, (लेकिन) हम-लोगो का पागलपन कोई नही काढ सकता; आमरा नाम—हमलोग आराम नही चाहते, विराम (रुकना) नही चाहते, फल नही चाहते. नाम नही चाहते मोरा. हारे—हमलोग चढने-गिरने (उत्थान-पतन) मे समान [illegible] नाचते है, हार-जीत में समान (भाव से) खेलते हैं।

१७. आमादेर .चुल—हमलोगो के केश नही पकेंगे, मोदेर—[illegible] लोगो के; आमादेर. फुल—हमलोगो के फूल नही झरेंगे, आमरा [illegible]—किसी भी अन्त पर हमलोग नही रुकेंगे, फुरोय रे—किसी भी देश मे (हम-लोगो का) पथ समाप्त नही होता, आमादेर भुल—[illegible]

१९

मोदेर येमन खेला तेमनि ये काज जानिस ने कि, भाइ।
ताइ काजके कभु आमरा ना डराइ।।
खेला मोदेर लड़ाइ करा, खेला मोदेर बाँचा मरा,
खेला छाडा किछुइ कोथाओ नाइ।।
खेलते खेलते फुटेछे फुल, खेलते खेलते फल ये फले,
खेलारइ ढेउ जले स्थले।
भयेर भीषण रक्तरागे खेलार आगुन यखन लागे
भाडाचोरा ज्वले ये हय छाइ।।

१९१५

२०

आमारे वाँधवि तोरा सेइ वाँधन कि तोदेर आछे।
आमि ये वन्दी हते सन्धि करि सवार काछे।।
सन्ध्या-आकाश विना डोरे वाँधल मोरे गो;
निशिदिन वन्धहारा नदीर धारा आमाय याचे।।
ये कुसुम आपनि फोटे, आपनि झरे, रय ना घरे गो—
तारा ये सङ्गी आमार, वन्धु आमार, चाय ना पाछे।।

---

१९ मोदेर भाइ—भाई, क्या नही जानते, हमलोगो का जैसा [illegible] है, वैसा ही काम-काज है, ताइ डराइ—इसीलिये हमलोग काम से कभी [illegible] डरते, खेला . मरा—लडाई करना हमलोगो का खेल है, बचना-मरना [illegible] का खेल है, खेला नाइ—खेल छोडकर कही भी कुछ भी नही है; [illegible] फुल—खेलते-खेलते फूल खिले है; फल ये फले—फल जो [illegible] है; खेलारइ स्थले—जल मे, स्थल मे खेल की ही लहर है, खेलार . लागे—[illegible] जब लगती है, भाडाचोरा छाइ—टूटाफूटा जल कर राख हो जाता है।

२० आमारे . आछे—तुमलोग मुझे बाँधोगे, वह बन्धन क्या तुम[illegible] के पास है, आमि काछे—मैं तो सबके निकट वन्दी होने की [illegible] हूँ; डोरे—डोरी; वाँधल—बाँधा, मोरे—मुझे; वन्धहारा याचे—[illegible] नदी की धारा मेरी याचना करती है, ये . घरे—जो फू[illegible] अपने-आप [illegible] है, अपने-आप झरते है, घर मे नही रहते; तारा . पाछे—[illegible]

चिरदिनेर कान्नाहासि उठछे भेसे राशि राशि——
ए-सब देखतेछे कोन् निद्राहारा नयन अवनत।
ओगो, सेइ नयने नयन आमार होक-ना निमेपहत—
ओइ आकाश-भरा देखार साथे देखब अविरत॥
१९१८

२२

एइ तो भालो लेगेछिल आलोर नाचन पाताय पाताय।
शालेर वने क्ष्यापा हाओया, एइ तो आमार मनके माताय।
राडा माटिर रास्ता वेये हाटेर पथिक चले धेये,
छोटो मेये धुलाय वसे खेलार डालि एकला साजाय—
सामने चेये एइ या देखि चोखे आमार वीणा वाजाय॥

आमार ए ये बाँशेर बाँशि, माठेर सुरे आमार साधन।
आमार मनके वेँधेछे रे एइ धरणीर माटिर वाँधन।
नील आकाशेर आलोर धारा पान करेछे नतुन यारा

कान्नाहासि—क्रन्दन और हँसी, उठछे भेसे—तिरती फिरती है; ए-सब—यह सब; देखतेछे .. अवनत—कौन निद्राविहीन झुकी आँखें देख रही हैं, ओगो . हत—अजी, उन आँखो मे मेरी आँखे निप्पलक हो जायें ना, आकाश-भरा—आकाश को भरने वाले; देखार साथे—देखने (दर्शन) के साथ; देखब—देखूँगा।

२२ एइ ... पाताय—पत्तियो-पत्तियो पर प्रकाश का नर्तन, यही तो अच्छा लगा था; शालेर.. माताय—शाल के वन में पगली हवा, यही तो मेरे मन को मत्त कर देती है; राडा .धेये—लाल मिट्टीवाले रास्ते से हो कर हाट जाने वाले पथिक दौडे जाते हैं; छोटो साजाय—छोटी बच्ची धूल में अकेली बैठी खेल की डाली सजा रही है; सामने . वाजाय—सामने की ओर ताक कर यह जो कुछ भी देखता हूँ (वही) मेरी आँखो मे वीणा बजाता है।

आमार .बाँशि—मेरी तो यह बाँस की बाँसुरी (है); माठेर . साधन—खेतो के सुर मे मेरी (स्वर-) साधना है, आमार . .बाँधन—इसी धरती की मिट्टी के बधन ने मेरे मन को बांध रखा है; नील धारा—नील आकाश के

२३

एमनि क'रेइ याय यदि दिन याक्-ना।
मन उड़ेछे उड़ूक्-ना रे मेले दिये गानेर पाख्ना॥
आजके आमार प्राण-फोयारार सुर छुटेछे,
देहेर वाँध टुटेछे;
माथार परे खुले गेछे आकाशेर ओइ सुनील ढाक्ना॥
धरणी आज मेलेछे तार हृदयखानि,
से येन रे केवल वाणी।
कठिन माटि मनके आजि देय ना वाधा,
से कोन् सुरे साधा;
विश्व वले मनेर कथा, काज प'ड़े आज थाके थाक् ना॥
१९१८

२४

ओरे सावधानी पथिक, वारेक पथ भुले मरो फिरे।
खोला आँखि-दुटो अन्ध करे दे आकुल आँखिर नीरे॥

---

२३. एमनि ...ना—यदि इसी तरह दिन बीते तो बीते ना, मन . पाख्ना—मन (अगर) उडा है गान के पखो को खोल कर, तो उडे ना; आजके . टुटेछे—आज मेरे प्राणो के फव्वारे का सुर वेग से निकला है, देह का बांध टूट गया है, मायार ढाक्ना—सिर के ऊपर आसमान का वह सुनील ढक्कन खुल गया है; धरणी .हृदयखानि—धरती ने आज अपना हृदय प्रसारित कर दिया है; से . .वाणी—वह जैसे केवल वाणीमय हो उठी है, कठिन वाधा—कठिन मिट्टी आज मन को बाधा नही देती; से साधा—वह किस सुर में सधा हुआ है; विश्व ना—विश्व आज मन की बात कहता है, काम-काज आज पडा रहे तो पड़ा रहे ना।

२४ सावधानी—अत्यधिक सतर्क (ईषत् निन्दा-सूचक), वारेक... . फिरे—एक बार रास्ता भूल कर भटकते फिरो, खोला नीरे—व्याकुल आंखो के पानी से दो खुली आंखो को अन्धी कर दे, रे फुञ्ज—उस भूले हुए पथ के किनारे हृदय का खोया हुआ कुञ्ज है;

से भोला पथेर प्रान्ते रयेछे हारानो हियार कुञ्ज,
झरे पड़े आछे काँटा-तरुतले रक्तकुसुमपुञ्ज—
सेथा दुइ बेला भाङा-गड़ा-खेला अकूल-सिन्धु-तीरे॥
अनेक दिनेर सञ्चय तोर आगुलि आछिस बसे,
झड़ेर रातेर फुलेर मतन झरुक पड़ुक खसे।
आय रे एबार सब-हारावार जयमाला परो शिरे॥

१९१८

२५

कोन् सुदूर हते आमार मनोमाझे
वाणीर धारा बहे— आमार प्राणे प्राणे।
कखन शुनि, कखन शुनि ना ये,
कखन् की ये कहे— आमार काने काने॥
आमार घुमे आमार कोलाहले
आमार आँखि-जले ताहारि सुर,
ताहारि सुर जीवनगुहातले
गोपन गाने रहे— आमार काने काने॥
कोन् घन गहन विजन तीरे तीरे
ताहार भाङा गड़ा— छायार तले तले।

झरे ... आछे—झर कर गिरे पड़े हैं; सेथा ... तीरे—तटहीन समुद्र के किनारे वहाँ दोनो बेला तोड़ने-गढ़ने का खेल (चल रहा) है; आगुलि ... बसे—रखवाली करते (तू) बैठा हुआ है, झड़ेर ... खसे—तूफान की रात्रि के फूल के समान झर कर गिर पड़े; आय ... शिरे—अरे आओ, इसबार सब कुछ गँवा देने की जयमाला शिर पर धारण कर लो।

२५. कोन् ... बहे—किस सुदूर से मेरे मन के भीतर वाणी की धारा बहती है; आमार ... प्राणे—मेरे समस्त प्राणों में; कखन ... ये—कभी सुनता हूँ, कभी सुनता तो नहीं, कखन् ... काने—क्या मेरे कानों-कान जाने-क्या कहती है; आमार ... सुर—मेरी निद्रा में, मेरे कोलाहल में, मेरी आँखों के जल में उसी का सुर (है); कोन्—किस; ताहार—उसका; भाङा गड़ा—तोड़ना-

आमि जानि ना कोन् दक्षिणसमीरे
ताहार ओठा पडा— ढेउयेर छलोछले।
एइ धरणीरे गगनपारेर छाँदे से ये तारार मापे बाँधे,
सुखेर साथे दुख मिलाये काँदे
'ए नहे एइ नहे'— काँदे काने काने॥

१९१८

२६

छिल ये परानेर अन्धकारे
एल से भुवनेर आलोक-पारे॥
स्वपनबाधा टुटि बाहिरे एल छुटि,
अवाक् आँखि दुटि हेरिल तारे॥
मालाटि गेँथेछिनु अश्रुधारे,
तारे ये बेंधेछिनु से मायाहारे।
नीरव वेदनाय पूजिनु यारे हाय
निखिल तारि गाय वन्दना रे॥

१९१८

गढना; आमि पडा—मैं नही जानता किस दक्षिण-पवन मे उसका उठना-गिरना (है), ढेउयेर छलोछले—लहरो की छलछल मे; एइ.....बांधे—इस धरती को आकाश-पार की भगी मे वह ताराओ के नाप बांधता है, सुखेर. कांदे—सुख के साथ दु ख को मिला कर क्रन्दन करता है; ए. काने—कानो-कान क्रन्दन करता है, 'यह नही यह नही'।

२६. छिल . .पारे—जो प्राणो के अन्धकार मे था, वह विश्व के आलोक के पार आया, स्वपन छुटि—स्वप्न की बाधा को तोड कर बाहर दौड आया, दुटि—दो; हेरिल तारे—उसे निहारा, मालाटि पारे—आँसुओ की धार से (मैं ने) माला गूँथी थी; तारे...हारे—उसे उन माया के तार से बाँधा था वेदनाय—वेदना से; पुजिनु यारे—जिसे पूजा था, निखिल . रे—आज, विश्व उसी की वन्दना गाता है।

२७

तोमार हल शुरु, आमार हल सारा—
तोमाय आमाय मिले एमनि वहे धारा ॥
तोमार ज्वले बाति, तोमार घरे साथि—
आमार तरे राति, आमार तरे तारा ॥
तोमार आछे डाङा, आमार आछे जल—
तोमार बसे थाका, आमार चलाचल।
तोमार हाते रय, आमार हाते क्षय—
तोमार मने भय, आमार भयहारा ॥

१९१८

२८

यखन पड़बे ना मोर पायेर चिह्न एइ बाटे,
बाइब ना मोर खेयातरी एइ घाटे,
चुकिये देब वेचा केना, मिटिये देब लेना देना,
बन्ध हबे आनागोना एइ हाटे—
तखन आमाय नाइबा मने राखले,
तारार पाने चेये चेये नाइबा आमाय डाकले ॥

---

२७. तोमार . सारा—तुम्हारा प्रारम्भ हुआ, मेरा समाप्त हुआ; तोमाय ......धारा—तुम्हारे और मेरे मिलन में इसी तरह धारा बहती है; तोमार ..... साथि—तुम्हारी वर्तिका जलती है, तुम्हारे घर में संगी है, आमार.....तारा—मेरे लिये रात है, मेरे लिये तारे हैं; तोमार. ..जल—तुम्हें निर्जल उच्च भूमि है, मुझे जल है; तोमार. चलाचल—तुम्हारे लिये बैठे रहना है मेरे लिये चलना-फिरना है, हाते—हाथों में; रय—(सुरक्षित) रहना है; भयहारा—भयहीन।

२८. यखन .घाटे—जब इस बाट (पथ) पर मेरे पैरों के चिह्न नहीं पड़ेंगे, बाइब ....घाटे—इस घाट पर अपनी खेवे की नौका नहीं तिराऊँगा; चुकिये देना—बेचना-खरीदना समाप्त कर दूँगा, लेन-देन मिटा दूँगा; बन्ध. ...हाटे—इस हाट में आना-जाना बन्द हो जाएगा; तखन.....राखले—उस समय (तुमने) भले ही मुझे याद न रखा; तारार.... डाकले—तारों की ओर ताकते-ताकते भले ही मुझे नहीं पुकारा।

यखन जमवे धुला तानपुराटार तारगुलाय,
काँटालता उठवे घरेर-द्वारगुलाय,
फुलेर वागान धन घासेर परवे सज्जा वनवासेर,
श्याओला एसे घिरवे दिघिर धारगुलाय—
तखन आमाय नाइवा मने राखले,
तारार पाने चेये चेये नाइवा आमाय डाकले ॥

तखन एमनि करेइ वाजवे वाँशि एइ नाटे,
काटवे गो दिन आजो येमन दिन काटे,
घाटे घाटे खेयार तरी एमनि से दिन उठवे भरि—
चरवे गोरु, खेलवे राखाल ओइ माठे।
तखन आमाय नाइवा मने राखले,
तारार पाने चेये चेये नाइवा आमाय डाकले ॥

तखन के वले गो सेइ प्रभाते नेइ आमि।
सकल खेलाय करवे खेला एइ आमि—

यखन . तारगुलाय—जब तम्बूरे के तारों पर धूल जमेगी, काँटा-लता ...द्वारगुलाय—घर के दरवाजों पर काँटालता (एक प्रकार की कँटीली वनस्पति) निकल आएगी; फुलेर वनवासेर—फूलों का बाग (जब) [illegible] घास (से आच्छादित हो) वनवास की सज्जा धारण करेगा; श्याओला—[illegible] पानी का एक तृण-विशेष, शैवाल, श्याओला. धारगुलाय—सरोवर में [illegible] को (जब) शैवाल आ कर घेर लेगा।

तखन .....नाटे—उस समय (संसार के) इस नाटक में इसी प्रकार बाँसुरी बजेगी, काटवे . काटे—अजी, (उस समय भी) दिन ढलेंगे [illegible] आज दिन बीत रहे हैं, घाटे भरि—इसी तरह उस दिन भी घाट-घाट पर खेवे की नावें भर उठेंगी, चरवे माठे—गायें चरेंगी, चरवाहे उस मैदान मे खेलेंगे।

तखन . .आमि—अजी, कौन कहता है कि उस समय उस प्रभात में मैं नही हूँगा; सकल आमि—यह 'मैं', सभी खेलों में खेल खेलेगा (

नतुन नामे डाकबे मोरे, बाँधबे नतुन बाहु डोरे,
आसब याब चिरदिनेर सेइ आमि।
तखन आमाय नाइबा मने राखले,
तारार पाने चेये चेये नाइबा आमाय डाकले॥

१९.१८

२९

ये काँदने हिया काँदिछे से काँदने सेओ काँदिल।
ये बाँधने मोरे बाँधिछे से बाँधने तारे बाँधिल॥
पथे पथे तारे खुंजिनु, मने मने तारे पूजिनु,
से पूजार माझे लुकाये आमारेओ से ये साधिल॥
एसेछिल मन हरिते महापारावार पाराये।
फिरिल ना आर तरीते, आपनारे गेल हाराये।
तारि आपनारि माधुरी आपनारे करे चातुरी,
धरिबे कि धरा दिबे से की भाविया फाँद फाँदिल॥

१९१८

रहेगा); नतुन.. मोरे—नये नाम से मुझे पुकारेंगे; बाँधबे...डोरे—नयी बाहों की डोरी में बाँधेंगे; आसब ..आमि—चिरदिन का वही 'मैं' आना-जाना रहेगा।

२९. ये ... काँदिल—जिस क्रन्दन से हृदय क्रन्दन कर रहा है, उसी क्रन्दन से उसने भी क्रन्दन किया, ये ... बाँधिल—जो बन्धन मुझे बाँध रहा है, उसी बन्धन ने उसे बाँधा; पथे...पूजिनु—रास्ते-रास्ते उसे खोजा, मन-ही-मन उसकी पूजा की, से .. साधिल—उस पूजा के भीतर छिप कर, उसने भी मेरी साधना की; एसेछिल ... पाराये—महासागर को पार कर (वह) मन हरने आया था, फिरिल ... हाराये—(वह) नौका में और नहीं लौटा, (उसने) अपने को ही खो दिया; तारि ... चातुरी—उसकी अपनी ही माधुरी स्वयं अपने से (ही) चातुरी करती है, धरिबे ... फाँदिल—वह पकड़ेगा या पकड़ाई देगा, क्या सोचकर (उसने) फन्दा लगाया।

३०

से कोन्   वनेर हरिण छिल आमार मने ।
  के तारे   बाँधल अकारणे ।।
गतिरागेर से छिल गान,   आलोछायार से छिल प्राण,
  आकाशके से चमके दित वने ।।
मेघला दिनेर आकुलता बाजिये येत पाये
  तमालछाये-छाये ।
फाल्गुने से पियालतलाय   के जानित कोथाय पलाय
  दखिन-हाओयार चञ्चलतार मने ।।

१९१८

३१

ए शुधु अलस माया,   ए शुधु मेघेर खेला,
ए शुधु मनेर साध बातासेते विसर्जन ।
ए शुधु आपन-मने माला गेँथे छिँड़े फेला,
निमेषेर हासिकान्ना गान गेये समापन ।।

---

३०. से.. मने—वह किस वन का हरिण मेरे मन में था; के.. अकारणे—किसने उसे अकारण बाँधा, गति .प्राण—गति (रूपी) राग का वह गान था, प्रकाश और छाया का वह प्राण था, आकाशके [illegible] वने—[illegible] में वह आकाश को चौंका देता, मेघला . छाये—तमाल की छाया-छाया में मेघाच्छन्न दिन की व्याकुलता पैरों से ध्वनित कर जाता, फाल्गुने [illegible] मने—फाल्गुन में प्रियाल (वृक्ष) के तले दक्षिण-पवन की चञ्चलता में [illegible] जानता, वह कहाँ भाग जाता।

३१. ए—यह; शुधु—केवल, ए [illegible] विसर्जन—[illegible] मन की [illegible] को हवा में विसर्जित करना है; ए ..फेला—यह केवल मन की [illegible] गूंथना और तोड़ फेंकना है; निमेषेर. समापन—[illegible] की हँसी और क्रन्दन को गान गा कर समाप्त करना है।

श्यामल पल्लवपाते रविकरे सारा बेला
आपनारि छाया लये खेला करे फुलगुलि—
एओ सेइ छायाखेला वसन्तेर समीरणे ।।
कुहकेर देशे येन साध करे पथ भुलि
हेथा होथा घुरि फिरि सारा दिन आनमने ।
कारे येन देब' ब'ले कोथा येन फुल तुलि—
सन्ध्याय मलिन फुल उड़े याय वने वने ।
ए खेला खेलिबे हाय, खेलार साथि के आछे ।
भुले भुले गान गाइ— के शोने के नाइ शोने—
यदि किछु मने पडे, यदि केह आसे काछे ।।

१९११

३२

चोख ये ओदेर छुटे चले गो—
धनेर बाटे, मानेर बाटे, रूपेर हाटे, दले दले गो ।
देखबे ब'ले करेछे पण देखबे कारे जाने ना मन—
प्रेमेर देखा देखे यखन चोख भेसे याय चोखेर जले गो ।।

श्यामल.. फुलगुलि—श्याम पल्लवों के झरने में सूर्य्य की किरणों में सब समय फूल अपनी ही छाया को ले कर खेल करते हैं; एओ.... समीरणे—वसन्त की हवा में यह भी वही छाया का खेल है।

कुहकेर ...भुलि—जादू के देश में जैसे जानबूझ कर राह भूलता हूँ; हेथा . आनमने—समस्त दिन यहाँ-वहाँ अनमना घूमता फिरता हूँ; कारे...वने—जैसे किसी को फूल देना है, इसलिये कहीं जैसे फूल तोड़ता हूँ (और वे) फूल सन्ध्या के समय मलिन हो वन-वन में उड़ जाते हैं।

ए . आछे—हाय, यह खेल खेलने वाला खेल का साथी कहाँ है, भुले.... शोने—भोला-भोला-सा गान गाता हूँ, कौन सुनता है, कौन नहीं सुनता; यदि .... काछे—यदि (किसी) को कुछ याद आ जाय, यदि कोई पास आ जाए।

३२ चोख ..गो—इन सबों की दृष्टि दौड़ी जाती है; धनेर बाटे—धन के रास्ते; दले दले—दल-के-दल, देखबे .. मन—देखने का दृढ़ संकल्प किया है (लेकिन) किसे देखेगा, मन नहीं जानता; प्रेमेर ....गो—प्रेम का देखना

आमाय तोरा डाकिस नारे—
आमि याव खेयार घाटे अरूप-रसेर पारावारे।
उदास हाओया लागे पाले, पारेर पाने यावार काले
चोखदुटोरे डुबिये याव अकूल सुधा-सागर-तले गो ।।

१९१९

३३

माटिर प्रदीपखानि आछे माटिर घरेर कोले,
सन्ध्यातारा ताकाय तारि आलो देखबे ब'ले।
सेइ आलोटि निमेषहत प्रियार व्याकुल चाओयार मतो,
सेइ आलोटि मायेर प्राणेर भयेर मतो दोले ।।
सेइ आलोटि नेवे ज्वले श्यामल धरार हृदयतले,
सेइ आलोटि चपल हाओयाय व्यथाय काँपे पले पले।
नामल सन्ध्यतारार वाणी आकाश हते आशिस आनि
अमरशिखा आकुल हल मर्तशिखाय उठते ज्व'ले ।।

१९१९

देख कर जब आँखे आँखो के जल मे वह जाती हैं, आमाय रे—मुझे तुम लोग पुकारना नही, आमि घाटे—मैं खेवे के घाट पर जाऊँगा; उदास . काले—पार की ओर जाने के समय पाल में उदासीन हवा लगती है; चोख याव —दोनो आँखें डुबा जाऊँगा।

३३ माटिर कोले—मिट्टी का दीपक मिट्टी के घर की गोद में है, सन्ध्या . ब'ले—सन्ध्यातारा उसीके प्रकाश को देखने के लिये ताक रहा है; सेइ . मतो—प्रिया की व्याकुल चितवन के समान वह दीपक निष्पलक है; सेइ . दोले—वह प्रदीप माँ के प्राणों के भय के समान स्पन्दित होता है; सेइ ज्वले—बुझता-जलता है, चपल पले—चंचल हवा में [illegible] से काँपता है; नामल वाणी—सन्ध्यातारा की वाणी नीचे उतरी, हते—से, आशिस—आशीर्वाद, आनि—ला कर; हल—हुई, मर्त . ज्वले—मर्त्यशिखा मे जल उठने को।

३५

नमो यन्त्र, नमो— यन्त्र, नमो— यन्त्र, नमो— यन्त्र।
तुमि चक्रमुखरमन्द्रित, तुमि वज्रवह्निवन्दित,
तव वस्तुविश्ववक्षदंश ध्वंसविकट दन्त।
तव दीप्त-अग्नि-शत-शतघ्नी-विघ्नविजय पन्थ।
तव लौहगलन शैलदलन अचलचलन मन्त्र॥
कभु काष्ठलोष्ट्र-इष्टक-दृढ घनपिनद्ध काया,
कभु भूतल-जल-अन्तरीक्ष-लङ्घन लघु माया।
तव खनि-खनित्र-नख-विदीर्ण क्षिति विकीर्ण-अन्त्र,
तव पञ्चभूतबन्धनकर इन्द्रजालतन्त्र॥

१९२२

३६

हाय हाय हाय दिन चलि याय।
चा-स्पृह चञ्चल चातकदल चल' चल' चल' हे॥
टग'बग'-उच्छल काथलितल-जल कल'कल'हे।
एल चीन-गगन हते पूर्वपवनस्रोते श्यामलरसधरपुञ्ज॥
श्रावणवासरे रस झर' झर' झरे भुञ्ज हे भुञ्ज दलबल हे।
एस' पुंथिपरिचारक तद्धितकारक तारक तुमि काण्डारी।
एस' गणितधुरन्धर काव्यपुरन्दर भूविवरणभाण्डारी।
एस' विश्वभारनत शुष्करुटिनपथ-मरुपरिचारणक्लान्त।

---

३५ चक्र—पहिया, कभु—कभी; खनित्र—खन्ता, (मिट्टी खोदने का यन्त्र); अन्त्र—अँतड़ी।

३६ दिन याय—दिन ढला जाता है; चा—चाय, चा-स्पृह—चाय के लोभी, चाय की आकांक्षा करने वाले, काथलि—केटली, चाय के लिए पानी गर्म करने का बर्तन; एल—आया; हते—से, भुञ्ज—[illegible] करो; एस'—आओ; पुंथिपरिचारक—[illegible] वाले, काण्डारी—मल्लाह, कर्णधार; भूविवरण—[illegible], रुटिन—[illegible]

मोरा नेव तारि दान, ताइ ये काटि धान,
ताइ ये गाहि गान, ताइ ये मुखे काटि ।।

१९२५

३८

कालेर मन्दिरा ये सदाइ वाजे डाइने वाँये दुइ हाते,
सुप्ति छुटे नृत्य उठे नित्य नूतन सघाते ।।
वाजे फुले, वाजे काँटाय, आलोछायार जोयार-भाँटाय,
प्राणेर माझे ओइ-ये वाजे दु खे सुखे शकाते ।।
ताले ताले साँझ-सकाले रूप-सागरे ढेउ लागे ।
सादा-कालोर द्वन्द्वे ये ओइ छन्दे नानान रड जागे ।
एइ ताले तोर गान वेधे ने— कान्नाहासिर तान सेधे ने,
डाक दिल शोन् मरण वाँचन नाचन-सभार डङ्काते ।।

१९२५

३९

खेलाघर वाँधते लेगेछि आमार मनेर भितरे ।
कत रात ताइ तो जेगेछि वलव की तोरे ।।

---

३८. कालेर हाते—दाहिने, वांये दोनों हाथो मे [illegible] सर्वदा वजता रहता है, छुटे—भागती है, वाजे .भाँटाय—[illegible] में, [illegible] में, प्रकाश और छाया के ज्वार-भाटे मे (वह) वजता है, प्राणेर [illegible] —दु ख-सुख-शका मे प्राणो के भीतर वह ध्वनित होता है, ताले [illegible]— ताल-ताल पर साँझ-सवेरे रूप-सागर मे लहरे उठती है; सादा जागे— उजले-काले के द्वन्द्व मे उसी छद मे नाना रग जागरित होते है, एइ ने—[illegible] ताल पर अपना गान वांध ले; कान्ना . सेधे ने—[illegible] को साध ले; डाक. .डंकाते—सुन, मृत्यु और जीवन ने [illegible] पर (प्रहार कर) आह्वान किया है।

३९. खेलाघर भितरे—अपने मन के भीतर [illegible] (खिलौना) वांधने मे लगा हूँ (वनाने मे लगा हूँ), कत तोरे—[illegible]

पाखि वले, 'चाँपा, आमारे कओ,
केन तुमि हेन गोपने रओ।
फागुनेर प्राते उतला वाय
उड़े येते से ये डाकिया याय,
से कि तुमि तव हृदये लओ।
केन तुमि तवे गोपने रओ।'
चाँपा शुने वले, 'हाय गो हाय,
ये आमारि ओड़ा देखिते पाय,
नह नह पाखि, से तुमि नओ।'

१९२५

४१

वाजो रे वाँशरि, वाजो।
सुन्दरी, चन्दनमाल्ये मङ्गलसन्ध्याय साजो।
वुझि मधु-फाल्गुन-मासे चञ्चल पान्थ से आसे—
मधुकर-पदभर-कम्पित चम्पक अङ्गने फोटे नि कि आजो।
रक्तिम अंशुक माथे, किंशुककङ्कण हाते,
मञ्जीरझंकृत पाये सौरभमन्थर वाये
वन्दनसंगीत-गुञ्जन-मुखरित नन्दनकुञ्जे विराजो॥

१९२५

फागुनेर .. याय—फाल्गुन के प्रात.काल मे चचल वायु उडती हुई पुकार जाती है, ये पाय—जो मेरा अपना उडना देख पावे।

४१. बाजो—बजो; बांशरि—बांसुरी, माल्ये—माला मे, मङ्गल . साजो—शुभ सन्ध्या मे सजो; से—वह; आसे—आता है, अङ्गने आजो—आज भी क्या आंगन मे नही खिला; रक्तिम . हाते—सिर पर [illegible], हाथो मे पलाश के फूलो का कंकण; मञ्जीर ..पाये—नूपुर [illegible], बाये—वायु मे।

गाइल की गान सेइ ता जाने, सुर वाजे तार आमार प्राणे—
वलो देखि तोमरा कि तार कथार किछु आभास पेले ।।
आमि तारे शुधाइ यवे, 'की तोमारे दिब आनि'—
से शुधु कय, 'आर किछु नय, तोमार गलार मालाखानि' ।
दिइ यदि तो की दाम देवे याय वेला सेइ भावना भेवे—
फिरे एसे देखि धुलाय वाँशिटि तार गेछे फेले ।।

१९२५

४४

आमाय क्षमो हे क्षमो, नमो हे नमो, तोमाय स्मरि हे निरुपम,
नृत्यरसे चित्त मम उछल हये वाजे ।
आमार सकल देहेर आकुलरवे मन्त्रहारा तोमार स्तवे
डाहिने वामे छन्द नामे नवजनमेर माझे ।
तोमार वन्दना मोर भङ्गीते आज संगीते विराजे ।।

जाने—कौन-सा गान गाया, इसे वही जानता है; सुर प्राणे—उसका सुर मेरे प्राणो में ध्वनित होता है, वलो .पेले—बताओ तो सही तुम लोगों ने उसकी बात का (क्या) कुछ आभास पाया; आमि. आनि—मैं जब उससे पूछता हूँ, 'तुम्हें क्या ला कर दूं'; से ..मालाखानि—वह केवल कहता है, और कुछ नहीं, (मात्र) अपने गले की माला, दिइ. भेवे—अगर दूं, तो (वह उसका) क्या दाम देगा, यही सोचते समय बीतता है, फिरे फेले—लौट कर देखता हूँ, (वह) अपनी बांसुरी धूल मे फेंक गया है।

४४. यह गान 'नटीर पूजा' (नटी की पूजा) नामक नाटक से लिया गया है। प्राणदण्ड का भय रहने पर भी नटी महाराज बिंबिसार की [illegible] में भग्न स्तूप के सामने, जहां कभी भगवान् बुद्ध ने उपदेश दिया था, [illegible] नृत्य करने गई। महाराज के दण्ड-विधान के अनुसार महारानी के सामने नृत्य करती हुई नटी का वध कर दिया गया।

आमाय—मुझे; क्षमो—क्षमा करो, नमो. .नमो—(तुम्हें) नमस्कार है, तोमाय—तुम्हें; स्मरि—स्मरण करती हूँ; नृत्य वाजे—नृत्यरस में उच्छलित हो कर मेरा चित्त ध्वनित हो रहा है, मन्त्रहारा—मन्त्रहीन; डाहिने—दाहिने, नामे—उतरता है; आमार.. माझे—मेरी सारी देह के [illegible] में, तुम्हारे मन्त्रहीन स्तव से (मेरे) नवजन्म के मध्य दाहिने-बाँये छन्द [illegible]

पथेर धारे आसन पाति, ना चाहि फिरे पिछु—
वेणुर पाता मिशाय गाथा नीरव भावनाय ॥
मेघेर खेला गगनतटे अलस लिपि-लिखा,
सुदूर कोन् स्मरणपटे जागिल मरीचिका ।
चैत्रदिने तप्त वेला तृण-आँचल पेते
शून्यतले गन्ध-भेला भासाय वातासेते—
कपोत डाके मधुकशाखे विजन वेदनाय ॥

१९२६

४६

की पाइ नि तारि हिसाव मिलाते मन मोर नहे राजि ।
आज हृदयेर छायाते आलोते बाँशरि उठेछे वाजि ॥
भालोवेसेछिनु एइ धरणीरे सेइ स्मृति मने आसे फिरे फिरे,
कत वसन्ते दखिनसमीरे भरेछे आमारि साजि ॥
नयनेर जल गभीर गहने आछे हृदयेर स्तरे,
वेदनार रसे गोपने गोपने साधना सफल करे ।

की सगिनी है, और कोई वासना नही; पथेर. . पाति—रास्ते के किनारे आसन बिछाता हूँ; ना पिछु—पीछे की ओर फिर कर नही देखता, वेणुर .. भावनाय—बाँसकी पत्तियाँ नीरव चिन्तन मे काव्य-गीति का मिश्रण करती हैं, लिपि-लिखा—पत्र लिखना, कोन्—किस; जागिल—जागी; पेते—फैला कर, शून्य... वातासेते—शून्य (आकाश) के नीचे गन्ध के भेला (बेड़े) को हवा में तिराती है, डाके—पुकारता है, बोलता है; मधुकशाखे—महुए की शाखा पर।

४६. की राजि—क्या नही पाया, इसका हिसाब मिलाने (लेखा-जोखा करने) को मेरा मन राजी नहीं; आज बाजि—आज हृदय में छाया (और) प्रकाश में बाँसुरी बज उठी है; भालो फिरे—इस धरती को प्यार किया था, यही स्मृति घूम-घूम कर मन मे आती है; कत .. साजि—कितने वसन्तो में मेरी डलिया दक्षिण समीर ने भर उठी है; नयनेर . .स्तरे—आँखों का जल गभीर अतल मे हृदय के स्तर मे है, वेदनार करे—वेदना के रस से

४८

राङिये दिये याओ याओ याओ गो एवार यावार आगे—
तोमार आपन रागे, तोमार गोपन रागे,
तोमार तरुण हासिर अरुण रागे,
अश्रुजलेर करुण रागे ।।
रङ येन मोर मर्मे लागे, आमार सकल कर्मे लागे,
सन्ध्यादीपेर आगाय लागे, गभीर रातेर जागाय लागे ।।
यावार आगे याओ गो आमाय जागिये दिये,
रक्ते तोमार चरण-दोला लागिये दिये ।
आँधार निशार वक्षे येमन तारा जागे,
पाषाणगुहार कक्षे निर्झरधारा जागे,
मेघेर बुके येमन मेघेर मन्द्र जागे,
विश्व-नाचेर केन्द्रे येमन छन्द-जागे,
तेमनि आमाय दोल दिये याओ यावार पथे आगिये दिये,
काँदन-बाँधन भागिये दिये ।।

१९२६

---

४८. राङिये. याओ—रंजित कर जाओ; एवार आगे—[illegible] जाने से पहले; तोमार रागे—तुम्हारे अपने रग मे, अपने गोपन रग मे; तोमार . रागे—अपनी तरुण हँसी के अरुण रग मे, रङ लागे—[illegible] कि रग मेरे मर्म (अन्तर) मे लगे, मेरे समस्त कर्म मे लगे, आगाय—[illegible] भाग में; गभीर लागे—गभीर रात के जागरण मे लगे, आमाय दिये—मुझे जगा कर, रक्ते . दिये—रक्त मे अपने चरणो का स्पन्दन [illegible], आँधार. ...जागे—अँधेरी रात के वक्ष में जैसे तारा जागता है; मेघेर ..जागे—मेघ के हृदय में जैसे मेघ की मद्र-ध्वनि जागती है; तेमनि . याओ—[illegible] मुझे दोलायित कर जाओ; यावार दिये—जाने के पथ पर [illegible] क्रन्दन-बंधन को दूर कर।

४९

परवासी, चले एसो घरे
अनुकूल समीरण-भरे ।।
ओइ देखो कतवार हल खेया-पारापार,
सारिगान उठिल अम्बरे ।।
आकाशे आकाशे आयोजन,
वातासे वातासे आमन्त्रण ।।
मन ये दिल ना साड़ा, ताइ तुमि गृहछाड़ा
निर्वासित वाहिरे अन्तरे ।।

१९२८

५०

स्वपन-पारेर डाक शुनेछि, जेगे ताइ तो भावि—
केउ कखनो खुँजे कि पाय स्वप्नलोकेर चाबि ।।
नय तो सेथाय यावार तरे, नय किछु तो पावार तरे,
नाइ किछु तार दाबि—
विश्व हते हारिये गेछे स्वप्नलोकेर चाबि ।।

---

४९. परवासी ....भरे—प्रवासी, अनुकूल समीर-वाही नाव से घर चले आओ; ओइ .पारापार—वह देखो, खेवे की नौका कितनी वार आर पार हुई, सारि—मल्लाहो आदि के गान; उठिल—उठे , वातासे—हवा में; मन.. . छाड़ा—मन ने (कोई) उत्तर नही दिया (मन में कोई प्रतिक्रिया नही हुई) इसीलिये तुम गृहत्यागी हो; निर्वासित .. अन्तरे—अन्तर-वाहर निर्वासित हो ।

५०. स्वपन .. भावि—स्वप्न-पार का आह्वान (मैंने) सुना है, इसीलिये तो जग कर सोचता हूँ; केउ चावि—क्या कभी कोई स्वप्नलोक की चावी खोज पाता है; नय .. दावि—न तो वहाँ जानेके लिये, न कुछ पाने के लिये—उसका कोई दावा नही; विश्व......चावि—ससार से स्वप्नलोक की चावी खो गई है;

चाओया-पाओयार बुकेर भितर ना-पाओया फुल फोटे,
दिशाहारा गन्धे तारि आकाश भरे ओठे।
खुँजे यारे वेड़ाइ गाने, प्राणेर गभीर अतल-पाने
ये जन गेछे नावि,
सेइ नियेछे चुरि करे स्वप्नलोकेर चावि॥

१९२८

५१

खरवायु वय वेगे, चारि दिक छाय मेघे,
ओगो नेये, नाओखानि बाइयो।
तुमि कषे धरो हाल, आमि तुले बाँधि पाल—
हाँइ मारो, मारो टान हाँइयो॥
शृङ्खले बार बार झनूझन् झंकार नय ए तो तरणीर क्रन्दन शंकार;
बन्धन दुर्वार सह्य ना हय आर, टलोमलो करे आज ताइ ओ।
हाँइ मारो, मारो टान हाँइयो॥
गनि गनि दिन खन चञ्चल करि मन
बोलो ना 'याइ कि नाइ याइ रे'।

चाओया . फोटे—चाहने-पाने के हृदय के भीतर न-पाने का [illegible], दिशाहारा . ओठे—उसी के दिशाहीन गन्ध ने आकाश भर उठा [illegible]; खुँजे .. पाने—जिसे गानो में खोजता फिरता हूँ; प्राणेर नावि—जो [illegible] प्राणों के गभीर अतल में उतर गया है, सेइ चावि—उसी ने [illegible] की चाबी चुरा ली है।

५१ खरवायु मेघे—तेज हवा वेग से [illegible], [illegible] और मेघ छाये हुए हैं; नेये—नाविक, मल्लाह, नाओखानि—नाव, बाइयो—[illegible]; तुमि पाल—तुम कस कर पतवार पकड़ो, मैं पाल [illegible], नय शंकार—यह तो नाव का [illegible] या क्रन्दन नहीं है, बन्धन [illegible]—[illegible] बन्धन और सह्य नहीं होता; टलोमलो ओ—[illegible] [illegible] कर रही है; गनि याइ रे—दिन-क्षण गिन-गिन मन को [illegible] [illegible] ([illegible])

संशयपारावार अन्तरे हबे पार।
उद्वेगे ताकायो ना बाइरे।
यदि माते महाकाल, उद्दाम जटाजाल झड़े हये लुण्ठित, ढेउ उठे उत्ताल,
होयो नाको कुण्ठित, ताले तार दियो ताल—जय-जय जयगान गाइयो।
हाँइ मारो, मारो टान हाँइयो॥

१९२९

५२

तोमार आसन शून्य आजि हे वीर, पूर्ण करो—
ओइ-ये देखि वसुन्धरा काँपल थरोथरो।
वाजल तूर्य आकाशपथे— सूर्य आसेन अग्निरथे,
एइ प्रभाते दखिन हाते विजयखड्ग धरो॥
धर्म तोमार सहाय, तोमार सहाय विश्ववाणी।
अमर वीर्य सहाय तोमार, सहाय वज्रपाणि।
दुर्गम पथ सगौरवे तोमार चरणचिह्न लबे।
चित्ते अभय वर्म, तोमार वक्षे ताहाइ परो॥

१९२९

न कहो कि 'जायँ या नहो जायँ'; संशय . वाइरे—सशय का सागर अन्तर मे पार करोगे, उद्विग्न हो कर वाहर न देखना; माते—मत्त हो जाय; झड़े उत्ताल—तूफान मे लुण्ठित हो, उत्ताल तरगे उठें; होयो . ..ताल—कातर न होना, उसके ताल पर ताल देना; गाइयो—गाना।

५२. तोमार. करो—हे वीर, आज अपना शून्य आसन पूर्ण करो; ओइ ये—वह जो; देखि—देखता हूँ; काँपल—काँपी, थरोथरो—थरथर; वाजल—वजी; तूर्य—तुरही; आसेन—आते हैं; एइ—इस; दखिन हाते—दाहिने हाथ में; लबे—लेगा, ग्रहण करेगा, ताहाइ—उसे ही; परो—पहनो।

५३

प्रलयनाचन नाचले यखन आपन भुले
हे नटराज, जटार बाँधन पड़ल खुले ।।
जाह्नवी ताइ मुक्त धाराय उन्मादिनी दिशा हाराय,
संगीते तार तरङ्गदल उठल दुले ।।
रविर आलो साडा दिल आकाश-पारे,
शुनिये दिल अभयवाणी घर-छाड़ारे ।
आपन स्रोते आपनि माते, साथि हल आपन-नाये,
सब-हारा ये सब पेल तार कूले कूले ।।

१९२९

५४

मरुविजयेर केतन उड़ाओ शून्ये हे प्रबल प्राण ।
धूलिरे धन्य करो करुणार पुण्ये हे कोमल प्राण ।।
मौनी माटिर मर्मेर गान कबे उठिबे ध्वनिया मर्मर तव रबे,
माधुरी भरिबे फुले फले पल्लवे हे मोहन प्राण ।।

---

५३ प्रलय . भुले—अपने को भूल जब तुमने प्रलय-नाच नाचा, जटार . .खुले—जटा का बंधन खुल पड़ा, ताइ—इसीलिये, हाराय—खोती है, संगीते—संगीत में; तार—उसके, उठल दुले—दोलायमान हो उठा, रविर .. पारे—आकाश के पार सूर्य के प्रकाश ने अपने अस्तित्व की सूचना दी; शुनिये .छाड़ारे—गृहत्याग करने वाली (जाह्नवी) को (उसने) अभयवाणी सुना दी; आपन . पारे—अपने स्रोत में आप ही मस्त होती है, साथि . नाये —अपना साथी आप ही हुई, सब . कूले—सब कुछ खो देने वाली ने उसके किनारे-किनारे सब कुछ पाया ।

५४ मरु . प्राण—हे शक्तिशाली प्राण, शून्य (आकाश) में मरु (भूमि)-विजय की ध्वजा उड़ाओ, धूलिरे—धूलि को; मौनी . रवे—मौन मिट्टी के मर्म (अन्तर) का गान कब तुम्हारी मर्मर ध्वनि में ध्वनित हो उठेगा, माधुरी

पथिकवन्धु, छायार आसन पाति   एसो श्यामसुन्दर।
एसो वातासेर अधीर खेलार साथि,   माताओ नीलाम्वर।
उषाय जागाओ शाखाय गानेर आशा, सन्ध्याय आनो विरामगभीर भाषा
रचि दाओ राते सुप्त गीतेर वासा   हे उदार प्राण।।

१९२९

५५

कृष्णकलि आमि तारेइ वलि,   कालो तारे वले गाँयेर लोक।
मेघला दिने देखेछिलेम माठे   कालो मेयेर कालो हरिण-चोख।
घोमटा माथाय छिल ना तार मोटे,   मुक्तवेणी पिठेर 'परे लोटे।
कालो ? ता से यतइ कालो होक,   देखेछि तार कालो हरिण-चोख।।

घन मेघे आँधार हल देखे   डाकतेछिल श्यामल दुटि गाइ,
श्यामा मेये व्यस्त व्याकुल पदे   कुटिर हते त्रस्त एल ताइ।
आकाश-पाने हानि युगल भुरु   शुनले वारेक मेघेर गुरुगुरु।
कालो ? ता से यतइ कालो होक,   देखेछि तार कालो हरिण-चोख।।

भरिवे—माधुर्य भरोगे; छायार ..पाति—छाया का आसन विछा कर; एसो—आओ; वातासेर.. ..साथि—हवा के अधीर (चंचल) खेल के साथी; माताओ—मत्त कर दो; उषाय...आशा—भोरवेला शाखाओं में गान की आशा जागरित करो; सन्ध्याय—सन्ध्याकाल में, आनो—लाओ; रचि..वासा—रात में सुप्त गीतो के आवास की रचना कर दो।

५५. कृष्णकलि...वलि—कृष्णकली मैं उसे ही कहता हूँ; कालो.....लोक—गाँव के लोग उसे काली कहते हैं; मेघला ... चोख—वरसात के दिन मैदान में (उस) काली लडकी की हरिणी-जैसी काली आँखें (मैंने) देखी थी; घोमटा...लोटे—उसके सिर पर घूंघट विल्कुल ही नही था, (उसकी) खुली वेणी पीठ पर लोट रही थी; कालो. ..चोख—काली? चाहे वह जितनी ही काली (क्यो न) हो, मैने उसकी हरिणी-जैसी काली आँखे देखी है।

घन.. गाइ—सघन मेघो मे अँधेरा हुआ देख दो श्यामल गाये रँभा रही थीं; श्यामा ..ताइ—इसीलिये (वह) साँवली लडकी चंचल व्याकुल पैरों मे त्रस्त हो कर झोपडी मे वाहर आई; आकाश.... गुरु—आकाश की ओर दोनों भौंहों से आघात कर मेघ की गरुगरु आवाज़ को उसने एक वार सुना।

पुबे वातास एल हठात् धेये, धानेर खेते खेलिये गेल ढेउ।
आलेर धारे दाँडियेछिलेम एका, माठेर माझे आर छिल ना केउ।
आमार पाने देखले किना चेये आमि जानि आर जाने सेइ मेये।
कालो ? ता से यतइ कालो होक, देखेछि तार कालो हरिण-चोख ॥

एमनि करे कालो काजल मेघ ज्येष्ठ मासे आसे ईशान कोणे।
एमनि करे कालो कोमल छाया आषाढ मासे नामे तमालवने।
एमनि करे श्रावण-रजनीते हठात् खुशि घनिये आसे चिते ॥
कालो ? ता से यतइ कालो होक, देखेछि तार कालो हरिण-चोख ॥

कृष्णकलि आमि तारेइ बलि, आर या बले बलुक अन्य लोक।
देखेछिलेम मयनापाड़ार माठे कालो मेयेर कालो हरिण-चोख।
माथार 'परे देय नि तुले वास, लज्जा पावार पाय नि अवकाश।
कालो ? ता से यतड कालो होक, देखेछि तार कालो हरिण-चोख ॥
१९३१

पुबे. ढेउ—पुरवैया हवा हठात् दौड़ी आई (और) धान के खेत में लहरें खिला गई, आलेर केउ—मेंड के किनारे (मैं) अकेला खड़ा था, मैदान में और कोई न था, आमार मेये—मेरी ओर देखा या नहीं (यह) मैं जानता हूँ और जानती है वह लड़की।

एमनि कोणे—जेठ के महीने में ईशान कोण में काजल की तरह काले मेघ इसी तरह आते हैं, एमनि वने—इसी तरह काली कोमल छाया आषाढ़ के महीने में तमाल वन में उतरती है; एमनि चिते—इसी तरह सावन की रात में हठात् चित्त में खुशी सघन हो उठती है।

आर लोक—दूसरे लोग और जो चाहें, कहें देखेछिलेम—देखा था, मयनापाड़ार माठे—मयनापाड़ा (एक काल्पनिक स्थान का नाम) के मैदान में; माथार....अवकाश—सिर पर (उसने) वस्त्र नहीं खींच लिया (उसने) लज्जित होने का अवसर ही नहीं पाया।

५६

तुमि कि केवलि छवि, शुधु पटे लिखा।
ओइ-ये सुदूर नीहारिका
यारा करे आछे भिड़ आकाशेर नीड़,
ओइ यारा दिनरात्रि
आलो हाते चलियाछे आँधारेर यात्री ग्रह तारा रवि,
तुमि कि तादेर मतो सत्य नओ।
हाय छवि, तुमि शुधु छवि?
नयन-समुखे तुमि नाइ,
नयनेर माझखाने नियेछ ये ठाँइ— आजि ताइ
श्यामले श्यामल तुमि, नीलिमाय नील।
आमार निखिल तोमाते पेयेछे तार अन्तरेर मिल।
नाहि जानि, केह नाहि जाने—
तव सुर वाजे मोर गाने,
कविर अन्तरे तुमि कवि—
नओ छवि, नओ छवि, नओ शुधु छवि ।।

१९३१

---

५६. तुमि. .लिखा—तुम क्या सिर्फ तस्वीर हो, केवल चित्रपट पर अंकित; ओइ-ये—वह जो; नीहारिका—छायापथ, आकाशगंगा; यारा.... भिड़—जिन्होने भीड लगा रखी है; ओइ—वे, यारा—जो सव; आलो..... यात्रा—अंधकार के यात्री हाथ में दीप (लिए) चले जा रहे हैं; तुमि...... नओ—तुम क्या उनलोगो जैसी सत्य नहीं हो; नयन . . नाइ—नयनो के सामने तुम नही हो; नयनेर.. ठाँइ—नयनो के भीतर तुमने घर जो कर लिया है, आजि . नील—इसीलिये आज तुम श्यामलता में श्यामल और नीलिमा मे नील हो; आमार. मिल—मेरे ससार ने तुममे अपने अन्तर का साम्य पाया है; नाहि . जाने—(मैं) नही जानता, कोई नही जानता; वाजे—ध्वनित होता है; मोर—मेरे; गाने—गान मे; कविर.. . कवि—कवि के अन्तर में तुम कवि हो; नओ—नही हो।

५७

हे आकाशविहारी नीरदवाहन जल,
आछिल शैलशिखरे-शिखरे तोमार लीलास्थल ।।
तुमि वरने वरने किरणे किरणे प्राते सन्ध्याय अरुणे हिरणे
दियेछ भासाये पवने पवने स्वपनतरणीदल ।।
शेषे श्यामल माटिर प्रेमे तुमि भुले एसेछिले नेमे,
कवे वाँधा पड़े गेले येखाने धरार गभीर तिमिरतल ।
आज पाषाणदुयार दियेछि टुटिया, कत युग परे एसेछ छुटिया ।
नील आकाशेर हारानो स्वपन गानेते समुच्छल ।।

१९३२

५८

प्राङ्गणे मोर शिरीषशाखाय फागुन मासे
की उच्छ्वासे
क्लान्तिविहीन फुल-फुटानोर खेला ।
क्षान्तकूजन शान्तविजन सन्ध्यावेला
प्रत्यह सेइ फुल्ल शिरीष प्रश्न शुधाय आमाय देखि,
'एसेछे कि ।'

---

५७ आछिल—था, वरने वरने—रग-रग मे, हिरणे—[illegible] मे; दियेछ . दल—सपने की नावो का दल पवन-पवन मे [illegible], शेषे . .नेमे—अन्त मे श्यामल मिट्टी के प्रेम मे भूल कर तुम [illegible], कबे . तल—जहाँ पृथ्वी का गभीर अधकारतल है (वहाँ) [illegible], आज . . .टुटिया—आज (मैने) पाषाण के द्वार को तोड दिया है, [illegible] छुटिया—कितने युगो के बाद तुम दौडे आए हो, नील समुच्छल—[illegible] खोया हुआ स्वप्न गान मे उद्वेलित है ।

५८ प्राङ्गणे मोर—मेरे आँगन मे, शिरीषशाखाय—[illegible] पर; फुल. खेला—फूल खिलाने का खेल, क्षान्त—विरत, प्रत्यह . कि—[illegible] दिन वही खिला हुआ शिरीष मुझे देख कर प्रश्न पूछता है (क्या) [illegible]

आर वछरेइ एमनि दिनेइ फागुन मासे
की उच्छ्वासे
नाचेर मातन लागल शिरीष-डाले
स्वर्गपुरेर कोन् नूपुरेर ताले।
प्रत्यह सेइ चञ्चल प्राण शुधियेछिल, 'शुनाओ देखि,
आसे नि कि।'

आवार कखन एमनि दिनेइ फागुन मासे
की आश्वासे
डालगुलि तार रइबे श्रवण पेते
अलख जनेर चरण-शब्दे मेते।
प्रत्यह तार मर्मरस्वर बलबे आमाय की विश्वासे,
'से कि आसे।'

प्रश्न जानाइ पुष्पविभोर फागुन मासे
की आश्वासे,
'हाय गो, आमार भाग्य-रातेर तारा,
निमेष-गणन हय नि कि मोर सारा।'

आर....ताले—गत वर्ष ऐसे ही दिन फाल्गुन मास में स्वर्गपुरी के किस नूपुर के ताल पर कितने उच्छ्वास से शिरीष की डालो में नाच का नशा लगा; सेइ—उसी; शुधियेछिल—पूछा था; शुनाओ.....कि—कहो तो सही, क्या (वह) नहीं आया; आवार कखन—फिर कब; डालगुलि तार—उसकी डालियाँ; रइबे......पेते—कान लगाए रहेंगी; शब्दे मेते—शब्द से मत्त हो कर; बलबे—कहेगा; आमाय—मुझसे; से....आसे—भला वह क्या आता है; प्रश्न. ...मासे—पुष्पो से विह्वल फाल्गुन मास में किस भरोसे प्रश्न पूछता हूँ; आमार... तारा—मेरी भाग्य-रात्रि के तारा; निमेष.. .सारा—मेरा क्षणों का

प्रत्यह वय प्राङ्गणमय वनेर वातास
एलोमेलो—
'से कि एल।'

१९३३

५९

तोमाय साजाब यतने कुसुमरतने
केयूरे ककणे कुङ्कुमे चन्दने।
कुन्तले वेष्टिब स्वर्णजालिका, कण्ठे दोलाइब मुक्तामालिका,
सीमन्ते सिन्दूर अरुण विन्दुर— चरण रञ्जिब अलक्त-अङ्कने।
सखीरे साजाब सखार प्रेमे अलक्ष्य प्राणेर अमूल्य हेमे।
साजाब सकरुण विरहवेदनाय, साजाब अक्षय मिलनसाधनाय—
मधुर लज्जा रचिब सज्जा युगल प्राणेर वाणीर बन्धने॥
१९३४

६०

ओ भाइ कानाइ, कारे जानाइ दु सह मोर दुःख।
तिनटे-चारटे पाश करेछि, नइ नितान्त मुक्ख॥

गिनना क्या समाप्त नही हुआ; प्रत्यह एलोमेलो—प्रति दिन [illegible]
मे वन की अस्तव्यस्त हवा बहती है, से एल—वह क्या आ गया।

५९. तोमाय कुसुम रतने—कुसुम-रत्नो से यत्न पूर्वक तुम्हें [illegible]
(तुम्हारा शृंगार करूँगा); केयूरे—बाजूबन्द मे, कुन्तले जालिका—[illegible]
की जाली से कुन्तल (केशो) को वेष्टित करूँगा, कण्ठे . मालिका—[illegible]
की माला कण्ठ मे झुलाऊँगा; रञ्जिब—रँगूंगा; अलक्त—[illegible], [illegible],
अंकने—चित्रण से, सखीरे प्रेमे—सखा के प्रेम से सखी का शृंगार करूँगा,
अलक्ष्य—अगोचर, हेमे—सोने से, विरहवेदनाय—विरह की वेदना से,
रचिब—रचूंगा।

६०. ओ दु.ख—ओ भाई कन्हाई, अपना दुःख [illegible],
तिनटे . मुक्ख—तीन-चार (परीक्षाएँ) पास की है, एकदम [illegible]

तुच्छ सा-रे-गा-मा'य आमाय गलद्घर्म घामाय।
वुद्धि आमार येमनि होक कान दुटो नय सूक्ष्म—
एइ वड़ो मोर दु ख कानाइ रे,
एइ वड़ो मोर दु.ख ।।
वान्ववीके गान शोनाते डाकते हय सतीशके,
हृदयखाना घुरे मरे ग्रचामोफोनेर डिस्के।
कण्ठखानार जोर आछे ताइ लुकिये गाइते भरसा ना पाइ—
स्वयं प्रिया वलेन, तोमार गला वड़ोइ रुक्ष—
एइ वडो मोर दु·ख कानाइ रे,
एइ वड़ो मोर दुःख ।।

१९३५

६१

पाये पडि शोनो भाइ गाइये,
मोदेर पाड़ार थोड़ा दूर दिये याइये ।।
हेथा सा रे गा मा-गुलि सदाइ करे चुलोचुलि
कड़ि कोमल कोथा गेछे तलाइये ।।

आमाय—मुझे, गलद् . घामाय—पसीने-पसीने कर देता है; वुद्धि.. .. सूक्ष्म—वुद्धि मेरी जैसी भी हो, दोनो कान (वेशक) सूक्ष्म नही है; एइ .रे—कन्हाई, मुझे यही वड़ा दु.ख है; वान्ववीके. सतीशके—वान्ववी को गान सुनाने के लिये मतीश को वुलाना पड़ता है; हृदयखाना .....डिस्के—ग्रामोफोन के डिस्क पर (मेरा) हृदय चक्कर खाता मरता है; कण्ठखानार . . पाइ—गले में जोर है, इसीलिये छिप कर गाने का साहस नही होता; वलेन—कहती हैं; तोमार.. ... रुक्ष—तुम्हारा गला वडा ही रूखा है।

६१. पाये गाइये—भाई गायक, सुनो, (तुम्हारे) पैरों पडता हूँ; मोदेर .याइये—हमलोगो के मुहल्ले से थोड़ा दूर हट कर जाइए; हेथा... .. चुलोचुलि—यहाँ सा-रे-ग-म आदि वरावर ही तुमुल झगड़ा करते हैं; कड़ि . . तलाइये— तीव्र-कोमल कहाँ नीचे चले गए है (दव गए हैं);

हेया आछे ताल-काटा वाजिये—
वाधावे से काजिये।
चौताले धामारे
के कोथाय घा मारे—
तेरे-केटे मेरे-केटे धाँ-धाँ-धाँइये ।।

१९३५

६२

वँधु कोन् आलो लागल चोखे !
बुझि दीप्तिरूपे छिले सूर्यलोके !
छिल मन तोमारि प्रतीक्षा करि
युगे युगे दिन रात्रि धरि,
छिल मर्मवेदनाघन अन्धकारे—
जन्म-जनम गेल विरहशोके।
अस्फुटमञ्जरी कुञ्जवने
सगीतशून्य विषण्ण मने
सङ्गीरिक्त चिरदु.खराति
पोहावे कि निर्जने शयन पाति !
सुन्दर हे, सुन्दर हे,
वरमाल्यखानि तव आनो वहे।

हेया—यहाँ, आछे—है, ताल-काटा—ताल भग करने वा[illegible]; वाजिये—बजाने वाला, वाधावे काजिये—वह विवाद आरम्भ कर देगा. धामारे—धमार (एक तालविशेष) में, के .मारे—कौन कहाँ प्रहार कर दे[illegible]।

६२. वँधु—वन्धु; कोन्—कौन-सा; आलो—प्रकाश, [illegible]—[illegible]; चोखे—आँखो मे, बुझि—सभवत., छिले—थे; छिल—था; तोमारि करि—तुम्हारी ही प्रतीक्षा करता; गेल—बीत गये, पोहावे [illegible]—क्या सूने मे सेज बिछाए (रात्रि) बीतेगी; वरमाल्य [illegible]—[illegible]

अवगुण्ठनछाया घुचाये दिये
हेरो लज्जित स्मित मुख शुभ आलोके ।।

१९३६

६३

मायावनविहारिणी हरिणी
गहनस्वपनसञ्चारिणी,
केन तारे धरिवारे करि पण
अकारण ।
थाक् थाक् निज-मने दूरेते,
आमि शुधु बाँशरिर सुरेते
परश करिब ओर प्राणमन
अकारण ।

१९३६

६४

ओगो डेको ना मोरे डेको ना ।
आमार काजभोला मन, आछे दूरे कोन्—
करे स्वपनेर साधना ।
धरा देवे ना अधरा छाया,
रचि गेछे मने मोहिनी माया—

वरमाला वहन कर लाओ; घुचाये दिये—दूर कर; हेरो—निहारो, देखो।

६३. केन . अकारण—अकारण क्यो उसे पकडने का सकल्प करता हूँ; थाक् दूरेते—अपने मे (लीन) दूर-दूर ही रहे; आमि . मन—मैं केवल बाँसुरी के सुर मे उसके प्राणमन का स्पर्श करूँगा ।

६४ डेको मोरे—मुझे पुकारो मत, आमार—मेरा, काजभोला—काम-काज को भूला हुआ; आछे .. कोन्—किस दूर पर है, करे .. .साधना —सपनों की मनुहार करता है; धरा . .छाया—न पकड़ाई देने वाली छाया पकडाई नही देगी; रचि .. .मने—मन में सृष्टि कर गया है;

जीर्ण पुरातन याक भेसे याक,
याक भेसे याक, याक भेसे याक।
आमरा शुनेछि ओइ मा भैः मा भैः मा भैः
कोन् नूतनेरइ डाक।
भय करि ना अजानारे,
रुद्ध ताहारि द्वारे दुर्दाड़ वेगे धाओ।।

१९३८

६६

आमरा नूतन यौवनेरइ दूत।
आमरा चञ्चल, आमरा अद्भुत।
आमरा वेड़ा भाङि,
आमरा अशोकवनेर राङा नेशाय राङि।
झञ्झार वन्धन छिन्न करे दिइ— आमरा विद्युत्।।
आमरा करि भुल—
अगाध जले झाँप दिये युझिये पाइ कूल।
येखाने डाक पड़े जीवन-मरण-झड़े
आमरा प्रस्तुत।

१९३८

कौतुक आवे; भाङ्नेर—तोडने का (विनाश का); भेसे याक—वह जाय; आमरा मा भैः—हम लोगो ने किसी नवीन की ही वह 'मा भैः मा भै' मा भैः' पुकार सुनी है; भय ..अजानारे—अज्ञात से भय नही करते; रुद्ध ....द्वारे —उसीके रुद्ध (वन्द) दरवाज़े की ओर; दुर्दाड़ .. धाओ—दुर्दान्त वेग से दौडो।

६६. आमरा.. दूत—हम लोग नवीन यौवन के ही दूत है, आमरा. .. भाङि—हम लोग वाड को तोडते है; आमरा. राङि—हम लोग अशोकवन के लाल नशे में रजित होते है; झञ्झार दिइ—तूफान के वन्धन को (हम लोग) छिन्न-भिन्न कर देते है; आमरा .भुल—हम लोग भूल करते है; अगाध ... कूल—अगाध जल में कूद जूझते हुए किनारा पाते है, येखाने. . .प्रस्तुत—जीवन-मरण की आँधी में, जहाँ (भी हमारी) पुकार होती है, हम लोग प्रस्तुत रहते हैं।

६७

समुखे शान्तिपारावार—
भासाओ तरणी, हे कर्णधार।
तुमि हवे चिरसाथि, लओ लओ हे क्रोड पाति—
असीमेर पथे ज्वलिवे ज्योति ध्रुवतारकार।
मुक्तिदाता तोमार क्षमा, तोमार दया,
हवे चिरपाथेय चिरयात्रार।
हय येन मर्तेर वन्धन क्षय, विराट विश्व वाहु मेलि लय—
पाय अन्तरे निर्भय परिचय महा-अजानार॥

१९३९

६८

ओइ महामानव आसे।
दिके दिके रोमाञ्च लागे मर्तधूलिर घासे घासे।
सुरलोके वेजे ओठे शङ्ख, नरलोके वाजे जयडङ्क—
एल महाजन्मेर लग्न।
आजि अमारात्रिर दुर्गतोरण यत धूलितले हये गेल भग्न।

---

६७ समुखे . पारावार—सामने शान्ति का सागर है, भासाओ—तिराओ, तुमि . पाति—तुम चिरसाथी होगे, गोद पसार कर (मुझे) [illegible], असीमेर. ध्रुवतारकार—ध्रुवतारा की ज्योति असीम के पथ में [illegible] तोमार—तुम्हारी; हवे . यात्रार—चिर-यात्रा का चिर-पाथेय ([illegible] सवल) होगी, हय . क्षय—ऐसा हो कि मृत्युलोक के बन्धन [illegible] हो जायें, मेलि लय—पसार कर ले, पाय—पाये, अजानार—[illegible]।

६८ ओइ . आसे—वह (देखो) महामानव आता है, दिके. [illegible] —दिशा-दिशा मे रोमाञ्च का सचार होता है [illegible]—[illegible], [illegible] शङ्ख—शख वज उठता है, वाजे—[illegible] है, जयडङ्क—[illegible] एल. . .लग्न—महाजन्म का लग्न आया है [illegible]—[illegible] अमावस्या की रात्रि के दुर्ग के सभी तोरण धूलि[illegible]

उदयशिखरे जागे 'माभैः माभैः' नवजीवनेर आश्वासे।
'जय जय जय रे मानव-अभ्युदय' मन्द्रि उठिल महाकाशे ।।

१९४०

६९

हे नूतन,
देखा दिक आर-वार जन्मेर प्रथम शुभक्षण।
तोमार प्रकाश होक कुहेलिका करि उद्घाटन
सूर्येर मतन।
रिक्ततार वक्ष भेदि आपनारे करो उन्मोचन।
व्यक्त होक जीवनेर जय,
व्यक्त होक तोमा-माझे असीमेर चिरविस्मय।
उदयदिगन्ते शङ्ख वाजे, मोर चित्त-माझे
चिरनूतनेरे दिल डाक
पँचिशे वैशाख ।।

१९४१

उदयशिखरे—उदयगिखर पर, उदयाचल के शिखर पर; जागे—जाग उठता है; मा भैः—'भय मत करो', मन्द्रि उठिल—मन्द्रित हो उठा।

६९. देखा ... क्षण—जन्म का प्रथम शुभक्षण फिर से दर्शन दे; तोमार ... मतन—कुहेलिका (कुहासे) को उद्घाटित कर सूर्य के समान तुम प्रकट होओ, रिक्ततार उन्मोचन—रिक्तता की छाती को भेद कर अपने को उन्मुक्त करो; होक—हो; तोमा-माझे—तुम्हारे भीतर; मोर—मेरे; चिर...... वैशाख—पच्चीसवें वैशाख (रवीन्द्रनाथ की जन्म-तिथि) ने चिरनवीन का आह्वान किया है।

स्वदेश

१

एक सूत्रे बाँधियाछि सहस्रटि मन,
एक कार्यें सँपियाछि सहस्र जीवन—
वन्दे मातरम् ॥
आसुक सहस्र वाधा, वाधुक प्रलय,
आमरा सहस्र प्राण रहिव निर्भय—
वन्दे मातरम् ॥

आमरा डराइव ना झटिका-झञ्झाय,
अयुत तरङ्ग वक्षे सहिव हेलाय।
टुटे तो टुटुक एइ नश्वर जीवन,
तबु ना छिँड़िबे कभु ए दृढ बन्धन—
वन्दे मातरम् ॥

१८७७

२

तोमारि तरे मा, सँपिनु देह। तोमारि तरे मा, सँपिनु प्राण।
तोमारि शोके ए आँखि बरषिबे, ए वीणा तोमारि गाहिबे गान।

---

१. एक मन—एक सूत्र मे (हमने) सहस्रो मन बाँधे हैं, एक जीवन—एक कार्य मे (हमने) सहस्रो जीवन सौंपे हैं, आसुक—आये, वाधुक प्रलय—प्रलय मच जाय, रहिव—रहेंगे, आमरा [illegible]—[illegible] आँधी-तूफान से नही डरेंगे, अयुत. हेलाय—हजारों तरंगो को [illegible] साथ छाती पर सहेंगे; अयुत—दस सहस्र, टुटे जीवन—[illegible] टूटे तो टूटे; तबु. बन्धन—तोभी यह दृढ बन्धन कभी नहीं टूटेगा।

२. तोमारि . देह—तुम्हारे ही लिये, माँ, (मैंने) देह सौंपी है, तोमारि बरषिबे—तुम्हारे ही शोक में ये आँखे बरसेंगी; ए—[illegible] गाहिबे—[illegible]

यदिओ ए वाहु अक्षम दुर्वल, तोमारि कार्य साधिबे।
यदिओ ए असि कलङ्के मलिन, तोमारि पाश नाशिबे।
यदिओ हे देवी, शोणिते आमार किछुइ तोमार हवे ना,
तवु ओगो माता, पारि ता ढालिते एकतिल तव कलङ्क क्षालिते,
निभाते तोमार यातना।
यदिओ जननी, यदिओ आमार ए वीणाय किछु नाहिक वल,
की जानि यदि मा, एकटि सन्तान जागि उठे शुनि ए वीणा-तान ॥
१८७७

२

आगे चल्, आगे चल्, भाइ।
पडे थाका पिछे, मरे थाका मिछे,
बेँचे मरे किवा फल, भाइ।
आगे चल्, आगे चल्, भाइ॥
प्रति निमेषेइ येतेछे समय,
दिन क्षण चेये थाका किछु नय—
'समय समय' क'रे पाँजि पुँथि ध'रे
समय कोथा पावि, वल् भाइ।
आगे चल्, आगे चल्, भाइ॥

यदिओ—यद्यपि; तोमारि .. साधिबे—तुम्हारा ही कार्य साधन करेंगे; पाश—वन्धन; नाशिबे—नष्ट करेंगे; शोणिते . ना—मेरे रक्त से तुम्हारा कुछ भी न होगा (तुम्हारा कोई भी काम पूरा न होगा); तवु—तौभी, पारि....... ढालिते—उसे उँडेल सकता हूँ; एकतिल क्षालिते—तुम्हारा तिल-भर कलंक धोने के लिये; निभाते—(यातनारूपी आग) वुझाने के लिये; यदिओ.. ...वल —यद्यपि, हे जननी, मेरी इस वीणा में कुछ भी वल नही; की. . तान—क्या जानें, माँ, कही एक भी सन्तान इस वीणा की तान को सुन कर जाग उठे।

२ आगे चल्—आगे वढ चल, भाइ—भाई; पड़े. . मिछे—पीछे पडे रहना, व्यर्थ मरते रहना है, वेँचे . भाइ—भाई, वचने-मरने का क्या फल है; प्रति ..समय—प्रति क्षण समय जा ही रहा है, दिन .नय—दिन-पल देखते रहना (भली-वुरी साइत गिनते रहना) कुछ नही वेमतलव है; समय . ध'रे—पंजिका-पोथी लिए 'समय समय' करते; समय . भाइ—वोलो भाई, समय कहाँ पाओगे।

पिछाये ये आछे तारे डेके नाओ
　　नियें याओ साथे करे—
केह नाहि आसे, एका चले याओ
　　महत्त्वेर पथ धरे।
पिछु हते डाके मायार काँदन,
छिँड़े चले याओ मोहेर बाँधन
साधिते हइबे प्राणेर साधन,
　　मिछे नयनेर जल, भाइ।
　　आगे चल्, आगे चल्, भाइ॥

चिरदिन आछि भिखारिर मतो
　　जगतेर पथपाशे—
यारा चले याय कृपाचक्षे चाय,
　　पदधुला उड़े आसे।
धूलिशय्या छाड़ि उठो सबे,
मानवेर साथे योग दिते हबे—
ता यदि ना पार चेये देखो तबे,
　　ओइ आछे रसातल, भाइ
　　आगे चल्, आगे चल् भाइ॥

पिछाये ..नाओ—जो पिछड गया है, उसे पुकार लो; निये ..करे—लेते जाओ; केह ..धरे—(अगर) कोई नही आवे, महत्व का रास्ता पकड़ चले जाओ, पिछे ..काँदन—पीछे से माया-ममता का क्रन्दन पुकारता; छिँड़े . बाँधन—मोह के बधन छिन्न कर चले जाओ; साधिते ..साधन—की साधना साधनी होगी; मिछे ..जल—आँखो के आँसू व्यर्थ है।
चिरदिन ..पथपाशे—संसार के रास्ते के किनारे (हम) चिरदिन भिखारी समान है, यारा ..चाय—जो निकल जाता है (वह) दया की दृष्टि से देखता है; पदधुला . आसे—पैरो की धूलि ही उड कर आती है; छाड़ि—छोड़; मानवेर ..हबे—मानव के साथ योग देना होगा; ता.. तबे—अगर न कर सको, तब देखो; ओइ ..रसातल—वह रहा रसातल।

४

आमरा मिलेछि आज मायेर डाके।
घरेर हये परेर मतन भाइ छेड़े भाइ कदिन थाके।।
प्राणेर माझे थेके थेके आय ब'ले ओइ डेकेछे के,
सेइ गभीर स्वरे उदास करे— आर के कारे घरे राखे।।
येथाय थाकि येखाने बाँधन आछे प्राणे प्राणे,
प्राणेर टाने टेने आने— सेइ प्राणेर वेदन जाने ना के।।
मान अपमान गेछे घुचे, नयनेर जल गेछे मुछे—
नवीन आशे हृदय भासे भाइयेर पाशे भाइके देखे।।
कत दिनेर साधनफले मिलेछि आज दले दले—
आज घरेर छेले सबाइ मिले देखा दिये आय रे माके।।

१८८८

५

आमाय बोलो ना गाहिते बोलो ना।
ए कि शुधु हासि खेला, प्रमोदेर मेला, शुधु मिछेकथा छलना।।

---

४. आमरा. ..डाके—हम लोग आज माँ की पुकार पर मिले है (एकत्र हुए है); घरेर.. ...थाके—घर का हो कर पराये की तरह भाई को छोड भाई भला कितने दिन रह सकता है; प्राणेर ... के—प्राणो के भीतर रह-रह कर 'आ' कह कर वह किसने पुकारा है; सेइ . .राखे—वह गभीर स्वर उदासीन कर देता है, अब और कौन किसे पकडकर रखे; येथाय.. ...प्राणे—(हम) जहाँ रहते है, जहाँ प्राण-प्राण में बन्धन है, प्राणेर.. ..के—प्राणो का आकर्पण (वही) खीच लाता है—प्राणों (के आकर्पण) की उस वेदना (व्याकुलता) को भला कौन नहीं जानता; गेछे घुचे—लुप्त हो गए है; नयनेर.... मुछे—आँखो का पानी सूख गया है; नवीन . . .देखे—भाई की बगल में भाई को देख कर नवीन आशा में हृदय बहा जाता है; कत . दले—कितने दिनो की साधना के फल से आज दल के दल (हम लोग) मिले है (एकत्र हुए है); आज ... .माके—आज घर के सभी लड़के मिल कर माँ से मिल आओ।

५. आमाय.. . गाहिते—मुझसे मत कहो गाने के लिये; एकि......छलना —*यह क्या केवल हँसी-खुशी का खेल है, आमोद-प्रमोद का मेला है, केवल मिथ्या,*

ए ये नयनेर जल, हताशेर श्वास, कलङ्केर कथा, दरिद्रेर आशा,
ए ये बुक-फाटा दुखे गुमरिछे बुके गभीर मरमवेदना।
ए कि शुधु हासि खेला, प्रमोदेर मेला, शुधु मिछेकथा छलना।।
एसेछि कि हेथा यशेर काडालि कथा गेँथे गेँथे निते करतालि—
मिछे कथा कये, मिछे यश लये, मिछे काजे निशियापना।
के जागिबे आज, के करिबे काज, के घुचाते चाहे जननीर लाज—
कातरे काँदिबे, मायेर पाये दिबे सकल प्राणेर कामना।
ए कि शुधु हासि खेला, प्रमोदेर मेला, शुधु मिछेकथा छलना।।
१८९२

६

आनन्दध्वनि जागाओ गगने।
के आछ जागिया पुरबे चाहिया,
बलो 'उठ उठ' सघने गभीरनिद्रामगने।।
हेरो तिमिररजनी याय ओइ, हासे उषा नव ज्योतिर्मयी—
नव आनन्दे, नव जीवने,
फुल्ल कुसुमे, मधुर पवने, विहगकलकूजने।।
हेरो आशार आलोके जागे शुकतारा उदय-अचलपथे,
किरणकिरीटे तरुण तपन उठिछे अरुणरथे।

(केवल) छलना है; ए आश—यह तो आँखों के आँसू, निराशा की श्वास, कलंक की बात और दरिद्र की आशा है, बुक वेदना—छाती फटने वाले दुःख से गभीर मर्म वेदना छाती में उफन रही है, एसेछि काडालि—यहाँ क्या यश का भिखारी बन कर आया हूँ; कथा करतालि—बातें गूँथ-गूँथ वाहवाही लेने; मिछे कये—मिथ्या बातें बना कर, मिछे लये—मिथ्या यश ले कर, मिछे काजे—व्यर्थ कामों में, के काज—आज कौन जागेगा कौन कार्य करेगा; के लाज—कौन दूर करना चाहता है जननी की लज्जा, कातरे कामना—(कौन) कातर हो कर क्रन्दन करेगा, माँ के पैरों में प्राणों की सभी कामनाएँ (न्योछावर कर) देगा।

६ जागाओ—जगाओ; के चाहिया—पूर्व की ओर ताकते हुए (तुम) कौन जाग रहे हो, बलो—बोलो, उठ—उठो, हेरो—देखो, याय—जा रही है; ओइ—वह, हासे—हँसती है; तपन—सूर्य, उठिछे—उठ रहा है,

चलो याइ काजे मानवसमाजे, चलो वाहिरिया जगतेर माझे—
थेको ना मगन शयने, थेको ना मगन स्वपने ।।
याय लाज त्रास, आलस विलास कुहक मोह याय।
ओइ दूर हय शोक संशय दुःख स्वपनप्राय।
फेलो जीर्ण चीर, पर नव साज, आरम्भ करो जीवनेर काज—
सरल सवल आनन्दमने, अमल अटल जीवने ।।

१८९२

७

अयि भुवनमनोमोहिनी,
अयि निर्मलसूर्यकरोज्ज्वल धरणी जनकजननीजननी ।।
नील-सिन्धुजल-धौत-चरणतल, अनिल-विकम्पित-श्यामल-अञ्चल,
अम्वर-चुम्वित-भाल-हिमाचल, शुभ्र-तुषार-किरीटिनी ।।
प्रथम प्रभात उदय तव गगने, प्रथम सामरव तव तपोवने,
प्रथम प्रचारित तव वनभवने ज्ञानधर्म कत काव्यकाहिनी।
चिरकल्याणमयी तुमि धन्य, देशविदेशे वितरिछ अन्न—
जाह्नवीयमुना विगलित करुणा पुण्यपीयूषस्तन्यवाहिनी ।।

१८९६

८

के एसे याय फिरे फिरे आकुल नयननीरे।
के वृथा आशाभरे चाहिछे मुख-'परे।
से ये आमार जननी रे ।।

याइ—(हम) जायें; वाहिरिया—वाहर होकर; थेको . शयने—निद्रा में मग्न न रहो; स्वपने—स्वप्न में; याय—जा रहे हैं; हय—हो रहे हैं; स्वपनप्राय—स्वप्न के समान; फेलो—फेंको; पर—पहनो।

७. कत—कितने; वितरिछ—वितरण कर रही हो।

८ के .. फिरे—कौन आकर लौट-लौट जाती है; चाहिछे—निहार रही है; मुख'परे—मुख पर; से......रे—वह तो मेरी जननी है।

काहार सुधामयी वाणी मिलाय अनादर मानि।
काहार भाषा हाय भुलिते सबे चाय।
  से ये आमार जननी रे।।
क्षणेक स्नेह-कोल छाडि चिनिते आर नाहि पारि।
आपन सन्तान करिछे अपमान—
  से ये आमार जननी रे।।
पुण्य कुटिरे विषण्ण के वसि साजाइया अन्न।
से स्नेह-उपहार रुचे ना मुखे आर—
  से ये आमार जननी रे।।

१९००

९

जननीर द्वारे आजि ओइ शुन गो शङ्ख बाजे।
थेको ना थेको ना ओरे भाइ, मगन मिथ्या काजे।।
  अर्घ्य भरिया आनि धरो गो पूजार थालि,
  रतनप्रदीपखानि यतने आनो गो ज्वालि,
  भरि लये पाणि वहि आनो फुलडालि,
    मार आह्वानवाणी रटाओ भुवन-माझे।।

काहार—किसकी, मिलाय मानि—अपमान बोध पर [illegible] हो जाती है; भुलिते . चाय—सभी भूलना चाहते हैं।

कोल—गोद; छाडि—छोड़ने पर, चिनिते पारि—और [illegible] पाते; आपन. अपमान—अपनी ही सन्तान (जिनका) [illegible]।

कुटिरे—झोपडी मे; के. .अन्न—कौन [illegible], से—वह; रुचे . आर—मुंह मे और नही रचता (अच्छा लगता)।

९ जननीर बाजे—जननी के द्वार पर आज [illegible] है, थेको ना—मत रहो, मगन—मग्न, भरिया—[illegible], [illegible]—ला कर रखो; थालि—थाली; यतने—यत्न पूर्वक, ज्वालि—[illegible] भरि . डालि—दोनो हाथ भर कर फूल की डाली ले आओ; मार—[illegible]

आजि प्रसन्न पवने नवीन जीवन छुटिछे।
आजि प्रफुल्ल कुसुमे नव सुगन्ध उठिछे।
आजि उज्ज्वल भाले तोलो उन्नत माथा,
नव सगीतताले गाओ गम्भीर गाथा।
परो माल्य कपाले नवपल्लव-गाँथा,
शुभ सुन्दर काले साजो साजो नव साजे।।

१९०३

१०

हे भारत, आजि तोमारि सभाय शुन ए कविर गान।
तोमार चरणे नवीन हरषे एनेछि पूजार दान।
एनेछि मोदेर देहेर शकति, एनेछि मोदेर मनेर भकति,
एनेछि मोदेर धर्मेर मति, एनेछि मोदेर प्राण।
एनेछि मोदेर श्रेष्ठ अर्घ्य तोमारे करिते दान।।

काञ्चन-थालि नाहि आमादेर, अन्न नाहिको जुटे।
या आछे मोदेर एनेछि साजाये नवीन पर्णपुटे।
समारोहे आज नाइ प्रयोजन— दीनेर ए पूजा, दीन आयोजन—
चिरदारिद्रय करिव मोचन चरणेर धुला लुटे।
सुरदुर्लभ तोमार प्रसाद लइव पर्णपुटे।।

रटाओ भुवन-माझे—संसार मे प्रचारित कर दो; छुटिछे—दौड रहा है; परो—पहनो; काले—समय मे।

१०. आजि . .गान—आज अपनी सभा मे इस कवि का गान सुनो; एनेछि—लाया हूँ; मोदेर—अपनी; देहेर शकति—देह की शक्ति; भकति—भक्ति; तोमारे ... दान—तुम्हे अर्पित करने के लिये।

नाहि—नही है; आमादेर—हम लोगो के पास; अन्न..... जुटे—अन्न नही जुटता; या.... साजाये—जो हमलोगो के पास है, सँजो कर ले आए हैं; समारोहे—समारोह (धूमधाम) का; नाइ—नही है; ए—यह; करिब—करेगे; चरणेर... लुटे—चरणो की धूलि को लूट कर; लइब—लेंगे।

राजा तुमि नह, हे महातापस, तुमिइ प्राणेर प्रिय।
भिक्षाभूषण फेलिया परिब तोमारि उत्तरीय।
दैन्येर माझे आछे तव धन, मौनेर माझे रयेछे गोपन
तोमार मन्त्र अग्निवचन— ताइ आमादेर दियो।
परेर सज्जा फेलिया परिब तोमारि उत्तरीय॥

दाओ आमादेर अभयमन्त्र, अशोकमन्त्र तव।
दाओ आमादेर अमृतमन्त्र, दाओ गो जीवन नव।
ये जीवन छिल तव तपोवने, ये जीवन छिल तव राजासने,
मुक्त दीप्त से महाजीवने चित्त भरिया लव।
मृत्युतरण शङ्काहरण दाओ से मन्त्र तव॥
१९०३

११

आमार सोनार बांला, आमि तोमाय भालोबासि।
चिरदिन तोमार आकाश, तोमार बातास, आमार प्राणे बाजाय बाँशि॥
ओ मा, फागुने तोर आमेर वने घ्राणे पागल करे,
मरि हाय, हाय रे—
ओ मा, अघ्राने तोर भरा खेते की देखेछि मधुर हासि॥

नइ—नही हो; तुमिइ—तुम्ही, फेलिया—फेंक कर, परिब—[illegible], तोमारि—तुम्हारा ही; आछे—है, ताइ... दियो—वही [illegible], परेर—दूसरे की।

दाओ—दो; ये—जो; छिल—था, से—उस, भरिया लव—[illegible]।

११ आमार—मेरी, सोनार बांला—सोने की [illegible], ('[illegible]' [illegible] 'बांग्ला' पढा जाता है); आमि भालोबासि—मैं तुम्हें [illegible] तोमार—तुम्हारा, बातास—हवा; आमार बाँशि—मेरे [illegible] बजाते हैं; मा—मा; फागुने करे—फागुन में तेरे [illegible] पागल करती है; मरि—(सौन्दर्य आदि के दर्शन से [illegible] अव्यय) बलिहारी है! अघ्राने—अगहन में, मार्गशीर्ष में; तोर... [illegible]— तेरे भरे हुए खेतों में (मैंने) कैसी मधुर [illegible] देखी है।

की शोभा, की छाया गो, की स्नेह, की माया गो—
की आँचल विछायेछ वटेर मूले, नदीर कूले कूले।
मा, तोर मुखेर वाणी आमार काने लागे सुधार मतो,
मरि हाय, हाय रे—
मा, तोर वदनखानि मलिन हले आमि नयनजले भासि।
तोमार एइ खेलाघरे शिशुकाल काटिल रे,
तोमारि धुलामाटि अङ्गे माखि धन्य जीवन मानि।
तुइ दिन फुराले सन्ध्याकाले की दीप ज्वालिस घरे,
मरि हाय, हाय रे—
तखन खेलाधुला सकल फेले तोमार कोले छुटे आसि॥
धेनु-चरा तोमार माठे, पारे यावार खेयाघाटे,
सारादिन पाखि-डाका छायाय-ढाका तोमार पल्लीबाटे,
तोमार धाने-भरा आङिनाते जीवनेर दिन काटे,
मरि हाय, हाय रे—
ओ मा, आमार ये भाइ तारा सवाइ तोमार राखाल तोमार चाषि॥

विछायेछ—विछाया है; तोर .मतो—तेरे मुख की वाणी मेरे कानो को अमृत के समान लगती है। तोर. भासि—तेरा चेहरा उदास होने पर मै आँखो के जल मे वह जाता हूँ, तोमार ....रे—तुम्हारे इस क्रीडागृह में वचपन वीता; तोमारि मानि—तुम्हारी ही धूल-मिट्टी शरीर में मल (अपने) जीवन को धन्य मानता हूँ, तुइ घरे—दिन वीतने पर सन्ध्या के समय घर में तू कैसा दीप जलाती है!

तखन ..आसि—उस समय सव खेल-कूद छोड कर तुम्हारी गोद दौड आता हूँ; धेनु .माठे—तुम्हारे मैदान में गाये चरती है; पारे.. घाटे—पार जाने के खेवा-घाट पर; सारा वाटे—समस्त दिन पक्षियो से कूजित, छाया से ढके तुम्हारे गाँवो के रास्ते पर; तोमार . काटे—तुम्हारे धान से भरे आँगन मे जीवन के दिन कटते है; आमार. चाषि—तुम्हारे चरवाहे, तुम्हारे किसान—वे सभी मेरे भाई जो हैं।

ओ मा, तोर चरणेते दिलेम एइ माथा पेते—
दे गो तोर पायेर धुला, से ये आमार माथार मानिक हवे
ओ मा, गरिबेर धन या आछे ताइ दिब चरणतले,
मरि हाय, हाय रे—
आमि परेर घरे किनब ना आर भूषण ब'ले गलार फाँसि ॥
१९०५

१२

एवार तोर मरा गाङे वान एसेछे, 'जय मा' ब'ले भासा तरी ॥
ओरे रे ओरे माझि, कोथाय माझि, प्राणपणे भाइ, डाक दे आजि—
तोरा सवाइ मिले बैठा ने रे, खुले फेल् सब दडादडि ॥
दिने दिने बाड़ल देना, ओ भाइ, करलि ने केउ वेचा केना—
हाते नाइ रे कड़ा कड़ि ।
घाटे बाँधा दिन गेल रे, मुख देखावि केमन क'रे—
ओरे दे खुले दे, पाल तुले दे, या हय हवे बाँचि मरि ॥
१९०५

तोर....पेते—तुम्हारे चरणो मे (मैंने) यह सिर झुका दिया है, दे. ..धुला—अपने पैरो की धूल दे; से. . .हवे—वह मेरे सिर का माणिक्य होगी; गरिबेर . तले—गरीब का जो धन है वही (तुम्हारे) चरणों मे दूंगा; आमि.. फांसि—मै दूसरे के घर गले की फांसी को आभूषण मान कर नही खरीदूंगा।

१२ एवार. .तरी—इस बार तुम्हारे मरे हुए नद में बन्या (बाढ़) आई है, 'जय मां' कह कर नौका तिरा दे; माझि—मांझी, मल्लाह; कोथाय—कहां है; डाक ...आजि—आज हांक लगा, तोरा ..रे—तुम सभी मिल कर डांड सँभालो; खुले दडि—सब रस्सा-रस्सी खोल डालो, दिने. देना—दिन-दिन देना (ऋण) बढ़ा, करलि केना—किसीने देखा-भाला नहीं किया; हाते. कड़ि—हाथ में एक कौडी भी नहीं है, घाटे रे—घाट पर बँधे-बँधे दिन चला गया, मुख .क'रे—मुख कैसे दिखाओगे, पाल दे—पाल चढा दे, या मरि—जो होना है हो, बचे या मरे।

23

१३

ओ आमार देशेर माटि, तोमार 'परे ठेकाइ माथा।
तोमाते विश्वमयीर, तोमाते विश्वमायेर आँचल पाता ।।
तुमि मिशेछ मोर देहेर सने,
तुमि मिलेछ मोर प्राणे मने,
तोमार ओइ श्यामलवरन कोमल मूर्ति मर्मे गाँथा ।।
तोमार कोले जनम आमार, मरण तोमार बुके।
तोमार 'परेइ खेला आमार दुःखे सुखे।
तुमि अन्न मुखे तुले दिले,
तुमि शीतल जले जुड़ाइले,
तुमि ये सकल-सहा सकल-वहा मातार माता ।।
अनेक तोमार खेयेछि गो, अनेक नियेछि मा—
तवु जानि ना-ये की वा तोमाय दियेछि मा।
आमार जनम गेल मिछे काजे,
आमि काटानु दिन घरेर माझे—
तुमि वृथा आमाय शक्ति दिले शक्तिदाता ।।

१९०५

---

१३. ओ.....माथा—ओ मेरे देश की मिट्टी, तुम पर मस्तक टिकाता हूँ; तोमाते—तुम मे, पाता—फैला हुआ है; तुमि ....सने—तुम मेरी देह मे घुली-मिली हो, तुमि ..मने—तुम मेरे मन-प्राण में समाई हो; तोमार ..... गाँथा—तुम्हारी वही श्यामवर्ण कोमल मूर्ति अन्तरतम में गुँथी हुई है; तोमार. . बुके—तुम्हारी गोद में मेरा जन्म हुआ है, तुम्हारी छाती पर मेरी मृत्यु होगी; तोमार . सुखे—सुख, दुख मे तुम्हारे ऊपर ही मेरी क्रीडा होगी; तुमि.. .. दिले—तुमने मुँह मे अन्न दिया; तुमि . . जुड़ाइले—तुमने शीतल जल से जुड़ा दिया (शीतल किया); तुमि. माता—तुम सव सहने वाली, सव वहन करने वाली, माता की माता जो हो; अनेक... .मा—माँ, वहुत तुम्हारा खाया है, वहुत (तुम्हारा) लिया है; तवु... .दियेछि—इतना होने पर भी यह नही जानता कि भला तुम्हें क्या दिया है; आमार......काजे—व्यर्थ के कामो में मेरा जन्म गया, आमि.... .माझे—मैंने घर (ही) के भीतर दिन काट दिया; आमाय—मुझे; शक्ति दिले—शक्ति दी।

१४

ओदेर बाँधन यतइ शक्त हबे ततइ बाँधन टुटबे,
मोदेर ततइ बाँधन टुटबे।
ओदेर यतइ आँखि रक्त हबे मोदेर आँखि फुटबे,
ततइ मोदेर आँखि फुटबे॥
आजके ये तोर काज करा चाइ, स्वप्न देखार समय तो नाइ—
एखन ओरा यतइ गर्जाबे भाइ, तन्द्रा ततइ छुटबे,
मोदेर तन्द्रा ततइ छुटबे॥
ओरा भाङते यतइ चाबे जोरे गड़बे ततइ द्विगुण करे,
ओरा यतइ रागे मारबे रे घा ततइ ये ढेउ उठबे॥
तोरा भरसा ना छाड़िस कभु, जेगे आछेन जगत्प्रभु—
ओरा धर्म यतइ दलबे ततइ धुलाय ध्वजा लुटबे,
ओदेर धुलाय ध्वजा लुटबे॥

१९०५

१५

तोर आपन जने छाड़बे तोरे,
ता ब'ले भावना करा चलबे ना।

---

१४. ओदेर टुटबे—उन लोगो का बन्धन जितना ही [illegible] होगा, बन्धन उतना ही टूटेंगे, मोदेर—हम लोगो के; ओदेर. फुटबे—[illegible] की आँखे जितनी ही लाल होगी, उतनी ही (हम लोगो की) आँखें [illegible]। आजके ....नाइ—आज तो तुम्हे काम करना चाहिए, स्वप्न देखने का तो समय नहीं है; एखन .. छुटबे—भाई, इस समय वे जितना ही गरजेंगे, उतनी ही (हम लोगो की) तन्द्रा छूटेगी, ओरा करे—वे जितना ही जोर से तोड़ना (ध्वस्त करना) चाहेंगे, उतना ही दुगुना हो कर निर्माण होगा; ओरा उठबे—[illegible] कर वे जितना ही प्रहार करेंगे, उतने ही हिलोरे उठेंगे, तोरा प्रभु—[illegible] लोग कभी भरोसा न छोडना, संसार के मालिक जाग रहे हैं, ओरा . लुटबे—वे जितना ही धर्म को दलेंगे, उतना ही (उनकी) ध्वजा धूल मे लोटेगी।

१५. तोर. ना—तेरे स्वजन तुझे छोड देंगे, इस [illegible]

ओ तोर आशालता पड़बे छिँड़े,
हयतो रे फल फलबे ना ।।
आसबे पथे आँधार नेमे, ताइ ब'लेइ कि रइबि थेमे—
ओ तुइ बारे बारे ज्वालबि बाति,
हयतो बाति ज्वलबे ना ।।
शुने तोमार मुखेर वाणी आसबे घिरे बनेर प्राणी—
हयतो तोमार आपन घरे
पाषाण हिया गलबे ना ।।
बद्ध दुयार देखलि ब'ले अमनि कि तुइ आसबि चले—
तोरे बारे बारे ठेलते हबे,
हयतो दुयार टलबे ना ।।

१९०५

१६

विधिर बाँधन काटबे तुमि एमन शक्तिमान—
तुमि कि एमनि शक्तिमान ।
आमादेर भाडागड़ा तोमार हाते एमन अभिमान—
तोमादेर एमनि अभिमान ।।

से तो नही चलेगा; तोर.. .ना—तेरी आशालता टूट कर गिर जाएगी, हो सकता है कि (उस में) फल न फले, आसबे. ...थेमे—रास्ते में अन्धकार उतर आएगा, तो क्या इसीलिये (तू) रुक रहेगा; ओ. . ..ना—ओ, तू बार-बार बत्ती जलाएगा, हो सकता है, बत्ती न जले; शुने.. .. प्राणी—तुहारे मुख की वाणी सुन कर वन के प्राणी (तुम्हे) आ घेरेंगे; हयतो.. ना—हो सकता है, तुम्हारे अपने घर मे पत्थर के हृदय न गलें; बद्ध... ..चले—दरवाज़ा बन्द देखा, इसीलिये क्या तू वैसे ही चला आएगा; तोरे .. ना—तुझे बार-बार ठेलना होगा, (फिर भी) हो सकता है दरवाज़ा न टले ।

१६. विधिर. .. शक्तिमान—विधि के बन्धन को काटोगे, (क्या) तुम ऐसे शक्तिमान हो; कि—क्या; एमनि—ऐसे ही; आमादेर. . . अभिमान—हम लोगो का विनाश और निर्माण तुम्हारे हाथो में है, ऐसा (तुम्हें) अभिमान है;

चिरदिन टानबे पिछे, चिरदिन राखबे नीचे—
एत बल नाइ रे तोमार, सबे ना सेइ टान ॥
शासने यतइ घेर' आछे बल दुर्बलेरओ,
हओ-ना यतइ बडो आछेन भगवान।
आमादेर शक्ति मेरे तोराओ बाँचबि ने रे.
बोझा तोर भारी हलेइ डुबबे तरीखान ॥

१९०५

१७

बुक बेँधे तुइ दाँड़ा देखि, बारे बारे हेलिस ने भाइ।
शुधु तुइ भेबे भेबेइ हातेर लक्ष्मी ठेलिस ने भाइ ॥
एकटा किछु करे ने ठिक, भेसे फेरा मरार अधिक—
बारेक ए दिक बारेक ओ दिक, ए खेला आर खेलिस ने भाइ।
मेले कि ना मेले रतन करते तबु हबे यतन—
ना यदि हय मनेर मतन चोखेर जलटा फेलिस ने भाइ।

तोमादेर—तुम लोगो को, टानबे पिछे—पीछे खींचोगे, राखबे नीचे—नीचे रखोगे; एत.. तोमार—इतना बल तुममे नही है, सबे [illegible]—[illegible] सहा नही जाएगा; शासने दुर्बलेरओ—शासन मे चाहे [illegible], दुर्बल के भी बल है; हओ भगवान्—(तुम) चाहे [illegible] होओ, भगवान् विद्यमान है; आमादेर ने—हम लोगो की [illegible] (विनष्ट) कर तुम सब भी नही बचोगे; बोझा तरीखान—[illegible] भारी होते ही (तेरी) नौका डूब जाएगी।

१७ बुक. भाइ—छाती तान कर तू खडा तो हो, देखें; [illegible] मत, भाई; शुधु .भाइ—केवल सोच-सोच कर ही हाथ की [illegible] भाई; एकटा . अधिक—कुछ-न-कुछ तय कर ले, [illegible] अधिक है; बारेक .भाइ—एक बार इस ओर [illegible] और न खेल, भाई, मेले. यतन—रत्न मिले या न मिले, [illegible] करना ही होगा, ना. भाइ—यदि मन के अनुरूप न हो [illegible]

भासाते हय भासा भेला, करिस ने आर हेलाफेला—
पेरिये यखन यावे वेला तखन आँखि मेलिस ने भाइ ।।

१९०५

१८

यदि तोर डाक शुने केउ ना आसे तबे एकला चलो रे ।
एकला चलो, एकला चलो, एकला चलो रे ।।
यदि केउ कथा ना कय, ओरे ओरे ओ अभागा,
यदि सवाइ थाके मुख फिराये, सवाइ करे भय—
तवे परान खुले
ओ तुइ मुख फुटे तोर मनेर कथा एकला वलो रे ।।
यदि सवाइ फिरे याय, ओरे ओरे ओ अभागा,
यदि गहन पथे यावार काले केउ फिरे ना चाय—
तवे पथेर काँटा
ओ तुइ रक्तमाखा चरणतले एकला दलो रे ।।
यदि आलो ना धरे, ओरे ओरे ओ अभागा,
यदि झड़वादले आँधार राते दुयार देय घरे—

न वहाना, भाई; भासाते ..हेलाफेला—अगर तिराना ही हो तो तिरा (अपना) वेड़ा, (अव) और अवहेला न कर, पेरिये . . .भाइ—जव वेला पार हो जाएगी (वीत जाएगी) तव आँखें न खोलना, भाई।

१८. यदि ...रे—यदि तेरी पुकार सुन कोई न आवे तो अकेले चलो; एकला—अकेले; यदि. ..कय—यदि कोई वात न वोले; यदि . .भय—यदि सभी मुख फिराए रहें, सभी भय करे; तबे. .. रे—तव प्राण खोल कर, (साहस से) मुँह खोल अपने मन की वात अकेला ही कह; यदि .याय—यदि सभी लौट जायें; यदि. चाय—यदि दुर्गम पथ पर जाते समय कोई फिर कर न ताके; तबे .. रे—तव पथ के काँटो को लहूलुहान पैरो तले तुम अकेले रौंदो; आलो. ...धरे —दीप (जलाए) न जले; यदि. .धरे—यदि आँधी-पानी में, अँधेरी रात में घर

तवे वज्रानले
आपन बुकेर पाँजर ज्वालिये निये एकला ज्वलो रे ॥
१९०५

१९

सार्थक जनम आमार जन्मेछि एइ देशे।
सार्थक जनम मा गो, तोमाय भालोबेसे ॥
जानि ने तोर धन-रतन आछे कि ना रानीर मतन,
शुधु जानि आमार अङ्ग जुड़ाय तोमार छायाय एसे ॥
कोन् वनेते जानि ने फुल गन्धे एमन करे आकुल,
कोन् गगने ओठे रे चाँद एमन हासि हेसे।
आँखि मेले तोमार आलो प्रथम आमार चोख जुड़ालो,
ओइ आलोतेइ नयन रेखे मुदब नयन शेषे ॥
१९०५

२०

आमरा सबाइ राजा आमादेर एइ राजार राजत्वे—
नइले मोदेर राजार सने मिलब की स्वत्वे।

के दरवाजे बन्द हो जायँ (सब लोग दरवाजा बन्द कर लें), तबे [illegible] रे—तब वज्राग्नि से अपनी छाती के पजर को प्रज्वलित कर [illegible]।

१९ सार्थक . देशे—सार्थक है मेरा जन्म कि इस देश में [illegible] तोमाय भालोबेसे—तुम्हें प्यार कर, जानि मतन—[illegible] कि [illegible] के समान तुम्हारे धन-रत्न हैं या नहीं, शुधु एसे—[illegible] (इतना ही) [illegible] हूँ, तुम्हारी छाया मे आ कर मेरे अंग जुड़ा जाते हैं, कोन् आकुल—[illegible] जानता, किस वन में फूल गन्ध से इतना आकुल करते हैं, कोन् हेसे—[illegible] आकाश में ऐसी हँसी हँसता चांद उदित होता है, आँखि जुड़ालो—[illegible] आंखें खोलते ही तुम्हारे प्रकाश ने पहले-पहल मेरी आँखों को [illegible] ओइ शेषे—उसी प्रकाश में नयनों को स्थिर कर [illegible] में [illegible]।

२० आमरा राजत्वे—अपने इस राजा के राज में [illegible] हैं नइले स्वत्वे—नहीं तो अपने राजा के संग किस अधिकार से मिलेंगे, [illegible]

आमरा या खुशि ताइ करि,
तबु तौर खुशितेइ चरि,
आमरा नइ बाँधा नइ दासेर राजार त्रासेर दासत्वे—
नइले मोदेर राजार सने मिलव की स्वत्वे ॥
राजा सवारे देन मान,
से मान आपनि फिरे पान,
मोदेर खाटो क'रे राखे नि केउ कोनो असत्यें—
नइले मोदेर राजार सने मिलव की स्वत्वे ॥
आमरा चलव आपन मते,
शेषे मिलव ताँरि पथे,
मोरा मरव ना केउ विफलतार विषम आवर्ते—
नइले मोदेर राजार सने मिलव की स्वत्वे ॥

१९१०

२१

हे मोर चित्त, पुण्य तीर्थे जागो रे धीरे
एइ भारतेर महामानवेर सागरतीरे।
हेथाय दाँड़ाये दु बाहु बाड़ाये नमि नरदेवतारे,
उदार छन्दे परमानन्दे वन्दन करि ताँरे।

.. चरि—हम लोग जो खुशी वही करते हैं, फिर भी उनकी खुशी के अनुसा
ही विचरण करते हैं; आमरा... बाँधा—हम लोग बँधे नहीं है; सवारे...
मान—सब को सम्मान देते हैं; से. . .पान—वह सम्मान वे आप ही वापस पा
हैं; मोदेर ..असत्ये—हम लोगों को किसी ने किसी असत्य से छोटा बना क
नहीं रखा; आमरा... शेषे—हम लोग अपने ही ढँग से चलेंगे; मते. ..पथे—
अन्त में उन्हीं के पथ में मिलेंगे; मोरा ...आवर्ते—विफलता के विषम आव
(भँवर) में हम लोग कोई नहीं मरेंगे।

२१. मोर—मेरे; एइ.. ..तीरे—इस भारत के महामानव-सागर के ती
पर; हेथाय ...नर देवतारे—यहाँ खडे हो, दोनो बाँहें बढ़ा कर नर-देवता क
नमस्कार करता हूँ; उदार... ताँरे—उदार छन्दों में, परम आनन्द से उन्ह

ध्यानगम्भीर एइ ये भूधर, नदी-जपमाला-धृत-प्रान्तर,
हेथाय नित्य हेरो पवित्र धरित्रीरे—
एइ भारतेर महामानवेर सागरतीरे ।।
केह नाहि जाने कार आह्वाने कत मानुषेर धारा
दुर्वार स्रोते एल कोथा हते, समुद्रे हल हारा ।
हेथाय आर्य, हेथा अनार्य, हेथाय द्राविड चीन—
शक-हूण-दल पाठान-मोगल एक देहे हल लीन ।।
पश्चिमे आजि खुलियाछे द्वार, सेथा हते सबे आने उपहार,
दिबे आर निबे, मिलाबे मिलिबे याबे ना फिरे—
एइ भारतेर महामानवेर सागरतीरे ।।
एसो हे आर्य, एसो अनार्य, हिन्दु-मुसलमान ।
एसो एसो आज तुमि इराज, एसो एसो खृस्टान ।
एसो ब्राह्मण, शुचि करि मन धरो हात सबाकार ।
एसो हे पतित, होक अपनीत सब अपमानभार ।
मार अभिषेके एसो एसो त्वरा, मङ्गलघट हय नि ये भरा
सबार-परशे-पवित्र-करा तीर्थनीरे—
आजि भारतेर महामानवेर सागरतीरे ।।

१९१०

की वन्दना करता हूँ, एइ ये—यह जो, धृत—धारण [illegible] हुए, प्रान्तर—तरुशून्य सुदूर पथ या मैदान, हेथाय—यहाँ, हेरो—[illegible] [illegible] —कोई नही जानता, किसके आह्वान पर कितने मनुष्यों की धारा, दुर्वार [illegible] हारा—दुर्दमनीय स्रोत में कहाँ से आई (और इन) समुद्र [illegible] हेथा—यहाँ, पाठान—पठान, एक लीन—एक देह में लीन हो [illegible], पश्चिमे उपहार—आज पश्चिम ने द्वार खोला है [illegible] उपहार [illegible] दिबे फिरे—देंगे और लेंगे, विलीन [illegible] और [illegible] नही जाएँगे, एसो—आओ, इराज ([illegible]) [illegible] खृस्टान—ईसाई; एसो.. सबाकार—आओ ब्राह्मण, [illegible] का हाथ पकड़ो, होक भार—अपमान [illegible] —माँ के अभिषेक में शीघ्र आओ, आओ, मङ्गल भरा—[illegible] जो नही हुआ; सबार ..नीरे—[illegible]

२२

जनगणमन-अधिनायक जय हे भारतभाग्यविधाता।
पञ्जाव सिन्धु गुजराट मराठा द्राविड़ उत्कल वङ्ग
विन्ध्य हिमाचल यमुना गङ्गा उच्छल जलधितरङ्ग
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा।
जनगणमङ्गलदायक जय हे भारतभाग्यविधाता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय, जय हे ॥
अहरह तव आह्वान प्रचारित, शुनि तव उदार वाणी
हिन्दु वौद्ध शिख जैन पारसिक मुसलमान खृस्टानी
पूरव पश्चिम आसे तव सिंहासन-पाशे,
प्रेमहार हय गाँथा।
जनगण-ऐक्यविधायक जय हे भारतभाग्यविधाता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय, जय हे ॥
पतन-अभ्युदय-वन्धुर पन्था, युग-युग-धावित यात्री—
हे चिरसारथि, तव रथचक्रे मुखरित पथ दिनरात्रि।
दारुण विप्लव-माझे तव शङ्खध्वनि वाजे
संकटदु:खत्राता।
जनगणपथपरिचायक जय हे भारतभाग्यविधाता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय, जय हे ॥
घोर तिमिरघन निविड निशीथे पीड़ित मूर्छित देशे।
जाग्रत छिल तव अविचल मङ्गल नतनयने अनिमेषे।
दु:स्वप्ने आतङ्के रक्षा करिले अङ्के
स्नेहमयी तुमि माता।

---

२२. गुजराट—गुजरात; मागे—माँगते हैं; गाहे—गाते हैं; शुनि—सुन कर; शिख—सिख; पारसिक—पारसी; खृस्टानी—ईसाई; आसे—आते हैं; पाशे—पार्श्व में; वगल में; प्रेम ..गाँथा—प्रेमहार गूँथा जाता है; पतन.....पन्था—पतन-उत्थान से ऊँचानीचा रास्ता; छिल—था; रक्षा. ...अंके—अंक

जनगणदु:खत्रायक जय हे, भारतभाग्यविधाता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय, जय हे ॥
रात्रि प्रभातिल, उदिल रविच्छवि पूर्व-उदयगिरिभाले,
गाहे विहङ्गम, पुण्य समीरण नवजीवनरस ढाले।
तव करुणारुणरागे निद्रित भारत जागे
तव चरणे नत माथा।
जय जय जय हे, जय राजेश्वर भारतभाग्यविधाता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय, जय हे ॥

१९११

२३

आमादेर यात्रा हल शुरु, एखन ओगो कर्णधार,
तोमारे करि नमस्कार ॥
एखन वातास छुटुक, तुफान उठुक, फिरव ना गो आर—
तोमारे करि नमस्कार ॥
आमरा दिये तोमार जयध्वनि विपद बाधा नाहि गणि,
ओगो कर्णधार।
एखन मा भैः बलि भासाइ तरी, दाओ गो करि पार—
तोमारे करि नमस्कार ॥
एखन रइल यारा आपन घरे चाव ना पथ तादेर तरे,
ओगो कर्णधार।

में (तुमने) रक्षा की; प्रभातिल—प्रभात हुई; उदिल—उदित हुई, गाहे—गाते हैं।

२३ आमादेर शुरु—हम लोगों की यात्रा [illegible] हुई; एखन—[illegible] इस क्षण; तोमारे ..नमस्कार—(हम) तुम्हें नमस्कार करते हैं; [illegible] आर—अब हवा वेग से बहे, तूफान उठे (हम) और नहीं लौटेंगे; [illegible] गणि—तुम्हारी जयध्वनि कर हम लोग विपद-बाधा नहीं गिनते; [illegible] —इस समय 'मा भैः' (भय मत करो) कहते हुए नौका [illegible], [illegible] कर दो; एखन तरे—इस समय जो अपने घर में [illegible]

यखन तोमार समय एल काछे तखन के वा कार—
तोमारे करि नमस्कार ।।
आमार के वा आपन, के वा अपर, कोथाय वाहिर, कोथा वा घर
ओगो कर्णधार ।
चेये तोमार मुखे मनेर सुखे नेब सकल भार—
तोमारे करि नमस्कार ।।
आमरा नियेछि दाँड़, तुलेछि पाल, तुमि एखन धरो गो हाल,
ओगो कर्णधार ।
मोदेर मरण बाँचन ढेउयेर नाचन, भावना की वा तार—
तोमारे करि नमस्कार ।।
आमरा सहाय खुंजे द्वारे द्वारे फिरव ना आर वारे वारे,
ओगो कर्णधार ।
केवल तुमिइ आछ आमरा आछि, एइ जेनेछि सार—
तोमारे करि नमस्कार ।।

१९१२

२४

मातृमन्दिर-पुण्य-अङ्गन कर' महोज्ज्वल आज हे,
वर —पुत्रसङ्घ विराज' हे ।
शुभ शङ्ख वाजह वाज' हे ।

लोग) रास्ता नही देखेंगे; यखन.... कार—जब तुम्हारा मुहूर्त निकट आ गया, तब भला कौन किसका है; आमार. .. घर—मेरा ही कौन अपना है, कौन पराया है, कहाँ बाहर है, कहाँ घर है; चेये . भार—तुम्हारे मुख को देखता, मन की मौज में सब भार ले लूँगा; आमरा. .. .हाल—हम लोगो ने डाँड़ सँभाल लिया है, पाल चढा दिया है, अब तुम पतवार धरो; मोदेर.. .. तार—हम लोगो का मरना-बचना, लहरो का नाचना है, भला उसकी क्या चिन्ता; आमरा ...बारे—हम लोग अब बार-बार द्वार-द्वार सहारा खोजते नही फिरेगे, केवल . . सार—तुम हो, हम लोग हैं, केवल यही सार (मर्म) जाना है ।

२४. पुण्य—पवित्र; अङ्गन—आँगन; कर'—करो, बाजह—बजाओ;

घन तिमिररात्रिर चिर प्रतीक्षा
पूर्ण कर', लह' ज्योतिर्दीक्षा,
यात्रिदल सब साज' हे।
शुभ शङ्ख बाजह बाज' हे।
बल' जय नरोत्तम, पुरुषसत्तम,
जय तपस्वीराज हे।
जय हे, जय हे, जय हे॥
एस' वज्रमहासने मातृ-आशीर्भाषणे,
सकल साधक एस' हे, धन्य कर' ए देश हे।
सकल योगी, सकल त्यागी, एस' दुःसहदुःखभागी—
एस' दुर्जयशक्तिसम्पद मुक्तबन्ध समाज हे।
एस' ज्ञानी, एस' कर्मी, नाश' भारत-लाज हे।
एस' मङ्गल, एस' गौरव,
एस' अक्षय-पुण्य-सौरभ,
एस' तेज सूर्य उज्ज्वल कीर्ति-अम्बर-माझ हे।
वीरधर्मे पुण्यकर्मे विश्वहृदये राज' हे।
शुभ शङ्ख बाजह बाज' हे।
जय जय नरोत्तम, पुरुषसत्तम,
जय तपस्वीराज हे।
जय हे, जय हे, जय हे॥

१९२१

२५

नाइ नाइ भय, हबे हबे जय, खुले यावे एइ द्वार—
जानि जानि तोर बन्धनडोर छिँडे यावे बारे-बार॥

बल'—बोलो; एस'—आओ, नाश'—नष्ट करो, माझ—में, राज'—[illegible]
२५ नाइ ... द्वार—भय नहीं, भय नहीं [illegible]
खुल जाएगा, जानि ... बार—जानता हूँ [illegible]

खने खने तुइ हाराये आपना   सुप्तिनिशीथ करिस यापना—
वारे वारे तोरे फिरे पेते हवे विश्वेर अधिकार ।।
स्थले जले तोर आछे आह्वान, आह्वान लोकालये—
चिरदिन तुइ गाहिवि ये गान सुखे दुखे लाजे भये ।
फुल पल्लव नदी निर्झर   सुरे सुरे तोर मिलाइवे स्वर—
छन्दे ये तोर स्पन्दित हवे आलोक अन्धकार ।।

१९२५

२६

संकोचेर विह्वलता निजेरे अपमान,
संकटेर कल्पनाते होयो ना म्रियमाण ।
मुक्त करो भय,
आपना-माझे शक्ति धरो, निजेरे करो जय ।।
दुर्बलेरे रक्षा करो, दुर्जनेरे हानो,
निजेरे दीन नि.सहाय येन कभु ना जानो ।
मुक्त करो भय,
निजेर 'परे करिते भर ना रेखो संशय ।।

होगी; खने यापना—क्षण-क्षण अपने को खो कर तू नीद की रात्रि यापन कर रहा है; वारे.. अधिकार—वार-वार तुझे विश्व का अधिकार वापस पाना होगा; स्थले.....लोकालये—स्थल में, जल में तेरा आह्वान है, लोकालय (नगर, ग्राम आदि) में आह्वान है; तुइ—तू; गाहिवि. . .गान—गान गाएगा; सुरे......स्वर—तेरे प्रत्येक सुर मे स्वर मिलाएँगे; छन्दे—छन्द में; तोर—तेरे; हवे—होगे ।

२६ संकोचेर . .अपमान—सकोच की कातरता अपने को ही अपमानित करना है, संकटेर ..म्रियमाण—संकट की कल्पना से मरणापन्न न होना; मुक्त . .भय—भय से मुक्त हो; आपना-माझे—अपने भीतर; दुर्बलेरे—दुर्वल की; हानो—विनष्ट करो; निजेरे. ... जानो—ऐसा हो कि अपने को दीन और नि:सहाय कभी न मानो; निजेर. ....संशय—अपने ऊपर निर्भर रहने में सदेह

धर्म यवे शङ्खरवे करिबे आह्वान
नीरव हये, नम्र हये, पण करियो प्राण।
मुक्त करो भय,
दुरूह काजे निजेरइ दियो कठिन परिचय॥

१९२९

२७

व्यर्थ प्राणेर आवर्जना पुडिये फेले आगुन ज्वालो।
एकला रातेर अन्धकारे आमि चाइ पथेर आलो॥
दुन्दुभिते हल रे कार आघात शुरु,
बुकेर मध्ये उठल बेजे गुरुगुरु—
पालाय छुटे सुप्तिरातेर स्वप्ने-देखा मन्द भालो॥
निरुद्देशेर पथिक आमाय डाक दिले कि—
देखते तोमाय ना यदि पाइ नाइ वा देखि।
भितर थेके घुचिये दिले चाओया पाओया,
भावनाते मोर लागिये दिले झडेर हाओया,
वज्रशिखाय एक पलके मिलिये दिले सादा कालो॥

१९३३

न रखो; यबे—जब, करिबे—करेगा, हये—हो कर, पण प्राण—[illegible] बाजी लगाना, दुरूह परिचय—कठिन काम में अपना ही कठिन परिचय देना।

२७ व्यर्थ ज्वालो—व्यर्थ-प्राणों की आवर्जना को [illegible] जलाओ; एकला आलो—एकाकिनी रात्रि के अन्धकार में मैं पथ का [illegible] चाहता हूँ, दुन्दुभिते . शुरु—दुन्दुभी पर किसकी चोट शुरू हुई [illegible] गुरुगुरु—हृदय के भीतर मेघ-मन्द्र ध्वनि बज उठी, पालाय [illegible] की रात्रि का स्वप्न में देखा हुआ बुरा-भला दौड़ कर भागता है, निरुद्देशेर कि—निरुद्देश्य के पथिक, क्या तुमने मुझे पुकारा, देखते देखि—[illegible] न देख पाऊँ तो न सही; भितर पाओया—भीतर से (तुमने) [illegible] पाना मिटा दिया; भावनाते . हाओया—मेरी चिन्ता में (तुमने) [illegible] हवा लगा दी, वज्रशिखाय—वज्रशिखा में; एक पलके—[illegible], [illegible] भर में, मिलिये . कालो—उजले-काले को विलीन कर दिया।

२८

शुभ कर्मपथे धर' निर्भय गान।
सब दुर्बल संशय होक अवसान।।
चिर– शक्तिर निर्झर नित्य झरे
लह' से अभिषेक ललाट- 'परे।
तव जाग्रत निर्मल नूतन प्राण—
त्यागव्रते निक दीक्षा,
विघ्न हते निक शिक्षा—
निष्ठुर संकट दिक सम्मान।
दु.खइ होक तव वित्त महान।
चल' यात्री, चल' दिनरात्रि—
कर' अमृतलोक-पथ अनुसन्धान।
जड़तातामस हओ उत्तीर्ण,
क्लान्तिजाल कर' दीर्ण विदीर्ण—
दिन-अन्ते अपराजित चित्ते
मृत्युतरण तीर्थे कर' स्नान।।

१९३६

२९

ओरे, नूतन युगेर भोरे
दिस ने समय काटिये वृथा समय विचार करे।।
की रवे आर की रवे ना, की हवे आर की हवे ना,

---

२८. धर'.....गान—निर्भय गान प्रारंभ करो; होक—हो; लह'......'परे—उस अभिषेक को ललाट पर लो (ग्रहण करो); निक—(तुम्हारे प्राण) लें (ग्रहण करें); हते—से; निष्ठुर.... सम्मान—कठिन सकट (तुम्हें) सम्मान दे; दुःखइ—दु ख ! ी; चल'—चलो; कर'—करो; हओ—होओ।

२९. दिस.. करे—समय का विचार करते-करते व्यर्थ समय न काट दे (विता दे); की .हवे ना—क्या रहेगा (और) क्या नही रहेगा, क्या

ओरे हिसाबि,
ए सगयेर माझे कि तोर भावना मिशाबि ॥
येमन करे झर्ना नामे दुर्गम पर्वते
निर्भावनाय झाँप दिये पड़ अजानितेर पथे।
जागबे ततइ शक्ति यतइ हानबे तोरे माना,
अजानाके वश करे तुइ करबि आपन जाना।
चलाय चलाय बाजबे जयेर भेरी—
पायेर वेगेइ पथ केटे याय, करिस ने आर देरि ॥

१९३८

होगा (और) क्या नही होगा, हिसाबि—हिसाबी, ए मिशाबि—[illegible] के भीतर क्या अपनी दुश्चिन्ता को मिलाएगा, येमन. पर्वते—[illegible] पर्वत से झरना उतरता है; निर्भावनाय पथे—(वैसे ही) [illegible] अज्ञात-पथ पर कूद जा, जागबे माना—जितनी ही तुझे [illegible] उतनी ही (तेरी) शक्ति जागेगी; अजानाके जाना—[illegible] कर तू अपना ज्ञात (परिचित) बना लेगा, चलाय भेरी—(तेरे) [illegible] में (पद-पद पर) जय-भेरी बजेगी, पायेर देरि—[illegible] कट जाता है, (अब) और देर न कर।

आनुष्ठानिक गान

१

एसो हे गृहदेवता।
ए भवन पुण्यप्रभावे करो पवित्र ॥
विराजो जननी, सवार जीवन भरि—
देखाओ आदर्श महान चरित्र ॥
शिखाओ करिते क्षमा, करो हे क्षमा,
जागाये राखो मने तव उपमा,
देहो धैर्य हृदये—
सुखे दुखे सकटे अटल चित्त ॥
देखाओ रजनी-दिवा विमल विभा,
वितरो पुरजने शुभ्र प्रतिभा—
नव शोभाकिरणे
करो गृह सुन्दर रम्य विचित्र ॥
सवे करो प्रेमदान पूरिया प्राण—
भुलाये राखो सखा, आत्माभिमान।
सव वैर हवे दूर
तोमारे वरण करि जीवनमित्र ॥

१८९६

---

१. एसो—आओ; ('देवता' यहाँ सस्कृत के अनुसार स्त्रीलिंगवाचक भी है); ए भवन—इस गृह को; सवार—सव का; भरि—भर कर; शिखाओ—सिखाओ; करिते क्षमा—क्षमा करना; जागाये.....मने—मन में जगा रखो; उपमा—दृप्टान्त; देहो—दो; वितरो—वितरण करो; पूरिया—पूर्ण कर; हवे—होगा; तोमारे.. करि—तुम्हे वरण करके।

२

ये तरणीखानि भासाले दुजने आजि हे नवीन ससारी,
काण्डारी कोरो ताँहारे ताहार यिनि ए भवेर काण्डारी ।।
कालपारावार यिनि चिरदिन करिछेन पार विगसंगीन
शुभयात्राय आजि तिनि दिन प्रसादपवन सञ्चारि ।।
नियो नियो चिरजीवनपाथेय, भरि नियो तरी कल्याणे ।
सुखे दुखे शोके, आँधारे आलोके, येयो अमृतेर सन्धाने ।
बाँधा नाहि थेको आलसे आवेशे, झडे झञ्झाय चले येयो हेसे,
तोमादेर प्रेम दियो देशे देशे विश्वेर माझे विस्तारि ।।

१९०८

३

फिरे चल् माटिर टाने—
ये माटि आँचल पेते चेये आछे मुखेर पाने ।
यार बुक फेटे एइ प्राण उठेछे, हासिते यार फुल फुटेछे रे,
डाक दिल ये गाने गाने ।।

---

२ ये संसारी—हे नवीन गृहस्थ, आज (तुम) दोनों ने [illegible]
को तिराया है, काण्डारी काण्डारी—उन्हीं को इस (नौका) [illegible]
बनाओ जो इस ससार (सागर) के कर्णधार हैं, यिनि—जो, करिछेन—[illegible]
रहे हैं; शुभ. सञ्चारि—शुभ यात्रा में आज वे (अपने) [illegible]
पवन का सचार कर दें, नियो—लेना, भरि कल्याणे—[illegible]
पूर्ण कर लेना, येयो—जाना; सन्धाने—खोज में; बाँधा देशे—[illegible]
रहना, झडे. हेसे—आंधी-तूफान में हँसते-हँसते [illegible], तोमादेर
विस्तारि—ससार में देश-देश में अपने प्रेम को [illegible] ।

३ फिरे. टाने—मिट्टी के आकर्षण से [illegible]
मिट्टी आंचल पसारे (तेरे) मुख की ओर दृष्टि [illegible] यार [illegible]—
जिसके वक्ष को विदीर्ण कर यह प्राण [illegible], हासिते [illegible]
हँसी से फूल खिले हैं; डाक गाने—[illegible]

दिक् हते ओइ दिगन्तरे कोल रयेछे पाता,
जन्ममरण तारि हातेर अलख सुतोय गाँथा।
ओर हृदय-गला जलेर धारा सागर-पाने आत्महारा रे
प्राणेर वाणी वये आने।।

१९२२

४

अग्निशिखा, एसो एसो, आनो आनो आलो।
दु:खे सुखे घरे घरे गृहदीप ज्वालो।।
आनो शक्ति, आनो दीप्ति, आनो शान्ति, आनो तृप्ति,
आनो स्निग्ध भालोवासा, आनो नित्य भालो।।
एसो पुण्यपथ वेये एसो हे कल्याणी।
शुभ सुप्ति, शुभ जागरण देहो आनि।
दु:खराते मातृवेशे जेगे थाको निर्निमेषे,
आनन्द-उत्सवे तव शुभ्र हासि ढालो।।

१९२५

५

आय आमादेर अङ्गने अतिथि वालक तरुदल—
मानवेर स्नेहसङ्ग ने, चल् आमादेर घरे चल्।।

दिक्....पाता—एक दिशा से दूसरी दिशा तक (उसकी) गोद फैली है; जन्म.. ..गाँथा—जन्म-मरण उसी के हाथ के अलक्ष्य सूत्र (डोर) में हुए हैं; ओर.. .रे—सागर के प्रति उसके विगलित हृदय की आत्मवि जलधारा; प्राणेर.. ..आने—प्राणों की वाणी वहन कर लाती है।

४. एसो—आओ; आनो—लाओ; आलो—आलोक; भालोवास प्रेम; भालो—भला, शुभ; पुण्यपथ वेये—पवित्र-पथ से हो कर; देहो —ला दो, जेगे थाको—जागती रहो; हासि—हँसी।

५. यह गान शान्तिनिकेतन में 'वृक्षरोपण' उत्सव के अवसर पर ल

श्याम वङ्किम भङ्गिते चञ्चल कलसंगीते
द्वारे निये आय शाखाय शाखाय प्राण-आनन्द-कोलाहल ॥
तोदेर नवीन पल्लवे नाचुक आलोक सवितार,
दे पवने वनवल्लभे मर्मरगीत-उपहार।
आजि श्रावणेर वर्षणे आशीर्वादेर स्पर्श ने,
पडुक माथाय पाताय पाताय अमरावतीर धाराजल ॥

१९२९

६

ओरे गृहवासी, खोल् द्वार खोल्, लागल ये दोल।
स्थले जले वनतले लागल ये दोल।
खोल् द्वार खोल् ॥
राडा हासि राशि राशि अशोके पलाशे,
राडा नेशा मेघे मेशा प्रभात-आकाशे,
नवीन पाताय लागे राडा हिल्लोल ॥
वेणुवन मर्मरे दखिन-वातासे,
प्रजापति दोले घासे घासे।

निधन-तिथि को मनाया जाता है। आय अङ्गने—तुम लोगों के आँगन में आओ, भङ्गित्ते—भगिमा से, द्वारे आय—द्वार पर ले आ, शाखाय शाखाय—शाखा-शाखा मे, तोदेर—तुम लोगो के, नाचुक—नाचे सवितार—सूर्य का; आजि ने—आज श्रावण की वर्षा मे आशीर्वाद का स्पर्श ले, पडुक—पडे; माथाय—माथे पर; पाताय पाताय—पत्तों-पत्तों पर।

६ लागल . दोल—दोल (आन्दोलन, होली का त्योहार) लग गया है, राडा पलाशे—अशोक, पलाश में राशि-राशि लाल हँसी (फूल) है, राडा—लाल, रंगीन; नेशा—नशा, मेशा—घुला-मिला; नवीन [illegible] —नवीन कोपलों को अरुण हिलोरा दे रहा है वेणुवन [illegible] पवन मे बांस का वन मर्मर करता है; प्रजापति घासे—[illegible]

मउमाछि फिरे याचि फुलेर दखिना,
पाखाय वाजाय तार भिखारिर वीणा,
माधवीविताने वायु गन्धे विभोल ।।

१९३०

७

प्रेमेर मिलन-दिने सत्य साक्षी यिनि अन्तर्यामी
नमि ताँरे आमि— नमि नमि ।
विपदे सम्पदे सुखे दुखे साथि यिनि दिनराति अन्तर्यामी
नमि ताँरे आमि— नमि नमि ।
तिमिररात्रे याँर दृष्टि ताराय ताराय,
याँर दृष्टि जीवनेर मरणेर सीमा पाराय,
याँर दृष्टि दीप्त सूर्य-आलोके अग्निशिखाय, जीव-आत्माय अन्तर्यामी
नमि ताँरे आमि— नमि नमि ।
जीवनेर सब कर्म संसार धर्म करो निवेदन ताँर चरणे
यिनि निखिलेर साक्षी, अन्तर्यामी
नमि ताँरे आमि— नमि नमि ।।

१९३९

थिरक रही है; मउमाछि... वीणा—मधुमक्खियाँ फूलों से दक्षिणा (दान) की याचना करती फिरती हैं, अपने परों से भिखारी की वीन वजाती हैं; गन्धे—गन्ध से; विभोल—विभोर ।

७. यिनि—जो; नमि .. आमि—मैं उन्हें नमस्कार करता हूँ; साथि—साथी; याँर—जिनकी; ताराय ताराय—तारे-तारे में; सीमा पाराय—सीमा पार करती है; करो चरणे—उनके चरणों में अर्पित करो ।

८

एकदिन यारा मेरेछिल तारे गिये
राजार दोहाइ दिये
ए युगे ताराइ जन्म नियेछे आजि,
मन्दिरे तारा एसेछे भक्त साजि—
घातक सैन्ये डाकि
'मारो मारो' उठे हाँकि।
गर्जने मिशे स्तवमन्त्रेर स्वर—
मानवपुत्र तीव्र व्यथाय कहेन, 'हे ईश्वर,
ए पानपात्र निदारुण विषे भरा
दूरे फेले दाओ, दूरे फेले दाओ त्वरा।'

१९३९

९

सवारे करि आह्वान—
एसो उत्सुकचित्त, एसो आनन्दित प्राण।
हृदय देहो पाति, हेथाकार दिवा राति
करुक नवजीवनदान॥

---

८. एकदिन दिये—एक दिन जिन्होंने [illegible] जा कर मारा था, ए आजि—इस युग में [illegible] लिया है, मन्दिरे साजि—मन्दिर में वे [illegible] सैन्ये—सैनिकों को; डाकि—पुकार कर, उठे हाँकि—[illegible] —मिल जाता है, व्यथाय—व्यथा से, कहेन—[illegible] से भरा; दूरे दाओ—दूर फेंक दो।

९ सवारे आह्वान—[illegible] हृदय पाति—हृदय बिछा दो, हेथाकार—[illegible]

आकाशे आकाशे वने वने तोमादेर मने मने
विछाये विछाये दिबे गान।
सुन्दरेर पादपीठतले येखाने कल्याणदीप ज्वले
सेथा पावे स्थान ॥

१९३९

तोमादेर—अपने; विछाये... गान—गीत-गान विछा देना, सुन्दरेर ..... स्थान—'सुन्दर' के चरणपीठ-तले जहाँ कल्याण-दीप जलता है, वहाँ स्थान पाओगे।

बँगला शब्दों के उच्चारण की कुछ विशेषताएँ

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ के ५०० गीतों का यह संग्रह [illegible] में प्रकाशित हो रहा है। बँगला गीतों में आए हुए [illegible] हिन्दी मे लिखे गए हैं। लेकिन बँगला उच्चारण की अपनी विशेषताएँ हैं। हिन्दी उच्चारण से उसमे अन्तर है। बँगला शब्दों के ठीक-ठीक उच्चारण [illegible] विशेषताओ की जानकारी प्राप्त कर लेना आवश्यक है। पाठकों [illegible] लिये बँगला उच्चारण की कुछ विशेषताओ पर नीचे प्रकाश डालने की चेष्टा की जा रही है

(१) बँगला मे 'अ' का उच्चारण हिन्दी के 'अ' जैसा नहीं होता। [illegible] 'अ' और 'ओ' के बीच मे होता है, जैसे अंग्रेजी के 'not' में 'o'। [illegible] लिखते हैं 'खाव', लेकिन पढते हैं 'खावो'-जैसा।

(२) ह्रस्व और दीर्घ इ, उ के उच्चारण में बँगला मे [illegible] है। यह लचीलापन हिन्दी मे नही है। दीर्घ ई और ऊ [illegible] तो उनका उच्चारण प्राय ह्रस्व-जैसा होता है, जैसे, [illegible] 'इश्वर' और 'पूजा' का 'पुजा' होगा।

(३) एकार का उच्चारण 'ए' और 'ऐ' के बीच-जैसा होता है [illegible] 'एक' मे 'ए' का उच्चारण हिन्दी के 'ऐना' मे 'ऐ' के समान होता है।

(४) ऐकार का उच्चारण 'ओइ' जैसा होता है। जैसे [illegible] — ओइकतान।

(५) अनुस्वार के उच्चारण मे 'ग' का [illegible] हिमाशु—हिमाग्शु, वाला—वाग्ला।

(६) हिन्दी के समान, पद का अन्त्य वर्ण प्राय [illegible] है, जैसे, आमार—आमार्, आँधार—आँधार्। [illegible] 'अ' के उच्चारण का भी अनुसरण होता है, जैसे, [illegible] उच्चारण वकुल (ो) जैसा भी हो सकता है।

(७) बँगला मे 'क्ष' का उच्चारण पद के आदि में [illegible] क्षिति—खिति, क्षमा—खमा। लेकिन [illegible] जैसे, लक्षण—लक्खण।

(८) बँगला मे 'ण' और 'न' दोनो का उच्चारण [illegible]

(९) बँगला मे 'व' और 'ब' का अन्तर नहीं है। [illegible] हैं। तत्सम शब्दो के लिखने मे भले ही 'व' [illegible] उच्चारण 'ब' होता है। जैसे [illegible] जाएगा।

(१०) अगर किसी दूसरी भाषा का कोई शब्द अपनाना पडे और उसमें 'व' का उच्चारण रहे तो उसके लिये वँगला मे 'ओय' लिखते है, जैसे, 'तिवारी' का 'तिओयारी'; 'हवा' का 'हाओया'। यहाँ 'ओया' का उच्चारण 'वा' ही होगा।

(११) 'य' के उच्चारण में एक विशेषता है। जब 'य' पद के आदि में हो तो उसका उच्चारण 'ज' होता है, जैसे, यात्रा—जात्रा; योग—जोग। लेकिन 'य' अगर पद के मध्य या अन्त में हो तो उसे 'य' ही पढेंगे। जैसे, नियम—नियम, नयन—नयन; समय—समय।

(१२) वँगला में तीनो सकारो का उच्चारण तालव्य 'श' की तरह होता है। लेकिन दन्त्य 'स' के साथ अगर किसी व्यञ्जन वर्ण का योग हो तो उसका उच्चारण 'स' ही होता है, जैसे, स्तब्ध—स्तब्ध; स्निग्ध—स्निग्ध।

(१३) अगर मकार के साथ किसी वर्ण का योग हो तो वह वर्ण सानुनासिक द्वित्व हो कर मकार का लोप कर देता है, जैसे, छद्म—छद्दँ; पद्म—पद्दँ। लेकिन पद के आदि में ऐसा होने पर द्वित्व नही होता, जैसे, स्मरण—सँरण, स्मृति—सृँति।

(१४) अगर यकार अथवा वकार के साथ किसी वर्ण का योग हो तो वह द्वित्व हो कर यकार-वकार का लोप कर देगा, जैसे, भृत्य—भृत्त; नित्य—नित्त; वाद्य—वाद्द। लेकिन पद के आदि में केवल वकार का लोप हो जाता है, जैसे, द्वार—दार, ज्वाला—जाला।

(१५) अगर यकार में रेफ हो तो पद के मध्य अथवा अन्त मे रहने पर भी जकार हो जाता है, जैसे, सूर्य्य—सूर्ज्ज, धैर्य्य—धैर्ज्ज।

(१६) प्रस्तुत सग्रह में 'व' के वदले 'ओय' ही लिखा हुआ है, अतएव जहाँ पर 'ओय' हो वहाँ 'व' ही पढना चाहिए, जैसे, पाओया—पावा, खाओया—खावा; याओया—जावा।

वँगला व्याकरण संबंधी कुछ ज्ञातव्य बातें

ऊपर वँगला शब्दो की उच्चारण-सवधी मुख्य विशेषताओ पर हम प्रकाश डाल चुके। अब वँगला व्याकरण की चर्चा करने जा रहे हैं। व्याकरण की थोडी-सी जानकारी प्राप्त कर लेना पाठको के लिये अत्यन्त उपादेय सिद्ध होगा।

(क) क्रियारूप

वँगला मे क्रिया के विभिन्न रूप है। क्रिया के इन विविध रूपो में जो अपरिवर्तित अश है वही धातु है। धातु-निर्णय का सहज उपाय यह है कि उत्तम पुरुष के

वर्त्तमान काल के धातुरूप के अन्तिम 'इ' को हटा देने से जो रूप रह जाता है वही धातु है, जैसे, आमि याइ (मैं जाता हूँ)। इसमें 'याइ' का 'इ' हटाने पर 'या' रह जाता है। 'या' धातु है। इसी प्रकार 'आमि कराइ' में 'करा' धातु है।

बँगला भाषा के दो रूप हैं . (१) साधु और (२) चलित। 'लिखा', 'शुना' साधु रूप है और 'लेखा' 'शोना' चलित रूप। क्रियापद 'कहियाछे' साधु रूप है और 'कयेछे' चलित रूप है। सर्वनामो के विषय मे भी यही बात है। अर्थ की दृष्टि से इन दोनो में कोई भेद नहीं है। बोलने में चलित रूप का प्रयोग होता है और लिखने में साधु रूप का। वैसे आजकल के लेखक लिखने में भी चलित रूप का ही प्रयोग करते हैं।

सकर्मक और अकर्मक के अलावा बँगला में क्रिया के दो भेद और हैं समापिका और असमापिका।

धातु में जिस विभक्ति के योग से समापिका क्रियापद बनता है उसे 'तिङ' कहते हैं और उस क्रियापद को 'तिङन्त' पद कहते हैं। जैसे, कर् धातु से तिङन्त पद करे, करेन, करिस, करि आदि। इसी प्रकार जिस प्रत्यय के योग से असमापिका क्रियापद अथवा विशेष्य-विशेषण बने, उसे 'कृत' कहते हैं और उस पद को 'कृदन्त' पद कहते हैं। जैसे, कर् धातु से कृदन्त पद (असमापिका क्रिया) करिते (करते), करिया (करके), करते, क'रे आदि।

प्रेरणार्थक धातु (णिजन्त धातु) बनाने के लिये बँगला के धातुरूप में 'आ' प्रत्यय लगाते हैं, जैसे, कर् से णिजन्त धातु 'करा' होगा।

बँगला में कर्ता के लिङ्ग के अनुसार क्रिया नही बदलती, जैसे, मेयेरा याच्छे (लडकियाँ जा रही हैं), छेलेरा याच्छे (लडके जा रहे हैं)।

क्रिया के तीन काल हैं · भूत, भविष्यत् और वर्तमान। लेकिन बँगला की क्रिया का काल-विभाग हिन्दी की तरह नही होता।

बँगला के क्रियापद मे वचन-भेद नही होता। जैसे, से याइतेछे (वह जा रहा है), ताहारा याइतेछे (वे लोग जा रहे हैं)।

पुरुष तीन प्रकार के हैं · प्रथम, मध्यम और उत्तम। प्रथम पुरुष के गौरवार्थक और सामान्य दो रूप हैं, जैसे, तिनि करेन (वे करते हैं), से करे (वह करता है)। मध्यम पुरुष के गौरवार्थक, सामान्य और तुच्छ तीन रूप हैं, जैसे, आपनि करेन (आप करते हैं), तुमि कर (तुम करते हो) तथा तुइ करिस (तू करता है)। उत्तम पुरुष का केवल एक रूप है, जैसे, आमि करि (मैं करता हूँ)।

बँगला के काल-भेद तथा उनके नामो की जानकारी भी उपयोगी होगी। बँगला व्याकरणो मे दो प्रकार से उनके नाम दिए हुए हैं। नित्यप्रवृत्त, विशुद्ध,

अद्यतन, अनद्यतन, परोक्ष, भूत-सामीप्य, वर्तमान-सामीप्य आदि नाम संस्कृत व्याकरण के अनुकरण पर रखे गए हैं। सहज तरीके से समझने के लिये उनका नामकरण निम्नलिखित ढँग से किया जाता है

नाम	उदाहरण (साधु)
नित्यवृत्त वर्तमान	करे (करता है)।
घटमान ,,	करितेछे (कर रहा है)।
पुराघटित ,,	करियाछे (किया है)।
अनुज्ञा ,,	कर (करो)।
साधारण अतीत	करिल (किया)।
नित्यवृत्त ,,	करित (करता)।
घटमान ,,	करितेछिल (कर रहा था)।
पुराघटित ,,	करियाछिल (किया था)।
साधारण भविष्यत्	करिबे (करेगा)।
अनुज्ञा ,,	करिओ (करना)।

क्रिया की विभक्तियाँ

(चलित)

काल का नाम	प्रथम पुरुष सामान्य	प्रथम और मध्यम गौरवार्थक	मध्यम सामान्य	मध्यम तुच्छ	उत्तम पुरुष
नित्यवृत्त वर्तमान	ए	एन	अ	इस	इ
घटमान ,,	छे	छेन	छ	छिस	छि
पुराघटित ,,	एछे	एछेन	एछ	एछिस	एछि
अनुज्ञा ,,	उक	उन	अ	—	—
साधारण अतीत	ले	लेन	ले	लि	लाम
नित्यवृत्त ,,	त	तेन	ते	तिस	ताम
घटमान ,,	छिल	छिलेन	छिले	छिलि	छिलाम
पुराघटित ,,	एछिल	एछिलेन	एछिले	एछिलि	एछिलाम
साधारण भविष्यत्	बे	बेन	बे	बि	ब (बो)
अनुज्ञा ,,	बे	बेन	ओ	इस	—

(साधु)

काल का नाम	प्रथम पुरुष सामान्य	प्रथम और मध्यम गौरवार्थक	मध्यम सामान्य	मध्यम तुच्छ	उत्तम पुरुष
नित्यवृत्त वर्तमान	ए	एन	अ	इस	इ
घटमान ,,	इतेछे	इतेछेन	इतेछ	इतेछिस	इतेछि
पुराघटित ,,	इयाछे	इयाछेन	इयाछ	इयाछिस	इयाछि
अनुज्ञा ,,	उक	उन	अ	—	—
साधारण अतीत	इल	इलेन	इले	इलि	इलाम
नित्यवृत्त ,,	इत	इतेन	इते	इतिस	इताम
घटमान ,,	इतेछिल	इतेछिलेन	इतेछिले	इतेछिलि	इते-छिलाम
पुराघटित ,,	इयाछिल	इयाछिलेन	इयाछिले	इयाछिलि	इया-छिलाम
साधारण भविष्यत्	इवे	इवेन	इवे	इवि	इव
अनुज्ञा ,,	इबे	इवेन	इओ (इयो)	इस	—

क्रिया की इन विभक्तियो के प्रयोग को निम्नलिखित उदाहरणो से समझा जा सकता है·

'काट्' (काटना) धातु के नित्यवृत्त वर्तमान का चलित और साधु रूप इस प्रकार होगा

चलित	साधु
काटे, काटेन, काट, काटिस, काटि	चलित-जैसा ही होगा

घटमान अतीत का रूप निम्नलिखित होगा :

चलित रूप—काटछिल, काटछिलेन, काटछिले, काटछिलि तथा काटछिलाम।

साधु रूप—काटितेछिल, काटितेछिलेन, काटितेछिले, काटितेछिलि तथा काटितेछिलाम।

साधारण भविष्यत् का रूप इस प्रकार होगा :

चलित रूप—काटवे, काटवेन, काटवे, काटवि, काटवो।

साधु रूप—काटिबे, काटिवेन, काटिवे, काटिवि, काटिवो। इसी प्रकार अन्य रूप भी समझे जा सकते हैं।

वहुत लोग 'लाम' के स्थान पर 'लुम' अथवा 'लेम' का प्रयोग करते हैं, जैसे, 'काटलाम' (काटा) के वदले 'काटलुम' अथवा 'काटलेम' लिखते हैं।

इसी प्रकार 'ताम' के वदले 'तुम' अथवा 'तेम' का प्रयोग करते हैं, जैसे, 'काटताम' (काटता) के स्थान पर 'काटतुम' अथवा 'काटतेम' लिखते हैं।

साधारण अतीत में सकर्मक क्रिया मे 'ले' तथा अकर्मक क्रिया मे 'ल' लगाते हैं। यह चलित रूप मे होता है, जैसे, करले (किया), खेले (खाया), दिले (दिया) तथा गेल (गया), शुल (सोया), दौड़ल (दौडा)। वैसे इसका व्यतिक्रम भी देखा जाता है। वहुत लोग 'करल' (किया), 'वलल' (वोला) आदि लिखते हैं।

(ख) कारक

वँगला में कारक सात हैं कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्वन्ध तथा अधिकरण।

कारक की कई विभक्तियो को मूल विभक्ति कहा जा सकता है। वैसे प्रयोग मे आने वाली कई विभक्तियाँ मुख्यत कर्ता, कर्म, सम्वन्ध और अधिकरण सूचक है, जैसे, के, र, ते क्रमश कर्म, सम्वन्ध और अधिकरण कारक की विभक्तियाँ हैं। प्रत्येक कारक की अलग विभक्तियाँ नही हैं। निम्नलिखित कई विभक्तियाँ भिन्न-भिन्न कारको में प्रयुक्त होती हैं :

विभक्ति	कारको के नाम
ए, य, ते, ये	कर्ता, करण, सम्प्रदान,, अधिकरण
रा, एरा	कर्ता (वहुवचन)
दिगके, दिके, देर	कर्म, सम्प्रदान (वहुवचन)
के, रे	कर्म, सम्प्रदान (एकवचन)
एर (येर), र, कार	सम्वन्ध (एकवचन)
दिगेर, देर	सम्वन्ध (वहुवचन)
देर	कर्म (वहुवचन)
एते	अधिकरण (एकवचन)

वहुत स्थानो पर पद योग करने से कारक निष्पन्न होता है, जैसे, वाडी थेके (घर से), पेन्सिल दिये (पेन्सिल से), मानुषेर द्वारा (मनुष्य से) आदि। द्वारा, दिये आदि करणकारक-सूचक हैं तथा थेके, अपादानकारक-सूचक। लेकिन द्वारा, दिया आदि को अव्यय मानना उचित है। इनका प्रयोग विभक्ति के वाद भी मिलता है, जैसे, मन्त्रेर द्वारा (मन्त्र से)। इसमें 'एर' सम्वन्ध कारक की विभक्ति है और उसके वाद 'द्वारा' का प्रयोग हुआ है।

टा और टि का प्रयोग, जन्तु अथवा पदार्थवाचक शब्दो के साथ होता है, जैसे, छेलेटा (लडका), कवितार्टि (कविता)। इसमें अर्थ ज्यो का त्यो है। टा का प्रयोग प्राय: अनादरसूचक है और 'टि' का प्रयोग बहुत-कुछ आदरसूचक।

गुला, गुलो, गुलि का प्रयोग व्यक्ति, जन्तु अथवा पदार्थवाचक शब्दो के साथ होता है। इनसे बहुवचन सूचित होता है। 'गुला' 'गुलो' अनादरसूचक है और 'गुलि' आदरसूचक। लोकगुला (लोग), जिनिसगुलो (वस्तुएँ), मेयेगुलि (लडकियाँ)।

'खाना', 'खानि' का प्रयोग केवल पदार्थवाचक शब्दो के साथ होता है। 'खाना' अनादरसूचक है और 'खानि' आदरसूचक, जैसे, मुखखानि (मुख), कागजखाना (कागज़)।

'गण', 'रा', 'एरा' (येरा) का प्रयोग साधारणत: व्यक्ति, जन्तु अथवा बडी वस्तुओ के लिये होता है, जैसे, देवगण, छेलेरा (लडके)।

'ए', 'ये', 'ते', 'ये' के प्रयोग की विधि इस प्रकार है: अकारान्त अथवा व्यञ्जनान्त शब्द हो तो 'ए' का प्रयोग होता है, जैसे, मानुषे, विद्युते। आकारान्त अथवा एकारान्त शब्द हो तो 'य' और 'ते' का व्यवहार होता है, जैसे, छेलेय, सेवाय। अगर इनसे भिन्न स्वरान्त शब्द हो तो 'ते' का व्यवहार होता है, जैसे, छुरिते। एकाक्षर शब्द अथवा अन्त में दो स्वर आएँ तो 'ये' का प्रयोग होता है, जैसे, गाये (शरीर में), दइये (दही में)।

विभिन्न कारकों में विभक्ति के प्रयोग

कर्ता कारक :

साधारणत: कर्ता, एकवचन में कोई विभक्ति नही होती, जैसे, राम खाच्छे (राम खा रहा है)।

कर्तृवाच्य के प्रयोग से कभी-कभी कर्ता मे 'ए' विभक्ति लगती है, जैसे, लोके बले (लोग कहते है)।

कर्ता अनिर्दिष्ट होने पर अथवा कर्ता मे करण या अधिकरण का भाव रहने पर ए, य, ते, ये, योग करते हैं, जैसे, पोकाय केटेछे (कीडे ने काटा है), वेदे बले (वेद मे कहा गया है), वृष्टिते भासिये दिले (वर्षा से बहा दिया)।

एकजातीय कर्ता का भाव बताते समय 'ए' का प्रयोग होता है, जैसे, पण्डिते पण्डिते तर्क चलेछे (पण्डितो मे तर्क हो रहा है)।

बहुवचन मे गण, रा, एरा (येरा) का प्रयोग होता है, जैसे, पण्डितेरा बलेन (पण्डित लोग कहते है)। आदरसूचक या समूहबोधक कर्ता होने पर रा के बदले एरा का प्रयोग होता है, जैसे, बउएरा (बहुएँ)। गुलो, गुला, गुलि का प्रयोग बहुवचन मे होता है, जिस पर पहले ही प्रकाश डाला जा चुका है।

कर्म कारक :

एकवचन में साधारणत. कोई विभक्ति नही होती, जैसे, डाक्तार डाक (डॉक्टर को वुलाओ)। वैसे इसका कोई निर्दिष्ट नियम नही है; कभी विभक्ति का लोप होता है, कभी नही होता, जैसे, भगवानके डाक (भगवान को पुकारो)।

कर्मपद प्राणिवाचक अथवा व्यक्ति का नाम हो तो 'के' विभक्ति का प्रयोग होता है और अप्राणिवाचक या क्षुद्र प्राणिवाचक शब्दो में 'के' का प्रयोग नही होता। पद्य में रे, ए, य का प्रयोग होता है, जैसे, गुरुरे डाकिया (गुरु को पुकार कर), गुरुजने कर नति (गुरुजन को प्रणाम करो)। वहुवचन होने पर गणके, दिगके, दिके, देर का प्रयोग होता है, जैसे, देवगणके, ताहादिगके आदि।

द्विकर्मक क्रिया के गौण कर्म मे के, दिगके, दिके, देर का प्रयोग होता है। मुख्य कर्म में विभक्ति नही लगाते, जैसे, छेलेके दुध दाओ (लडके को दूध दो)।

कर्मवाच्य के प्रयोग मे कर्म मे कभी-कभी 'के' विभक्ति लगती है, जैसे, रामके वला हय नाइ (राम से कहा नही गया है)।

कर्म-कर्तृवाच्य के प्रयोग मे भी कर्म में कभी-कभी 'के' विभक्ति होती है, जैसे, तोमाके कृश देखाइतेछे (तुम दुवले दीखते हो)।

करण कारक :

करण कारक में साधारणतः द्वारा, दिया विभक्ति होती है और कभी-कभी इन दोनो के वदले 'हइते' विभक्ति प्रयुक्त होती है। कभी-कभी 'ए' विभक्ति भी होती है।

'द्वारा' और 'दिया' अथवा 'दिये' का प्रयोग व्यक्ति, जन्तु अथवा पदार्थवाचक शब्दो में होता है। सम्वन्ध-विभक्ति के वाद भी 'द्वारा' का प्रयोग होता है। व्यक्ति-वाचक शब्दो के वहुवचन मे 'दिया' अथवा 'दिये' का प्रयोग नही होता, जैसे, भृत्येर द्वारा, अश्वेर द्वारा, किन्तु सावान दिया (सावुन से)।

केवल व्यक्तिवाचक शब्दो मे कर्म-विभक्ति के वाद 'दिया' अथवा 'दिये' का व्यवहार होता है, जैसे, चाकरदिगके दिये (नौकरो से), चाकरके दिये (नौकर से)।

केवल जन्तु अथवा पदार्थवाचक शब्दो के वाद ए, य, ते, ये, जोड़ा जाता है, जैसे, सेवाय तुष्ट (सेवा से तुष्ट), एइ गाड़ि गरुते चले (यह गाड़ी वैल से चलती है)।

सम्प्रदान कारकः

सम्प्रदान कारक की विभक्ति प्रायः कर्म कारक के समान है, जैसे, दरिद्रके धन दाओ [दरिद्र को (के लिये) धन दो]।

कभी-कभी ए, य, ते, का भी व्यवहार होता है, जैसे, सत्पात्रे, देवसेवाय आदि।

अपादान कारक :

इस कारक की विभक्तियाँ हइते, (ह'ते) थेके, अपेक्षा आदि है, जैसे, गृह हइते (गृह से), तिन दिन थेके (तीन दिनो से)।

कभी-कभी 'दिया' का भी व्यवहार होता है, जैसे, ताहार मुख दिया एमन कथा वाहिर हइवे ना (उसके मुँह से ऐसी वात नही निकलेगी)।

'निकट' आदि शव्दो में अपादान कारक की विभक्ति विकल्प से लोप होती है, जैसे, आमि ताहार निकट ए कथा शुनियाछि (मैंने उससे ऐसी वात सुनी है)।

तुलना करते समय सम्वन्ध कारक की विभक्ति के वाद अपेक्षा, चेये, चाइते आदि लगाते हैं, जैसे, तोमार चेये वृद्ध (तुमसे अधिक वृद्ध)।

कभी-कभी सप्तमी की 'ए' विभक्ति भी अपादान में प्रयुक्त होती है, जैसे, मेघे वृष्टि हय (मेघ से वृष्टि होती है)।

सम्वन्ध कारक :

र, एर, इस कारक की विभक्तियाँ हैं। साधारणत. शव्दो के अन्त में 'र' का योग करने से सम्वन्ध कारक सूचित होता है। 'एर' का योग शव्दो मे उस समय होता है जव उनका रूप एकवचन का हो तथा वे अकारान्त, व्यञ्जनान्त, एकाक्षर शव्द हो अथवा उनके अन्त में दो स्वर हो, जैसे, मायेर (माँ का), जामाइयेर (दामाद का); 'र' विभक्ति का उदाहरण—दयार (दया का), चुरिर (चोरी का)।

'र' विभक्ति का प्रयोग उस हालत में भी होता है जव मनुष्य के नाम का उच्चारण अकारान्त हो, जैसे, अमूल्यर (अमूल्य का), लेकिन शिव का शिवेर होगा क्योकि शिव के उच्चारण में व हलन्त की तरह उच्चरित होता है।

विशेषण-पदो में केवल 'र' का योग करते हैं, जैसे, भालर जन्य (अच्छे के लिये)।

समय अथवा अवस्थान-वाचक शव्दो में 'कार' योग करते हैं, जैसे, आजिकार (आज का), उपरकार (ऊपर का)।

व्यक्ति, जन्तु अथवा वडी वस्तु के सूचक वहुवचन शव्दो में देर, दिगेर, गणेर का योग करते हैं, जैसे, छेलेदेर (लडको का), जन्तुदिगेर (जन्तुओ का)। व्यक्ति, जन्तु तथा पदार्थवाचक वहुवचन में गुलार, गुलोर, गुलिर, सकलेर, समूहेर आदि का प्रयोग होता है, जैसे, मेयेगुलिर (लडकियो का), जिनिसगुलोर (वस्तुओ का), प्राणि सकलेर (प्राणियो का), इत्यादि।

अधिकरण कारक :

ए, य, ते, ये, अधिकरण कारक की विभक्तियाँ हैं।

अधिकरण दो प्रकार के हैं : कालवोधक और आधारसूचक। क्रिया जव किसी काल में समाप्त होती है तव उसे कालवाचक अधिकरण कहते हैं और जव

किसी स्थान पर समाप्त होती है तब वहाँ आधार-अधिकरण का भाव आ जाता है। 'प्रभाते आमरा बेड़ाइया थाकि' (सवेरे हमलोग टहला करते हैं)—यह कालवाचक अधिकरण का उदाहरण है।

आधार-अधिकरण तीन तरह के हैं—ऐकदेशिक, वैषयिक और अभिव्यापक। उदाहरणार्थः

ऐकदेशिक—ऋषि वने थाकितेन (ऋषि वन में रहते थे)।

वैषयिक—आमि विद्याय आपनार निकट बालक (विद्या में मैं आपके निकट बालक हूँ)।

अभिव्यापक—तिले तैल आछे (तिल में तेल है)।

कालवाचक शब्द के बाद कभी-कभी विभक्ति योग नहीं करते, जैसे, एक समय आमि बिश क्रोश हाँटिते पारिताम (एक समय था जब मैं बीस कोस पैदल चल सकता था); ए समय से कोथाय (इस समय वह कहाँ है)। लेकिन अगर विशेषण पद कालवाचक शब्द के पहले न हो तो विभक्ति अवश्य प्रयुक्त होती है, जैसे, दिने घुमाइओ ना (दिन में न सोना)।

क्रिया गमनार्थक होने पर कभी-कभी अधिकरण की विभक्ति नहीं लगती, जैसे, काशी पाठाओ (काशी भेजो), कलिकाता याइब (कलकत्ते जाऊँगा)।

बहुवचन में गण, गुला, गुलो, गुलि, सकल आदि के बाद विभक्ति का योग होता है। जैसे, कथागुलिते (बातों में), जीवगणे (जीवों में)।

(ग) सर्वनाम

बँगला में सर्वनाम के मुख्य भेद निम्नलिखित हैं :

पुरुषवाचक सर्वनाम—आमि (मैं), तुमि (तुम), से (वह) इत्यादि।

निर्देशक या निर्णयसूचक सर्वनाम—ताहा (तद्); इहा (यह); उहा (वह) इत्यादि।

प्रश्नवाचक सर्वनाम—कि (क्या), के (कौन) आदि।

सापेक्ष या समुच्चयी सर्वनाम—ये

अनिर्देश या अनिश्चयसूचक सर्वनाम—केह, केउ (कोई) आदि।

आत्मवाचक सर्वनाम—निजे, आपनि, स्वयं आदि।

साकल्यवाचक सर्वनाम—उभय, सकल, सब आदि।

पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के हैं:, उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, प्रथम पुरुष, जिसे हिन्दी में अन्य-पुरुष कहते हैं।

कर्ताकारक के एकवचन में इन पुरुषों के निम्नलिखित रूप है :

	सामान्य	तुच्छ	गौरवार्थ
उत्तम पुरुष	आमि (मैं)		
मध्यम पुरुष	तुमि (तुम)	तुइ (तू)	आपनि (आप)
प्रथम पुरुष	से, ताहा, ता (वह)		तिनि (वे)
	ये, याहा, या (जो)		यिनि (जो)
	के (कौन), कि (क्या)		के, किनि (कौन)
	ए, इहा (यह)		इनि (ये)
	ओ, उहा (वह)		उनि (वे)

व्यक्तिबोधक—तिनि, यिनि, के (किनि), इनि, आपनि, तुमि, तुइ, आमि।

व्यक्ति अथवा जन्तुवाचक—से, ये, के।

व्यक्ति, जन्तु अथवा पदार्थवाचक—ए, ओ।

पदार्थ अथवा क्षुद्र जन्तुवाचक—ताहा (ता), याहा (या), कि, इहा, उहा।

वचन और कारक-भेद से सर्वनाम के रूप में परिवर्तन होता है, लेकिन स्त्रीलिंग और पुलिंग-भेद से सर्वनाम के रूप में परिवर्तन नहीं होता।

याहाते, ताहाते आदि का प्रयोग क्रिया-विशेषण की तरह होता है।

से, ये, कि, ए, ओ का प्रयोग विशेषण की तरह भी होता है, जैसे, से दिन (उस दिन)।

कारकों की विभक्ति-सहित सर्वनामों के रूप

उत्तम पुरुष:

आमि (मैं)

(पुलिंग और स्त्रीलिंग में)

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	आमि, मुइ	आमरा, मोरा
कर्म	आमाके, आमारे, आमाय, मोरे	आमादिगके, आमादेर, आमादेरके, मोदिगके, मोदिगेरे, मोदेर
करण	आमाद्वारा, आमार द्वारा, आमाके दिया, आमा-हइते (ह'ते), आमा-कर्तृक	आमादिग (-दिगेर) द्वारा, दिया, कर्तृक; आमादेर दिया, द्वारा

	एकवचन	वहुवचन
सम्प्रदान	आमाके, आमारे, आमाय, मोरे	आमादिगके, आमादेर, आमादेरे मोदेर, मोदेरे, मोदिगके
अपादान	आमा हइते, आमा ह'ते	आमादेर (आमादिग) हइते
सम्वन्व	आमार, मोर (मझु), मम	आमादिगेर, आमादेर मोदेर
अधिकरण	आमाय, आमाते, मोते	आमादिगेते, आमादिगेर सकले, मोदिगे

तुमि (तुम)

मध्यम पुरुष:

(स्त्रीलिंग और पुलिंग मे)

	एकवचन	वहुवचन
कर्ता	तुमि, तुइ	तोमरा, तोरा
कर्म	तोमाके, तोमार, तोके, तोरे तोर	तोमादिगके, तोदेर, तोदिगके
करण	तोमाद्वारा, तोमाकर्तृक, तोर द्वारा	तोमादिगेर द्वारा, तोदेर द्वारा
सम्प्रदान	(कर्म कारक के समान रूप होता है)	
अपादान	तोमा हइते, तोर हइते	तोमादेर हइते, तोदेर हइते
सम्वन्ध	तोमार, तोर, तव	तोमादिगेर, तोमादेर, तोदेर
अधिकरण	तोमाते, तोमाय, तोके, तोय	तोमादिगते, तोमादेर सकले, तोमादिगते

तुइ (तू) शब्द का व्यवहार तीन अर्थों मे होता है :

(१) तुच्छार्थ में—निर्लज्ज तुइ क्षत्रिय समाजे (क्षत्रिय समाज में तू निर्लज्ज है)।

(२) स्नेह-वात्सल्य में—तुइ आमार नयनमणि (तू मेरे नयनो की मणि है)।

(३) देवतादि के संवोधन में—तुइ कि बुझिवि श्यामा मरमेर वेदना [श्यामा (माँ काली), तू मर्म-वेदना को क्या समझेगी]।

करण और अपादान का अलग रूप नही है। कर्म अथवा संबंध कारक के रूपों मे दिया, द्वारा, हइते योग करने से इन दोनों कारको का रूप प्राप्त हो जाता है

आपनि (आप)

चलित		साधु	
एकवचन	वहुवचन	एकवचन	वहुवचन
आपनि	आपनारा	आपनि	आपनारा
आपनाके	आपनादिके, -देर	आपनाके	आपनादिगके
आपनार	आपनादेर	आपनार	आपनादिगेर, -देर
आपनाते	—	आपनाते	—

प्रथम पुरुष :

तिनि (वे)

	चलित रूप		साधु रूप	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	वहुवचन
कर्ता	तिनि	ताँरा	तिनि	ताँहारा
कर्म, सम्प्रदान	ताँके	ताँदिके, ताँदेर	ताँहाके	ताँहादिगके
सम्वन्ध	ताँर	ताँदेर	ताँहार	ताँहादिगेर ताँहादेर
अधिकरण	ताँते	—	ताँहाते	—

यिनि (जो) का रूप तिनि की तरह ही होता है।

उपर्युक्त क्रम से अर्थात् पहली पक्ति मे कर्ता, द्वितीय में कर्म-सम्प्रदान, तृतीय मे सम्वन्ध और चतुर्थ में अधिकरण कारक के अन्य सर्वनामो के रूप नीचे दिए जा रहे हैं।

इनि (ये)

चलित		साधु	
एकवचन	वहुवचन	एकवचन	वहुवचन
इनि	एँरा	इनि	इँहारा
एँके	एँदिके, एँदेर	इँहाके	इँहादिगके
एँर	एँदेर	इँहार	इँहादिगेर, इँहादेर
एँते	—	इँहाते	—

उनि (वे)

चलित		साधु	
एकवचन	वहुवचन	एकवचन	वहुवचन
उनि	ओँर	उनि	उँहारा
ओँके	ओँदिके, ओँदेर	उँहाके	उँहादिगके
ओँर	ओँदेर	उँहार	उँहादिगेर, उँहादेर
ओँते	—	उँहाते	—

से (वह)

चलित		साधु	
एकवचन	वहुवचन	एकवचन	वहुवचन
से, ता	तारा	से, ताहा	ताहारा
ताके	तादिके, तादेर	ताहाके	ताहादिगके
तार	तादेर	ताहार	ताहादिगेर, ताहादेर
ताते (ताय)	—	ताहाते (ताय)	—

ये, याहा (जो) का रूप से, ताहा (ताहा)-जैसा होगा।

के (कौन)

चलित		साधु	
एकवचन	वहुवचन	एकवचन	वहुवचन
के, किनि	काँरा	के, किनि	काँहारा
काके	कादिके, कादेर	काहाके	काहादिगके
कार	कादेर	काहार	काहादिगेर, काहादेर
काते, किसे	—	काहाते	—

ए, इहा (यह)

चलित		साधु	
एकवचन	वहुवचन	एकवचन	वहुवचन
ए	एरा	ए, इहा	इहारा
एके	एदिके, एदेर	इहाके	इहादिगके
एर	एदेर	इहार	इहादिगेर, इहादेर
एते	—	इहाते	—

ओ, उहा (वह)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
ओ	ओरा	ओ, उहा	उहारा
ओके	ओदिके, ओदेर	उहाके	उहादिगके
ओर	ओदेर	उहार	उहादिगेर, उहादेर
ओते	—	उहाते	—

ए, इहा, इनि से निकटस्थ वस्तु या व्यक्ति का निर्देश होता है और ओ, उहा, उनि से दूरस्थ वस्तु या व्यक्ति का निर्देश होता है।

'ताय' (उसको, उसमें) का प्रयोग प्राय· पद्य में होता है।

'किसे' केवल पदार्थवाचक है।

'किनि' का प्रयोग साधु और चलित दोनो रूपो में प्राय. अप्रचलित हो गया है।

प्रथम पंक्ति की सूची

पृष्ठ-संख्या

पृष्ठ-संख्या

पृष्ठ-सख्या

पृष्ठ-संख्या

पृष्ठ-सख्या

पृष्ठ-सख्या

पृष्ठ-संख्या

पृष्ठ-संख्या

पृष्ठ-सख्या

पृष्ठ-सख्या

पृष्ठ-संख्या

पृष्ठ-सख्या

पृष्ठ-सख्या